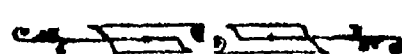
तिब्बतमें तीन वर्ष



—इकाई कावागुची

हिन्दी पुस्तक एजेंसीमाला—संख्या २५

तिब्बतमें तीन वर्ष



लेखक—

जापानी यात्री श्री इकाई कावागुची



अनुवादक—

पण्डित गुलजारीलाल चतुर्वेदी



हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६ हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रथम बार] माघ १९९१ [मूल्य सादी २॥) सजिल्द २॥=)

प्रकाशक—
बैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता



मुद्रक—
जगदीशनारायण तिवारी
वाणिक् प्रेस
६०, मिर्जापुर स्ट्रीट,
कलकत्ता

विषय सूची



भूमिका।



प्राचीन कालमें तिब्बतका भारतवर्षसे घनिष्ट सम्बन्ध था। सभ्यताका आलोक उसने इसी देशसे पाया, धर्म्मकी दीक्षा उसने इसीसे ली। उस संम्बन्धके स्मृतिचिह्न इस समय भी दोनों देशोंके प्राचीन साहित्यमें विद्यमान हैं। किसी समय तिब्बत संस्कृत साहित्यके अनन्य भक्तोंमें था। यह बौद्धधर्म-प्रचारका फल था। अध्यापक लेवी कहते हैं :—"इस समय भी तिब्बत और चीनके पुस्तकालयोंमें जो संस्कृत ग्रन्थ प्राप्य हैं उनकी संख्या हजारोंतक जा पहुंचती है और उनमें कितने ही ऐसे हैं जिनका आकार महाभारतसें कम नहीं। मूल ग्रन्थोंका कहीं पता नहीं, पर अनुवादरूपमें उनकी सत्ता अबतक बनी है"। स्वयं कावागुचोको अपनी यात्रामें ऐसी संस्कृत पुस्तकें देखनेको मिली थीं। उनमेंसे कितनी ही अपने मौलिक रूपमें थीं। कावागुची अपने साथ पुस्तकोंका एक बड़ा संग्रह लेते आये थे। पर कुछ भारतीय व्यक्तियों और संस्थाओंके चेष्टा करनेपर भी उस देशप्रेमीने उन्हें इनके हाथ बेंचना स्वीकार न किया। उसने उन्हें अपने देशकी भेंट कर दी। इधर कलकत्ता विश्वविद्यालयके प्रोत्साहनसे दो एक विद्वान् तिब्बतीय-साहित्य-रत्नाकरके किनारे आ खड़े हुए हैं। देखना है, डुबकी लगानेपर क्या रत्न हाथ आते हैं।

बात विषयान्तर सी जान पड़ती है, पर उस साहित्यकी आलोचनाकी आवश्यकता यही सिद्ध करती है कि दोनों देशों-का सम्बन्धसूत्र कुछ कालके बाद विच्छिन्न हो गया। भारत-वर्षके इधर डेढ़ हजार वर्षोंके इतिहासको ध्यानमें रखनेसे इसका कारण समझना कठिन न होगा। हमने फिर तिब्बतकी कोई खोज खबर न ली, या यों कहिये कि ऐसा करना हमारे लिये असंभव हो गया। तिब्बत भी बाहरी दुनियासे ध्यान समेटकर अपने आपमें लीन होता गया। कुछ ही कालमें वह चीन और संभवतः नेपालको छोड़ बाकी संसारके लिये एक अद्भुत पहेली बन गया और अभीतक वह पहेली ही बना हुआ है। पर जिस समयसे तिब्बत अपने और संसारके बीच पार्थक्य-की दीवार खड़ी करने लगा, उसी समयसे संसारकी ओरसे भी उसका प्रयत्न निष्फल करनेकी चेष्टायें होने लगीं। ऐसीही एक चेष्टा कावागुचीकी यात्रा भी थी। इसमें सन्देह नहीं कि तिब्बतके रहस्योद्घाटनके इतिहासमें इस जापानी यात्रीका स्थान निराला है।

पर क्या तिब्बतको जाननेका यह सारा प्रयास—समय समयपर और विभिन्न मनुष्यों द्वारा—केवल इसी कारण होता आ रहा है कि तिब्बतने अपनेको अज्ञेय बना रखा है? क्या इसका अर्थ इतना ही है कि ज्यों ज्यों तिब्बत अपने ऊपर अज्ञा-तव्यताकी तहपर तह देता जा रहा है त्यों त्यों संसारकी उन तहोंको फाड़ डालनेकी व्यग्रता बढ़ती जा रही है? अवश्यही इन

चेष्टाओंका एक कारण—और प्रधान कारण—यह है कि तिब्बत संसारके लिये तिमिरावृत हो रहा है और कौतूहलवश मनुष्य प्रत्येक रहस्यका भेद पाना चाहता ही है—चाहे वह कुछ महत्त्व रखता हो या नहीं। पर तिब्बत जहां रहस्यमय है वहां महत्त्व-पूर्ण भी है। ऊपर उसके साहित्यका उल्लेख हो चुका है। उसके विस्तार और गम्भीरताका अभी पूरा पता नहीं लगा है, पर जो बातें मालूम हुई हैं उनसे यह सिद्ध होता है कि किसी समय यह अत्यन्त उन्नतावस्थामें था। उस साहित्यके अन्तर्गत जो इतिहास ग्रन्थ हैं—शायद उन्हें पुराण कहना अधिक उपयुक्त होगा—उनसे छान बीनकर विद्वानोंने—विशेषत: स्वर्गवासी शरत्‌चन्द्र दासने—ऐसे राजाओंकी सूची तैयार की है जिन्होंने ईसाके तीन चार सौ बरस पहलेसे उसके ६१४ बरस बादतक तिब्बतमें राज्य किया। पर तिब्बती साहित्य इससे भी पहलेके कई राज-वंशोंका उल्लेख करता है और उनका सम्बन्ध भारतवर्षसे बताता है। यहां कितनी ही बातोंके अनुसन्धानकी आवश्यकता है। तिब्बतका सर्वप्रथम राजा कोशलदेशके नृप प्रसेनजीतका पुत्र बताया जाता है। यह कौन था और कैसे वहांकी प्रजाका हृदय-सम्राट् बन बैठा? कहते हैं कि स्रोंग-सन-गम-पो नामक तिब्बत-नरेशने ६३९ में वहां बौद्धधर्म और लेखनकलाका प्रचार किया। यह भी कहा जाता है कि उसकी दो स्त्रियोंमेंसे एक नेपालकी राजकुमारी थी, जिसके पिताका नाम ज्योतिवर्म्मा था। तिब्बतीय इतिहासकारोंके अनुसार 'उसकी राज्यसीमा

हिमालयके दक्षिण तक थी, चीनके इतिहासमें बंगाल प्रान्त भी उसके अन्तर्गत बताया जाता है। हम इसके विषयमें क्या जानते हैं? कुछ नहीं। और हमारे इतिहासमें कहीं इसका उल्लेख नहीं मिलता कि भारतके किसी अंशपर कभी तिब्बतका आधिपत्य था। पर उनके साहित्यमें ऐसा लिखा है। उसमें यह भी लिखा है कि ७०३में नेपाल और ब्राह्मण-देशने बगावतका झण्डा उठाया और उस लड़ाईमें तिब्बतका तत्कालीन राजा मारा गया तथा विद्रोहियोंकी विजय हुई। बात बिलकुल निराधार न होगी, इसपर ऐतिहासिक गवेषणाका प्रकाश पड़ना चाहिए। ईसाके करीब हजार बरस बाद विक्रमशिला नामक विहारके अधिकारी बौद्ध संन्यासी अतीशका तिब्बतके राजाके निमन्त्रणसे वहां जाना बताया जाता है। इन्हींके समयसे उस देशमें पण्डितोंका प्रभाव बढ़ता गया। इनमें शाक्य पण्डितने सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की। इन्हींके भतीजेको मंगोलाधिपति कुबले खांने, जिसने तिब्बतको अपने अधीन कर लिया था—सारा देश उनकी सेवाओंके पुरस्कार स्वरूप दे दिया। तभीसे वहां लामाओंका आधिपत्य प्रारम्भ हुआ। यह १२७०की बात है। शाक्य पण्डितके वंशजोंने सत्तर बरस तक राज्य किया। १३४०में उन्हें सिंहासनच्युत होना पड़ा। तबसे १७२० तक वहांकी राजनीतिक दुनियामें कई उलट-फेर हुए। उस साल चीन खुल्लमखुल्ला तिब्बतका कर्ताधर्ता बन बैठा और अभी कलतक तिब्बत उसका आधिपत्य स्वीकार करता था। यहां जो कुछ

लिखा गया है वह केवल इस बातका आभास देनेके लिए कि यदि ऐतिहासिक दृष्टिसे ही देखें तोभी तिब्बत कभी संसारकी उपेक्षाका विषय नहीं हो सकता। योंही उसका भौगोलिक विस्तार भी उसको महत्त्ववृद्धिमें कम सहायता नहीं पहुंचाता। उसकी लम्बाई १६०० मील और उसकी चौड़ाई ७०० मीलतक जा पहुंचती है। रकबा ७००,००० वर्ग मीलसे भी अधिक है। भूमि वहांकी रत्नगर्भा है यद्यपि उससे रत्न निकालना वहांके निवासियोंकी शक्तिके बाहर है। व्यापार भी उसका कुछ कम नहीं है यद्यपि उसकी अभी यथेष्ट उन्नति नहीं हुई है। तिब्बतका रहस्य महत्त्वाके साथ है। और यही कारण है कि बारंबार विफल होनेपर भी संसार उसे जाननेके प्रयत्नसे मुंह नहीं मोड़ता।

क्या इतना कह चुकने पर यह कहना भी आवश्यक है कि संसार रह रह कर तिब्बतकी ओर जो दृष्टिपात करता है वह सर्वथा स्वार्थशून्य नहीं होता? अपवाद हो सकते हैं—कावागुचीको हम इन अपवादोंमें सर्व्वोच्च स्थान दे सकते हैं—पर अधिकांश यात्री जो वहां गये हैं और जानेका जबतब प्रयत्न करते हैं वह इसी उद्देश्यसे कि इससे उनके देश या सरकारका कुछ लाभ हो, उसका वहां प्रभाव जमे और उनकी यात्रा उस प्रकरणकी भूमिका कहावे जिसमें तिब्बत उनके बन्धुबान्धवों या स्वामियोंके हाथकी कठपुतली बन जावे। तिब्बतके भौगोलिक अनुसन्धानमें भारतवासियोंका भी हाथ रहा है। नयनसिंह,

कृष्ण पंडित, राय शरत्‌चन्द्र दास बहादुर सी० आई० ई० आदि कई नाम मानसिक नेत्रोंके सामने आते हैं। पर हम आप जानते हैं कि उनके जानेका वास्तविक कारण क्या था। वह था उस ब्रिटिश नीतिकी सफलताकी राह तैयार करना जो वारन हेस्टिङ्गसके समयसे तिब्बतको लोभपूर्ण दृष्टिसे देखती आयी है। और आज इतने दिनों बाद यह नीति सफल होती भी दीख रही है।

थोड़े दिन पहले अखबारोंमें एक छोटी सी खबर निकली थी। कुछ लोगोंका उसपर ध्यान पड़ा होगा, बहुतोंका नहीं। उसका भावार्थ था कि बंगालके पोस्टमास्टर जनरल तिब्बतसे सकुशल लौट आये। वहाँ आप ब्रिटिश सीमान्तसे लासा तक तारका प्रबन्ध करने गये थे। जान पड़ा कि इस बीचमें तारके खम्भे गड़ गये हैं। और कुछ दिन बाद भारत सम्राट् और दलाई लामाके बीच उसी तारके जरिये बातचीतका भी समाचार प्रकाशित हुआ। सम्राट्‌की ओरसे दलाई लामाको बधाइयाँ भेजी गयी थीं और इस अवसरपर आनन्द प्रगट किया गया था। उस बधाईकी असलियत पीछे मालूम होगी। पर भारत सरकारके पोलिटिकल विभागमें इस समय आनन्दस्रोत-उमड़ पड़ा है इसमें सन्देह नहीं। जो काम कर्जनका भ्रूभङ्ग न कर सका वह चार्ल्स अल्फ्रेड बेलकी कूटनीतिने पूरा किया। बेल महोदय इसी विभागके कर्मचारी थे। और इस विभागकी नीति क्या है? उत्तरमें "डेली मेल" जैसे साम्राज्यवादी पत्रकी सम्मति, १६ दिसम्बर १६२२ के अङ्कसे उद्धृत की जाती है:—

The officers of this department have never been remarkable for a zeal for economy. No. sooner do they sit down on a new line of frontier than they start scheming for its execution. If they could have had their way, Tibet, for instance, would have been included in the British Empire, and probably large slices of Persia itself if foreign Powers had permitted such absorption.

अधिक लिखना व्यर्थ है। यदि इस विभागकी चली—और उसे रोक हो कौन सकता है—तो तिब्बतका दूसरा मिश्र बन जाना बहुत दूरकी बात नहीं। ब्रिटिश नीति ही है साम्राज्य-विस्तारका श्रीगणेश तार और रेलके प्रचारसे करना, और तिब्बतमें तारके खंभे गड़ चुके हैं। चीनका आधिपत्य इस समय तिब्बत पर नाम मात्रको भी नहीं। इधर उस देशकी जो दुरवस्था हो रही है उससे लाभ उठा कर तिब्बतने अपनी स्वतंत्रताकी घोषणा कर दी है। ब्रिटिश सरकारका इसमें कोई हाथ था या नहीं यह मानना—न मानना पाठकोंकी मर्जी पर है। रूस इस समय कहीं है ही नहीं। साफ मैदान है और अंगरेज बेधड़क आगे बढ़ रहे हैं। वर्त्तमान दलाईलामा उनके हाथोंकी कठपुतली जान पड़ते हैं। इधर भारतवर्षमें कोई यह पूछनेवाला भी नहीं कि इन बातोंका मतलब क्या है। पर संभव है यह सब, तिब्बतके भलेके लिये ही हो रहा हो। उसे भी शायद पराधीनताके मार्गसेहो सच्ची स्वतंत्रताके शिखरपर चढ़ना

है। तिब्बतमें अंगरेजोंके प्रवेशके साथ अंगरेजीका भी प्रवेश होने लगा है। तिब्बतियोंकी आंखें कब तक बन्द रहेंगी?

कावागुचीने जिस समय तिब्बतकी परराष्ट्रनीतिके सम्बन्धमें अपने विचार प्रगट किये थे उस समयसे संसारकी, और उसके साथ तिब्बतकी, बातें बहुत कुछ बदल गयी हैं। पर इससे उनकी पुस्तकके महत्त्वमें रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ता। कई अंशोंमें तो बादकी घटनायें वैसी ही हुई हैं जैसी उन्होंने भविष्यद्वाणी की थी। तिब्बत-पर्य्यटक कई हुए हैं, एकसे एक साहसी और भौगोलिकतत्वान्वेषक, पर कावागुचीके समान तिब्बतीय जीवनका मर्म्म कोई नहीं जान सका। एक तो वह स्वयं बौद्ध और मंगोलीय सभ्यताके अनुयायी, दूसरे, उन्होंने तिब्बतमें तीन वर्ष बिताये। पुस्तकका नाम ही पुस्तककी उपादेयताका सबसे बड़ा प्रमाण है। कावागुचीकी धर्म्मपरायणता, सत्साहस और सरलता—पर सबसे अधिक उनकी प्रशान्त मुखच्छवि—इस समय भी भूले नहीं भूलती। इस यात्राके बाद कई बरस उन्होंने संस्कृतके अध्ययनमें काशीमें बिताये। अंगरेजी नाम मात्रको जानते थे। अपना भ्रमण वृत्तान्त पहले उन्होंने जापानी भाषामें लिखा था। बड़े भावुक और कवि थे। देशप्रेम तो उनकी नसनसमें भरा था। अपने देशके पण्डापुजारियोंको और सदाके लिये अंगरेजी साहित्यकी शिक्षाकी अनिवार्य्यताका ढोल पीटनेवालोंको कुछ लज्जित होना चाहिये—अपना हठ और दुराग्रह छोड़ना चाहिये। कावागुची बौद्ध पुजारी

थे और अगर किसी भाषाके ऋणी थे तो अपनी मातृ भाषाके।

तिब्बतको विदेशियोंसे डरनेके कई कारण थे और उसने उन्नीसवीं सदीसे वह बहिष्कार नीति आरम्भ की जो वहां विदेशीकी परछांई भी देखना नहीं चाहती। शरत् चन्द्र दासकी यात्राके बादसे वह और भी कड़ाईसे इस नियमका पालन करने लगा। पर भारतीय उपकारको वह भूला नहीं है और अधिक नहीं तो इतनी स्वतंत्रता उसने हिन्दूमात्रके लिये रहने दी है कि—

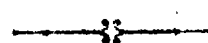
"हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानसस्याददानः"
"कैलासस्य त्रिदशबनितादर्पणस्यातिथिः स्याः"—

ऐसे देशके ऐसे रोचक वर्णन और उसके हिन्दी पाठकोंके बीच भूमिका और बढ़ाकर बाधा डालना अन्याय है।

कलकत्ता
१३-१-२३

पारसनाथ सिंह।

निवेदन.



हिन्दी पुस्तक एजेंसीमालाकी २५ वीं संख्या 'तिब्बतमें तीन वर्ष' उदार पाठकोंकी सेवामें समर्पित है। यह पुस्तक जापानी यात्री श्रीयुत कावागुचीकी पुस्तक (Three years in Tibbet) थ्री इयर्स इन तिब्बतका अनुवाद है। श्रीयुत कावागुची व्युत्पन्न बौद्ध पुरोहित और विद्वान हैं। बौद्ध धर्मके केन्द्र तिब्बतमें बुद्धधर्मकी शिक्षा पूरी करनेके निमित्त आपने यह यात्रा की थी। उस समय तिब्बत सरकारने विदेशियोंके लिये तिब्बतका द्वार बन्द कर दिया था। इसीलिये कावागुची महाशयको गुप्त द्वारसे छिपे तौरसे तिब्बतमें घुसना पड़ा था। उसी यात्राका इसमें वर्णन है। कावागुची महाशयने अपनी ही लेखनी द्वारा अपने सारे अनुभवों और कठिनाइयोंका वर्णन किया है। प्राकृतिक दृश्यका जो खाका उन्होंने खींचा है उसे पढ़कर चित्त विह्वल हो जाता है। इस पुस्तकमें तिब्बतके पहाड़ी मार्गों, नदियों, झरनों, सोतोंका प्राकृतिक दृश्य, पहाड़ी जातियों-के रीतिरिवाज और रहन सहन तथा तिब्बतमें प्रचलित रीति रिवाजका वर्णन है। पहले यात्राकी पुस्तक, दूसरे लेखकके निजी अनुभव, तीसरे प्राकृतिक दृश्यका वर्णन और चौथे कावा-गुची महाशयकी रोचक लेखनशैली, इन चारों बातोंने पुस्तकमें

एक विचित्र महत्व ला दिया है। पुस्तक पाठकोंको अवश्य रोचक होगी इसीका ध्यान करके हमने यह अनुवाद कराया है।

प्राय: डेढ़ वर्षसे इस पुस्तकका विज्ञापन देकर हम आजसे पहले इस पुस्तकको नहीं प्रकाशित कर सके इसका हमें खेद है। पर हम लाचार थे। अनुवादक महाशयने अनुवाद करनेमें इतनी स्वतन्त्रता और उदासीनतासे काम लिया था कि संशोधनमें हमें बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ा। अनुवादक महाशयने अनेक ऐसे अंश छोड़ दिये थे जिनका होना पुस्तकके लिये आवश्यक था। निदान हमें उनका अनुवाद करना पड़ा। इस तरह पुस्तकको सर्वाङ्ग सुन्दर और रोचक तथा पाठकोंके लिये पूर्णतया उपयोगी बनानेके लिये हमें पाठकोंको इतनी प्रतीक्षा करानी पड़ी। हम समझते हैं कि इतनी प्रतीक्षाके बाद जो वस्तु उन्हें मिल रही है वह उतनी ही सन्तोषदायक और मनोमोहक भी होगी।

विनीत—

प्रकाशक

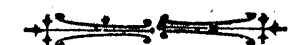
तिब्बतमें तीन वर्ष



जापानी यात्री श्री इकाई कावागुची

तिब्बतमें तीन वर्ष

पहला परिच्छेद।



बिदाईकी नयी भेंट

मैंने मई सन् १८९७ में अपनी उस यात्राकी तैयारी की जिसमें केवल प्राणघातक घटनाओंकी सम्भावना थी। मैं अपने मित्र और बन्धुबान्धवोंसे बिदा लेने गया। लोगोंने मुझे भांति भांतिकी भेंटें दीं, मेरी कुशलके लिये सच्चे हृदयसे प्रार्थनायें कीं परन्तु किसीकी भी भेंट मैंने स्वीकार नहीं की। हाँ जिन्हें नशेकी गहरी आदत थी उनसे मैंने नशा छोड़नेके वचन लिये। यही भेंट थी। इस विचित्र प्रकारकी भेंट प्रायः ४० मनुष्योंसे मुझे मिली। उनमें-से अधिकतर अबतक अपने वचनपर दृढ़ हैं। मैंने भी अन्य भेंटोंकी अपेक्षा उन्हें अधिक पसन्द किया। टोकियोसे चलकर ओसाका पहुंचा। वहां भी कतिपय मनुष्योंसे इसी तरह की भेंट मिली। उनमेंसे तीनका यहां वर्णन करना उचित समझता हूँ। भेंटोंके विषयमें मेरा यह विश्वास है कि उनमें एक ऐसी दैवी शक्ति आ गई थी जिसने मुझे अनेक आपत्तियोंसे बचाया।

टोकियोमें मैं ताकावे तोना नामक एक महाशयसे बिदा लेने

गया था। वह राल बनानेका काम करते थे। उन्हें मछलीके शिकारसे बड़ा प्रेम था। मैंने उन्हें अत्यन्त क्षुब्ध और दुःखी देखा। वे आपही कहने लगे—"मेरा तीन वर्षका बच्चा मर गया है इससे मेरी स्त्री अत्यन्त व्याकुल है और मैं भी वियोगसे इतना कातर हो रहा हूं कि अब मछलीकी शिकारमें भी मुझे कोई आनन्द नहीं मिलता।" वह मेरे आत्मीय थे इससे मैंने पूछा कि क्या सचमुच पुत्र वियोगकी वेदना असह्य हो रही है? अच्छा आप ऐसे व्यक्तिके विषयमें क्या कहेंगे जो आपके लड़केको मारे और भूनकर खा जाय? उन्होंने उत्तर दिया "ओह, मनुष्य ऐसा काम नहीं कर सकता, राक्षस ही कर सकता है।" मैंने कहा, 'तो फिर आप भी राक्षस ही ठहरे।' यद्यपि मेरे शब्द बड़े कठोर थे तथापि मेरा हृदयके सच्चे उद्गार थे। इससे उन्होंने मेरी बातका कुछ बुरा नहीं माना और उस दिनसे मछलीका शिकार बिलकुल छोड़ दिया। मेरी बातपर वे तुरन्तही उठे और मछली फँसानेका जाल, बंशी इत्यादि सब सामान मेरे सामने ला रखे और बोले—'यही मेरे हिंसाके सहायक हैं। आजसे मैं इन्हें त्यागता हूं। आप इनका जो चाहें करें।' मैंने भी तुरन्त ही उनकी लड़कीसे आग मंगाकर सबके देखते देखते उस जाल इत्यादिको जला दिया। उस समय ताकावे महाशयके घर और भी कई सज्जन उपस्थित थे जिनमें उनके एक आत्मीय मि० ओगावा केतसुतारो नामक (Mr. ogawa Katsutaro) थे। यह महाशय भी सिद्धहस्त शिकारी थे। वह बन्दूकसे शिकार खेलते थे और

मछलियां भी मारते थे। उन्होंने भी यह नाटक देखा। बंशी और जाल आदिको अग्निमें डालकर मैं ताकावे महाशयके लिये प्रार्थना कर रहा था कि वे उठकर बोले—'महाशय तिब्बतमें आपकी शुभ कामनाके लिये मैं भी कुछ भेंट देता हूं। मैं आजसे शिकार न करनेकी सौगन्ध खाता हूं। यदि मैं अपनी प्रतिज्ञाको तोड़ूं तो ईश्वर मुझे मृत्यु-दंड दें।' यह सुनकर मुझे अत्यन्त सुख हुआ। जब म्याकाईमें मैं अपने चिरपरिचित मित्र मिस्टर इतो इचिरा-के यहां गया तो ताकावे महाशयके यहांकी जाल इत्यादि जला-नेकी घटना सुनाई। मेरे मित्रको भी शिकारसे बड़ा प्रेम था। उन्होंने भी अपना शिकारका सामान जला दिया। इसके बाद मैं अपने एक और मित्र वातनवे इचिविसे मिलने ओसाका गया। वह बड़े धनी और कोरियाके व्यवसायी थे। पहले उनके यहां मुर्गीका मांस पकाकर बेंचनेका रोजगार होता था। इस रोज-गारसे उन्हें विशेष लाभ था। पहले भी मैंने उन्हें अनेक बार यह पापमय और घृणित रोजगार छोड़ देनेके लिये कहा था और समझाया था। आज अन्तिम बार भी मैंने उस क्रूर व्यवसायको छोड़ देनेके लिये उनसे प्रार्थना की। उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली और मुझे विश्वास दिलाया कि शीघ्रही यह काम वे अवश्य छोड़ देंगे। मेरे चले जानेके डेढ़ वर्ष बाद मुझे यह सुनकर और भी प्रसन्नता हुई कि उन्होंने अपने वचनको सार्थक किया। साधारणतः मेरा यह वचनबद्ध कराना धृष्टता-पूर्ण प्रतीत होगा। परन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि

रोगीको जो औषधि दी जाती है वह नीरोगको हानिकर होती है। इसलिये शारीरिक विज्ञानकी भांति धार्मिक उपचार भी भिन्न भिन्न मनुष्यके अवस्थानुसार भिन्न भिन्न प्रकारके होंगे। चाहे जो कुछ हो मेरा विश्वास है कि तिब्बत यात्रामें कई बार मृत्युके मुखमें जाते जाते जो बच गया वह इन्हीं प्रतिज्ञाओंका प्रसाद था। मैं जानता हूं कि दयामय बुद्धदेवने हमारी सदा रक्षा की है। यह कौन कह सकता है कि मेरी इस प्रकारको रक्षा इन जीवोंके बचानेकी चेष्टाका फल-स्वरूप नहीं था।

मैं इष्टमित्रोंसे बिदा हो लिया। चलनेकी तैयारी कर ली। परन्तु यात्राके लिये मेरे पास काफी रुपया नहीं था। मेरे पास अपनी कमाईका केवल एक सौ येन (जापानी सिक्का) थे। इनके सिवा वातानवे; हेरुकवा, कितामुरा, हाइज, इतो, नोडा और यामानाका आदि सज्जनोंकी उदारतासे चार सौ तीस येन और भी मिल गये थे। इनमेंसे प्राय: एक सौ इस दुर्गम यात्राकी तैयारीमें लगा दिया था। शेष मेरे पास थे।

प्राय: देखनेमें आता है कि जबतक मनुष्य स्वयं आचरण नहीं करने लगता उसके कथनपर कोई विश्वास नहीं करता और यदि उसका कार्य दुर्धर्ष हुआ तो लोग उसका विरोध करते हैं, उसे बनाते हैं और समझा बुझाकर उसे उस कामसे अलग करना चाहते हैं। और यदि वह उनके कहनेमें नहीं आ जाता तो मुंह पीछे उसकी असफलताकी भविष्यद्वाणी करते हैं। मैं भी इससे बचा न रह सका।

मुझे भी चलते समयतक लोगोंने समझाया बुझाया और इस यात्राको छोड़ देनेका उपदेश दिया। उदाहरणके लिये अन्तिम रात्रिको मैं ओसाकामें मि० मुकीके घर ठहरा हुआ था। यहीं वाकायाया नगरके एक जज मेरे पास आये और बोले—'इस काममें आपको सफलता नहीं मिलेगी। जिद्दमें आकर आप प्राण गवांइयेगा और लोग आपकी हंसी उड़ावेंगे। इससे बाज़ आइये और धर्मोपदेशका काम कीजिये; क्योंकि इसमें आपने पूर्ण योग्यता प्राप्त की है और जापानके बौद्ध मन्दिरोंमें आजकल योग्य शिक्षकोंकी बहुत ही आवश्यकता है।' मुझे दृढ़ देखकर उन्होंने कहा 'यदि इस यात्रामें आपकी मृत्यु हुई तो आप कुछ न कर सकेंगे।' मैंने कहा "प्रथम तो यह सन्दिग्ध है और यदि मेरी मृत्यु हो भी गई तो मुझे सन्तोष होगा कि लड़ाईके मैदानमें बहादुर सिपाहीकी भांति मैंने धर्म निमित्त प्राण गंवाये हैं!" मुझे अविचल पाकर जज साहब मेरी शुभ कामना करते अपने घर चले गये। दूसरे दिन ता० २५ जून स० १८९७ को मैं अपने इष्टमित्रोंसे विदा होकर इडजूमी मारू जहाज़ द्वारा ओसाकासे रवाना हुआ।

इडजूमी पश्चिम होता सीधे हांगकांगकी ओर चला। हांगकांगमें मि० टामसन नामके एक अङ्गरेज़ इसी जहाजपर सवार हुए। उनके सहवाससे हमलोगोंको बड़ा आनन्द हुआ क्योंकि हमलोगोंकी निश्चेष्टता जाती रही। आप जापानमें प्रायः अट्ठारह वर्षतक रह चुके थे और जापानी भाषा स्पष्ट बोलते थे। आप

कट्टर और उत्साही ईसाई थे। हमलोग अधिकांश समय विना किसी विद्वेषके धार्मिक वादविवादमें विताते रहे जिससे अनेक तरहकी नयी बात मालूम हुईं। जिस समय मैं जहाजपर उपदेश देने लगता, जहाजके कर्मचारी बड़ी सावधानी और उत्साहसे मेरे धार्मिक व्याख्यान सुनते थे।

१२ जुलाईको इडजूमी जहाज 'सिंगापुर पहुंचा। मैं वहां उतर कर फुसोकवान होटलमें ठहरा। १५ जुलाईको मैं वहांके जापानी दूत फुजिता तोपसे मिलने गया। मि० फुजिता को इडजूमी जहाजके कप्तानसे मेरा हाल मालूम हो गया था। उन्होंने मुझसे कहा—'मैंने सुना है कि आप तिब्बतकी यात्राके लिये प्रस्तुत हैं। मुझे मालूम नहीं कि आपने इस यात्राकी क्या व्यवस्था की है पर वहां पहुंचना बहुतही कठिन है। कर्नेल फुकुसिमा जो इस समय साइबेरियाके उस पारके प्रदेशोंके विख्यात लफ्टण्ट जनरल हैं, दार्जिलिङ्गमें रुक गये और तिब्बतकी यात्रा असम्भव समझकर वहींसे लौट आये। मैं नहीं समझता कि आप उनसे अधिक सफलता प्राप्त कर सकेंगे। यदि आप दृढ़ हैं तो मेरी समझमें आपके लिये दोही उपाय हैं, या तो सैनिक बलसे बलपूर्वक घुस जाइये अथवा भिक्षुकके भेषमें जाइये। आपने क्या स्थिर किया है?' मैंने कहा—'यह आप जानतेही हैं कि मैं बौद्ध धर्माध्यक्ष हूं इसलिये पहिली बातका तो जिक्रही व्यर्थ है। हां, दूसरा पथही पकड़नेका विचार कर रहा हूं और मैं निश्चित व्यवस्था न करूंगा। भाग्य जिस ओर ले जायगी उसी

ओर जाऊंगा। इसके पश्चात् मैं राजदूतसे विदा हुआ। उस समय वे चिन्तामग्न थे।

मैं फुसोकवान होटलमें एक सप्ताह रहा। रवाना होनेके एक दिन पहले एक ऐसी दुर्घटना हुई कि मैं मरते मरते बच गया। धर्माध्यक्षकी हैसियतसे अवसर मिलतेही मैं उपदेश देने लगता था। इस होटलके स्वामी मेरी इस कर्त्तव्यनिष्ठासे बहुत सन्तुष्ट थे। फलतः मेरा बहुत आदर होता था। गरम पानीका स्नानागार तैयार होनेपर सबसे पहले मैंही नहानेके लिये बुलाया जाता था। जापानियोंको गरम पानीसे नहाना बड़ाही सुखद प्रतीत होता है।

१८ तारीखको पूर्ववत् मैं बुलाया गया। उस समय धर्म-पुस्तक पढ़ रहा था इससे नहीं जा सका। दूसरी बार फिर बुलाया गया। फिर भी मैं स्नान करनेके लिये तैयार न था और कमरेके बाहर न जा सका। इतनेमें एक बड़े जोरकी धमाके-की आवाज हुई जिससे सारा भवन हिल गया। अनुसन्धान करनेपर ज्ञात हुआ कि स्नानागारकी मञ्जिल मय सामानके बैठ गई। स्नानागारमें एक जापानी महिला स्नान कर रही थी जो मेरे न जानेके कारण नहाने चली गई थी। वह अभागिनी ईंट पत्थरोंमें दबकर बुरी तरह घायल हो गई थी। वह तुरत पासके एक अस्पतालमें पहुंचाई गई परन्तु उसके बचनेकी बहुत कम आशा थी। यह सोचकर कांप उठता हूँ कि यदि मैं सदाकी भांति आज भी नहानेके लिये चला गया होता तो मेरी इस यात्रा-का क्या परिणाम होता। उस स्त्रीके लिये मुझे बड़ा शोक हुआ

क्योंकि वह मेरे बदलेमें घायल हुई थी। यह घटना मेरी यात्राका शुभ लक्षण था।

मैं अङ्गरेजी जहाज लाइटनिङ्गपर सवार हुआ और पीनांग होता हुआ २५ जुलाईकी कलकत्ते पहुंचा। वहां महाबोध सोसाइटीमें ठहरा। सोसाइटीके मंत्री मि० चन्द्रबोससे ज्ञात हुआ कि यदि मैं दार्जिलिंग जाकर राय बहादुर शरतचन्द्र दासका शिष्य हो जाऊं तो मेरा काम बन जायगा। दास महाशय कई महीने तिब्बतमें रह चुके थे और उस समय दार्जिलिंगमें तिब्बती भाषाका एक कोश बना रहे थे। मि० चंद्रबोसने राय बहादुर साहबके नाम एक चिट्ठी लिख कर दी। उनसे तथा अन्य देशवासियोंसे विदा लेकर मैं २ अगस्तको रेलसे दार्जिलिङ्ग चला। गाड़ी उत्तरकी ओर चली। थोड़ीही देरमें गङ्गाजीके किनारे पहुंची। स्टीमर द्वारा गङ्गाजीको पारकर हमलोग दूसरी गाड़ीपर सवार होकर उत्तरकी ओर चले। रेलकी सड़ककी चारों ओर कोसोंतक नारियलके जङ्गल और धानके हरे भरे खेत दिखाई पड़ते थें। रातमें उड़ते जुगनूकी चमक भी हमारे लिये एक अद्भुत दृश्य था, क्योंकि जापानमें इस तरहके जुगनू नहीं देखनेमें आते। दूसरे दिन सबेरे हमलोग दूसरी गाड़ीमें सवार हुए। यह छोटीसी गाड़ी केवल पहाड़की चढ़ाईके ही लिए थी। उस पर चढ़कर हमलोग दलाई जङ्गलमें होकर आगे बढ़े। संध्याको तीन बजे हमलोग पचास मीलकी उंचाईपर दार्जिलिङ्ग पहुंचे। वहांसे एक डांडीपर (यह पालकीकी भाँति होती है) सवार

होकर मैं शरतचन्द्र दासके मकान ल्हासा विलापर पहुंचा। यह बहुत ही रमणीक स्थान है।

दूसरा परिच्छेद

दार्जिलिङ्गमें एक वर्ष।

जिस समय मैं दार्जिलिङ्ग पहुंचा उससे कुछ ही दिन पहले आसाममें भीषण भूकम्प हुआ था जिससे दार्जिलिङ्गके अधिकांश मकान गिर गये थे। शरत बाबूकी यह विला भी भग्न हो गई थी और उनकी मरम्मत हो रही थी। गृहस्वामीने मेरा सहर्ष स्वागत किया। एक दिनकी बातचीतमें मैंने अपना आशय उनपर व्यक्त कर दिया। मेरा समय बहुमूल्य समझकर आपने भी दूसरे ही दिन मुझे घूमपल नामी मन्दिरमें ले गये। वहां आपने मेरा वृद्ध मंगोलियन पुरोहितसे परिचय कराया। वह बहुत विद्वान् और तिब्बती भाषाके निपुण शिक्षक थे। उनका नाम सेराव गेन्तसो (विद्यासागर) था। दैव संयोगसे मेरा नाम एकाईका भी यही अर्थ (विद्यासागर) होता है। इससे मेरे तिब्बती गुरु बहुत ही प्रसन्न हुए। बौद्धधर्मपर विचार होने लगा। परन्तु यह एकदम बेढङ्गा था क्योंकि यद्यपि राय बहादुर दुभाषियाका काम करते थे परन्तु मेरा अङ्गरेजी भाषाका ज्ञान भी साधारण था। उस दिन मुझे केवल वर्ण परिचय करा-

या गया। दूसरे दिनसे मैं नित्यप्रति उस मन्दिरमें आने जाने लगा। शरत बाबूके विलासे वह तीन मील था। इसके एक महीने बाद एक दिन राय शरतचंद्रने मुझे अपने कमरेमें बुलाकर कहा—'मि० कावागुची मेरी राय है कि आप तिब्बत यात्राका विचार छोड़ दें। यह बहुत ही भयानक संकल्प है। यदि सफलताकी कुछ भी आशा होंतो तो यह संकल्प उचित था पर अवस्था आपके सर्वथा प्रतिकूल है। तिब्बती भाषाका पूरा ज्ञान आप यहीं प्राप्तकर जापान लौट जाइये। आपको वहां प्रतिष्ठा होगी।' मैंने उनसे कहा कि—'मेरा अभिप्राय केवल तिब्बती भाषा सीखनेका नहीं है। मैं बौद्धधर्मका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूं। श्री शरतचन्द्रने उत्तर दिया, 'आपका यह विचार बहुत ही उत्तम है, पर ऐसे कामको आरम्भ करनेसे क्या लाभ जो पूरा नहीं हो सकता? तिब्बतकी यात्रासे आप बचकर नहीं लौट सकते।' मैंने पूछा 'आप तिब्बत हो आये है, तो क्या मैं भी आपकी तरह सफल मनोरथ नहीं हो सकता?'' शरतबाबूने उत्तर दिया, 'आप भ्रममें हैं, अब वह समय नहीं रह गया। इस समय तिब्बतमें विदेशियोंके लिये द्वार बन्दोकी नीतिका पूर्णतः प्रयोग हो रहा है। यदि मैं भी चाहूं तो अब प्रवेश पाना असम्भव है। इसके अलावा मुझे भाग्यवश पास भी मिल गया था जिसे प्राप्त करनेका न साधन है, न आशाही है। अतएव मेरे विचारसे यही उचित होगा कि आप तिब्बती भाषाका ज्ञान प्राप्तकर यहींसे घर लौट जायं। मेरे मेज़बानने प्रत्येक शब्द सद्भावसे कहा था पर वह मेरे चित्तको

विचलित न कर सके। बल्कि मैंने कहा कि अब मेरा विचार लामा सेराबके यहां पढ़ने जानेका नहीं है क्योंकि तिब्बती शिक्षा न देकर वे मुझे तिब्बती बौद्धधर्मकी शिक्षा देना चाहते हैं। इसलिये आप कोई ऐसी राह निकालिये जिससे मैं तिब्बती भाषा सीख सकूं। उन्होंने असीम दयासे मेरी शिक्षाका दूसरा प्रबन्ध कर दिया। श्रीशरतचन्द्र दासके मकानके नीचेही दो मकान और थे। वह मकान यद्यपि शबदंग नामक लामाके थे पर वह दार्जिलिङ्ग नगरमें रहता था। राय बहादुरने उसको बुलवाया और कहा कि जापानी लामाको तिब्बती भाषा पढ़ा दो। वह लामा सपरिवार अपने उस मकानमें आगया। वह मुझे पढ़ानेमें बहुत ही सुखी था। मैं उसीके घरमें रहने लगा जिससे मुझे पढ़नेमें और भी सुभीता हो गई। साथ ही साथ मैं दार्जिलिङ्गमें रहकर शिक्षा नहीं ग्रहण कर सकता था, क्योंकि उस समय मेरे पास केवल तीन सौ येन रह गये थे जो आधे समयके लिए भी काफी न थे।

लामा शबदंगके घरपर मैं बालकोंकी भांति रहता था। अर्थात् सवेरे स्कूल जाता था और तीसरे पहरको घरके लड़कोंके साथ पाठ याद करता था। विदेशी भाषा सीखनेका सबसे सुगम उपाय उसी देशके मनुष्योंके बीच रहना है। पर लामाके यहां रहकर मुझे यह नयी बात मालूम हुई कि बोलचालकी भाषा उस देशके बच्चोंसे बड़ी सुगमताके साथ सीखी जा सकती है। बच्चोंके बाद स्त्रियोंका नम्बर है। ६-७ मासके बाद ही मैं तिब्बती भाषामें साधारण बातचीत करने लगा। मेरा उत्साह

दिन दिन बढ़ने लगा। शामको मैं लामाके साथ घंटो तिब्बती भाषामें बातें करता और कभी कभी वे तिब्बतकी कहानियां सुनाते और मैं चुपचाप बैठकर सुना करता।

तीसरा परिच्छेद।



तिब्बतकी बर्बरताका नमूना।

एक दिन लामा शबदंगने यों कहना आरम्भ किया–तिब्बतमें मैंने जिससे बुद्धधर्मकी दीक्षा ली थी वे सबसे बड़े लामा और बड़े भारी विद्वान थे। तिब्बतके डिपुटी पोपको भी उन्होंने ही पढ़ाया था। उनका नाम सेंगचेन कोरगी चेन था। इन्होंने शरतचंद्र दासको भी पढ़ाया था। यद्यपि राय बहादुरको शिक्षा थोड़े दिनोंतक थी तथापि इसका परिणाम बहुत ही दुःखद हुआ। शरत बाबूके भारतवर्ष लौट आनेपर तिब्बत सरकारको विदित हुआ कि तिब्बतमें शरतबाबू जिन लोगोंके साथ थे, जिसने उन्हें पास दिलवाया था, जिसके घरमें वह ठहरे थे वे सब तथा बड़े लामा कैद कर लिये गये और बड़े लामाको तो इस साधारण अपराधके लिये प्राणतक देने पड़े।

अनेक प्रमाण अब भी वर्त्तमान हैं जिनसे उस पवित्र लामाकी विद्वत्ता और बौद्धधर्मकी दृढ़ताका पता चलता है। लोगोंकी उसमें अपार श्रद्धा भक्ति थी। उसकी मृत्युपर जो कवितायें लिखी गई, वे बड़ी ही हृदय-ग्राही थीं। इस घटनाकी

सत्यताका पर्याप्त प्रमाण मुझे तिब्बतकी राजधानीमें मिला था, जिस समय मैं भिक्षुकके वेशमें वहाँ ठहरा था। शरतचन्द्रके लौट आनेपर यह खबर चारों ओर फैल गई कि वह गुप्त राजदूत थे। लामा सेग चेनने समझ लिया कि मृत्यु दण्ड अवश्य मिलेगा पर वह भी अधीर नहीं हुए। जब उनके मित्रोंने उनसे कहा कि राय शरतचन्द्रसे सम्बन्ध रखनेके कारण आपपर घोर विपत्ति आने वाली है उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे ईश्वरने केवल इसीलिये भेजा है कि मैं समस्त मानव-जातिको बौद्धधर्मका सन्देश दूं। मुझे इससे कोई प्रयोजन नहीं कि शरत बाबूका यहां आनेका क्या प्रयोजन था। पर यदि कर्त्तव्य पालनके लिये मुझे मृत्युदण्ड मिले तो लाचारी है।" भारतवर्षमें बुद्धदेवकी मूर्त्तियां तथा पूजाके पात्र भेजनेके अतिरिक्त इन्होंने बहुतसे उपदेशकोंको भी भेजा था। इससे विदित होता है कि प्रचारके लिये उनमें बड़ा उत्साह था। मेरे गुरु मंचूरियाके लामा सेराब ग्यांमत्सो जो दार्जिलिङ्गके घूमपलमें रहते थे उन्हींमेंसे एक थे। अभाग्य-वश उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई पर इन कामोंसे उनकी महती आकांक्षाओंका पता चलता है। उनको इस बातका बड़ा दुःख था कि बुद्धदेवकी जन्मभूमिमें बौद्धधर्मका सर्वथा लोप हो गया। वे वहां उसकी पुनः स्थापना करना चाहते थे। जापानमें ऐसे बौद्ध धर्माध्यक्ष बहुधा मिलते हैं जो विदेशोंमें प्रचारके पक्षपाती हैं। पर तिब्बतमें ऐसे मनुष्यके दर्शन दुर्लभ हैं। इससे लामा सेंगचेनकी महत्ताका पता

लगता है। राष्ट्र या जातिके भेद भावको दूरकर वह एक भ्रातृभावके पक्षपाती थे। अधिकारी वर्गमें उनके अनेक शत्रु थे जो सदा उनके विनाशका अवसर ढूंढ़ा करते थे। प्रोफेसर शरतचन्द्रका समाचार उनके लिये बड़ा ही उपयोगी निकला। कुछ आदमी दार्जिलिंगमें भेजकर यह निश्चय किया कि राय शरतचन्द्र बहादुर वास्तवमें ब्रिटिश सरकारके गुप्तचर होकर आये थे। इसके बाद वे लोग गिरफ्तार कर लिये गये जिनका शरतचंद्रसे किसी प्रकारका सम्बन्ध था। और अंतमें लामा सेंगचेनको इस अपराधपर फांसी दी गई कि उन्होंने परदेशी गुप्तचरको ठहराकर उसे स्वदेशके भेद बतलाये। वे कोनबो नदीमें डुबोकर मारे गये। जब मैं उस समयके दृश्यको स्मरण करता हूं तो मेरे मित्र लामा शबदुंगकी करुणा भरी मूर्त्ति मेरी आंखोंके सामने नाचने लगती है। जिस समय लामा महाशय नदी तटपर लाये गये, सहस्रों मनुष्य उनके लिये रोते थे। पर वे शान्तचित्त एक पत्थरकी चट्टानपर बैठे ध्यानपूर्वक धर्मपुस्तक पढ़ रहे थे। वे स्वच्छ मोटा वस्त्र पहने हुए थे। इतनेमें जल्लादने उनकी कमरमें रस्सेका एक छोर बांधते बांधते पूछा-"क्या आपको कुछ कहना या करना है?" उन्होंने गम्भीर होकर उत्तर दिया, 'थोड़ी देरमें मैं धर्मपुस्तकका पाठ समाप्त कर अपनी उंगलीको तीन बार हिलाऊंगा तब तुम मुझको नदीमें डुबो देना।' इसी समय भीड़में घबराहट फैल गई। सब लोगोंकी दृष्टि ब्रह्मपुत्रके निर्दयी पानी, क्रूर जल्लाद और पवित्र लामाकी ओर थी। उन

लोगोंको अपने रोनेके अतिरिक्त और कोई शब्द सुनाई नहीं देता था। उनके सामने जनताका हृदयसम्राट्, सच्चरित्र, पूर्ण विद्वान् लामाका शरीर धर्माधिकारके वस्त्रोंसे शून्य जेलके वस्त्रमें विराजमान था और शत्रुओंके द्वेषका शिकार बन रहा था। वे जानते थे कि भारी अन्याय हो रहा है पर उसका प्रतीकार नहीं कर सकते थे। केवल रोकर ढाढ़स बांध रहे थे। आकाश मेघाच्छन्न था, धीरे धीरे बूंदे पड़ रही थीं। इतनेमें लामा महाशयने अपना एक हाथ ऊपरको उठाया। इसका आशय लोगोंने समझ लिया। सब चिग्घाड़ मार कर रोने लगे। एक, दो, तीन बार उन्होंने उंगली उठाई पर किसी भी जल्लादको उनके पास आनेका साहस न हुआ। वे स्वयं रोते थे। यह देखकर लामा महाशयने कहा, 'मेरा समय आ गया है, तुम लोग क्या कर रहे हो?' यह सुन कर जल्लादोंने बड़े दुःखसे लामाकी कमरमें एक भारी पत्थर बाँधकर उन्हें ब्रह्मपुत्र नदीके पानीमें डाल दिया। थोड़ी देर बाद उन्होंने रस्सीको ऊपर खींचकर जांच की तो ज्ञात हुआ कि अभी प्राणपखेरू नहीं उड़ गये हैं। उन्होंने फिर उन्हें पानीमें छोड़ दिया। दूसरी बार फिर उठाया तो भी जीता पाया। उपस्थित सब लोग अब चिल्ला उठे, '[illegible]को छोड़ देना चाहिये।' जल्लादोंका भी साहस जाता रहा। इतनेमें कुछ देर हुई। लामा महाशयको बोलनेकी शक्ति हो गई। उन्होंने कहा, 'मेरे मरनेपर दुःखी मत हो, मेरा कार्य समाप्त हो गया है। मैं सुखपूर्वक मर रहा हूं। मेरे पापोंका यहींपर अन्त हो गया

है और अब मेरे पुण्योंका उदय होगा। मेरे घातक तुम लोग नहीं हो। मेरी केवल यही इच्छा है कि मेरी मृत्युके बाद भी तिब्बत-में बौद्धधर्म्मकी उत्तरोत्तर वृद्धि हो। यह सुनकर जल्लादोंने शोक संतप्त हृदयसे लामाको तीसरी बार पानीमें डाल दिया। और जब बाहर निकाला तो शरीर प्राणहीन था। तिब्बतकी रीतिके अनुसार लामाके शरीरके प्रत्येक अङ्ग अलग अलग करके नदीमें फेंक दिये गये। यह बात सब लोगोंको और विशेष कर बौद्धमतवालोंको माननी पड़ेगी कि वह मनुष्य सर्वसाधारणसे कई अंशमें अवश्य ही विशिष्ट था जिसने अपना शरीर धर्मके लिये दे दिया और मरते समय भी मनुष्य अथवा ईश्वरको दोष न देकर पूर्ण शान्तिके साथ प्राण दिये। मेरे ऊपर इस कहानीका बहुत असर पड़ा क्योंकि मैं तिब्बतकी यात्रा कर रहा था और सफल मनोरथ होना चाहता था। तो क्या ऐसी घटनाओंका होना असम्भव था!



चौथा परिच्छेद ।

झूठा वेश ।

आज सन् १८९८ की जनवरीकी पहली तारीख थी। मैं सवेरे उठा और सदाकी भांति सवेरेका अधिकांश समय धर्म-पुस्तक पढ़नेमें बिताया और सम्राट् तथा सम्राज्ञीके दीर्घजीवनकी शुभ कामना की।

मैंने अगले बारह महीने तिब्बती भाषा सीखनेमें लगाये और इतने दिनोंमें मुझे बोल चाल तथा किताबी भाषाका पूरा ज्ञान हो गया। सन् १८९९ के आरम्भमें मैंने तिब्बतके लिये प्रस्थान करनेका विचार किया। अब प्रश्न यह उठा कि मैं किस मार्गसे जाऊं।

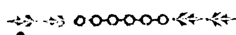
खम्बूरोंग अर्थात् बीच घाटीके गुप्तमार्गके अतिरिक्त तीन मार्ग दार्जिलिंगसे तिब्बतको गये हैं। एक दार्जिलिंगसे उत्तर पूर्वकी ओर सीधा न्याटोंग होकर जाता है। दूसरा कञ्चन गंगाके पश्चिमी किनारेको पार करता बारोंगलसे तिब्बतकी सीमा बरोंग होकर जाता है, और तीसरा सिकिमसे सभ्यजोंग होकर लासा जाता है। इन तीनों मार्गका प्रवेश द्वार दृढ़ सुरक्षित है। इधरसे होकर किसी विदेशीका तिब्बतमें प्रवेश असम्भव है। राय शरतचन्द्र बहादुरने मुझसे कहा कि यदि आप न्याटोंगके फाटकसे जायं और वहांके संत्रियोंसे विनीत प्रार्थना

करें कि आप जापानी पुरोहित हैं और केवल बौद्धधर्मकी दीक्षा लेनेके लिये यहां आये हैं तो सम्भव है कि लोग आपको जाने दें। पर यह युक्ति मुझे न जंची। जो कुछ मैंने अपने लामा गुरुसे सुना था, उससे मैं अपने मित्र शरतबाबूकी रायसे सहमत न हो सका। मेरी समझमें नेपाल या भूटान होकर जानेमें सुविधा थी। इन दोनोंमें भी नेपालका मार्ग अधिक सुगम प्रतीत हुआ। क्योंकि भूटानमें बुद्धदेव कभी नहीं गये थे। अतएव वहां उस धर्मके विषयमें कुछ नयी बात ज्ञात होनेकी आशा नहीं थी, यद्यपि वहां दो चार बार तिब्बतके पुरोहित गये थे। मुझे मालूम हुआ कि नेपालमें बुद्धदेवके बहुत अनुयायी हैं और वहां बौद्धधर्मके सम्पूर्ण ग्रंथ संस्कृतमें हैं। यदि मैं तिब्बतमें प्रवेश न भी कर सका तो इसका उपयोग कर सकूंगा और तबतक नेपालमें एक भी जापानी नहीं जा सका था। अबतक पश्चिमी यूरोप और अमेरिकावासी ही आये थे। इन्हीं कारणोंसे नेपाल होकर ही जाना स्थिर किया।

मार्ग निश्चय हो गया। पर यदि मैं दार्जिलिंगसे सीधा नेपाल जा सकता तो बड़ा ही अच्छा होता, क्योंकि एक तो प्राकृतिक सौंदर्यकी छटा देखनेमें आती और दूसरे मार्गमें जितने बौद्धतीर्थ मिलते उनके भी दर्शन हो जाते। पर मेरे लिये यह असम्भव या भयावह था। दार्जिलिंगमें तिब्बतके बहुत लोग रहते थे। प्रायः वे सब जानते थे कि मैं तिब्बतकी यात्रा करनेके लिये तिब्बती भाषा सीख रहा हूं। और यह निश्चय था

कि जिस दिन मैं तिब्बतके लिये रवाना होऊंगा वे मेरे पीछे लग जायंगे और यातो मार्गमें ही मेरा काम तमाम कर देंगे या तिब्बतमें पकड़वा देंगे; क्योंकि इसके लिये उन्हें प्रचुर पारितोषिक मिलेगा। इसलिये मैंने यह सम्वाद फैला दिया कि किसी आकस्मिक घटनाके कारण मैं जापानको लौट जानेको लाचार हुआ हूं। निदान मैं कलकत्तेके लिये रवाना हुआ और पांच जनवरी १८६६ को वहां पहुंचा। केवल शरतबाबू ही इस भेदको जानते थे। राय बहादुरने प्रसन्नता पूर्वक विदा किया और मेरी सफलताके लिये प्रार्थना की। यहीं इतना और लिख देना उचित होगा कि दार्जिलिंगसे रवाना होनेके पहले मुझे ६३०) रुपये और मिल गये जो मेरे जापानी मित्रोंने जापानमें एकत्रित कर मेरे पास भेजे थे।

पांचवां परिच्छेद



नेपाल यात्रा

इस बार कलकत्ते नेपाल सरकारके मन्त्रीसे मेरा परिचय हो गया। आपका नाम जीव बहादुर था। इस समय आप नेपाल सरकारकी ओरसे तिब्बतमें रेजिडण्ट हैं। उन्होंने कृपा करके दो प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके नाम मुझे पत्र दिया। वहांसे चलकर २० जनवरी १८६६ को मैं बुद्ध गया पहुंचा। यहां शाक्य मुनिका

पवित्र स्थान है। यहां मुझे लंकाके धर्मपाल महाशय जी मिले। वे भी दर्शनके लिये आये हुए थे। उनसे मुझसे देरतक बातचीत होती रही। जब उनको विदित हुआ कि मैं तिब्बतकी यात्रा कर रहा हूं तो उन्होंने मुझसे प्रार्थना की कि मेरी तरफसे दलाई लामाके लिये कुछ भेंट लेते जाइये। एक भेंट चांदीकी डिबियामें बन्द बुद्धदेवकी मूर्त्ति थी। डिबिया पगोडाकी शकलकी बनी हुई थी। दूसरी भेंट तालपत्रपर लिखी धर्म-पुस्तककी थी। मैंने उनकी प्रार्थनाको सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने कहा—"तिब्बत जानेकी मुझे भी बड़ी अभिलाषा है पर जबतक बुलाया न जाऊं जाना निष्फल होगा। उस रातको मैं उसी बोधि वृक्षके नीचे उसी चट्टानपर ध्यानावस्थित हुए बैठ रहा जहां प्रायः २५०० वर्ष पूर्व भगवान बुद्धदेव साधनासे उस पदवीको पहुँचे थे। जो आनन्द मुझे उस रातको प्राप्त हुआ वर्णनातीत है। केवल इतनाही कह सकता हूं कि मैं परम शान्त था।

मैं बुद्ध गयामें कई दिन रहकर रेलसे नेपालके लिये रवाना हुआ। एक दिन और एक रातकी यात्राके बाद २३ जनवरीको सगौली स्टेशन पहुंचा। नेपालकी सरहद सगौली स्टेशनसे दो दिनकी राह है। यहांतक तो अंगरेजी भाषा बोली जाती है। पर इसके बाद अंगरेजी या तिब्बती दोनों भाषायें निष्प्रयोजन हैं। यहां नैपाली अथवा हिन्दुस्तानी भाषासे काम चल सकता था पर मुझे इन दोनोंमेंसे एक भी न मालूम थी। अतएव यहींपर मुझे ठहरकर नेपाली भाषाका ज्ञान प्राप्त करना

पड़ा। अबतक तो केवल तिब्बती भाषा पढ़नेमें लगा था और किसी अन्य ओर ध्यान नहीं दे सका था। सौभाग्य वश मुझे वहां अधिक दिन नहीं ठहरना पड़ा। सगौलीके पोस्टमास्टर बङ्गाली थे। वे अंगरेजी और नेपाली दोनों भाषाओंमें निपुण थे। इस कामको शीघ्र पूरा करना था, अतएव मैंने नेपाली भाषाके प्रत्येक शब्दको जो मेरे शिक्षक बतलाते थे लिख लेता था। सगौली पहुंचनेके दूसरे दिन नोट बुक हाथमें लिये मैं स्टेशनके पास टहल रहा था। मैंने तीन यात्रियोंको रेलसे उतरकर साथ जाते देखा। उनमें एककी अवस्था प्रायः ४० वर्षकी थी और वह तिब्बती पोशाक पहने था। दूसरा पुरोहित था। उसकी अवस्था ५० वर्षकी थी और तीसरा इनका नौकर था। इनको देखते ही मेरे हृदयमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि मैं इनके साथ जा सकूं, तो बड़ा अच्छा हो। साहसकर मैं उनके पास पहुंचा और पूछा 'आप लोग कहां जा रहे हैं?' उन्होंने उत्तर दिया "हमलोग नेपाल जा रहे हैं हमलोग नवागन्तुक नहीं हैं।" हममेंसे एक तिब्बतका रहनेवाला है।" इसके बाद उन्होंने मुझसे पूछा 'आप कहांके रहनेवाले हैं?' मैंने उत्तर दिया "मैं चीनी हूं।" उन्होंने फिर पूछा "किस मार्गसे आप आ रहे हैं? जल या स्थलसे?" मैंने उत्तर दिया 'स्थलसे'। इस प्रश्नके उत्तरमें बड़ी सावधानीकी आवश्यकता थी; क्योंकि उस समय तिब्बत-में यह नियम था कि जलमार्गसे आया कोई भी चीनी तिब्बतमें नहीं प्रवेश पा सकता था। इस भांति उनसे बातें करता मैं

अपनी कुटीके सामने आ पहुंचा। यहांपर होटल या सरायें नहीं हैं। ठहरनेके लिये सड़कके किनारे पुराने चालके फूसके झोपड़े बने हुए हैं। इनके लिये किराया नहीं देना पड़ता। केवल खानेकी सामग्रीके दाम देने पड़ते हैं। इन्हींमें मैं ठहरा हुआ था यहांपर पहुंचकर मैंने उनसे बिदा ली। वे दूसरे झोपड़ेमें उतरे। थोड़ी देर बाद पुरोहित और उनके साथी मेरे पास आये। वे लोग मेरा पता लगानेका उद्योग करने लगे। आते ही उन्होंने मुझसे पूछा "चीनके किस प्रान्तमें आप रहते हैं?" मैं समझ गया था कि मेरी जांच हो रही है। इसलिये मैंने उत्तर दिया, 'मैं फूशी प्रान्तका रहनेवाला हूं।' आप चीनी भाषा अवश्य ही बोल सकते होंगे? मैंने कहा 'हां'। मेरा उत्तर सुन वह स्पष्ट चीनी भाषामें बात करने लगा। मुझे बड़ा जोर करना पड़ा। अन्तमें लाचार होकर मैंने उनसे कहा—'आप शुद्ध चीनी भाषा बोल रहे हैं परन्तु मैं केवल फूशीकी प्रान्तीय भाषा जानता हूं, अतएव मैं आपकी बातें नहीं समझ सकता। पर इतनेहीसे मेरा छुटकारा नहीं हुआ। उन्होंने मुझसे चीनीमें लिखनेके लिये कहा। मेरी लिखा-वट अंशतः स्पष्ट थी और अंशतः अस्पष्ट। अन्तमें यही निर्णय हुआ कि हमलोग तिब्बती भाषामें बातचीत करें। बातें करते करते मुझसे पूछा 'आप स्थलसे आये हैं तो तिब्बतका कौन प्रान्त मार्गमें मिला था?' मैंने उत्तर दिया 'लासासे दार्जिलिङ्ग होता हुआ बुद्ध गयाकी यात्रा कर यहांतक आया हू।' उसने मुझसे फिर पूछा 'लासा नगरके किस महल्लेमें आप रहते थे?' मैंने

उत्तर दिया "सीराके मठमें।" उसने फिर मुझसे पूछा "क्या आप बुद्ध महाधोश तत्सो केन्योको जानते हैं? दार्जिलिङ्गमें लामा शबदङ्गसे वहांका सब हाल मालूम हो चुका था। मैंने उत्तर दिया 'हां'। यहांतक तो मैं सफल रहा पर मुझे प्रत्येक क्षण भय लगता था कि कहीं फंस न जाऊं। इसलिये मैंने उनके सन्देहको दूरकर देना उचित समझा। शबदङ्गने जो समाचार मुझे दिये थे उनसे इस काममें बड़ी सहायता मिली। मैंने वहांकी दो चार पतेकी बातें बतलाईं। उनका सारा सन्देह दूर हो गया। पर मैं उनके बारेमें अभीतक कुछ भी नहीं जान सका था।

उन्होंने मुझसे फिर पूछा 'आप किसके पास जा रहे हैं?' क्या आप कभी नेपाल गये हैं?' मैंने उत्तर दिया "नहीं"। मेरे पास दो परिचयपत्र हैं। नेपाल सरकारके मंत्री जीव बहादुरने महाबोध मठके लामाके नाम लिखे हैं। इस बातसे उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा-जीव बहादुर मेरे घनिष्ट मित्र हैं। उन्होंने अन्य किसीके नाम पत्र नहीं दिया होगा। क्या आप मुझे वह पत्र दिखला सकते हैं? मैंने पत्र निकालकर उनके हाथपर रख दिया! पत्र देखते ही वे हंस पड़े और बोले—'यह पत्र मेरे ही लिये हैं।'

यहांपर यह लिख देना आवश्यक होगा कि नेपालमें 'मित्र' शब्दका अर्थ बहुत गम्भीर है। मित्र भाईके समान समझा जाता है? मैत्री बड़े समारोहसे की जाती है। विवाहकीसी धूमधाम होती है। सभी आत्मीय कुटुम्बी निमंत्रित किये

जाते हैं। उत्सव मनाया जाता है, भोज दिया जाता है। अन्तमें दोनों मित्र अपने शराबके प्याले आपसमें बदलते हैं। इतना करके ही एक नेपाली दूसरे नेपालीको मित्र कह सकता है।

जो महाशय मुझसे इस तरहका प्रश्न कर रहे थे वे ही महा-बोध मठके प्रधान लामा थे और जीव बहादुरके मित्र थे। इस अचानक भेंटसे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे अपने साथ रखनेके लिये मैंने उनसे प्रार्थना की। अब मैं निःसहाय न रहा। मैं नेपालके प्रतिष्ठित व्यक्तिका मेहमान और साथी था। मेरे नये मित्रने दूसरे ही दिन नेपालके लिये प्रस्थान करनेका प्रस्ताव किया और यह भी निश्चय हुआ कि घोड़ेपर न चढ़कर पैदल ही चलेंगे। दोनों ही बातें मुझे पसन्द आईं क्योंकि एक तो उनके सहवासका विशेष अवसर मिलता और दूसरे प्राकृतिक दृश्योंका आनन्द मिलता और तीसरे गुप्त रूपसे ऐसे समाचार संग्रह करता जिससे मुझे तिब्बतकी यात्रामें सहायता मिलती।

हमलोग इस तरह बातें कर ही रहे थे कि लामाके दोनों नौकर घबराये हुए दौड़ते आये और बोले "झोपड़ेमें चोरोंने सेंध लगाया है।" यह सुनते ही लामा मुझसे विदा हुए। पीछे मुझको मालूम हुआ कि उनके तीन सौ पचास रुपये कुछ किताबें और कपड़े चोर ले गये। मेरी भाग्य प्रबल थी क्योंकि मकान मालिकने मुझसे कहा कि यह चोर मेरा सामान चुरानेके

फेरमें था। पर मेरे बदले मेरे मित्रपर ही हाथ साफ किया। मुझे बड़ा दुख हुआ। इसी समय मुझे विदित हुआ कि जिस लामासे मैं अभीतक बात कर रहा था उसका नाम बुद्धवज्र है और बृद्ध पुरोहितका नाम मायर है। वह लासाके डेवन मठका धर्माध्यक्ष है।

२५ जनवरीको प्रातःकाल हमलोग वहांसे सीधे उत्तर-को चले। दूसरे दिन हमलोग बेलगंजी पहुँचे। वही नेपालका पहला फाटक है। वहांपर मुझे एक पास मिला कि मैं चीनी हूं और तिब्बतमें रहता हूं। रात हमलोगोंने एक गांवमें बिताई। यह गांव दलाई जङ्गलके किनारे था। अट्ठाईसको हमलोग शिमला गांव पहुंचकर सीधे जंगल होकर चले। यह जङ्गल आठ मील चौड़ा था। शामको हमलोग एक गांवमें पहुंचे जो पहाड़ी नदी विचागोरीके किनारेपर था। रातभर हमलोग वहीं टिके थे। रातको प्रायः दस बजे मैं अपनी डायरी लिख रहा था, मैंने खिड़कीमेंसे सिर बाहर निकालकर देखा चन्द्रमाकी निर्मल किरणें चारों ओर फैल रही थीं। चारों ओर अटल शान्तिका साम्राज्य था। केवल नदीका कलकल शब्द सुनाई दे रहा था। सहसा मुझे भीषण रव सुनाई पड़ा। पूछनेपर सरायवालेने कहा कि यह शेरकी गरज है। शिकार खाकर वह सोतेमें पानी पीने आया है और सन्तुष्ट होकर प्रसन्नता प्रगट कर रहा है।

दो दिनतक हमलोग इसी भांति गांव और पहाड़ोंसे होकर

चले। तीसरे दिन बिनबित पहुंचे। यहांतक तो सड़क ऐसी थी कि उसपर गाड़ी इत्यादि जा सकती थी। पर यहांसे सड़क ऐसी ढालवीं थी कि पैदल अथवा पालकीपर जानेके सिवाय और उपाय नहीं था। हमलोग पैदल ही चल पड़े और चार बजे प्रातःकाल पहाड़ी पर चढ़ने लगे। चढ़ाईके बाद हमलोग दूसरे फाटक टिस्तेस पर पहुंचे। यहांपर चूंगीघर और एक दुर्ग है। इसमें बहुत सिपाही रहते हैं। यहांपर हमारे सामान इत्यादिकी जांच हुई। वहांसे हमलोग टिस्गड़ीकी चोटीपर चढ़े। वहींसे हिमालयका मनोरम दृश्य मैंने देखा। टिस्गड़ीसे उतर कर मारकू नगर पहुंचे और रातको वहीं ठहरे।

पहली फरवरीको हमलोग चन्द्रगिरिकी चोटीपर चढ़े। वहांसे नेपालकी राजधानी काठमण्डू एक तसवीरसी मालूम होती थी। थोड़ी दूर नीचे दो बुर्ज दिखाई पड़े जिनपर सोनेका पानी चढ़ा था। लामा बुद्धवज्रने बतलाया कि इनमेंसे एक कश्यप बुद्धकी और दूसरी सिखी बुद्धकी समाधि है। चोटीसे नीचे उतरकर हमें चार पांच मनुष्य दो घोड़ोंके सहित मिले। ये आदमी बुद्धवज्रको लेनेके लिये आये थे। हम दोनों आदमी दोनों घोड़ोंपर सवार हो गये। पहाड़से थोड़ीही दूरपर जंगलमें हमको प्रायः तीस आदमी और मिले। सगौलीसे यह स्थान प्रायः १८५ मील है।

छठा परिच्छेद ।



भिक्षुकसे मैत्री ।

कश्यप बुद्धकी समाधिके पासके नगरको नाम बोध है । लामा बुद्धवज्र उस नगरके स्वामी थे और यम्बू चोर्टन चिन्पोके अधिकारी थे । काठमण्डूको याम्बू कहते हैं । और चोर्टन चिन्पोका अर्थ है "बड़ो मीनार" । इस मीनारका पूरा नाम 'जा रंग कशोल चोर्टन चन्पो' है । उसके संबन्धमें विचित्र कथा प्रचलित है । कथा है कि कश्यप बुद्ध शाक्यमुनि बुद्धसे बहुत पहिले हुए थे । कश्यप बुद्धके मरनेपर एक वृद्धा स्त्रीने अपने चार बच्चोंके साथ उनके शवकी समाधिमें बैठकर उसीपर यह बुर्ज उठाना प्रारम्भ किया । कार्य्यारम्भसे पहले उसने राजासे आज्ञा ले ली थी । नींव और चबूतरेके कामकी सुन्दरता और सौम्यता देखकर लोग आश्चर्य्य करने लगे । सरकारी कर्मचारी और धनिकोंकी चिन्ता और बढ़ गयी कि दरिद्र बुढ़िया ऐसी भारी समाधि बना सकती है तो हम लोगोंको पहाड़ बनाना पड़ेगा । इसलिये उन लोगोंने राजासे प्रार्थना की कि उस वृद्धाको उस कामसे रोक दें । राजाने उत्तर दिया कि मैंने उसे आज्ञा दे दी है । अब मैं लौटा नहीं सकता । इस भांति यह समाधि तैयार हुई । पर मेरी समझमें यह समाधि शाक्यमुनि बुद्धके

पीछे बनी है क्योंकि संस्कृत लिपिमें इसका भिन्न वर्णन है और वह अधिक विश्वसनीय है।

हरसाल सितम्बर फरवरीके बीच तिब्बत मंगोलिया, चीन, और नेपालसे दलके दल यात्री यहांपर दर्शनार्थ आते हैं। ऐसे खराब मौसममें लोगोंके यहां आनेका यह कारण है कि गर्मीमें हिमालयमें मलेरियाका प्रकोप बढ़ता है। अधिकांश मनुष्य तिब्बतसे आते हैं। इनमें धनाढ्य तो बहुत थोड़े ही रहते हैं। अधिकांश संख्या भिखारियोंकी होती है जिनके पास न घर है न द्वार। जाड़ेके दिनोंमें मन्दिरके आस पास बिताकर गर्मीमें वे तिब्बत लौट जाते हैं।

मैं नेपाल पहुंच गया। वहां जानेका एकमात्र कारण यही था कि मैं तिब्बत जानेकी राह ठीक कर लूं। मेरा संकल्प इस प्रकारका था कि मैं उसे किसीपर प्रगट नहीं कर सकता था। यहांतक कि अपने मित्रपरभी नहीं प्रगट कर सकता था। क्योंकि एक तो लामा बुद्धवज्रकी समझमें मैं एक बहुतही चतुर और विद्वान् चीनी यात्री था और उनका ख्याल था कि मैं प्रधान मार्गसे लासा होकर चीनको चला जाऊंगा और दूसरे वे नेपाल महाराजके तिब्बती दुभाषिया थे। इससे यदि मैं अपना भेद उन्हें बता देता, तो वे अवश्य ही मेरा सब हाल महाराजसे कह देते और परिणाम यह होता कि सहायता करना तो दूर रहा मेरी यात्रा ही रोक दी जाती। यहांपर यह लिख देना उचित होगा कि नेपालके लोग लामा बुद्धवज्रको

ग्यालामा भी कहते थे। इसका अर्थ 'चीनी लामा' है। बुद्ध वज्रके पिता चीनी पुरोहित थे। पर माता नेपाली जातिकी थी। प्राचीन सम्प्रदायके होनेसे उन्हें विवाहकी स्वतन्त्रता थी। इस कारण लामा बुद्धवज्र मुझे देशवासी समझकर विशेष कृपा रखते थे। पर मुझे केवल गुप्त राह ढूंढ़ निकालनेकी चिन्ता थी।

मुझे ख्याल हुआ कि तिब्बतके भिखारी जो यहां दर्शनके लिये आये हैं विना पासके होते होंगे और विशिष्ट लोगोंके अतिरिक्त कोई भी—तिब्बतका रहनेवाला भी—पास न होनेपर भरपूर घूस दिये विना प्रवेश नहीं पा सकता था। यह दरिद्र भिखारियोंके सामर्थ्यके बाहर था। इस विचारसे आशान्वित होकर फकीरोंसे मित्रता करने लगा। कश्यप बुद्धकी समाधिके पास इनके दलके दल थे। मेरी उदारताने मुझे उन लोगोंमें प्रसिद्ध कर दिया। पहले तो वे लोग मुझसे अलग रहे पर जब उन लोगोंको विदित हो गया कि शंका करनेका कोई कारण नहीं है तो वे मुझसे एकदम हिल-मिल गये। मुझे अनेक गुप्त रास्तोंका पता लगा पर एक भी निरापद नहीं था। जैसे न्यालमकी गुप्त राहसे होकर जानेसे किरोंगका फाटक तो न मिलता पर आगे जाकर पकड़े जानेका भय था। शारकोंग्याकी राहसे जाकर हेनरीके द्वारपर पकड़ा जानेका भय था। सारांश यह कि तिब्बत जानेके लिये कोई भी मार्ग निरापद नहीं था। पास पाना और घूस देना उन भिखारियों-के सामर्थ्यके बाहर था। वे अनुनय विनय और शुभ आशीर्वाद-से प्रवेश पा जाते थे। पर मेरे लिये यह भी असम्भव था

क्योंकि उसमें भी भेद खुल जानेका भय था। मैं अपने प्रयत्नमें लगा रहा और अन्तमें सफल हुआ। मुझे मालूम हुआ कि चक्कर मारकर जानेसे मैं निरापद ल्हासा पहुंच सकता हूं। यह मार्ग जंगतंगकी राहसे मान सरोवर पहुंचता था। यही राह मैंने चुनी। पर इससे लोगोंके मनमें शंका उत्पन्न हो सकती थी कि अकारण मैंने यह भयानक मार्ग क्यों पसन्द किया। इसके लिये भी मुझे बहाना मिल गया। एक दिन मैंने अपने मित्र लामासे कहा मैंने चीनी पुस्तकोंमें पढ़ा है कि मानसरोवरके पास कैलाश पर्वत तीर्थ है। मेरी इच्छा है कि मैं उस तीर्थ क्षेत्रका दर्शन करूं। आप कृपाकर उचित प्रबन्ध कर दीजिये। मेरी बात सुनकर उन्होंने मुझसे कहा,—"मेरी भी कई बार वहां जानेकी इच्छा हुई पर मार्ग इतना बीहड़ है कि केवल एक दो नौकरोंके साथ जानेका साहस करना प्रमाद है। आप भी उस संकल्पको छोड़िये।" मैंने उत्तर दिया "बुद्धदेवने भी कहा है, जो उत्पन्न हुआ वह अवश्य मरेगा, मुझे मृत्युका भय नहीं है। क्या मेरी मृत्यु यहींपर नहीं हो सकती? इससे तो तीर्थयात्रामें मृत्यु होना कहीं श्रेयस्कर है।" उपदेश देना निरर्थक समझकर मेरे मित्रने तीन आदमी दिये जिनमें एक वृद्धा स्त्री थी। इसकी अवस्था साठ वर्षकी थी। पर राहकी कठिनाइयोंको सहन करनेकी उसमें अपूर्व शक्ति थी। यह लोग खामके रहनेवाले थे। यह नगर डाकुओंके लिये बदनाम है। परन्तु मुझको विश्वास दिलाया गया था, कि यह लोग मेरे साथ विश्वासघात न

करेंगे। इसके सिवाय ग्यालमाने अपना एक विश्वासी नौकर मेरे साथ टुकजी तकके लिये कर दिया कि वह मेरे नौकरोंकी जांच कर ले।

सातवां परिच्छेद।

—:o:—

मनोरम हिमालय

मार्च सन् १८९९ के आरम्भमें तीन पुरुष और एक वृद्धा स्त्रीके साथ मैं अपने दयालु मित्रसे विदा होकर सफेद टट्टूपर सवार होकर कश्यप बुद्धकी समाधिसे रवाना हुआ। उस दिन मेरी तबीअत अच्छी नहीं थी पर काठमण्डूमें और अधिक ठहरनेमें भय था कि कहीं मेरा पता न चल जाय। मेरा टट्टू पहाड़ी सवारीके लिये बहुत उपयोगी था। वहांसे मैं उत्तर पूरबको रवाना हुआ। काठमण्डूका यह भाग बहुत ही मनोरम था। इसी राहमें नागरयोन नामकी पहाड़ी मिलती है। यहीं बोधीस्वत्व नागार्जुनने तपस्या की थी। संध्याको हमलोग जीतलवीडी गांवमें पहुँचे। वहीं एक दूकानदारके यहां रात काटी।

नेपालके वर्त्तमान महाराजा हिन्दू हैं। जाति विचार उनके यहां हिन्दुस्तानका सा है। अन्य जातिके लोग न मकानके भीतर जा सकते हैं और न उनके साथ भोजन कर सकते हैं। इसलिये रात मुझे घरके बाहर किसी चट्टानपर अथवा जंगलमें बितानी

पड़ती थी। यहींपर काठमंडूसे मानसरोवरतककी यात्राका कुछ हाल लिख देना अच्छा होगा। यह प्रदेश अंगरेजी राज्यके बाहर है इससे मेरा विश्वास है कि आजतक कोई भी यूरोपियन या अमेरिकन इस ओर न आया होगा। अतएव मैं संक्षेप हाल लिख देना चाहता हूं।

तीसरे दिन ४० मील पारकर हमलोग चांग नगर पहुँचे। यह किरोंग नदी (त्रिशूली गण्डक) के पश्चिमी किनारेपर वसा है। नगरके उत्तर एक मनोहर जंगल है। रातको हमलोग उसी जंगलमें सोये। रातभर नदीका कल कल शब्द सुनाई देता रहा दूसरे दिन सवेरे पोखराको रवाना हुए। पोखरासे तिब्बतके किरोंग नगरका मार्ग केवल पांच दिनका है पर उस मार्गपर कड़ा पहरा रहता है। यहांसे तीन दिनमें ४ मील तेकर बरेंग और सरेंगमें हो अगर नदी पारकर हमलोग अलगाता नगर पहुँचे। यह नगर बूढ़ी गंगाके पश्चिमी किनारेपर है। उस नदीके ऊपर लोहेका झूलता हुआ पुल बना हुआ है। तिब्बतके साथ व्यवसाय होनेसे इस नगरका महत्व बढ़ गया है। बराबर नौ दिनतक जंगल, पहाड़, घाटी, नदी और अनुपम पहाड़ी दृश्यको देखते हमलोग सौ मील चलकर पोखरा पहुंचे। पोखराका प्राकृतिक दृश्य सबसे रमणीक था। यहां हर एक वस्तु सस्ती थी। यहां मैं ६ दिनतक ठहरा। आगे बढ़नेके पहले मुझे एक खेमा बनवा लेना जरूरी था। वह पच्चीस रुपयेमें तैयार हो गया।

पोखरासे हमलोग उत्तरको चले। यहांसे चढ़ाई इतनी कड़ी

हो गयी कि कहीं कहींपर घोड़ेसे उतर जाना पड़ता था और दो दो पहरतक पैदल चलना पड़ता था। एक दिन मैं घोड़ेपर चढ़ा बहुत ढालू पतली राहसे जा रहा था। मैं भविष्यकी चिन्तामें मग्न था। सहसा एक वृक्षकी डालीमें उलझकर गिर पड़ा। भाग्यवश मेरा घोड़ा वहींपर ठहर गया। घोड़ेकी लगाम मेरे हाथसे नहीं छूटी नहीं तो मैं हजारों फुट नीचे पहुंच गया होता। मैं उठने लगा पर मेरे कमरमें गहरी चोट लग गयी थी। मैं उठ नहीं सका। लाचार मुझे बारी बारीसे नौकरोंकी पीठपर सवार होकर एक मीलकी ऊंचाई चढ़ना पड़ा। पहाड़की चोटी-पर पहुंचकर मेरी पीड़ा बहुत बढ़ गयी। आगे बढ़ना असम्भव हो गया और वहांपर मैं दो दिनके लिये ठहर गया।

आठवां परिच्छेद



आपत्तियोंका सामना

इतने दिनों साथ रहनेसे मुझे अपने दोनों नौकरोंका हाल कुछ कुछ मालूम होने लगा। एक अधीर पर प्रत्युत्पन्नमति था। दूसरा शान्त था पर अपनी विद्याका उसे कुछ घमण्ड था। इससे वह पहलेको तंग किया करता था और बहुधा दोनोंमें झगड़ा हो जाया करता था। बुढ़िया शुद्ध शीला थी और उन दोनोंकी आदतोंसे पूर्ण परिचित थी। मैं इन तीनों हीको समान दृष्टिसे

देखता था पर समय समयपर बुढ़ियाका विशेष ख्याल रखता था। इसके कारण वह मुझे अधिक मानने लगी। एक दिन उसकी आकृतिसे ज्ञात हुआ कि वह मुझसे कुछ एकान्तमें कहना चाहती है। निदान दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने उसे पहले ही रवाना कर दिया और मैं बादको नौकरोंके साथ रवाना हुआ। मैं घोड़ेपर सवार था और नौकरोंके साथ सामान था। इससे वे पीछे पड़ गये और मैं शीघ्रही बुढ़ियाके पास पहुंच गया। मुझे देखते ही उसने कहा—"आपकी जान जोखिममें है। ये लोग आपको मार डालेंगे। ये दोनों डाकू और हत्यारे हैं। इन्होंने अनेकोंके प्राण लिये हैं। दूसरा यद्यपि शान्त है पर दूसरेका प्राण लेनेमें इसे जरा भी हिचकिचाहट नहीं। तिब्बतके उत्तर पूर्वी मैदानमें पहुंचते ही दोनों अथवा वह आतुर प्रकृतिवाला आपके ऊपर झपट पड़ेगा और लूट पाटकर मार डालेगा।" उसकी बातें सुनकर मैंने कहा—"यह नहीं हो सकता। वे दोनों बहुत ईमानदार मालूम होते हैं।" बुढ़ियाने कहा—"यदि मैं झूठ बोलूं तो ईश्वर मुझे मौतका दण्ड दे।" तिब्बतके लोगोंके लिये इस तरहकी शपथ साधारण बात न थी। बुढ़ियाकी बातपर मुझे पूरा विश्वास हो गया। मेरी चिन्ता और भी बढ़ गयी। बारह दिनमें केवल सौ मील चलकर हमलोग टुकजी पहुंचे। यहां नेपालीके गवर्नर हरकमान सुबा रहते थे। ग्यालामाकी कृपासे मैं उनका मेहमान बना। ग्यालामाका नौकर जो मेरे साथ था मेरे नौकरोंकी जांचकर और उन्हें वफादार पा

विदा हुआ पर वफादारी उनसे कहीं दूर थी। मैंने देखा कि इन लोगोंके साथ मेरी यात्रा भी न हो सकेगी। इधर मैं इस चिन्तामें पड़ा था उधर सम्वाद मिला कि तिब्बत सरकारने इन रास्तोंकी रखवालीके लिये पांच सिपाही नियुक्त कर दिये हैं। मेरी चिन्ता और भी बढ़ गयी।

अभी मैं गवर्नरके यहां ठहरा हुआ था। एक दिन संध्याको मेरे दोनों नौकर देशी शराबके नशेमें आपसमें लड़ने लगे। लड़ते लड़ते दोनों मेरे पास आये और बोले कि एकके रहनेपर दूसरा नहीं रह सकता। मेरे लिये यह अच्छा अवसर था। मैंने दोनोंका हिसाब चुकताकर निकाल दिया। बुढ़ियाको कुछ और देकर उसे उन दोनोंके साथ जानेको कह दिया। इस प्रकार मैंने एक सङ्कट तो टाला पर चिन्ता इस बातकी थी कि आगे क्या किया जाय। काठमण्डू लौट जाना तो विचारके बाहर था और आगेका मार्ग बन्द था।

गवर्नरके यहां एक मंगोलियन विद्वान भी ठहरे हुए थे। उनका नाम सेराब ग्याल्टसन था। वे पुरोहितोंको धर्मशिक्षा भी देते थे और डाक्टरी भी करते थे। वहां उनसे परिचय हो गया। मैंने दे [illegible] कि ये बौद्धधर्ममें प्रवीण और शास्त्रोंके भी मर्मज्ञ। हम दोन [illegible] पर ज्ञान बढ़ाना निश्चय किया अर्थात् वह मुझे तिब्बती बौद्धधर्मकी शिक्षा दें और मैं उन्हें चीनी बौद्धधर्म सिखाऊं। यह निश्चयकर हमलोग टुकजीसे विदा होकर हसरकूके लिये रवाना हुये। यहीं मङ्गोलियन

विद्वानका घर था। मार्गमें चूमिंकग्यास्टा (अर्थात् सौ सोते) मिला। संस्कृतमें इसका नाम मुक्तिनाथ है। यह हिन्दू और बौद्ध दोनोंहीका तीर्थस्थान है। इस स्थानका यह नाम इसलिये पड़ा कि यहां अगणित सोते हैं। इसके अतिरिक्त यहांपर पुराने ज्वालामुखीके भी चिह्न पाये जाते हैं। सम्भव है कि किसी समय यहांपर ज्वालामुखी रहा हो। रात हमलोगोंने काली गङ्गाके किनारे बिताई। दूसरे दिन सोता पार करनेमें हमें तीन घण्टा कठिन परिश्रम करना पड़ा। पहले मैंने घोड़ेपर सवार होकर पार करनेकी भूल की। एक तो मेरा बोझ दूसरे पानीके भीतर कीचड़। दो चार कदम आगे बढ़ते ही वह कीचड़में फंस गया। मैं उसपरसे कूदकर किनारेपर आ गया और वहांसे पत्थरोंके टुकड़े, वृक्षोंकी शाखायें इत्यादि उठा उठाकर उस कीचड़में फेंकने लगा, ताकि उनके भर जानेसे मेरे और मेरे मंगोलियन मित्र तथा उनके घोड़ेके उतरनेके लिये राह हो जाय। पत्थरोंके गिरनेसे जो पानी और कीचड़ उछला तो मेरा टट्टू भयभीत होकर उछला और दूसरी ओर किनारेपर पहुंच गया। पर मेरे मित्रका घोड़ा कदम न उठा सका और उसको उतारनेके लिये हमें पुल बनाना पड़ा। उस रातको हमलोग समर नगरमें ठहरे और दूसरे दिन हमलोग धवलागिरिके उत्तरसे होकर चले।

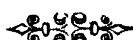
वहांसे चलकर हमलोग कीरुंग नगर पहुंचे। यहांके अधिकांश निवासी तिब्बती हैं। यहां मैंने प्रत्येक मकानके ऊपर सफेद

झण्डा फहराता देखा जिसपर मन्त्र लिखे थे। तिब्बतमें इसकी इतनी चलन है कि खीमेमें भी लोग इस झण्डेको लगाते हैं। वह रात जङ्गलमें काटी।

दूसरे दिन १० मील चलकर हमें हसरङ्ग दिखलाई पड़ा। यह छोटा नगर है, मैदानमें बसा है। इसकी लम्बाई ग्यारह मील और चौड़ाई तीन मीलसे कुछ अधिक होगी। चारों ओरसे बरफके पहाड़ोंसे घिरा है। हसरङ्गसे उत्तर पूर्वी तिब्बतका मैदान एक दिनकी राहपर है। हमलोग मईमें वहां पहुंचे। गेहूं बोया जा चुका था। हसरङ्ग होकर एक नदी गयी है जो उसके पश्चिमी भागकी पहाड़ीसे निकली है। नगरमें एक उन्नत स्थानपर एक दुर्ग बना हुआ है जिसमें 'लो' का राजा रहता है। नेपालपर गोरखोंके आक्रमणके पूर्व 'लो' स्वतंत्र राज्य था। किलेके सामने थोड़ी दूरपर कर्नयूपाका मन्दिर है। यह तिब्बतका प्राचीन सम्प्रदाय है। मन्दिर पत्थरका बना है और उसपर लाल रङ्ग फिरा हुआ है। उसके पास ही दूसरा पत्थरका मकान है। यह सफेद रङ्गका है। इसमें मन्दिरके पुरोहित रहते हैं। इस नगरमें छोटे बड़े प्रायः ६० घर हैं।



नवां परिच्छेद ।



हसरङ्ग और उसके निवासी ।

पहाड़के नीचे जहांसे मैदान आरम्भ होता था एक पत्थरका फाटक था जो प्राय: २४ फीट ऊंचा था । वह नगरके बचावके लिये नहीं बनाया गया था । उसमें बुद्ध आदि ग्राम्य देवताओंकी मूर्त्तियां थीं जो भूत प्रेत आदिकी बाधासे नगरकी रक्षा करती थीं । यहांसे प्राय: १॥ मीलकी दूरीपर हसरङ्ग नगर बसा था । नगरके प्रवेश द्वारपर १४-१५ मनुष्य हम लोगोंकी प्रतीक्षा कर रहे थे । सेराब ग्यालटसन मुझे नगरके प्रधानके पास ले गये । तिब्बतकी भांति हसरङ्गके धनवान भी घरके साथ मन्दिर रखते हैं । प्रतिष्ठित मेहमानको वे लोग इन्हीं मन्दिरोंमें ठहराते हैं । ऐसी प्रतिष्ठा बहुधा लामा होको मिलती है । तदनुसार चीनी लामा होनेके कारण मुझे वही स्थान मिला । यहांपर लोग अपने पास धर्मपुस्तकें बहुत रखते हैं पर उन्हें पढ़नेमें उतनी रुचि नहीं दिखलाते ।

इस मन्दिरसे सटा हुआ छोटा मकान था जिसमें सेराब ग्याल्टसन रहते थे । मेरे मेज़बानकी स्त्री मर चुकी थी । उन के दो लड़कियां थीं, एककी अवस्था २३ और दूसरेकी १८ वर्षकी थी । इन्हींके ऊपर गृहस्थीका सारा भार था । इन लड़कियोंके

सुप्रबन्धसे मैं अतिशय प्रसन्न था। मैंने देखा कि नगरनिवासियोंका प्रधान आमोद नाच गाना है। धार्मिक सभाओंके अतिरिक्त हर समय मजाक होते हैं। धार्मिक सभाओंमें लामा प्रधान होते हैं और वे पुरानी कहानियां, जीवनी और बौद्ध राजाओंके इतिहास सुनाया करते हैं।

हसरङ्गमें मुझे मैले कुचैले और गंदी आदतवाले मनुष्योंके साथ रहना पड़ा था। मेरी समझमें तिब्बतके लोग संसारमें सबसे गंदे होते हैं। परन्तु हसरङ्गके निवासी उनसे भी बढ़ कर हैं। तिब्बतके लोग कभो कभी नहाते हैं पर हसरङ्ग वाले कभी भी नहीं नहाते। वहां मैं बारह महीने था। उस बोचमें मैंने एक मनुष्यको केवल दो बार मुंह और गर्दन साफ करते देखा। ऐसी दशामें उनके शरीरका चमड़ा काला और दुर्गन्ध युक्त हो जाता है। मैंने देखा कि, यदि स्त्रियां कभी कभी चेहरेको धो डालें तो उनकी कान्ति बढ़ जाय। पर वहांको रीतिही ऐसी है। यदि कोई अपने हाथ मुंह धोये तो उसकी दिल्लगी उड़ाई जाती है। उनके प्रत्येक काममें गन्दगी रहती है। इन लोगोंमें रहनेसे मुझे यह लाभ हुआ कि जो कठिनाइयां मुझे तिब्बतमें उठानी पड़ीं, उनके लिये मैं यहींसे अभ्यस्त हो गया।

सेराब ग्याल्टसनके साथ मैं निम्नलिखित प्रकारसे काम करता था। प्रतिदिन सवेरे तीन घन्टेतक बुद्धधर्मकी शिक्षा, जिसकी तैयारीके लिये कठिन परिश्रम करना पड़ता था; और दोपहरके बाद तिब्बती भाषा और साहित्यका तीन घन्टे अभ्यास। यह

काम सहज था और मुझे गुरुजीके साथ धार्मिक चर्चाके लिये पर्याप्त समय मिल जाता था।

तिब्बतमें बौद्धोंकी एक सम्प्रदाय है जिसका विश्वास है कि बौद्धधर्मकी शिक्षा पद्मसम्भवने निकाली है। पद्म विलासी था और उसकी शिक्षामें इसीका आभास मिलता है। जो तिब्बती साहित्य मेरे गुरु मुझे पढ़ाते थे उसमें इसका विशेष वर्णन था। इस बातको लेकर मुझसे और मेरे गुरुसे बहुधा विवाद होने लगता था। हमारे गुरु सेराब ग्यात्सनको सिराके मठसे डाक्टर-की उपाधि मिली थी, पर दुर्भाग्यवश इन्द्रियोंके दास बनकर वे उस पदसे च्युत हो गये और पूज्य लामा बनकर मंगोलिया नहीं जाने पाये। मारे लज्जाके ल्हासामें भी न रह सके। लाचार शेष जीवन उन्हें अज्ञातवासमें बिताना पड़ा। यह सुनकर मुझे हार्दिक सन्ताप हुआ, क्योंकि यदि यह दुर्बलता उनमें न होती तो अपनी विद्वत्ता और योग्यतासे वे सबसे ऊंचे पदपर पहुंचे होते। एक दोष उनमें और था। अन्य मङ्गोलोंकी भांति वे अति शीघ्र रुष्ट हो जाया करते थे पर शान्त भी बहुत जल्दी हो जाते थे।

एक बार किसी बौद्ध साधुके गुणोंके विषयमें मेरा उनसे मतभेद हो गया। उन्हें क्रोध आ गया। उन्होंने उछलकर एक हाथसे मेरी गर्दन पकड़ी और दूसरे हाथसे टेबलका डण्डा उठाकर मुझे मारना चाहा। मुझे हंसी आ गयी। मैंने कहा "मुझे आपके ऊपर बड़ी श्रद्धा थी। मैं नहीं समझता था कि विद्वान होकर आप धर्मके विरुद्ध आचरण करेंगे।" यह सुनकर वे रुक

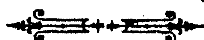
गये, पर मुझे पकड़े ही रहे और दांत पीसते रहे। क्रोधसे आंखें लाल हो रही थीं। वे मेरे पाससे चले गये मानों मैं उनके सह-वासके योग्य नहीं था। पर तुरन्त ही मेल हो गया। वहां मैं जितने दिनतक रहा नित्य प्रति सातसे नौ घण्टे तक मैं पाठ याद करता था और ६ घण्टे सेराबसे पढ़ता था। मैं केवल एक बार भोजन करता था। रविवारको मैं पहाड़ोंकी सैर करता था। मैं जानता था कि पूर्ण अभ्यासै बिना पीठपर बोझ लाद कर पहाड़पर नहीं चढ़ सकता था। अतएव मैं अभ्यास करने लगा। जब कभी मैं पहाड़पर जाता पत्थर पीठपर लाद लेता था और तेजीके साथ पहाड़ोंपर चढ़ता उतरता। मैं हृष्ट पुष्ट तो था ही, इस परिश्रमसे और अच्छा हो गया। फेंफड़ोंपर इसका अच्छा असर पड़ा। इस तरह मैं वहाँ विख्यात हो गया।

यहांके निवासियोंकी प्रकृति पाशविक होती है। गरमीमें तो खेतीके कामोंमें लगे रहते हैं पर वर्षका शेष भाग भोग विलासमें बीतता है। कभी सन्ध्याके समय लामाके उपदेशको भी सुन लेते हैं। कपड़े सालमें एक बार बदलते हैं, अर्थात् पुराने उतार-कर नये धारण करते हैं। यदि किसीने एक ही वस्त्र दो वर्ष तक पहिना तो उसकी बड़ी प्रशंसा होती है। वह कपड़े कभी भी साफ नहीं किये जाते। इससे मैलसे चमका करते हैं शरीरको स्वच्छताकी ओर जितने उदासीन रहते हैं, भोजन और डासन-की ओर उतने ही दत्तचित्त रहते हैं। ये लोग बड़े कामी होते हैं। अन्य असभ्य जातियोंकी भांति ये भी अन्ध विश्वासी होते हैं।

इन लोगोंका विश्वास है कि लामा सर्वज्ञाता है और हर तरह-की बीमारी दूर कर सकता है। यही कारण था कि चीनी लामा अर्थात् मैं उन लोगोंकी दृष्टिमें बहुत आदरणीय हो गया। मेरे हसरङ्गमें पहुंचनेके थोड़े ही दिन बाद लोग मुझे जान गये और मेरा रविवारका पहाड़परका काम लोगोंको मेरी ओर अधिक आकृष्ट करने लगा। ग्याल्टसनके साथ वादविवाद इतने जोरोंसे होने लगा कि बाहरके लोग भी उसे सुन सकते थे और इससे अनेक तरहकी किम्बदन्तियां फैलाते थे। समय समय मैं उनको औषध दे देता था, जो अधिकतर लाभदायक होता था इससे मेरी कीर्त्ति फैल गयी। मुझे यह बातें कुछ भी न मालूम थीं। मेरे मेज़बानकी लड़कियां यह सब हाल मुझे सुनाती थीं। सेराबके साथ मुझसे जो द्वन्द हो गया था उसका कारण लोगोंने यह प्रसिद्ध कर रखा था कि मेरी उदारताके कारण सेराब मुझसे असन्तुष्ट रहता है। इन बातोंको गंवार लोग बड़े चावसे सुनते थे और मुझे महापुरुष समझने लग गये थे।

हसरङ्गमें केवल दो ऋतु होते हैं, गरमी और जाड़ा। वहांके लोग शेष ऋतुओंके नामही नहीं जानते हैं। यहांकी गरमी बड़ी मनोहर होती है पर जाड़ा बड़ा भीषण होता है। किसी किसी दिन तो बरफके कारण घरसे बाहर निकलनेका साहस नहीं होता।

दसवां परिच्छेद।



कीर्ति और लोभ

मुझे हसरंगमें आये प्रायः आठ मास हो गये। धीरे धीरे नया वर्ष आ गया। यह पहला नया वर्ष था कि मैं अपने घरसे इतनी दूर हिमालयके पहाड़ी प्रदेशोंमें था। पर मैं परम सन्तुष्ट और सुखी था।

नये वर्षके समारोहमें मैंने हसरंग निवासियोंको भोज दिया। मैंने ऐसे ही सामान तैयार किये थे जो बहुतायतसे उन्हें नहीं मिल सकते थे। गत परिच्छेदमें मैंने लिखा है कि मेरे आचार विचार और व्यवहारके कारण हसरंग निवासी मुझे आदर और श्रद्धाकी दृष्टिसे देखने लगे थे। नये वर्षके व्यवहारने तो मुझे उनका अतिशय प्रिय बना दिया, क्योंकि उसीके बादसे वे लोग इस प्रकारकी चेष्टायें करने लगे जिससे मैं हसरंगमें सदाके लिये बस जाऊं। मेरे गुरुने इसके लिये सबसे अधिक प्रयास किया। वे सदा यही यत्न करते रहे कि मैं अपने मेज़बानकी कनिष्ठा कन्यासे विवाह कर लूं और उसे भी सदा यही शिक्षा देते रहे कि जिस प्रकार हो वह मुझे अपने प्रेमपाशमें बांध ले। पर धार्मिक शिक्षाने मुझे अपने पथसे डिगने न दिया।

जब मैंने यह हाल देखा तो तिब्बत जानेके लिये शीघ्रता

करने लगा। पर जो कठिनाई मुझे काठमंडूमें थी वही यहां भी थी। मैं अपना भेद किसीसे नहीं कह सकता था। इस कारण मुझे गुप्त रूपसे ही पता लगाना था। मैंने वहांके लोगोंकी दुर्बलताकी सहायतासे अपना काम निकालनेकी ठानी। तिब्बत सरकार बाहरसे आने वालोंके निजी सामानपर भी चुंगी लगाती थी। यह भी एक अत्याचार था। मान लीजिये कि एक सौदागर तिब्बतके उत्तर पश्चिमी प्रान्तमें व्यवसाय करनेके इरादेसे बहुमूल्य सामान लेकर जाता है, किस उपायसे वह चुंगीवालोंके चंगुलसे लाभका अधिकांश भाग बचाता होगा? अवश्य कोई न कोई ऐसा मार्ग होगा जिससे होकर जानेसे उनकी अभीष्ट सिद्धि हो जाती होगी। यदि कोई कष्ट उठाकर धवलागिरिके उत्तरसे तीन दिनतक हिमालयके बरफोंपरसे चलना स्वीकार कर थार्पो पहुंचे तो उसे सफलता हो सकती है। ऐसे विचारोंसे प्रेरित होकर मैंने उनसे इस तरहकी पूछताछ की। उन लोगोंने मुझे बताया कि सामनेके पहाड़के उस पार तरी है जो निर्दिष्ट स्थानोंसे पार की जा सकती है। इस तरहकी अन्य सूचनायें भी उन लोगोंने दीं। इनपर विचारकर मैंने थार्पो होकर जाना ही स्थिर किया। इसके लिये टुकजीतक लौटकर आना था। और उसके पासके मालवा गांव होकर भीतर घुसना था। इसमें भी एक तरहका लाभ था क्योंकि वहींसे रवाना होनेसे दूसरंग-वालोंको शंका होती कि मैं कहां जा रहा हूं। मार्ग निर्दिष्ट कर लेने पर भी मैं प्रस्थान न कर सका, क्योंकि समय मेरे अनुकूल

न था क्योंकि जून, जुलाई और अगस्तके अतिरिक्त अन्य महीनों-में पहाड़ बरफसे इस तरह ढका रहता है कि यदि कोई ऊपर जानेका साहस करे तो अवश्य गल जाय।

यहां यह कह देना आवश्यक होगा कि मालवा गांवका मुखिया टंग १८६६ के अक्तूबरमें हसरंग आया और मेरे मेज़बानके यहां ठहरा। मुझसे परिचय हो गया। तिब्बतके उत्तर पश्चिमी प्रान्तमें उसका भैंसा पालनेका बाड़ा था इसके कारण प्रधान मार्गसे वह स्वच्छन्दतापूर्वक जा सकता था। वहींसे लौटकर वह आया था। उसने मुझसे कहा कि मेरे मठमें धर्मग्रन्थकी एक प्रति है जिसे मैं तिब्बतसे लाया था। मेरी इच्छा है कि आप मेरे साथ चलकर उसका पाठ करें। इससे मेरे परिवार और आप दोनोंको लाभ होगा। मैं सहमत हो गया। इसके बाद वह कार्यवश हिन्दुस्तान चला गया और मार्चमें मालवा लौटा। यह निमंत्रण इस समय बड़ा उपयोगी प्रतीत हुआ। १० मार्चको मैं हसरंगसे बिदा हुआ।

मेरा हसरंगमें रहना निष्फल नहीं गया। मैंने १५ मनुष्योंका शराब पीना और प्रायः तीसका तम्बाकू खाना छुड़ा दिया था। इन लोगोंकी मैंने दवा की और यही औषधका दाम लिया।

हसरंगमें मैं प्रायः सालभर रहा। इतने दिनोंमें प्रायः सब लोगोंसे मेरी जान पहचान हो गयी थी। बिदा होते समय सब लोगोंने मुझे कुछ न कुछ भेंट दी। कोई आटा, कोई रोटी, कोई मक्खन और कोई रुपया दे गया। दस मार्चको तीसरे पहर मैं

अपने टट्टूपर सवार होकर बिदा हुआ। मेरी धर्मपुस्तकें और अन्य सामान दो और टट्टुओंपर लदा हुआ था। ये पुस्तकें मुझे बड़े लामा न्यानदकने मेरे उस सफेद टट्टूके बदलेमें दी थी जिसे मैं नेपालसे लाया था। लामाने वह टट्टू बहुत पसन्द किया। अधिकांश पुस्तकें किसी शाक्य पण्डितके हाथकी लिखी हुई थीं और प्रायः ६००) रुपयेकी थीं।

गांवके बाहर प्रायः सौ आदमी मेरी राह देख रहे थे। मैंने सबको आशीर्वाद दिया। बिदाई अति दुखःमय थी। सबकी आंखोंसे आंसू निकल रहे थे। मैं उनसे बिदा हुआ। नगरके फाटकपर पहुंचकर मैंने नगरपर अन्तिम दृष्टिपात किया। नगरकी सुख शान्ति तथा लोगोंकी धर्ममें प्रवृत्तिके लिये ईश्वरसे प्रार्थना की। संध्याको मैं किमयी पहुंचा और रातभर वहीं ठहरा। दूसरे दिन मैं काली-गङ्गाके तटस्थ टुसक नगर पहुंचा। वहांके लोगोंकी प्रार्थनासे मैंने शामको उपदेश सुनाये। बिदा होते समय प्रायः बीस आदमी मेरे पास आशीर्वाद लेने आये। मेरे गुरु सेराब ग्याल्टसन हस-रंगसे मुझसे कुछ पहले रवाना हुए थे। उनसे भेंट हो गयी। बिदा लेते समय मैंने उनके उपकारोंके लिये हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की।

तीसरे दिन मैं मालवा पहुंचा। आदम नैरंग कहीं बाहर गया था। उसके पिता सोनम नारबू मेरे स्वागतके लिये तैयार थे। मुझे मन्दिरमें स्थान मिला। मन्दिरमें दो कमरे थे। दोनों सजे हुए थे। भीतरी कमरेमें बुद्धदेवकी सुन्दर मूर्त्ति और तिब्बत-का छपा ग्रंथ था। मालवा हसरंगकी अपेक्षा नीचा है। यहां सालमें दो फसलें होती हैं।

मेरे मित्रकी इच्छा थी कि मैं उनके यहां अधिक कालतक ठहरूं और उन्हें ग्रन्थ सुनाऊं। पर मैंने उन्हें निश्चित उत्तर नहीं दिया क्योंकि मैं केवल मार्गकी सुगमताकी परीक्षा कर रहा था। जबतक मैं वहां था प्रतिदिन धर्मग्रन्थका पाठ करता था और उसमेंसे उपयोगी उपयोगी अंशोंकी नकल कर लेता था। सेराब ग्याल्टसनकी शिक्षा इस समय मेरे लिये बड़ी उपयोगी प्रतीत हुई।

मेरे मालवामें पहुंचनेके १५ दिन बाद टुकजीका एक सौदागर राय शरत्‌चंद्र दासका पत्र लेकर मेरे पास आया। इससे मुझसे हसरंगमें जान पहचान हुई थी। उस समय वह कलकत्ते जा रहा था। मैंने उसे शरतचन्द्रके नाम एक पत्र दिया था। उस पत्रके साथ शरतचन्द्रने महाबोध सोसाइटीका एक पत्र भी भेजा था। इसमें एक जापानी बौद्धका हाल था जो तिब्बतमें प्रविष्ट न हो सका था। उसी हालके नीचे शरत बाबूने पेन्सिलसे लिखा था, "अपनी रक्षाका पूरा प्रबन्ध करना।" शरत् बाबूने तो यह काम मेरे अच्छेके लिये किया था पर उसका फल बहुत बुरा हुआ। उस सौदागरने आपही आप मेरे विषयमें सब बातें स्थिर कर लो और मालवामें यह सम्वाद फैला दिया कि यह चीनी लामा ब्रिटिश सरकारका गुप्तचर है। कलकत्तेके एक बङ्गालीके साथ इसका पत्र व्यवहार है। अङ्गरेजी सरकारसे ६००) महीना पाता है। मालवामें यह बात चारों ओर फैल गई और वहांके निवासी मुझे वहांसे निकाल देनेका विचार करने लगे। इसी समय आश्रम

नौरंग घर लौटा। वह मुझसे एकान्तमें मिला। उसका चेहरा भयसे पीला पड़ गया था। उसने मुझसे कहा, 'यदि यह सम्वाद सच है तो ईश्वर ही जाने मेरी और गांववालोंकी क्या दुर्गति होगी।' मैंने उससे कहा 'यदि तुम इस बातकी शपथ खाओ कि मेरे भेदको तीन वर्षतक किसीसे न कहोगे तो मैं अपना भेद तुमपर प्रगट कर दूंगा। नहीं तो इस सम्वादके अनुसार नेपाल सरकार जैसा कार्य करे मैं भुगतनेके लिये तैयार हूं।" उसने धर्मपुस्तक लेकर शपथ खाई। मैंने अपना कच्चा चिट्ठा उसे सुना दिया।

मैंने उसे पासपोर्ट भी दिखला दिया जो जापानके परराष्ट्र सचिवसे मिला था और तिब्बतमें जानेका अभिप्राय भी बतला दिया। मैंने उससे कहा, 'तुम सारा भेद जान चुके हो, तुम उसे खोल सकते हो पर मुझे पूरी आशा है कि सच्चे बौद्ध धर्माव-लम्बीकी भांति तुम मेरी सहायता करोगे।' मैंने उससे सब बातें सच सच कही थीं और अन्तमें सत्यकी विजय हुई। उसने मेरे साहसकी प्रशंसा की। फिर उसने मार्गकी बातें पूछीं। अन्तमें ते हुआ कि मैं जून या जुलाईमें प्रस्थान करूं।

इससे उसे कुछ शान्ति मिली। अब मुझे उसके घरपर रह-कर उसकी चिन्ता बढ़ाना उचित नहीं जान पड़ा। निदान मैं नगरके मन्दिरमें उठ आया।। पर मेरे ऊपर वह सदा दयालु रहा। उसने मेरी यात्राका सब बन्दोबस्त कर दिया। मेरे कहने-पर उसने एक आदमी भी मेरे साथ खम्बूथांग तकके लिये कर

दिया। मेरा असबाब ले जानेका भी प्रबन्ध कर दिया। इस तरह मेरे जिम्मे केवल धर्म ग्रंथ थे। मैं १८ जूनको मालवासे रवाना हुआ। यदि मैं सीधा उत्तर पूर्वको चला जाता तो मालवासे दस दिनमें तिब्बत पहुंच जाता, पर मैं आसपासके तीर्थ स्थानोंके लामोंके दर्शन करना चाहता था इसलिये यात्राके लिये २३ दिन अलग किये।

ग्यारहवां परिच्छेद

—:०:—

तिब्बतके दर्शन

मालवासे रवाना होकर काली गङ्गाके किनारे किनारे उत्तर पश्चिमकी ओर हमलोग पहाड़पर चढ़ने लगे। वर्षाके कारण पहले दिन केवल २॥ मील चल सके। दूसरे दिन सबेरे सात बजे रवाना हुए। रास्ता बहुत ही तंग था। चारों ओर नुकीले पत्थर थे पांच मील चलकर हम लोग विश्राम लिए। आगे चढ़ाई बहुत कड़ी हो गई और हवाकी भी कमी मालूम होने लगी। छः मीलसे आगे न बढ़ सके। डैंकर गांवमें उतर पड़े। ऐसे थक गये कि दूसरे दिन भी विश्राम लेना पड़ा। १५ को हम लोग उत्तर-को चले और पांच मील चलने पर बरफकी घाटी मिली। उसे भी पार किया। उसके आगे चार मील और ऐसी ही चढ़ाई

थी। अब कुछ चौड़ी राह मिली। दोपहरमें विश्राम किया। कहीं पानीका नाम न था। बरफकी पहली तहके नीचे एक प्रकारकी बनौषधि देखी। इसे उखाड़ कर चखा। वह बिलकुल खट्टी थी। फिर भी थोड़ी इसे चबाई और कुछ बिस्कुट खाकर पेट भर लिया। दो पहरके बाद फिर पहाड़पर चढ़ने लगा। आजकी चढ़ाई बड़ी कठिन थी। पैर रखनेके लिये भूमि नहीं थी। केवल लाठीके सहारे चलता था। नीचेको ओर देखनेसे सिरमें चक्कर आने लगता था। यदि तनिक भी पैर फिसलता तो हजारों फीट नीचे गिरकर प्राणान्त हो जाता। रेत भी पैरोंको आगे नहीं बढ़ने देता था। पर मेरा साथी उछल कूद कर बन्दरकी भांति रास्ता तै कर रहा था। उसकी लाठी उसको बराबर सहायता कर रही थी। उसकी पीठपर ७५ पौण्डका बोझ था। इतनेपर भी वह बड़ी आसानीसे चढ़ता था। जब मेरी लाठी चट्टानोंके बीचमें फँस जाती थो या मैं लड़खड़ाने लगता था, तब बीच बीचमें मेरी भी सहायता करता था। इसके अतिरिक्त ऊपरकी हवा हल्की होती जाती थी और श्वास लेनेमें बड़ी तकलीफ होती थी इससे मेरे सिरमें चक्कर आने लगा। प्यासके मारे गला सूख रहा था। कभी कभी बरफके टुकड़े मुखमें रख लेता था पर उससे प्यास न बुझती थी। मुझे कमजोरी मालूम होने लगी। आगे बढ़नेकी शक्ति नहीं रह गई। चाहता था कि लेटकर पूरा विश्राम कर लूं पर मेरा साथी बराबर सचेत करता रहा कि ऐसा करनेसे मृत्यु अवश्यम्भावी है; क्योंकि यहांकी हवा विषेली

है। इसका असर शरीरपर तुरन्त होता है। हवाकी कमोवेशी-का उसे कुछ ज्ञान नहीं था। मैं उसकी चेतावनीका बराबर ख्याल रखता और प्रबल साहस कर आगे बढ़ता गया। चढ़ाई ते कर हम लोग समतल भूमिपर पहुंचे। मैं हताश हो गया। मेरे साथीने कहा पानी थोड़ी दूर नीचे है। पर मैं आगे न बढ़ सका। मेरा साथी जाकर पानी लाया। पानी पीकर मैंने दम लिया। टिंचर निकालकर दर्द पर लगाया। इतनेमें सन्ध्या हो गई। तारोंका क्षीण प्रकाश बरफ खण्डपर विचित्र जगमगाहट पैदाकर देता था। हमलोग उसीके सहारे चार मील नीचे उतरकर सेण्डा नामक गाँवमें पहुँचे। इसमें केवल १० घरकी बस्ती थी। हमलोगोंने रात वहीं बिताई।

यह गाँव सदा बर्फसे घिरा रहता है। केवल गरमीके महीनोंमें लोग वहाँ आ जा सकते हैं। पर इसी राहसे होकर जिससे मैं आया था। यहां भोजनके लिए टाहू नामक निकृष्ट अन्न मिलता है। ऐसे स्थानमें भी लोगोंको बसते देख मुझे आश्चर्य हुआ। पर यहाँका दृश्य बड़ा ही मनोहर था। बरफसे ढकी पहाड़ोंकी उन्नत चोटियां चित्तमें तरह तरहके भाव उत्पन्न कराती थीं। मैं एकदम थक गया था। तीन दिनतक मैं हिल डोल न सका। चौथे दिन फिर एक भीषण मार्गसे चलना पड़ा। मुझे विदित हुआ कि प्रत्येक वर्ष तीन या चार आदमी इसके शिकार होते हैं। हमलोग उत्तर पश्चिमकी ओर चलने लगे। सपूरके गांवको पारकर एक पहाड़ी सोतेके किनारे चलकर हमलोग

दोपहरको तशी थेंग पहुंचे। तीसरे पहर हमलोग आगे बढ़े। यह मार्ग कहीं तो बड़ा विकट है, कहीं मनोहर पुष्पों और हरे भरे वृक्षोंसे अतिशय सुरम्य है। यह प्राणघातक जंगली पशुओंका अड्डा है। मुश्की हिरण भी यहां पाये जाते हैं। रात चट्टानके ऊपर काटी। दूसरे दिन बराबर उत्तर पश्चिम चलता गया। ज्यों ज्यों धवलागिरिके निकट पहुंचता गया मार्गका दृश्य और भी अधिक रमणीक होता गया। अब मैं इतना थक गया कि अपना बोझ भी न सम्हाल सका। लाचार उसे भी अपने साथीपर लादकर मैं धीरे धीरे आगे बढ़ा।

मैं एकदम थक गया था, पर वहांका दृश्य ऐसा मनोरम था कि मैं मुग्ध होकर खड़ा हो गया। मैं उस दृश्यमें इतना भूल गया कि मुझे प्रतीत होने लगा कि मानों पहाड़ोंकी चोटियां बुद्ध देवकी साक्षात् प्रतिमा हैं। मेरे साथीने मुझे सचेत कर कहा—"यहाँ अधिक ठहरनेमें गला घुटकर मर जानेका भय है। इतना कह वह मुझे अपने हाथका सहारा देकर ले चला। हम लोगोंने दस मील नीचे उतर कर एक चट्टानके नीचे रात काटी।

दूसरे दिन हमलोग फिर ऊपर चढ़ने लगे। नीचे घाटियोंमें मैंने नाह हिरनके दो दो तीन तीन सौके झुण्ड देखे। पहाड़के ऊपर जंगली भैंसे और पहाड़ी कुत्ते दिखलाई पड़े। ये आदमीका शिकार करते हैं। रास्तेमें जानवरोंकी हड्डियां भी दीख पड़ीं। कहीं कहींपर बर्फोंमें जमी मनुष्यकी लाशें भी दीख पड़ीं जो बर्फमें गलकर मर गये थे। इनके खोपड़ी और पैरोंकी हड्डी

तकका पता नहीं था। पूछने पर मुझे मालूम हुआ कि तिब्बतके लोग इन हड्डियोंसे पूजाके पात्र तैयार करते हैं। जहां कहीं ये लोग मनुष्य कङ्काल पाते हैं इन भागोंको काट लेते हैं। इससे मेरे हृदयको बड़ा सन्ताप हुआ। उनकी आत्माकी शान्तिके लिये मैंने मन ही मन ईश्वरसे प्रार्थना की।

धीरे २ हमलोग थार्पो-पहुंचे, यह नगर धवलागिरिकी इसी ओर बसा है, इसका दूसरा नाम टुसाका है। वहांके निवासी तिब्बतके प्राचीन धर्मके अनुयायी हैं।

हमलोग पहली जुलाई तक बराबर चलते रहे। इस तरह हम धवलागिरिके बाहरी भागमें पहुंच गये।

हमलोगोंका बोझ इतना हलका होगया कि मैं अकेला ही, उसे ले जा सकता था।

इसलिये मैंने अपने साथीसे कहा—"तुम लौट जाओ, मैं अकेला ही खाम्बुथाङ्गकी यात्रा करना चाहता हूं।"

यह सुनकर वह बड़ा चकित हुआ।

वह समझता था कि मैं भी मालवाको लौटूंगा। उसने कहा कि "आप अकेले इस राहसे कभी न जा सकेंगे। बुद्धदेव अथवा बोधिसत्वके अतिरिक्त अन्य कोई भी वहां जानेका साहस नहीं कर सका। पुराने समयसे आजतक केवल दो आदमी उस राहसे जीवित लौट सके हैं। आपको मार्गमें जङ्गली जानवर मारकर खा लेंगे!"

मुझे दृढ़ देखकर वह अकेला लौटनेको विवश हुआ। उसकी

आखोंमें आंसू भर आए। अब मैं अकेला आगे बढ़ा, अज्ञात पहाड़ी मार्ग आगे था और ५५ पौंडका बोझा पीठपर। पग पगपर प्राण जानेका भय था। यहींसे मेरी अतिशय दुःखद यात्रा आरम्भ होती है।

यह जुलाई १६०० ई० की पहली तारीख थी। अपने साथीको बिदा कर मैं अकेला आगे बढ़ा। भाग्यवश आगेका मार्ग इतना कठिन नहीं था, पर मैं विपद्से निवृत्त भी नहीं हो गया था, मुझे बर्फके चट्टानोंपरसे होकर चलना पड़ता था। रात कहीं बर्फपर कटती थी और कहीं गुफामें। इस तरह तीन दिन चल-कर मैं धवलागिरिकी उत्तरी चोटीके उस पार पहुंचा। यहीं नैपाल राज्य समाप्त और

तिब्बतकी सीमा

आरम्भ होती है।

इस समय मैं ऐसे स्थानपर खड़ा था जहांसे चारों ओरका दृश्य मेरे दृष्टि-गोचर होता था। दक्षिणकी ओर धवलागिरिकी शुभ्र पर्वतमाला थी, उत्तरकी ओर तिब्बतका सीमा प्रान्त। मुझे प्रतीत होता था कि धवलागिरिके सुदूर दक्षिण बुद्ध गयाका पवित्र तीर्थक्षेत्र उन्नत शिखर किये खड़ा है। मुझे बिदाईका दिन स्मरण हो आया। मैंने अपने मित्रोंसे कहा था—तीन वर्षमें मैं तिब्बतमें प्रवेश कर सकूंगा। आज तीन वर्ष सात दिनके बाद मैं तिब्बतकी सीमापर खड़ा था। हर्ष और आशाका एक साथ सञ्चार हुआ। मुझे सन्तोष हुआ। भूख लगी थी और थक भी

गया था। गट्ठर उतार कर चट्टानपर रखा और बैठ गया। सामान निकाल भोजन बनाया और क्षुधा शान्त किया। भोजनमें ऐसा स्वाद कभी नहीं मिला था।

भोजन कर सन्तुष्ट होकर बैठा। मेरे चारों ओर बर्फकी राशि थी। मैं आनन्दमें निमग्न था पर मुझे यह नहीं सूझता था कि किस मार्गसे आगे बढ़ूँ।

बारहवां परिच्छेद



बर्फिस्तान

मानसरोवर तक मुझे सीधा उत्तरकी ओर जाना था। अब यह निर्णय करना था कि किस तरहसे वहाँ पहुँच सकता है। मुझे केवल कम्पासका सहारा था। मुझे अटकलसे ही आगे बढ़ना था। उत्तर पश्चिम चलना स्थिरकर मैंने गट्ठर पीठपर लादा और उतरना प्रारम्भ किया। अभीतक मैं पहाड़की जिस ओर चल रहा था, उस ओर सूर्य्यका ताप अधिक था, बर्फ भी ५-६ इञ्चसे अधिक नहीं थी पर अब दूसरी ओरसे चलना पड़ा। उधर सूर्यका ताप बहुत कम पहुँचता था। अतएव कहीं कहींपर मेरा पैर १४-१५ इञ्चतक बरफमें धँस जाता था। कहीं कहींपर बरफ ७-८ इञ्चही थी इससे मुझे थकावट अधिक आने लगी। लाठीका मुझे बहुत सहारा था। स्थान स्थानपर मेरा पैर बरफके

चट्टानोंमें फंस जाता था और निकालना कठिन हो जाता था। मेरा तिब्बती जूता बिलकुल फट गया। चोट लगनेसे पैरोंसे रक्त बहने लगा। मेरा बोझ भारी न था, पर अब उतना भी कष्टकर प्रतीत होने लगा। इस तरह तीन मील सीधा पथरीला रास्ता मिला। पाँच मील और आगे बढ़नेपर मुझे दो तालाब मिले। ये बर्फके गलनेसे बने थे। एककी परिधि प्रायः पाँच मील और दूसरेकी २॥ मील थी। इनमें रंग विरंगे बतक तैर रहे थे। बतकोंकी संख्या इतनी अधिक थी कि तालाबका पानी भी नहीं दिखलाई देता था। वहाँका दृश्य देखकर मैं ऐसा मोहित हुआ कि शरीरकी पीड़ा एकदम भूल गया। मैंने बड़े तालाबका नाम इकाई और छोटेका जिन्को रक्खा।

यह दोनों मेरे ही नाम थे। आगे बढ़नेपर एक तालाब और मिला उसका नाम मैंने हिसागोइके रखा। वहाँसे आगे बढ़ा तो सामने पहाड़पर मुझे दो तीन खेमे दिखलाई दिये। इन्हें देखकर मुझे विस्मय और भय दोनों हुआ। यदि मैं एकाएक वहाँ पहुँच जाऊँ तो वे लोग क्या कहेंगे? यदि मेरी ओरसे कुछ भी सन्देह हुआ तो मैं क्या करूंगा? मेरे सामनेके उतारका कहीं अन्त न था। मेरे लिए केवल दोही मार्ग थे या तो मैं इस अनिर्दिष्ट मार्गपर चलूं या उस खीमेकी ओर जाऊं या यहीं अपनी यात्रा समाप्त कर दूँ। मैं कुछ निश्चय न कर सका। अन्तमें जापानी प्रथाके अनुसार मैं किसी निर्णयपर पहुँचनेके लिए ध्यानमग्न होकर बैठा।

अन्तमें खीमेकी ओर चलना ही स्थिर हुआ। रात होते होते मैं उन खीमोंके पास पहुँच गया। कुत्तोंकी निगाह मेरे ऊपर पड़ी। वे भूकने लगे। मुझे मालूम था कि इन कुत्तोंको केवल डरा देना चाहिए, मारना नहीं चाहिए। मैंने भी ऐसाही किया। इस प्रकार मैं खीमेके पास पहुँच गया और मालिकको पुकारा।

तेरहवां परिच्छेद।

दयालु बुढ़िया

मेरा शब्द सुनकर एक बुढ़िया खेमेसे बाहर निकल आई और मेरी दीन दशा देखकर आपही आप बोल उठी—'बेचारा कोई यात्री है।'

मैंने देखा कि बुढ़ियाको किसी तरहका सन्देह नहीं हुआ। मैंने उससे कहा—मैं लासासे आ रहा हूँ और कैलाश जाऊँगा। रातभर तुम्हारे खेमेमें विश्राम करना चाहता हूं। बाहर बहुत ठण्ढक है। बुढ़िया मुझे भीतर ले गई और विस्मित हो पूछा,—'यहां आप कैसे आ गये? यहाँतक आना बहुत कठिन है।' मैंने उत्तर दिया—"मैं राह भूल गया हूँ। मैं लांगरिंग पोंचेके पास जा रहा था।" उसको मेरी बातका विश्वास हो गया। उसने एक प्याला चाय और थोड़ी रोटी दी पर मैंने भोजन करना स्वीकार न किया। मैंने उससे कहा—"मैं बौद्ध मतावलम्बी हूँ और दिनभरमें

एक ही बार भोजन करता हूँ।" इससे मेरे उपर और भी अधिक श्रद्धालु हो गई। यहाँ चाय उस रीतिसे नहीं बनाई जाती जैसी जापानमें। यहाँ चायके पत्ते मक्खन और नमक मिलाकर उबाल दिये जाते हैं। पहले पहल पीनेवालेको इसमें बू आती है। बातें करते करते बुढ़ियाने कहा कि लांग रिंग पोंचे बड़ा अच्छा साधु है। उसका मकान यहाँसे एक दिनकी राहपर है। इस साधुसे मिलना बड़े पुण्यका काम है। राहमें एक नदी है। उसका पानी बहुत ठण्डा है। उसको तैरकर पार करना असम्भव है। मैं तुम्हें अपना भैंसा दे दूंगी और उसकी सहायतासे तुम पार हो जाओगे। मेरा लड़का बाहर गया है। वह संध्यातक आ जावेगा। वह भी उनका दर्शन करना चाहता है।" बुढ़ियाकी सब बातें मेरे अनुकूल थीं। पर मुझे जूतोंकी बड़ी चिन्ता थी। मैंने बुढ़ियासे पूछा—"क्या मेरे जूतोंकी मरम्मत हो सकती है?" उसने कहा—हमलोग केवल एक दिन यहाँ ठहरेंगे। और भैंसेका चमड़ा जबतक दो दिनतक पानीमें न भीगता रहे सीया नहीं जा सकता। यदि साधुके यहाँ दो तीन दिन ठहर जाओ तो वहाँ मरम्मत कर सकते हो। मेरे लड़केके पास एक जोड़ा फालतू जूता है उसको तुम पहन लो और साधुके यहाँ जाकर लौटा देना। मैं सोने जा रहा था कि बुढ़ियाका लड़का आ गया। उससे बहुतसी बातें हुईं। विशेषकर उस साधुके विषयमें।

प्रातःकाल बुढ़ियाने अपने पुत्रको भैंसा तैयार करनेकी आज्ञा दी। भैंसा बैलसे कुछ छोटा होता है। पर उसका शरीर मोटा

होता है और उसके बड़े बड़े बाल होते हैं। उसकी पूंछ रोयेंदार होती हैं। मादाको तिब्बतकी भाषामें 'व्री' कहते हैं। इसका मुंह साधारण बैलका सा होता है पर उसकी आंखें बड़ी खूंखार होती हैं। उसकी सींग बहुत नोकदार और भयानक होती है पर वह अपने यहाँके बैलोंसे भी सीधा जीव है। तिब्बतमें यह बड़े कामका है। बुढ़ियाका पुत्र तीन भैंस तय्यार करके लाया—एक मेरे लिए, दूसरा अपने लिए, तीसरा साधुकी भेंट ले चलनेके लिए। चलते समय मुझे बहुतसा चूर्ण, मक्खन, और सूखा दूध बुढ़ियाने दिया और थोड़ीसी चाय पिलाई।

इस प्रकार सुसज्जित होकर हमलोग उत्तर पश्चिमकी ओर चले। उतरते चढ़ते प्रायः २॥ मील गए होंगे कि पत्थर पड़ने लगा। इतनी देरमें मैंने बुढ़ियाके पुत्रसे वहांके मार्गके विषयमें सब हाल मालूम कर लिया। थोड़ी दूर आगे बढ़नेपर वह नदी मिली जो प्रायः ६० गज चौड़ी थी। भैंसेपर चढ़कर पार करना आसान था। उसी तरहकी दो नदी और पारकर और ६ मील ऊपर चढ़-कर हमको एक सफेद चोटी दिखलाई पड़ी। मेरे साथीने बत-लाया कि साधुजी यहीं रहते हैं। पास पहुंचनेपर मुझे ज्ञात हुआ कि जिसे मैं सफेद चोटी समझ रहा था, वह साधु महाशयकी गुफा थी। उसके आगे एक गुफा और थी जिसमें साधु महा-शयके शिष्य रहा करते थे। साधु महाशयकी गुफापर पहुँचकर मेरे साथीने साधूजीके दर्शनोंकी इच्छा प्रगट की और कहा कि ओलोंके गिरनेके कारण हमको देर हो गई है। नकारात्मक उत्तर

मिलनेपर मेरे साथीने भेंटकी सामग्री चेलेके हवाले कर कहा यह भेंट पसांग (उसकी माता) ने भेजा है। मैं यहाँ कलतक नहीं ठहर सकता। इसी समय कूँच करना है।

शिष्यके मकानमें नित्य प्रतिका उपयोगी सब सामान रक्खा था। उसकी आज्ञा पाकर मैं दो तीन दिनके लिये वहां ठहर गया और दयालु बुढ़ियाने जो भैंसका चमड़ा जूतेकी मरम्मत के लिये दिया था उसे पानीमें भिगो दिया। कैलाशकी राह-के विषयमें पूछने पर जो हाल ज्ञात हुआ वह कुछ उत्साह-वर्धक नहीं था। मुझे ज्ञात हुआ कि गुफासे चलकर दो तीन दिनमें मैं एक जंगली जातिके लोगोंमें पहुंचूंगा! वहांसे आगे १५—१६ दिन तक मुझे निर्जन राहसे जाना होगा। मेरे मित्रने मुझसे कहा कि भाग्यसे इस बुढ़ियाके दर्शन हो गए। यह बड़ी ही दयालु है। यदि यह तुमको न मिल जाती तो तुम यहां तक कदापि न पहुंच सकते। इस यात्रामें तुमको सहायक मिलना असम्भव है। सम्भव है कि बस्तीमें पहुंचनेपर लूट लिए जाव। मैंने उत्तर दिया कि इसका मुझे भय नहीं है। मैं खुशीसे सब सामान लुटेरोंके हवाले कर दूंगा। मेरे मित्रने कहा मैं दो तीन बार कैलाश पर्वत गया हूं। उसने राहकी सब बातें मुझे समझा दीं। रातकी समाधि समाप्त कर हमलोग सोनेको गये। सवेरे आंखें खुलीं तो मैंने देखा कि मेरा मित्र गुफाके बाहर आग जला रहा है। मैं लासाका यात्री बनकर आया था। अतएव लासा वालों होकी भांति सब काम करना

पड़ता था। इसलिये हाथ मुंह धोये बिनाही धर्मपुस्तक पढ़ना आरम्भ कर दिया। इससे मुझे बड़ा कष्ट हुआ पर कर ही क्या सकता था। मैं तो लासावासी बना हुआ था। चाय तैयार हुई। मेरे लिये भी चाय मक्खन और नमक आया। विना मुंह धोये ही मुझे जलपान करना पड़ा। ११ बजेतक धर्म विषयक बातचीत होती ही रही। इसके बाद साधु महाशयसे मिलनेका समय उपस्थित हुआ।

चौदहवाँ परिच्छेद

—:०:—

गुफावासी साधु

गेलांग रिंग पांच साधारण साधु नहीं थे। सौ मीलके आसपासके लोग इनके भक्त थे और इष्टदेवकी भांति मानते थे। सोनेके पहले वे लोग नीचे लिखे मन्त्रका तीन बार जप करते थे और तीन बार इनकी गुफाको नमस्कार करते थे।

"मैं गेलांग महाशय अपने त्राणकर्ताकी शरण हूं।"

साधु महाशयके दर्शन करनेके लिये बीस मनुष्य खड़े थे। प्रायः इतने लोग प्रतिदिन उनके दर्शनके लिए आया करते थे। रातको इस गुफावाले पहाड़के नीचे खेमेमें ठहरते थे और सबेरे दर्शन करने आते थे। साधु महाशय सिवाय इस समयके और किसी समय दर्शन न देते थे।

बाहर बजनेसे कुछ पहले मैं अन्य लोगोंके साथ गुफाके द्वार-पर पहुंचा। गुफाका द्वार बन्द था। मेरे पहुंचनेके थोड़ी देर बाद द्वार खुला और एक सत्तर वर्षके वृद्ध हमलोगोंके पास आए। सब लोगोंने अपनी २ बारीसे जिसको जो कुछ भेंट करनी थी उनके सामने रख दी। वृद्ध महाशयने भेंट स्वीकार कर सबको 'ओऽम् मणि पद्मेहुं' मन्त्र सुनाया! थोड़ी दूर आगे साधु-महाशय एक मेजके पास बैठे थे। सब लोग हाथ जोड़कर जिह्वा निकाले सिर झुकाये हुए आगे बढ़े। लामा महाशयने प्रत्येकके सिरपर अपना हाथ रख कर आशीर्वाद दिया। जो लोग पदवी-धारी थे उनके सिरपर साधुजी दोनों हाथ रखकर आशीर्वाद देते थे। उन्होंने मेरे सिरपर दोनों हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। उनका मुख देखनेसे प्रतीत होता था वे साधारण मनुष्य नहीं हैं। उनमें कोई दैवी शक्ति अवश्य थी। उनके हृदयमें मनुष्य मात्रके लिए दया थी। मुझे देखते ही उन्होंने कहा—तुम ऐसे जंगलोंमें फिरने योग्य मनुष्य नहीं हो। यहां क्यों आये हो?" मैंने उत्तर दिया, 'मैं बौद्ध पुरोहित हूं' तीर्थ यात्राको निकला हूँ। आपका नाम सुनकर आपसे कुछ शिक्षा ग्रहण करने आया हूं।'

'मुझसे क्या चाहते हो?'

'आप सैकड़ों जीवोंको मुक्ति देते हैं इसी गूढ़ तत्त्वको मैं जानना चाहता हूं।'

'यह तो पहले हीसे तुममें वर्तमान है। बौद्ध धर्मके तुम पूरे पण्डित हो।' मुझसे कोई बात सीखनेकी नहीं है।

आपका कहना ठीक है 'आत्मा' सर्वतो पूर्ण है। पर प्राचीन युगमें जोज्ञाई दोजी तिरपने पंडितोंकी तलाशमें इधर उधर मारा मारा फिर कर कितना कष्ट उठाया था। बौद्धोंको उन्हींका अनुसरण करना चाहिए। मेरी उनसे कोई तुलना नहीं। पर मैं उनका अनुकरण कर सकता हूँ। और यही कारण है कि मैं यहांतक आया हूं।

"आपका साहस सराहनीय है! मेरे पास युक्ति ग्रन्थ है और उसीसे मैं सहायता किया करता हूं।"

"क्या मैं वह पुस्तक देख सकता हूं?"

'अवश्य' यह कहकर साधु महाशय गुफाके भीतर गए और एक पुस्तक लाकर मेरे सामने रख दिये। इस पुस्तकको मैंने पढ़ा तो ज्ञात हुआ कि सूत्र सद्धर्म पुंडरीकसे यह पुस्तक निकाली गई है।

दूसरे दिन वह पुस्तक मैंने साधु महाशयको लौटा दी। उस समय उनसे बहुत देर तक धर्म्मकी चर्चा होती रही। उनका विषय बौद्ध धर्म्म था और मेरा चीनी तथा जापानी।

७ जुलाईको मैंने साधु महाशयसे बिदा माँगी।

उन्होंने रोटी मक्खन इत्यादि प्रायः बीस पौंड मुझको दिया और कहा कि यदि तुम्हारे पास खाद्य सामग्री यथेष्ट न होगी तो तुम अवश्य ही राहमें मर जाओगे। मैं आठ तारीखको सब मिलाकर ८५ पौंड बोझ अपनी पीठपर लाद कर यहांसे बिदा हुआ।

पन्द्रहवां परिच्छेद

असहाय अवस्था

साधु महाशयसे बिदा होकर प्राय: ग्यारह बजे एक नदीके किनारे पहुंचा जो प्राय: १८० गज चौड़ी थी। उतरनेसे पहले मैंने भोजन कर लिया। मैंने अपना जूता और पैजामा उतार डाला और नदीमें उतर पड़ा। पर पानीमें घुसते ही मालूम पड़ा कि मेरा आधा धड़ कट कर गिर पड़ा है। मैं तुरन्त ही नदीसे बाहर निकल आया, इतनी ही देरमें मैं ठंढकके मारे कांपने लगा। मैंने बटुयेसे लौंगका तेल निकाल कर खूब मालिश किया। तेल मलनेसे तथा धूप लगनेसे थोड़ा आराम मिला। इस बार सुसज्जित होकर नदीमें उतरा। आधी दूर जाते जाते मेरे पैर बिलकुल बेजान हो गये। शेष भाग मैंने अपनी लकड़ियोंकी सहायतासे पार किया। पानी कमरतक पर बहाव बड़े जोरों-का था। दूसरी पार पहुँचते पहुँचते मैं काठ हो गया था। अब मुझे अपने हाथ पैरको ठीक करनेकी चिन्ता हुई। प्राय: दो घंटेके बाद काम लायक हुए। दो बजेके समय मैं चलने लगा तो मुझको मालूम हुआ कि मेरे पैर शरीरसे छूटे पड़ते हैं। बोझा इतना भारी मालूम होने लगा कि उसे उतारना पड़ा। अब उसके ले चलनेकी दूसरी युक्ति सोची। मैंने गट्ठरको दो

बराबर भागोंमें बांटा और प्रत्येक भागको अपनी दोनों लाठियोंके दोनों कोनोंमें बांधकर ले चला। पर मैंने इस तरह कभी बोझ नहीं ढोया था इसलिए रगड़से कन्धेके चमड़ेमें दर्द होने लगा।

मुझे प्रत्येक २०० गजपर कन्धा बदलना पड़ता था। दो घंटेमें मैं प्रायः एक मीलकी चढ़ाईपर पहुंच सका। वहांपर एक नदी थी। वहां पहुँचते २ इतना थक गया कि आगे न बढ़ सका।

अब मुझे चाय तैयार करनेकी चिन्ता हुई। वृक्षोंके सूखे पत्ते, भैंसका कण्डा, जङ्गली घोड़ोंकी लीद ही ईंधन था। मैंने इसे इकट्ठा किया। पर अग्नि किस प्रकार उत्पन्न की जाय। दियासलाईका यहां दर्शन नहीं था, मैं पत्थरसे लोहा मारकर अग्नि निकालनेकी चेष्टा करने लगा। बहुत देरके बाद अग्नि तैयार हुई। यहां पानी बहुत शीघ्र खौलने लगता है पर चाय डालनेपर प्रायः दो घंटेमें रंग आता है। अतएव चाय तैयार करनेमें २—२॥ घंटे लगे। चाय पीकर मैं उठा और जितना गोबर और लीद मिली बटोर लिया। क्योंकि पहाड़ी चीतोंसे बचनेके लिये आग जला रखना आवश्यक था।

पर आगके जलते रहनेसे दूसरा भय भी था। हत्यारे डाकू दूरसे आग जलती देख आकर लूट सकते हैं। इन दोनोंमें डाकुओंका भय भीषण था। क्योंकि चीता तो सोते मनुष्यको छोड़ भी सकता है। पर डाकू तो छोड़ही नहीं सकते हैं। ऐसा विचारकर मैंने अग्निको चारों ओरसे रेहसे ढक दिया जिससे उसकी गर्मी ही बनी रहे पर दिखलाई न पड़े।

रातको प्रचण्ड सर्दी थी। मुझे नींद नहीं आई। मैं उठ बैठा और ध्यानस्थ हो गया। इतनेमें सवेरा हो गया। नदीके किनारे जाकर देखा तो पानी जम गया था। अग्नि ठीककर मैंने भोजन तैयार किया। भोजनोपरान्त चलनेकी ठहराई पर यह भूल गया कि किस मार्गसे जाना चाहिये। इतना याद रह गया था कि एक चट्टानपर बुद्धदेवकी मूर्त्ति खुदी हुई मिलेगी। पर जिस मार्गसे मैं गया उसमें वह नहीं मिली तो मुझे बड़ी चिन्ता हुई। वास्तवमें मैं राह भूल गया था। ५ मील चलकर मैं लम्बे चोड़े मैदानमें पहुंचा। उसमेंसे होकर एक नदी भी बहती थी।

कम्पास देखनेपर ज्ञात हुआ कि उत्तर पश्चिम जानेके लिये मुझे नदी पार करना पड़ेगा पर यह सुखकर न था, क्योंकि पहला अनुभव अभी ताजा था। जिस समय मैं यह विचार कर रहा था उसी समय मैंने एक मनुष्यको नदी पार करते देखा। पूछनेपर मालूम हुआ कि वह खामसे गिलांग रिंगपोंचके दर्शनके लिये जा रहा है। मैंने उसको समझा दिया कि मैं बहुत निर्बल हो रहा हूं। मुझे नदी पार करनेमें सहायता दो। यह कहकर मैंने उसे बहुत सी खाद्य सामग्री दी। वह इस उदारतासे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मेरा सामान अपनी पीठपर उठा लिया, और मेरा हाथ पकड़कर आगे चला। नदी पार करा कर आगेकी राह उसने मुझे बतलाई और फिर नदी पारकर चला गया। मैंने भी अपना रास्ता पकड़ा।

सोलहवां परिच्छेद

—:०:—

दुःखका पूर्वाभास

मैं थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा था कि श्वास लेनेमें तकलीफ होने लगी और थोड़ी मिंतली आनें लगी। मैं अपनी गठरी उतारकर बैठ गया। औषध खाया जिसका फल यह हुआ कि मुंहसे बहुत सा लहू निकल पड़ा। हृदय रोगका भय न होनेके कारण मैंने समझा कि यह हवाकी कमीके कारण है। अब मुझे ज्ञात हुआ कि हम लोगोंके फेफड़े तिब्बत वालोंसे कहीं निर्बल होते हैं। इस कष्टसे मैं यहां तक बलहीन हो गया कि अग्निके लिए कण्डा बटोरनेकी भी शक्ति नहीं रही। मैं वहीं लेट गया और लेटते ही सो गया। न जाने मैं कब तक सोता रहा। किसी वस्तुके स्पर्शसे सहसा आंख खुली तो देखा कि बड़े २ ओले गिर रहे हैं। मैं उठना चाहा पर उठ न सका। मेरा शरीर इस प्रकार जकड़ गया मानों गठिया हो गयी हो। बहुत चेष्टा करनेपर मैं उठकर बैठ सका। थोड़ी देर इसी भांति बैठे रहने पर मेरी नाड़ी ठीक हुई और श्वास भी ठीक चलने लगी। पर शरीरकी पीड़ा कम न हुई। ऐसी दशामें आगे बढ़ना या कंडे इकट्ठा करना कठिन था। मैंने भेड़का चमड़ा बिछा लिया और उसके ऊपर बैठ गया। ऊपरसे 'टक-टक' ओढ़ लिया

और ध्यानस्थ हो गया। इस तरह सवेरा हुआ। अब मेरी अवस्था बहुत अच्छी थी। मैंने उठकर थोड़ेसे सूखे अंगूर खाए और वहांसे चल दिया।

थोड़ी देर चलनेपर मुझे एक स्वच्छ जलकी नदी मिली वहां मैं ठहर गया और अग्नि प्रस्तुत करके चाय तैयार की और पेट-भर भोजन किया। नदी पारकर मैं एक पहाड़ीपर चढ़ा। वहीं-से सुदूरपर कई एक खेमे दिखाई दिये जिनमें एक सफेद था और बाकी सब काले थे। तिब्बतमें खेमे काले रंगके होते हैं। इसलिये इस सफेद खेमेको देखकर मुझे घबराहट हुई। पर वहां पहुंचनेकी शीघ्रता करने लगा। मैं पांच मील चला। मुझे पुनः सांस लेनेकी तकलीफ और थकावट मालूम होने लगी। जिस समय मैं खेमेके पास पहुंचा ४—५—खूंखार कुत्ते मेरे ऊपर टूट पड़े। मैं किसी तरह लाठी हिलाकर अपनी रक्षा की।

सतरहवां परिच्छेद

—:o:—

परित्रायिका युवती

कुत्तोंके भूकनेकी आवाज खेमे तक पहुंची और एक सुन्दरी स्त्रीने बाहर मुख निकालकर देखा। इस निर्जन स्थानमें ऐसा अनुपम सौन्दर्य देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर तक

वह चकित हो मुझे देखती रही। बाद बाहर आकर कुत्तोंको शान्त किया। उसके शब्द सुनते ही कुत्ते दुम दबाकर एक ओर हट गये। मैंने रात भर आश्रय पानेके लिये प्रार्थना की। उसने कहा कि "लामासे पूछकर कहूंगी।" इतना कह कर वह खेमेके भीतर चली गई और थोड़ी देर बाद लौटकर आई और मुझको लामाके पास ले गई। लामा और उसकी स्त्री बड़ी दयावती थी। तीन दिन तक उनके साथ बड़े आनन्दसे बीता। मार्गके विषयमें कई आवश्यक बातें मालूम हुई। लामाने यह भी कहा कि आधा दिन घोड़ेपर चलेनेपर चढ़ कर क्यांगचू नदी मिलेगी। यह ब्रह्मपुत्रकी सहायक है इसे केवल जानकार पार कर सकते हैं। लाचार होकर मुझे २३ जुलाई तक वहीं ठहरना पड़ा। बारहवींकी रातको मेरे मित्रने अन्य खेमेके लोगोंको मेरा उपदेश सुनानेके लिए बुलाया। मेरे उपदेशने मेरे लिए बहुत सी भेंट इकट्ठी कर दी। इन लोगोंमें एक युवती भी थी, उसने अपने गलेकी एक माला जिसमें सात मूंगे और एक रत्न जड़ा था मुझे भेंट दी। उसकी खातिरन मैंने उसे ले लिया पर एक क्षणके बाद ही उसे लौटा दिया क्योंकि वह मेरे किसी कामकी नहीं थी। पर जब उसने मुझे लेनेको विवश किया तो मैंने उसे ले लिया। वह आज भी उस युवतीके चिह्न स्वरूप मेरे पास है। दूसरे दिन सफेद खेमेका स्वामी मेरे मित्रके पास कुछ फल लाया और उनके बदलेमें भेड़को ऊन, मक्खन इत्यादि ले गया। यह लदाखका सौदागर था। तिब्बती भाषा

खूब जानता था। वह पक्का बौद्धमतावलम्बी था। मुझसे बातें करके वह बहुत प्रसन्न हुआ और मुझे निमन्त्रण दे गया। दोपहरको मैंने उसीके साथ भोजन किया। इसीके साथ मुझे नदी पार करना था। मेरा मित्र लामा, नये सम्प्रदायका था। ऐसी दशामें उसे सपत्नीक देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। पर मैं इस भेदका पता लगाना उचित न समझा।

जिस समय मैं लदाखके सौदागरके खेमेसे लौटा तो मुझे अपने मित्रके खेमेमें शोरगुल सुनाई दिया। भीतर जाकर देखा कि सुन्दरीका मुख क्रोधसे लाल हो रहा है और वह अपने स्वामीको बुरा भला कह रही है।

यह कलह एक दूसरी स्त्री और लामाके अपने सम्बन्धीके साथ पक्षपात करनेके कारण था। लामाका स्वभाव शान्त था, वह चुपचाप सब बातें सुन रहा था। पर जब उसे बरदाश्त न हो सका तो वह उठकर उसे दो चार थप्पड़ लगाया। इससे स्त्रीका क्रोध और भी बढ़ गया। वह जोरोंमें चिल्लाने लगी और जमीनपर अपना माथा पटक पटककर कहने लगी—'मुझे मारकर खाजाओ।' मैं इन दोनोंको शान्त करने लगा। किसी तरह दोनोंको अलग किया। सुन्दरीको विस्तरेपर भेजकर लामाको सफ़ेद खेमेमें अपने साथ लेता गया। इस दृश्यसे मुझे आन्तरिक वेदना हुई कि मनुष्य केवल इन्द्रियोंका दास बनकर अपना कठिन व्रत तोड़ देता है और इस प्रकारकी यातना सहता है।

अट्ठारहवां परिच्छेद ।

नए नए अनुभव ।

चौदहवीं जुलाईको आलचू लामासे विदा होकर, उसके दिये हुए घोड़ेपर सवार होकर लदाखके सौदागरके साथ उत्तरकी ओर चला। मेरे सामानका भार मेरे साथी सौदागरपर था। उसके साथ ६ नौकर और कई टट्टू थे।

चौदह मील चलनेपर हमलोगोंको क्यांगचू नदी मिली। यहांसे पचास मीलकी दूरीपर बरफसे ढका एक पहाड़ दिखाई पड़ता था। इसी पहाड़से यह नदी निकलती है। इसका पाट अधिकसे अधिक ४५० गज और कमसे कम ६० गज है। उतरनेके पूर्व हमलोगोंने भोजन कर लिया। उस समय मैं लदाखी सौदागरका मेहमान था। उसके नौकर कण्डा आदि इकट्ठा करते, खाना पकाते और मैं धर्मपुस्तक पढ़ता। चलते समय आलचू लामाने मुझे थोड़ा चावल दिया था। मैंने उसे पकाया और सब साथियोंमें बाँटकर खाया। यहां चावल नेपालसे आता है और बहुत मंहगा मिलता है। मैंने बहुत दिन बाद चावल खाया था अतएव बड़ा स्वादिष्ट लगा।

नदीकी जमीन बलुई थी, इसलिए सामान लदे रहने देकर टट्टुओंको तैराना खतरनाक था। अतः एक घोड़ेका सामान उतार

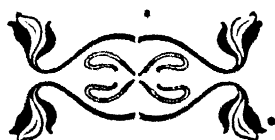
लिया गया और नौकरोंने उसे ढोकर पार किया। हमलोगोंने भी अपने कपड़े उतार डाले और नदीको पार किया। यहांपर नदीकी चौड़ाई प्राय ४०० गज थी और गहराई तीन चार फुट। बरफके बड़े बड़े टुकड़े बहकर आते हैं उनसे बचनेके लिए बड़ा सम्हालकर पैर बढ़ाना पड़ता था। उस पार उतरकर धूपमें हमलोगोंने अपने बदन ठीक किए। तबतक नौकरोंने सामान लादकर तैयार किया।

घोड़ेपर सवार होकर नदीके किनारे किनारे उत्तर पश्चिम १५ मील चलकर हमलोगोंको ७-८ खेमे मिले। हमलोग सबसे बड़े खेमेमें ठहराए गए। इसका स्वामी वयोवृद्ध कर्म नामके थे। जब कर्म महाशयने सुना कि मैं आलचू लामाके पाससे आ रहा हूँ तो उन्होंने मेरा बड़ा आदर सत्कार किया। कर्म महाशयके यहां मैंने एक नई बात देखी। यह तिब्बतमें अनोखी थी। तिब्बतमें ३-४ भाइयोंके बीच एकही विवाहिता स्त्री होती है। पर कर्म महाशय अकेले तीन पत्नीवाले थे। उनकी अवस्था पचास वर्षकी थी। पहली स्त्री अन्धी थी, वह ४७ वर्षकी थी। दूसरी ३५ की और तीसरी पचीस वर्षकी थी। सबसे छोटीसे उन्हें एक पुत्र था। तिब्बतमें बहु विवाहकी प्रथा बहुतही कम देखनेमें आती है। हाँ, दो तीन बहनें किफायतशारीके ख्यालसे एक ही पुरुषसे विवाह कर लेती हैं। तिब्बत भरमें केवल कर्म महाशय तीन पत्नी वाले दिखाई दिये।

कर्म महाशयने धर्मपुस्तक पढ़कर सुनानेकी मुझसे प्रार्थना

की। मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया और वहां दो दिन ठहरना कुछ अनुचित न समझा। वहाँ मैंने एक जोड़ा नया जूता और सामान ढोनेके लिए एक बकरी मोल ली। १८ जुलाईको कर्म महाशयसे मैं बिदा हुआ।

प्राय: पचास पौण्ड बोझ मैंने अपनी पीठपर और पचीस पौण्ड बकरीके ऊपर लादा। बकरीको मैंने भैंसकी दुमकी बनी हुई रस्सीसे बाँध लिया। प्राय: दो सौ गज तो बकरी अच्छी तरह चली पर आगे वह न बढ़ी और घर लौटनेके लिये ज़ोर मारने लगी। मैं उसे आगेकी तरफ खींचने लगा और वह पीछेकी तरफ चलनेके लिये जोर मारने लगी। पर अन्तमें मैंने हार मानी और बकरीको लेकर कर्म महाशयके घर पहुँचा। उन्होंने मुझसे कहा—"यह बकरी अभी नयी है। एक निकाली हुई खरीद लीजिये तो दोनों मिलकर ठीक हो जायँगी।" उनकी बात मुझे ठीक जँची। रातभर मुझे उनके यहाँ ठहरना पड़ा क्योंकि बकरियाँ चरने चली गयी थीं। दूसरे दिन मैंने एक और बकरी खरीदी और दोनोंको लेकर आगे बढ़ा। यह नयी बकरी बहुत अच्छी थी। दोनों साथ होकर मजेमें चलीं।



उन्नीसवां परिच्छेद ।

तिब्बतकी सबसे बड़ी नदी ।

जिस दिन मैं कर्म महाशयके यहाँसे बिदा हुआ उसी दिन तीसरे पहर मुझे राहमें कुछ आदमी मिले । उनका प्रधान उस प्रदेशका प्रधान था जिसमें मैं इस समय यात्रा कर रहा था । उसके मुखकी आकृति देखनेसे ज्ञात होता था कि वह मेरे ऊपर सन्देह कर रहा है । मैं अपनी संकटापन्न अवस्थाको समझ गया और तुरन्त ही गिलांग रिंगपोंचेकी बातें आरम्भ कर दीं । सौभाग्यवश वह मनुष्य गिलांग रिंगपोंचेका बड़ा भक्त था । उसने मुझसे पूछा,—"क्या आप उस पवित्रात्मासे मिले थे ?" मैंने कहा, "हाँ ! उन्होंने मुझे बोधिसत्व और महासत्वका मर्म भी समझाया और बहुमूल्य उपहार भी दिया ।" इन बातोंसे उसका सारा सन्देह दूर हो गया । दूसरे दिन उसने उपदेश देनेके लिये मुझे अपने घर निमंत्रित किया। उसका नाम बांगडक था । दूसरे दिन बांगडकने मुझे एक घोड़ा दिया और मेरा सामान अपने नौकरोंके हवाले किया । प्रायः दस मील चलनेपर प्रधानका घर मिला । वह दिन मज़ेमें बीता । यहाँ वह बड़े ठाठसे रहता था । दूसरे दिन उसने मुझे घोड़ेपर सवार कराकर अपने नौकरके साथ बिदा किया । ६ मीलके बाद नौकर घोड़ा लेकर लौट गया । उसने मुझे दूसरे दिन

टिकनेका स्थान बतला दिया था। दूसरे दिन मैं बताये हुये स्थानपर पहुँचा। वहाँ चार खेमे मिले। यहाँ भी मुझे कुत्तोंने चपेटा। वहाँसे दिन भरकी राहपर ब्रह्मपुत्रके उत्तरी भागमें टेमचाक खान-बाल नदी थी। तिब्बतमें इससे बड़ी और कोई नदी नहीं है। बिना किसी सहायकके मैं इसे पार करनेका साहस नहीं कर सकता था। पर कोई भी मेरे साथ चलनेको राजी न हुआ। मैंने रुपयेका लोभ भी दिया पर सब निष्फल हुआ। मैं हताश होचुका था कि एक रोगी बुढ़िया मेरे पास आयी। उसने कहा—"मैं बहुत बीमार हूँ। मुझे देख लीजिये और बताइये कि मैं कब मरूंगी।" मुझे उसके ऊपर बड़ी दया आयी। उसे क्षयी रोग हो गया था। रोग बहुत बढ़ गया था। मैंने उसकी बात मान ली और उसे देखकर दवा भी दी। बुढ़िया कृतज्ञता भरी दृष्टिसे बोली—"मुझसे कोई सेवा लीजिये।" मैंने अपना क्लेश उसे कह सुनाया। बुढ़ियाके लिये यह काम कठिन नहीं था। दूसरे दिन सवेरे सब बन्दोबस्त ठीक हो गया। यहाँके घोड़े सवारके साथ ३० पौण्ड बोझ ले जा सकते हैं। पर मेरा सामान तीन घोड़ोंपर था। इससे औरभी आसानी थी। हमलोग पाँच बजे सवेरे रवाना हुये। ११ बजते बजते सत्रह मील चलकर हमलोग नदीके किनारे पहुँचे। नदी पार उतरनेके पहले भोजन बनाकर खा लिया।

इस नदीके दोनों किनारे दूरतक रेह हैं। नदीकी चौड़ाई कुछ अधिक थी। उतरनेसे पहले मैंने अपने साथियोंसे छिपाकर

अपने शरीरमें लौंगके तेलका लेपन किया। कहीं कहींपर पानी केवल ७-८ इंच था पर इतना अधिक दलदल था कि हमलोग कमरतक धँस जाया करते थे। किसी तरह उस पार पहुँचे। मेरे साथियोंने मुझे बतलाया कि १५-१६ दिनतक निर्जन वनमें चलकर मानसरोवर पहुँचियेगा। बिदा होते समय मैंने प्रत्येकको एक एक काटा भेंट दिया। काटा एक तरहकी सफेद रेशमी टुकड़ा होता है। यह भेंट देनेके ही काममें आता है। इस प्रकार मुझसे भेंट पाकर वे लोग अपने घर लौट गये।

बीसवां परिच्छेद।

विपत्तियोंका आरम्भ

यहाँसे प्रायः आधा मील चलकर मैंने बकरियोंको चरनेके लिये छोड़ दिया। हिमालयकी पर्वतमालाकी सुन्दरता सराहनीय थी। मैंने उन्हें आँख भर देखा और आंखोंको तृप्त किया। जब दोनों बकरियां चर चुकीं तो मैंने सामानको तीन हिस्सोंमें बाँटा और लदलदा कर आगे बढ़ा। यह प्रदेश सोतों और झरनोंसे भरा हुआ था जिनका विस्तार सौ गजसे एक मीलतक था। चार बजते बजते मैं एक स्वच्छ तालाबके किनारे पहुँचा और वहीं ठहर गया। ईंधन खोजनेके लिये निकला तो केवल थोड़ीं-

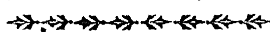
की सूखी लीद मिली। रातको ठंढक बहुत लगी जिससे नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन दोपहरसे पहले मैं बारह मील निकल गया। दोपहरके बाद उत्तर पश्चिमकी ओर चला और वहाँपर एक बड़ा भारी बरफका पहाड़ मिला जिसका लांघना असम्भव था। थोड़ी देर सोचनेके बाद मैंने अपना रास्ता बदला और भाग्यवश वह ठीक निकला। मार्गकी अनुकूलताके अतिरिक्त और सब बातें मेरे प्रतिकूल थीं।

मैं आगे बढ़ा पर यह प्रदेश बिलकुल विपरीत था। पानीका सर्वथा अभाव था। सात बजेतक चलकर २७ मील राह पार की पर कहीं एक बूँद भी पानी न मिला। बकरियोंके लिये कुछ घास तो अवश्य मिल गयी पर मुझे चाय नसीब न हो सकी। मनुष्य भी कैसा सहनशील होता है। इतना कष्ट उठाने पर भी नींद आ गई।

चलनेसे पहले मैंने देखा कि प्रायः सात मीलकी दूरीपर एक सोता बह रहा है। मुझे बहुत प्यास लग रही थी। अतएव मैं उधरको ही चल पड़ा। पर वहाँ पहुँचकर मैंने देखा कि नदी सूखी है। पानीका कहीं नाम नहीं है। उसके सफेद पत्थर की चमकने मुझे धोखा दिया। मैंने इधर उधर दृष्टि दौड़ाई पर पानीका कहीं भी पता न लगा। लाचार मैं आगे बढ़ा। एक ठौर और भी ऐसे ही धोखा खाया। मेरी प्यास बढ़ती गई।

इक्कीसवाँ परिच्छेद ।



आंधीकी चपेट ।

दूसरी बार हताश होकर लौटनेपर मुझे ऐसी प्यास लगी जिसका वर्णन नहीं हो सकता। मुझे ज्ञात होता था मानों शरीरका रक्त सूख गया है, पर सिवा आगे बढ़नेके और कोई चारा नहीं था। मुझे विश्वास होने लगा कि यदि आज पानी नहीं मिला तो कदापि न बचूंगा। ग्यारह बजेके समय मुझे एक छोटासा गड्ढा दिखलाई पड़ा। मुझे भरोसा हो गया कि इसमें पानी अवश्य मिलेगा। मेरा अनुमान ठीक निकला। पानी तो था पर हाय! ऐसा पानी! मैंने अपनी पीठपरसे बोझ उतारा और लकड़ीका एक पात्र लेकर क्षणभरमें उस गड्ढेमें पहुँच गया। जब उस पात्रको भरकर बाहर लाया तो देखा कि वह पानी गाढ़ा और गुलाबी रंगका था। उसमें कीड़े भी असंख्य भरे पड़े थे। वह बन्द पानीका गड्ढा था जो वर्षोंसे सड़ रहा था। मेरे उस समयके दुःखका पाठक स्वयं ही अनुमान कर सकते हैं। प्यासके मारे प्राण निकल रहे थे पर ऐसा पानी कैसे पिया जाय। क्योंकि उस पानीको पीना धर्म विरुद्ध भी था। उसी समय मुझे बुद्धका एक उपदेश याद आया और इसके अनुसार एक कपड़ेसे छानकर कीड़े निकाल दिये। फिर भी पानीका रंग

दूर नहीं हुआ। पानीको मैंने भरपेट पी लिया उस सड़े हुये पानीमें मुझे जैसा स्वाद मिला वह वर्णनातीत है। दूसरा पात्र मैं छानकर भर लाया और चाय तैयार करनेको रख दिया। पर पानी गरम करते करते बारह बजने लग गये। मेरा यह व्रत था कि दोपहरके बाद मैं कुछ नहीं खाता था अतएव शीघ्रतासे चाय तैयारकर मैंने बारह बजते बजते भोजन कर लिया। भोजनोपरान्त मैंने वहाँसे कूच किया और तीन बजते बजते २॥ मील निकल गया। इसी समय एक भयानक तूफान उठा। जापानमें ऐसी आंधी कभी नहीं आती। रेतके झोंकेपर झोंके आने लगे और मेरे असबाब तथा समस्त शरीरमें भरने लगा। तूफानका वेग देखते ही देखते ऐसा बढ़ गया कि खड़ा रहना कठिन था। आगे बढ़ना तो असम्भव था। रेतसे बचनेके लिये मैं बराबर टह-लता रहा और साथ ही धर्मपुस्तकका पाठ भी करता जाता था।

प्राय: घंटे भर तूफान रहा और जिस वेगसे उठा था उसी तरह बन्द भी हो गया। अब मैंने यात्रा आरम्भ की और पांच बजते बजते एक हरे भरे मैदानमें जा पहुंचा। वहां रातको खूब सोया, क्योंकि कई दिनसे पर्याप्त सोनेको नहीं मिला था। दूसरे दिन वहांसे चलकर मैदानको पार करते हुए एक पहाड़के नीचे पहुंचा जिसके ऊपर होकर मुझे गुजरना था। बीचोबीच रास्तेपर एक नदी बही थी। इसका बहाव एक नये ढंगका था अर्थात् थोड़ी दूर बहकर वह एक झील बन गयी है और उससे आगे वह एकदमसे समकोण बनाकर बही थी। पीछेसे मुझे

मालूम हुआ कि यह ब्रह्मपुत्रकी सहायक नदी है। मुझे यह ध्यान आते ही कि, मुझे इस नदीको पार करना होगा, हृदय कांप उठा। पर इलाज क्या था?

मैं नदीके किनारे ६ बजते बजते पहुंच गया था। किनारे-परकी बरफ ज्योंकी त्यों जमा पड़ी थी। बरफके गलने तक ठहर गया और भोजनकी व्यवस्था करने लगा। लौंगके तेलका लेपन भी न भूला था। मैंने यह चाहा था कि बकरियोंका बोझ उनकी पीठपर ही लदा रहने दें और उनको नदीके पार उतार दें। पर यह न हो सका क्योंकि नदी गहरी थी। अन्तमें मैंने बोझ उतार लिया और रस्सीके सहारे उन्हें ले चला। पानीकी गहराई अधिक थी अतएव मेरे कपड़े बहुत कुछ समेटनेपर भी भीग गये। बकरियां बड़ी तैरने वाली थीं पर रस्सीके विना वह पानीके जोरसे बह अवश्य ही गयी होतीं। हमलोग आरामसे उतर गये। उस पार जाकर मैंने बकरि-योंको पेड़में बांध दिया। अपने सब कपड़े उतार डाले और उनको सूखनेके लिये डाल कर नंगा ही फिर असबाब लानेके लिये उस पार गया। वहां जाकर शरीरमें दूसरी बार फिर तेल लगाया और अपने सब सामानका एक ऐसा बण्डल बनाया जिसे शिरपर उठा सकूं। बण्डल सिरपर रख मैं तीसरी बार नदीमें प्रवेश किया। आधी दूरतक तो मैं मजेमें चला गया। एकाएक एक चट्टानपरसे मेरा पैर फिसल गया। कुछ थकनेके कारण और कुछ अधिक बोझ होनेके कारण मैं पानीमें

गिर पड़ा और बण्डल मेरे सिरसे दूर जा पड़ा। लाठीसे काम लेनेका समय न मिला। मैंने फुर्तीसे बण्डलको एक हाथ से पकड़ लिया और दूसरे हाथसे तैरने लगा। क्योंकि मैं गहरे पानीमें बहता चला जा रहा था। पहले तो मुझे यह ख्याल आया कि यदि बण्डल बचानेका उद्योग करूंगा तो डूब जाऊंगा पर शीघ्र ही मैंने सोचा कि बण्डलके विना भी मेरी मृत्यु हो जायगी क्योंकि मुझे अभी दस दिन और चलना था और उस राहमें मनुष्यके दर्शन दुर्लभ थे। मैं बण्डलको मरते समय तक न छोड़ना ही ठीक समझा। इसलिये बंडलको पकड़े रहा। मैं बहुत ही थक गया था और हाथ उठानेमें कठिनाई हो रही थी। वहांसे प्रायः १०० गजकी दूरीपर एक भारी झील थी जिसके गहरे पानीमें पहुंचकर मेरा निकलना असम्भव ही था। जहां मैं तैर रहा था नदी १८० गज चौड़ी थी और बीच बीचमें बरफके चट्टान पड़े थे। मैं सुस्त पड़ता जा रहा था। दोनों ही दशामें मृत्यु अनिवार्य थी इससे डूबकर मरना ही मैंने श्रेयस्कर समझा। मैं ईश्वर तथा बुद्ध भगवानका ध्यान करने लगा क्योंकि इसके अतिरिक्त मेरे पास और क्या बल था! इसी समय मेरी लाठी पानीके नीचे किसी कठोर वस्तु-से टकरायी। लाठीके छूजाते ही मुझे साहस आ गया। मैं खड़ा हुआ तो मालूम हुआ कि पानी छाती तक है। मैंने देखा कि जिस किनारेकी ओर मैं जा रहा था वह वहाँसे केवल चालीस गज था। मैं बहुत थक गया था। फिर भी नये

उत्साहके साथ आगे बढ़ा। मेरा बण्डल पानीमें भीगकर बहुत भारी हो गया था। उसको सिरपर उठाकर नहीं ले जा सकता था। अतएव मैं उसे घसीटकर ले चला। उसे पानीसे बाहर करनेमें मुझे असीम शक्ति लगानी पड़ी। किनारेपर पहुंचकर मैंने देखा कि मेरी बकरियां निश्चिन्त हो कर चर रही हैं। उन्हें अपने स्वामीकी दैन्यावस्थाका कुछ भी ज्ञान नहीं था। मैं निःशक्त हो गया था। अपनी बकरियोंतक पहुंचना भी मेरे लिये असम्भव था। मेरे हाथ पांव जकड़ गये थे। धीरे २ चलकर अंग अंगमें गरमी पहुँचाने लगा। इस तरह शाम हो गयी। अब मैंने गठरीके दो भाग बनाये और बहंगीकी भांति लटकाकर बकरियोंके पास पहुंचा। उस रात मैं और कुछ न कर सका। चमड़ेके ढक्कनके कारण कपड़े भीग न सके थे इससे उन्हें पहनकर सो रहा।

बाईसवां परिच्छेद



समुद्रकी तहसे २२६५० फीटकी ऊंचाईपर

दूसरे दिन कड़ी धूप हुई। मैंने अपने कपड़े और पुस्तकें सूखनेको डाल दीं। यह पुस्तकें अभी तक मेरे पास हैं, जब कभी मैं इन्हें देखता हूं तो मुझे उपरोक्त घटनां स्मरण हो आती है और मैं आश्चर्य्य करने लगता हूं कि कैसे बच गया। प्रायः

एक बजे दिनतक मैं आगे बढ़नेके लिये तैयार हो गया यद्यपि अभी तक मेरी थकावट नहीं गई थी। मेरे कपड़े इत्यादि भी पूरी तरहसे सूख नहीं गये थे। इससे मेरे हिस्सेका बोझ भी भारी हो रहा था और घटनावश बकरियोंका बोझ भी कुछ कम करना पड़ा था। इसके अतिरिक्त जिस समय मैं दूसरी बार दरिया पार कर रहा था मेरे पैरमें चोट आगई थी। हर तरहसे उस दिनकी यात्रा अशुभकर थी। पर यह सोचकर कि जितना आगे बढ़ता जाऊंगा उतना ही निर्दिष्ट स्थान सन्निकट होता जायगा मैंने चल दिया। पांच ही मील गया था कि जोरसे बरफ गिरने लगी। लाचार मैं एक तालावके पास पहुंचकर ठहर गया। बिजली चमक रही थी, बादल गरज रहे थे और ठण्ढी हवा चल रही थी। खाने पीनेका कोई ठिकाना न लगा। मेरे सब कपड़े फिर भीग गये। दूसरे दिन सवेरे सबको सुखाना पड़ा। आगका कोई बन्दोबस्त न हो सका अतएव चाय भी न तैयार हो सकी। थोड़ेसे अंगूर खाकर दोपहरके बाद आगे बढ़ा। जो आपत्ति मुझपर आने वाली थी, उसका मैं उस समय अनुमान भी नहीं कर सकता था। मैं उत्तर पश्चिमका ही जा रहा था। अब मुझे एक गगनस्पर्शी पहाड़पर चढ़नेकी आवश्यकता पड़ी। इस पहाड़की ऊंचाई २२६०५० फीट थी। यद्यपि यह चढ़ाई प्राय: असम्भव थी पर मनुष्यके लिये आशा एक अपूर्व शक्ति है। यही आशा मनुष्यसे न जाने कितने असम्भव काम करा लेती है। उसी आशासे प्रेरित होकर मैं चढ़ने लगा।

पांच बजे शाम तक प्रायः दस मील चढ़ गया। वहां पहुंचते पहुंचते जोरोंसे बरफ गिरने लगी और भीषण हवा चलने लगी। ऐसी दशामें चढ़ना भयावह समझकर मैं उत्तर पूर्वकी ओरसे जल्दी २ नीचे उतरने लगा। सूर्य भगवान अस्ताचलगामी हो गये थे, बरफ और भी गहरी पड़ रही थी, पर मुझे ठहरनेको कोई स्थान न मिला था, इसमें मैं नीचे ही उतरता गया। बरफका गिरना बढ़ता ही गया और देखते देखते जमीनपर १२ इंच बरफ़ जम गई। अब बकरियोंने भी आगे बढ़ना बन्द कर दिया। कुछ तो बरफके कारण और कुछ भूखी होनेके कारण। पर वहां ठहर जानेमें तो बरफमें जम कर मर जानेका भय था, इससे मैंने रस्सी पकड़कर उन्हें खींचना आरम्भ किया। इस तरह प्रायः सौ गज नीचेकी तरफ मैं उन्हें खींच ले गया पर वे हांफने लगीं। ऐसी दशामें वे आज रातको अवश्य मर जायँगी यह सोचकर मैं अधीर हो उठा। पर चारा ही क्या था! मुझे अभी तक मनुष्योंकी बस्ती तक पहुंचनेके लिये बहुत दिन शेष थे। दो चार मील आगे बढ़नेसे कोई लाभ न था। कोई चारा न देखकर मैं ओढ़ना ओढ़कर दोनों बकरियोंके बीचमें ध्यानस्थ हो बैठ गया।

मेरी बकरियां बिचारी मेरे शरीरसे आकर चिमट गईं। वे जाड़ेके मारे मर रही थीं और समय समय बुरी तरहसे चिल्ला उठती थीं। आधी रातके बाद सर्दी तेजीसे बढ़ने लगी और मुझे ऐसा ज्ञात होने लगा मानों मैं अचेत हुआ जाता हूं।

यह दुरवस्था देखकर मैंने लौंगका तेल निकाला और धीरे

धीरे समस्त शरीरमें मलने लगा। तेलके मलनेसे शरीरमें कुछ गरमी अवश्य आ गई परन्तु फिर भी शीत एक दम दूर न हुई। मुझे ऐसा ज्ञात होने लगा मानों शरीर ठण्ढा हुआ जा रहा है। धीरे धीरे मैं अचेत हो गया।

तेईसवां परिच्छेद

बरफके ऊपर।

बरफके ऊपर मैं अधमरा पड़ा था। मैं होशमें नहीं था। मैं भांति २ के स्वप्न देख रहा था कि हठात् मेरी आंख खुल गई। मुझे पास ही मालूम हुआ मानों कोई वस्तु हिल रही है। मैंने देखा कि बकरियां अपने शरीरको हिला कर बरफ झाड़ रही हैं। मैंने भी अपने तनपरकी बरफ झाड़नेकी चेष्टा की। पर मेरे हाथ पैर ही नहीं हिलते डोलते थे। धीरे धीरे मैंने हाथ पैर हिलाया। अब मैंने घड़ी निकालकर देखा तो दिनके १०॥ बजे थे। भूख जोरोंकी लग रही थी। थोड़ी सूखी रोटी निकालकर बकरियोंको भी दिया और थोड़ी बरफकी सहायता से अपने गलेके नीचे उतारा।

अब मैंने देखा कि ऊपर चढ़नेकी मुझमें शक्ति नहीं है। अतएव नीचे उतरा कि कुछ दिन पहाड़के नीचे रहकर स्वस्थ हो जानेपर ऊपर चढ़ूंगा। प्रायः पांच मील नीचे उतरने पर एक दूसरी

नदी मिली। उसके नीचे फिर बरफका राज्य था। यह देख कर मुझे बड़ा भय हुआ कि अबकी बार यदि ऐसी बरफमें रात काटनी पड़ी तो अवश्य ही मर जाऊंगा। इसी समय मुझे किसी पक्षीका स्वर सुनाई दिया। इधर उधर देखनेपर मुझे मालूम हुआ कि ८ या १० बगुलोंकी श्रेणी नदीके छिछले पानी-में कल्लोल कर रही है। ऐसा मनोरम दृश्य मैंने कभी नहीं देखा था।

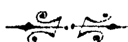
यह नदी प्रायः १२० गज चौड़ी थी। उसको पारकर मैं नीचे उतरकर एक घाटीमें आया। वहांसे दूरपर मैंने पहाड़ी भैंसोंके सदृश कुछ जानवर देखे। मुझे कई बार धोखा हो चुका था। अबकी उनकी चालसे मुझे मालूम हुआ कि अवश्य ही ये पहाड़ी भैंसे हैं। इनको देखनेसे मालूम हुआ कि पास हीमें कहीं मनुष्योंकी भी बस्ती है। नजदीक आकर देखा कि ६० पहाड़ी भैंसोंको कई एक चरवाहे चरा रहे हैं। पूछने पर मालूम हुआ कि वे लोग कल सन्ध्याको यहां आये हैं। उन्होंने कहा कि थोड़ी दूर आगे हमलोगोंके चार खेमे आपको मिलेंगे। मैं उसी ओर चल पड़ा।

ज्योंही मैं उन खेमोंके पास पहुंचा कुत्ते मुझे देखकर भूँकने लगे। पहले खेमेके पास जाकर मैंने रात भर ठहरनेके लिये प्रार्थना की पर उसने साफ इन्कार कर दिया। सम्भव है कि मेरी सूरतने ही मेरे साथ यह व्यवहार कराया हो। दो महीने से मैंने हजामत नहीं बनाई थी। दाढ़ी मूछ बेतरह बढ़ गई थी

और मेरी सूरत बिगड़ गई थी। मैं लगातार विनय करने लगा। पर लाभ कुछ न हुआ। हताश होकर मैं दूसरे खेमेके पास गया। वहां भी वही व्यवहार मिला। मेरी आंखोंमें आंसू आ गये पर उन लोगोंका हृदय तनिक भी नहीं पसीजा। मेरी बकरियां भी चिल्ला रही थीं मानों मेरा कष्ट वह भी न सह सकती थीं। खेमेके मालिकने मुझपर लुटेरा होनेका दोषारोपण किया तब मैं वहांसे हटा। अब मुझे तीसरे खेमेके पास जानेका साहस नहीं होता था। अन्तमें मैंने चौथे खेमेके पास जाकर प्रार्थना की और सौभाग्यवश वह स्वीकार हो गई। मैं एक दम थक गया था। अग्निके पास बैठते ही यह मालूम हुआ कि मानों सशरीर स्वर्गका सुख भोग रहा हूं। रात भर और दूसरे दिन मैं वही सुख भोगता रहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल पांच बजे अपने दयालु खेमेवालेके प्रति कृतज्ञता प्रकाश कर मैं बिदा हुआ। अब मैं उत्तरको चलने लगा और दस मील चलकर एक हरे भरे मैदानमें पहुंचा। दो पहर होते होते एक तालाबके किनारे पहुंचकर वहीं भोजन किया। वहांपर मुझे ज्ञात हुआ कि सामनेकी मरुभूमि भी मुझे पार करनी होगी जो पहले वालीसे भी बड़ी थी। तूफानकी सम्भवनासे मैंने अपना हृदय और कड़ा कर लिया और जब तक उसको पार न कर लिया, बीचमें तनिक भी न ठहरा।

चौबीसवां परिच्छेद



वोन देवता और जङ्गली घोड़ा

पांच मीलकी मरुभूमि पार करनेपर हरा भरा मैदान मिला। इसके आगे पथरीला विचित्र मैदान था जिसमें एक पहाड़ था। लोग बतलाते थे कि उसमें वोन धर्मके देवता रहते हैं। उसके मतावलम्बी आज भी तिब्बतमें पाये जाते हैं। यह धर्म हिन्दू धर्मसे बहुत मिलता जुलता है पर अब बौद्धधर्मकी बहुतसी बातें इसमें समा गई हैं। तिब्बतमें बौद्ध धर्मका प्रचार होनेपर वोन धर्मके किसी अधिष्ठाताने इस मतसे अनेक बातें उस धर्ममें मिला कर उसका नाम नया वोन धर्म रखा। इनकी मूर्त्तियां नहीं होतीं न इनके मन्दिर ही बनवाये जाते हैं। किसी पहाड़, तालाब अथवा झीलमें ये रहते हैं। ऐसे ही एक पहाड़पर मैं पहुंचा था। पर मुझे इसका ज्ञान न था। मेरा ध्यान जंगली घोड़ोंके जोड़ेने आकृष्ट किया।

तिब्बतके लोग इस जंगली घोड़ेको क्यांग कहते हैं। वास्तवमें इसकी सूरत गधेकी भांति होती है। ऊंचाईमें यह जापानी घोड़ेके बराबर होता है। यह बादामी और भूरे रंगका होता है। उसकी अयाल और पीठ परकी पनालीके बाल काले और पेटके सफ़ेद होते हैं। यह घोड़ोंसे बहुत कुछ मिलते जुलते हैं।

केवल दुम गुच्छेदार होती है। यह बड़ाही बलवान जानवर होता है, कभी अकेला नहीं रहता। कमसे कम दो अथवा तीन हमेशा साथ साथ रहते हैं। मनुष्यको देखकर मील डेढ़ मीलकी दूरीसे ही वह खड़ा होकर घूम घूमकर देखने लगता है। इस प्रकार चलकर वह पास आ जाता है। पास आते ही लातें मारकर भाग जाता है। बहुधा लोग धोखा खाते हैं कि वह दूर निकल गया है परन्तु चक्कर काटकर फिर, पास आ जाता है। इस जन्तुकी आदतें अद्भुत हैं।

इन घोड़ोंको आते देखकर मेरी दोनों बकरियां भयभीत होकर मेरे हाथसे रस्सी छुड़ाकर भागीं और मैं उनके पकड़नेके लिये उनके पीछे दौड़ा। दौड़ते दौड़ते मैं हाँपता हुआ गिर पड़ा। घोड़ोंको हमारा दौड़ना अच्छा मालूम हुआ। घोड़े भी हमारे साथ दौड़ने लगे जिससे मेरी बकरियां और भी तेजीसे भागने लगीं। जब मैं गिर पड़ा तो बकरियां भी खड़ी हो गईं और चरने लगीं। घोड़े भी खड़े हो गये और मुझे चकित होकर देखने लगे। मैं अपनी भूल समझ गया और उठकर चुप चाप बकरियोंके पास गया और रस्सियां पकड़ लीं। वे कुछ न बोलीं।

जांच करनेपर मालूम हुआ कि एक बकरीके ऊपरसे एक छोटा बण्डल दौड़ते समय कहीं गिर गया। मैंने खोजनेका यत्न किया पर सब व्यर्थ था। बकरियां मनमाने मार्गसे भागी थीं। मैं गठरीको कहां खोजंता। निदान अपने मनको इस भांति समझाया—"इस बण्डलमें प्रायः पचास रुपये थे, मेरी घड़ी

और कम्पास था, और थोड़ा पाश्चात्य वस्तुओंका संग्रह था। रुपयोंके जानेसे अवश्य हानि हुई पर उनसे अधिक अभी मेरे पास हैं। घड़ी और कम्पास अवश्य ही कामकी वस्तुयें थीं। संग्रहीत वस्तुओंसे मैं तिब्बतके लोगोंको अपना मित्र बनाता पर साथ ही उनके रहनेसे तिब्बतके चतुर लोग मेरे विषयमें अनेक तरहकी आशङ्कायें करते। कदाचित बुद्धदेवको यही अभीष्ट था। ऐसा विचार कर मैंने अपने मनको सन्तोष दिया।

पच्चीसवां परिच्छेद।

बौद्ध धर्मकी शक्ति

इस स्थानसे छः मील चलनेपर मुझे एक पगडण्डी मिली जो मान सरोवर आनेवाली सड़कसे मिली थी। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई। थोड़ी दूर और चलनेपर मुझे एक नदीके किनारेपर एक काला खेमा दिखलाई पड़ा। इस नदीको तिब्बतके लोग गंगा कहते हैं। यहां मुझे रातभर रहनेके लिये आज्ञा मिल गई। इस खेमेमें तीन पुरुष और दो स्त्रियां थीं। ये लोग सगे भाई थे। एक स्त्री बड़े भाईकी पत्नी थी। दूसरी स्त्री एक दूसरे भाईकी लड़की थी। इनके डाकू होनेका सन्देह मेरे दिलमें न उठा क्योंकि डाकू लोग अपने साथ स्त्रियोंको नहीं रखते। पर जब मुझे ज्ञात हुआ कि ये लोग डेमग्याशोके रहनेवाले हैं तब

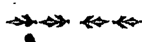
मुझे अपनी भूल मालूम हुई क्योंकि यहांके लोग भी खामवालों-की भांति चोर और लुटेरे होते हैं। मैंने सुना है कि उन लोगोंमें एक कहावत प्रचलित है "हत्या करे तो अन्न जुटे, तीर्थ करे तो पाप छुटे।" मुझे यहांतक मालूम हुआ कि वहांकी स्त्रियां तक मनुष्यको सहजमें मार डालती हैं। यह बात ध्यानमें आते ही मुझे घबराहट होने लगी, परन्तु करता क्या? अब तो मैं उन लोगोंके हाथमें था। सौभाग्यवश उस रातको उन्होंने मुझे नहीं मारा। दूसरे दिन हमलोग नदीके किनारे किनारे उत्तर पश्चिमकी ओर चले। ये लोग भी उसी ओर जा रहे थे। प्रायः साढ़े तीन मील चलनेपर हमें गङ्गाका उद्गमस्थान मिला।

रात उसी नदीके किनारे बिताकर प्रातःकाल हमलोग आगे बढ़े। उस दिन केवल ६ मील चले। यहांसे उत्तर पश्चिमकी ओर कैलाशपर्वतकी चोटी दिखाई पड़ी। मैंने हिमालयकी तुषा-रावृत बहुतसी चोटियां देखी थीं परन्तु कैलाशको देखकर भक्तिका स्रोत हृदयमें उमड़ पड़ा। उसे मैंने एक सौ आठ बार प्रणाम किया।

मेरे इस कामको देखकर मेरे साथियोंने बड़ा आश्चर्य किया। वे लोग मुझे चीनी भाषामें मन्त्रोंको पढ़ते हुए देखकर बच्चोंकी भांति अचम्भेमें आ गये। मैंने उनको मन्त्रोंका और प्रणाम इत्यादिका अर्थ बतलाया जिसका उनके ऊपर बहुत असर पड़ा। उन्होंने कहा कि हमको यह बात नहीं मालूम थी कि चीनी लामा भी बुद्धदेवके ऐसे भक्त होते हैं। इसका फल यह हुआ कि

उन्होंने रातको मुझसे उपदेश देने की प्रार्थना की जिसको मैंने आनन्द पूर्वक स्वीकार कर लिया। मेरे उपदेशका उनपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि विह्वल, होकर रोने लगे। और ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने मुझसे कहा कि हमलोग दो महीनेतक तीर्थ पर्यटनमें रहेंगे, इतने दिनोंतक आप हमलोगोंके साथ रहिये। क्योंकि तीर्थ करते समय ऐसे पवित्र पुरुषकी सेवा करनेसे हमारे सब पाप छूट जा सकते हैं। पाठक! उस समयके मेरे हृदयके भावोंकी ओर ध्यान दीजिये! येही लोग मूलीकी भांति मनुष्यका गला काट डालते हैं, और इस समय बौद्ध धर्मकी दीक्षासे येही लोग आज इतने सरल हो रहे हैं। मैंने बुद्ध भगवान्‌की अपार शक्तिका स्मरण किया और मेरी आंखोंसे आंसू आने लगे।

छब्बीसवां परिच्छेद।



पुण्यक्षेत्र मानसरोवर

चौथी अगस्तको दस मील चलकर हमलोगऐसे स्थानपर पहुँचे जहाँसे मनरी शृंग दिखलाई देता था। यह सदा बरफसे ढका रहता है। इसकी ऊंचाई २५६०० फुट है। मनरीकी अपूर्व शोभा गाम्भीर्य्यको देखनेमें जिस समय मैं मुग्ध हो रहा था, उसी समय वहांके दृश्यमें एक जादूकासा परिवर्त्तन हो गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगे और बड़े वेगसे ओले

गिरने लगे। मानों समूचे पहाड़को हिला देंगे। चारों ओर घोर अन्धकार फैल गया।

प्राय: घण्टे भर यह दशा रही। इसके पीछे एक दमसे आकाश निर्मल हो गया। सूर्य निकल आये, तूफानका कहीं चिह्न तक न रहा। इसके बाद हमलोग और आगे न बढ़े। नजदीक ही एक तालाबके पास ठहर गये। इस समय मैं इन लोगोंका मेहमान था। अब मुझे लकड़ी, कण्डा खोजने, पानी भरने और आग जलानेकी चिन्ता न रही। मैं केवल खेमेमें बैठा हुआ धर्म पुस्तक पढ़ता और सन्ध्याको अपने साथियोंको उपदेश देता था।

६ अगस्तको हमलोग एक बहुत ही ढालू पहाड़ पर चढ़ने लगे। मेरे साथियोंने सवारीके लिए मुझे एक याक दिया। मेरा बोझा भी मेरे साथियोंने अपने जिम्मे ले लिया। इस तरह हमलोग आगे बढ़े। तेरह मीलपर मानसरोवर झील दिखलाई पड़ी। यह झील अठपहलू है इसका पानी बहुतही स्वच्छ है। उसके उत्तर पश्चिममें कैलाश पर्वत मानों पहरा दे रहा है।

मान सरोवर संसार भरमें मीठे पानीकी सबसे बड़ी झील समझी जाती है। यह झील समुद्रकी सतहसे १५, ५०० फुट ऊपर है। तिब्बतमें इसका नाम माप हाम यूमत्सी है। इसके विषयमें एक कथा है कि 'इस झीलके बीचमें एक वृक्ष है जिसके फलसे सब दु:ख दूर हो जाते हैं और उस फलकी खोजमें देवता और मनुष्य दोनों ही रहते हैं।' एक और भी कथा है कि 'इस झीलसे चार नदियां निकली हैं। एक मोरके मुखसे, एक सांड़के

मुखसे, एक घोड़ेके मुखसे और एक सिंहके मुखसे। 'यह चारों नदियां भारतवर्षमें गई हैं। इन नदियोंमेंसे एककी चांदीकी, दूसरीकी सोनेकी तीसरीकी हीरेकी और चौथीकी लालकी रेतें हैं।' पर इस कथाका कोई आधार नहीं है। क्योंकि वास्तवमें एक भी नदी मानसरोवरसे नहीं निकली है बल्कि उनका उद्गम स्थान आस पासके पर्वत हैं।

सत्ताईसवां परिच्छेद

तिब्बतमें लेनदेनकी व्यवस्था

रातको मैं झीलके किनारेके एक बुद्ध मन्दिरमें पहुंचा जिसका नाम तेसीकोलो था। मन्दिरके लामा पुरोहितके मुखसे मैंने एक ऐसी कथा सुनी कि मैं अचम्भेमें आ गया। इस लामा पुरोहितकी अवस्था प्रायः ५५ वर्षकी थी। वह नितान्त मूर्ख था पर झूठ नहीं बोलता था। वह यह बात जाननेके लिये बड़ा उत्सुक था कि चीनमें बौद्धधर्मकी क्या दशा है। पाठकोंको स्मरण होगा कि मैंने अपना परिचय चीनी लामा करके दिया था। मैंने उसको ऐसी तत्परतासे उत्तर दिया कि उसे सुनकर उसने मुझसे निम्न लिखित कहानी कही। चीनी लामाओंके विषयमें तो कुछ नहीं कह सकता पर तिब्बतके लामाओंसे तो मैं बहुत ही असन्तुष्ट हूं क्योंकि ये लोग बहुत ही आचरण भ्रष्ट हैं।

उदाहरणके लिये, यहीं आलचू बूल्कू नामी एक लामा रहते हैं। वह बहुत बड़े लामा माने जाते थे और मानसरोवरके निकटस्थ बौद्ध मन्दिरके प्रधान पुरोहित थे। वह एक सुन्दर रमणी पर इस तरह आसक्त हुए कि उसे अपनी पत्नी बना लिये और मन्दिरकी बहुतसी सम्पत्ति उस स्त्रीके पिताको दे डाले। इस पापसे भी कलश पूर्ण न होते देख वह मन्दिरसे मालमता लेकर उस स्त्रीके साथ भाग गये। अब मैंने सुना है कि वह हार्टोशो-में रहते हैं। क्या आपसे राहमें भेंट नहीं हुई थी?

पाठक मेरे आश्चर्यको समझ गये होंगे। यह वही लामा था जिसने मेरे ऊपर दया दिखलाई थी। वास्तवमें जैसा मनुष्य दिखलाई देता है वैसा नहीं होता है। मैं अपने आश्चर्य्यको न छिपा सका। मैंने सब हाल उसे सुना दिया जिससे सुनकर पुरोहित बहुत हंसा।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैं मानसरोवरकी सैर करने निकला। वहांकी एक २ वस्तु देखनेसे भक्ति उत्पन्न होती थी। मैंने देखा कि हिन्दू और नेपाली लोग सरोवरमें स्नान कर पूजा पाठ कर रहे थे। उन लोगोंने मुझे बौद्ध लामा समझकर आग्रहके साथ सूखे मेवे भेंट किये।

रातको मैं फिर उसी मन्दिरमें ठहरा और सवेरे उस पर्वत-के ऊपर चला जो दीवारकी भांति झीलके किनारे खड़ा था। चक्करदार राहसे १० मील चलकर मुझे रकास ताल मिला। यह ताल कुछ २ अण्डेकी सूरतका है। मानसरोवर

से छोटा भी है। प्राय: ७॥ मील ऊपरसे यह ताल स्पष्ट दिख-लाई देता था। उस स्थानपर पहुंचनेपर मुझे विदित हुआ कि दोनों तालके बीच एक पहाड़ है, और दोनोंको जोड़नेके लिये एक छिद्र सा है पर वास्तवमें कोई छिद्र नहीं है। असल बात यह है कि कभी कभी घनघोर मेघ बरसनेसे अथवा अन्य किसी कारणसे दोनों तालाबका पानी फूट निकलकर आपसमें मिल जाते हैं इसीको लेकर तिब्बतके लोग यह कथा कहते हैं, कि रकास ताल स्वामी है और मानसरोवर पत्नी है। प्रत्येक दस अथवा पन्द्रह वर्षमें स्वामी अपनी पत्नीसे मिलने जाता है।

रकास तालको देखता हुआ मैं १३ मील नीचे उतर आया। यहां पर मुझे एक नदी मिली जिसकी चौड़ाई प्राय: ६० फुट है। यह गंगाकी सहायक नदी है। रात हमने यहीं बिताई। पास ही व्यापारियोंके चार पांच खेमे गड़े थे जो पूरांगसे आये थे। जुलाई और अगस्तमें यहां बहुतसी जंगली जातियां और तीर्थयात्री आकर व्यापार किया करते हैं।

तिब्बतमें रुपयेका चलन बहुत कम है। अब भी वहां वस्तु विनिमय ही होता है। तिब्बतमें लोग मक्खन, नमक, ऊन, भेड़, बकरियां इत्यादि लाते हैं। जिनको वह अनाज, रूई, शकर और कपड़ेसे बदलते हैं जो हिन्दुस्तानसे आता है। यह सब सामान भी तिब्बतके लोग अथवा नैपाली ही हिन्दुस्तानसे लाते हैं। ऊन और मक्खनके बदले बहुधा वे हिन्दुस्तानके सिक्के लेते हैं। इस सिक्केको वह गिन नहीं सकते क्योंकि हिसाब

इन लोगोंको बिलकुल नहीं मालूम है। अतएव मालाके दानोंसे गिनती मिलाते हैं। सात गिननेके लिये मालाके पांच दाने पहले गिनते हैं। फिर दो गिनकर उसमें मिला देते हैं। इसमें उन्हें बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती है। पर उनके लिये दूसरा उपाय ही क्या है? अधिक लेन देनमें बड़ी परेशानी होती है और कभी कभी गड़बड़ी भी हो जाया करती है। हिसाब रखनेके लिये वे अनेक प्रकारके साधन वस्तु जैसे काले पत्थरके टुकड़े, श्वेत पत्थरके टुकड़े, बांसकी लकड़ी और घोंघा आदि रखते हैं। उन्हीं वस्तुओंको अङ्कका सङ्केत बना लेते हैं, और अपनी गणना करते हैं। इसमें इतना अधिक समय लगता है कि घंटेके कामके लिये पूरे तीन दिन लग जाते हैं। यहां मैं तीन दिन ठहरा रहा। इतने दिनोंमें एक विशेष बात यह हुई कि जो यात्री यहां आये थे मेरे गुणोंपर मुग्ध होकर मेरे अनन्य भक्त बन गये।

अट्ठाईसवां परिच्छेद।

हिमालयकी कथा

मैं अभीतक उन यात्रियोंके ही साथमें था। इन यात्रियोंमेंसे अनेक मुझपर बड़ी श्रद्धा रखते थे। इनमें एक युवती थी जिसके भावसे ही प्रतीत होता था कि वह मुझसे प्रेम करने लगी है।

जिस समय मुझे यह बात ज्ञात हुई मैंने अपने मनमें सोचा—'यह सम्भव है। स्त्रियोंके चित्तमें ऐसा निरर्थक भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। उसने अपने बड़ोंसे मेरी प्रशंसा सुनी होगी और इसीसे उसको प्रेम हो गया होगा।' मैंने इस भावको दूर करनेके लिए उस युवतीको बौद्धधर्मका उपदेश देना आरम्भ किया। जब कभी मुझे समय मिलता था मैं पुरोहितोंके प्रण आदि करनेके कारणोंको उसे बताया करता था। मैंने उसे नरकके भय भी दिखलाये जो पापियोंको भोगना पड़ता है और जिनको लोग क्षण भरके आनन्दके लिये करते हैं। मैं इन बातोंकी शिक्षा केवल उसको ही नहीं वरन् समस्त मण्डलीको दिया करता था। मुझे इस युवतीकी दशापर तरस आती थी। उसकी अवस्था १७ वर्षकी थी। स्वतन्त्र विचारमें उसने सुखस्वप्नकी कल्पना कर ली होगी कि वह एक ऐसे स्वामीकी पत्नी होकर समाजमें जायगी जिसे लोग आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। यह युवती न अतिशय सुन्दरी थी और न अतिशय कुरूपा। यद्यपि मैं वयोवृद्ध न था तथापि युवावस्थाके अनुभवोंने मुझे इस प्रलोभनसे बचाया। जिस प्रदेशमें मैं यात्रा कर रहा था, उसे तिब्बतमें नगारी कहते हैं। इसीमें पूरंगका हाट भी है। इस हाटमें बोधिसत्व महासत्व मञ्जुश्री, अवलोकितेश्वर और वज्रपाणिकी तीन मूर्त्तियां थीं। लोगोंका कहना है कि ये मूर्त्तियां किसी समय लङ्का द्वीपसे लाई गई थीं। अभाग्यवश मेरे नगारी पहुँचनेके ६ मास पूर्व अग्निकाण्डसे दो मूर्त्तियां जलकर भस्म हो गई थीं, केवल मञ्जुश्रीकी

मूर्त्ति बच गई थी। पूरंग जानेकी मेरी प्रबल उत्कण्ठा थी पर अनेक आपत्तियोंकी सम्भावनासे मुझे विवश होकर रुक जाना पड़ा। मेरे साथी मुझे छोड़कर पूरंग गये। उनके लौटनेतक रास्तेमें ठहरकर मैं समाधि लगाता रहा। उनके लौट आनेपर हमलोगोंने फिर प्रस्थान किया और १७ अगस्तको आनिमा पहुंचे। यह भी एक हाट है। यह हाट वर्षभरमें दो महीने अर्थात् १५ जुलाईसे १५ सितम्बर तक लगती है। यहां प्रायः १५० सफेद खेमे लगे हुए थे और प्रायः ५००-६०० मनुष्य लैन देनके लिए एकत्रित हुये थे। यहांपर मैंने भी कुछ वस्तु मोल ली। दूसरे दिन मैं ग्याकारको पहुंचा और चार दिन ठहरा। यहां ग्यानिमाकी अपेक्षा अधिक व्यापार होता है। यहां भी प्रायः १५० खेमे लगे हुये थे। बाहरके आदमी तिब्बतमें यहीं तक आ सकते हैं इससे आगे जानेको आज्ञा नहीं है। इन व्यापारियोंमें एक मिलमका रहनेवाला था। वह अंग्रेजी बोल सकता था। एक दिन उसने मुझे सहभोजके लिये निमन्त्रित किया पर उसके खेमेमें प्रवेश करते ही मुझे विदित हो गया कि इसके मेरे अंग्रेजी गुप्तचर होनेका सन्देह है। जब केवल हम दोनों खेमेमें रह गये तो उसने मुझसे कहा,—'मैं भी आपकी ही सरकारकी प्रजा हूं, अतएव मैं ऐसा कोई काम नहीं करूंगा जिससे आपको हानि पहुंचे पर उसके बदलेमें मैं चाहता हूं कि जब आप हिन्दुस्तान लौटें तो मेरे व्यवसायमें सहायता पहुंचावें। मैंने उत्तरमें कहा,—"मैं चीनी हूं।" मेरा उत्तर सुनकर वह बोला—'यदि आप चीनी हैं तो चीनी

भाषा भी बोल सकते होंगे ?" मैंने दृढ़तासे उत्तर दिया—"हाँ"। यह सुनते ही वह एक मनुष्यको बुला लाया जो चीनी भाषा समझ सकता था। इस तरहकी परीक्षा मैं नेपालमें ग्यालामाके सामने दे चुका था इससे मुझे घबराहट न हुई। मैंने यह भी देखा कि उसको चीनी भाषाका मुझसे कम ज्ञान है। जो कुछ भय था वह भी जाता रहा। निदान मैंने चीनी भाषामें दो चार शब्द लिखकर उसे पढ़नेको दिया पर वह न पढ़ सका और हंसकर मुझसे कहा—"मैं हार गया। अब तिब्बती भाषामें ही बातचीत करो।" यह देखकर मिलमके व्यापारीने विस्मित होकर कहा, "तब तो तुम अवश्य ही चीनी हो ! चीन बहुत बड़ा देश है। मेरे पिता एक बार चीन गये थे। चीनके साथ यदि किसी तरहके व्यवसायिक सम्बन्धकी सम्भावना हो तो मुझे पूर्ण आशा है कि तुम मेरी सहायता करोगे।" यह कहकर उसने अपना पता अंग्रेजीमें लिखकर मुझे दिया। मैंने उसकी बातोंसे मालूम किया कि वह ईमान्दार मनुष्य है।

जब मुझे यह मालूम हुआ कि वह हिन्दुस्तान जा रहा है तो मैंने एक पत्र अपने मित्र और गुरु रांय शरच्चन्द्रदासके नाम लिख दिया कि मैं तिब्बती सीमा ग्याकार्कोतक पहुंच गया हूं। इसके अतिरिक्त जापानमें अपने मित्रोंके लिये भी कई एक पत्र लिख कर उसको दे दिया कि हिन्दुस्तान जाकर डाकमें डाल देना। इस कामके लिये मैंने उसको कुछ रुपये भी दे दिये। पीछेसे मुझे मालूम हुआ कि यह मनुष्य ईमान्दार था क्योंकि मेरे सब पत्र यथासमय यथास्थान पहुंच गये थे।

अभी तक मैं ग्याकार्कोमें ही था। मुझे चाहने वाली युवती डावा—क्योंकि यही उसका नाम था—अभी तक अपने विचारमें दृढ़ थी। डावा तिब्बती भाषामें चन्द्रमाको कहते हैं। तिब्बतमें जो बच्चा सोमवारको उत्पन्न होता है उसका नाम डावा रखते हैं। श्रीमती डावाका हृदय अनुरागपूर्ण था। वह सदैव मेरे साथ रहा करती थी। वह मुझे भांति २ से समझा रही थी कि यदि मैं उसके साथ उसके देशको जाऊं तो वह मुझे कैसे आरामसे रखेगी। उसने मुझसे कहा कि—"मेरी माता बड़ी दयालु है। मेरे पिताके पास १६० जंगली भैंसे और ४०० भेड़ें हैं। हमलोग बड़े अमीर हैं। मैं अपने मातापिताकी एकमात्र कन्या हूं। मैंने अभी तक किसी पुरुषसे प्रेम नहीं किया है। हमलोग निरन्तर चेंग चेंग पेमाका व्यवहार करते हैं।" चेंग चेंग पेमा तिब्बतमें मक्खनके साथ चाय मिलाकर पीनेके पीछे एक तरहकी शराब पीनेको कहते हैं। यह आनन्द अमीर लोगोंके भाग्यमें ही बदा रहता है। पर तिब्बतके लोग इसे जीवनकी आवश्यकताओंमें समझते हैं। इस मक्खनकी चाय बनानेकी विचित्र रीति भी है अर्थात् मक्खन उबाली हुई चाय और नमकको एक बर्तनमें डालकर लकड़ीसे उसको खूब मिलाते हैं। इसे सोलचा कहते हैं।

डावा अपनी अमीरीकी कहानी कहनेमें कभी न थकती थी। वह कहा करती थी कि उसके देशमें लामा विवाह करनेके लिये पूर्ण स्वाधीन हैं। लामा विवाह करके गार्हस्थ्य जीवन

सुखसे बिताते हैं। मुझे भी विवाह कर लेना उचित होगा। जब उसने देख लिया कि उसके उपदेशका मेरे ऊपर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता तो उसने मुझे मूर्ख समझ लिया। जब कभी उसकी बातोंसे मेरा चित्त विचलित होता था तो अपने इष्टदेव शाक्यमुनि बुद्धदेवकी उस कहानीको याद करता था जिसमें शैतानने अपनी तीन पुत्रियोंको बुद्धदेवको प्रलोभन देनेके लिये भेजा था परन्तु वह तीनों स्त्रियां बुद्धदेवको न डिगा सकीं। यद्यपि बिचारी डावा उन शैतानकी बच्चियोंकी बराबरी नहीं कर सकती थी, पर मैं भी देवता नहीं था। साधारण मनुष्य ही था। मुझे उसकी इस दशापर बड़ा दुःख होता था। मैं अपने चित्तको इस भांति समझा लेता था कि मैं मूर्ख ही अच्छा हूं।

एक दिनकी बात है कि डावाके पिता और भाई सौदा खरीदने चले गये थे। रह गया था मैं और डावा। यह समय अपना आशय प्रगट करनेके लिये उसने बहुत अच्छा समझा। मैं उस समय अपने जूतोंकी मरम्मत कर रहा था।

उसने अपनी धृष्टता पूर्ण व्यवहारसे मुझे डरा दिया। मैं भी लकड़ी पत्थरका बना हुआ नहीं था और कोई देवता भी नहीं था जिसमें प्रलोभन उत्पन्न ही नहीं हो सकता था। पर शैतानके वश हो जाना मेरी स्थितिके सर्वदा प्रतिकूल था। और साथही बुद्ध देवके सर्वतो वर्त्तमान रहनेके ज्ञानने भी मेरी रक्षा की। मैंने उससे कहा, मैं मानता हूं कि तुम्हारे घरपर बड़ा सुख है पर क्या तुमको मालूम है कि तुम्हारी माता जीवित हैं कि मर गईं? इस प्रश्नसे

वह घबरा गई। उसने उत्तर दिया—'मुझे अपनी माताके बारेमें कुछ भी नहीं मालूम; क्योंकि प्रायः साल भरसे यात्रा कर रही हूं। मेरी माता अति निर्बल थीं, रोती हुई मैं उनसे विदा हुई थी। मैंने उनसे अपने शरीरका अधिक ध्यान रखनेके लिये कहा था पर अब मैं नहीं जानती कि वह कैसी होंगी।

मैंने उसका ध्यान अपनी ओरसे हटानेका अच्छा अवसर पाया। मैंने कहा 'हूं! तुमको अपनी माताका हाल तो मालूम नहीं और तुम अपने घरके सुखकी बातें कह रही हो। क्या यह तुम सरीखी प्रेमवत्सलाके लिये शोभा देती है कि तुम्हारी माता यातनायें भोगे और तुम सांसारिक विलासितामें आसक्त रहो। मेरे इन शब्दोंने उसका अनुराग ठंढा कर दिया। वह और घबरा गई। यह कोई बड़ी बात न थी, क्योंकि तिब्बतमें लामाओंकी शक्ति देवताओंके समान समझी जाती है। मैंने अनेक तरहकी बातोंसे उसके अनुरागको दूर किया।

ग्याकार्कोमें हम लोग कई दिन ठहरे रहे। अन्तमें २६ अगस्तको उन यात्रियोंके साथ रवाना हुए। दस मीलका दल दल मैदान पारकर हम लोग पहाड़ी भूमिपर पहुंचे और रातको वहीं ठहर गये। यहांपर भी व्यापारियोंके बहुतसे खेमे थे। वहां मैं प्रत्येक खेमेमें जाकर भिक्षा मांग लाता था। बुद्धदेवके उपदेशोंमें एक यह भी है, जिसको मैं समय मिलने पर किया करता था। रातको जहां मैं ठहरता था वहां मैं अपने साथियोंको उपदेश दिया करता था। इस तरह उपदेश देनेमें मेरा एक विशेष अभिप्राय था। धर्म

विषयक बातचीत मेरी प्राण रक्षाके लिये यह आवश्यक थी। इससे मेरा यह आशय नहीं है कि मुझे प्राणोंका भय था क्योंकि वहां सदैव ही लोगोंकी भीड़ रहा करती थी। इसके अतिरिक्त यह देश बौद्धधर्मका केन्द्र था। इस ठौरपर कैसाही चोर डाकू क्यों न हो सहजमें हत्या करनेका साहस नहीं कर सकता था। पर आवश्यकता इस बातकी थी जब इस पवित्र स्थानसे बाहर निकलूं उस समयके लिये मेरा पूरा बचाव हो जाय। यही कारण था कि मैं उन लोगोंको उपदेश दिया करता था और भाग्यवश वे लोग मेरे धर्मोपदेशोंको ग्रहण भी करते थे।

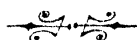
२८ अगस्तको हमलोग २० मील चले और इस बीचमें पानीका एक बून्द भी न मिला। प्रातःकाल एक प्याला चाय अवश्य मिल गई थी। प्यासके मारे दम निकल रहा था। सन्ध्या होते होते हमलोग लेंगचेन खाबाव नदीके किनारे पहुंचे। यही नदी सतलजके नामसे प्रसिद्ध है। मेरे साथियोंने कहा कि यह नदी मानसरोवरसे निकली है। मैंने उत्तर दिया कि मानसरोवर चारों ओरसे पहाड़ोंसे घिरो है। पानी बाहर जानेका एक भी द्वार नहीं है। इसका उन्होंने उत्तर दिया,-"यह नदी पहाड़ोंके नीचेसे अदृश्यभावसे निकली है। वहांके लोगोंका ऐसा ही विश्वास है। जहांतक मैंने देखा सतलज नदीका सतह मानसरोवरसे कहीं ऊंचा है इसलिये इसका उद्गम किसी अन्य ऊंचे स्थानसे होता होगा। हमलोगोंने नदीके किनारे-पर खेमा खड़ा कर दिया और रातभर वहीं ठहरे। दूसरे

दिन हमलोगोंने एक और प्रसिद्ध तीर्थस्थानके दर्शन किये। इसे तिब्बतमें सीतापुरी कहते हैं पर इसका शुद्ध संस्कृत नाम प्रेतपुरी है। दो आदमियोंकी रखवालीमें खेमेको छोड़कर मैं, दावा, उसके पिता और एक दूसरी स्त्री चार मनुष्य उस क्षेत्रके लिये प्रस्थान किये।

राहमें कई नदियां मिलीं, जिनका जल बहुत ठण्ढा था। मेरे साथी तो पार हो गये पर मेरा शरीर उस ठण्ढे जलके कारण हिलने योग्य भी न रहा। मैंने अपनी यह दुरवस्था देख कर अपने साथियोंसे आगे बढ़नेको कहा। जब मेरा शरीर ठीक हुआ तो मैं भी आगे बढ़ा। पांच मील आगे बढ़कर मुझे एक मन्दिर दिखलाई पड़ा जिसकी सीढ़ियां दूरसे रेलवेट्रेनकी भांति ज्ञात होती थीं। यहां एक प्रकारके पक्षी थे जिनकी बोली ठीक रेलकी सीटीकी भांति थी। सीढ़ियोंको देख-कर और उन पक्षियोंकी बोली सुनकर मुझे रेलकी भावना होने लगी और मुझे भासने लगा कि मैं किसो सभ्य देशमें पहुंच गया हूं।



उन्तीसवां परिच्छेद



देवमन्दिरकी राहपर

उस दृश्यके अतिरिक्त और भी दृश्य थे जिनसे बोध होता था कि मैं किसी सभ्य देशमें आ गया हूं। वहांके मन्दिर और पुरोहितोंके घर बहुत ही सुन्दर पत्थरके बने हुए थे। वह दृश्य बड़ा ही मनमोहक था। पत्थरकी इमारतोंको देखकर मेरा मन बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि तिब्बतमें पत्थर प्रायः नहीं मिलते। हिन्दुस्तानसे जब 'पालदन अतिश' बौद्धधर्म फैलानेके लिये आये थे उन्होंने इस नगरका नाम प्रेतपुरी रखा था। यह नामकरण तिब्बतके लोगोंके अनुरूप था। यह लोग इतने गन्दे होते हैं कि गोबरतक खा लेते हैं। मैंने संसार भरमें ऐसे गन्दे मनुष्य न कहीं देखे और न सुने हैं।

उन लोगोंकी इस गन्दी आदतके ही कारण अतिश देवने उस नगरका नाम प्रेतपुरी रख दिया होगा। तिब्बतके लोग संस्कृत नहीं जानते। अतएव वे लोग इस नामसे बहुत प्रसन्न होते हैं और समझते हैं कि यह कोई पवित्र नाम है। अतीश देवके मन्दिर बनवानेके पीछे जो लामा वहां रहते थे, उन लोगोंने एक लामा सराय नामक मकान बनवाया जो अबतक विद्यमान

है। यह मकान बहुत ही रमणीक है और चार पांच पुरोहितोंके रहने लायक है। रातको मैं वहीं ठहरा।

मेरे साथियोंकी यात्रा समाप्त हो चुकी थी। उन लोगोंने मुझसे बिदा ली। मैंने भोजन किया और एक पुरोहितको साथ लेकर दर्शनके लिये बाहर निकला। प्रधान मन्दिरकी लम्बाई १० गज और चौड़ाई ८ गज है। इसमें शाक्यमुनि बुद्धदेवकी और लोवन रिनपोंचे अर्थात् पद्म चुंभेकी मूर्त्तियां हैं। लोवन तिब्बतके पुराने धर्म सम्प्रदायके नेता थे। लोवनके विषयमें बहुतसी कथायें प्रचलित हैं जिन्हें सुनकर जापानका नीचतम पुरोहित भी लज्जित हो सकता है। मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि दोनों मूर्तियां साथ ही पूजती थीं। यह बुद्ध भगवानके लिये अपमानजनक था। क्योंकि लोवन पुरोहितके लिबासमें शैतान था। मेरी समझमें लोगोंको पतित बनाने और बौद्धधर्मका प्रचार रोकनेके लिये ही वह पैदा हुआ था।

लोवनमें जो कुछ दोष हों यह स्थान ऐसा रमणीक है कि उसका थोड़ासा हाल यहांपर लिख देना आवश्यक समझता हूं। लेंगचेन खाबाब नदी पश्चिमकी ओर बहती है, इसके ढालवें किनारे पीले, बैगनी, नीले, हरे इत्यादि भांति २ के रंगोंके पत्थरसे भरे हैं। ये पत्थर देखनेमें बड़े ही भले मालूम होते हैं। इनके पास ही अद्भुत २ सूरतोंकी चट्टानें है। यह दृश्य देखकर मुझे अपार आनन्द होता यदि लोवन रिंपोंचेकी मूर्त्ति वहां न होती। यहांसे प्रायः २५० गज आगे बढ़कर गरम पानीके

अनेक सोते हैं। उनमेंसे तीन बड़े और तीन छोटे हैं। किसी किसी सोतेका पानी इतना गरम था कि हाथोंको बरदाश्त नहीं हो सकता था। उनके जल साफ थे और इनके किनारोंपर श्वेत, लाल, नीले और हरे रंगकी कड़ी वस्तु जमी हुई थी। यहां दर्शन करनेवाले आकर इन वस्तुओंको ले जाया करते हैं। लोगोंका ख्याल है कि इनमें औषधियोंका गुण है। उन स्थानोंको देखकर मैं डेरेपर लौट आया, और रात उपासनामें बिताई। दूसरे दिन मैं खेमेकी ओर चला। खेमेतक पहुंचनेके लिये अग्निकसे अधिक तीन घण्टे लगना चाहिये था। परन्तु मैं पांच घण्टे चला फिर भी वहां तक न पहुंचा तो मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने जांच की तो मालूम हुआ कि मुझे उत्तर पूर्व जाना चाहिये था, पर मैं उत्तरकी ओर जा रहा था।

जब मुझे पहुंचनेमें देर हुई तो खेमेके लोग घबरा गये और उन्हें डर होने लगा कि मैं नदीमें बह गया। भूख प्याससे परेशान जिस समय मैं खेमेमें पहुंचा खेमेके स्वामीकी कन्या भेड़ोंको लेकर बाहर निकल रही थी। मुझे देखकर वह बड़ी प्रसन्न हुई। मुझे मालूम हुआ कि मेरी खोजमें निकलनेवाली थी।

यहांसे हमलोग दूसरे दिन सवेरे कैलास पर्वतकी ओर रवाना हुये।



तीसवां परिच्छेद ।

ईश्वरकी अपार महिमा ।

राहकी बातचीतसे यह बात ठहरी कि सब यात्री साथ साथ परिक्रमा नहीं कर सकते। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति उन तीन चार दिनोंमें अपने इच्छानुसार अनेक चक्कर लगाना चाहता था। एक चक्कर कमसे कम पचास मीलका होता था। मेरे साथी उतने ही दिनमें कमसे कम तीन परिक्रमा करना चाहते थे; परन्तु यह मेरी शक्तिके बाहर था।

यात्री लोग आधीरातको ही चल देते थे और रातको आठ बजे लौटते थे। मैंने इस प्रदक्षिणाके लिये सबसे अधिक तैयारी की और अपने साथ चार पांच दिनके लिये भोजन बांध लिया। मैंने सबसे बाहरी राह चुनी। मुझे जिस पहाड़की प्रदक्षिणा करना था उसकी मनुष्यकी सी आकृति थी और उसके बारेमें यह प्रसिद्ध था कि यह शाक्यमुनिकी मूर्त्ति है।

बीचकी राहसे परिक्रमा करना बहुत कठिन था। भीतरवाली राह उससे भी अधिक खराब थी और वह केवल देवताओंके लिये ही बतलाई जाती थी। जो मनुष्य बाहरवाली सड़कसे इक्कीस परिक्रमा कर लेता था उसे चार मन्दिरोंके लामा बीच वाली सड़कसे जानेकी आज्ञा दे देते थे। बीच वाली राह बहुत ढालू और भयानक है और साधारण मनुष्य उसके ऊपर चलने-

का साहस नहीं करते। जो लोग साहस करते भी हैं वह बहुधा बरफमें पड़कर अपने प्राण खो देते हैं। इस राहके बारेमें अनेक तरहकी कथायें प्रचलित हैं।

सबसे बाहर वाली राहके—जिसपर मैं जारहा था—चारों कोनोंपर चार मन्दिर बने हुए हैं। यह मन्दिर केनलिंगपोंचेके कहलाते हैं। सबसे पहले मैं कोनेके मन्दिरमें गया। इसका नाम नेनवोरिजोन है। यह मन्दिर अमिताभ बुद्धके स्मरणार्थ बना है। इस मन्दिरमें गर्मियोंके तीन महीनोंमें प्रायः दस हजार येन भेंट बाहरके यात्रियोंसे मिलती है। जापानके अमिताभके मन्दिरमें भी प्रायः इतनी ही भेंट चढ़ती है। जापान और तिब्बतमें इस तरहकी समता विचित्र बात थी। मैंने सुना कि यह भेंट भूटानके खज़ानेमें जमा होती है क्योंकि तिसेके ये सब मन्दिर भूटानके ही अधिकारमें हैं। इस मन्दिरमें मूर्तियां बहुत ही अच्छे श्वेत पत्थरकी बनी हुई हैं। मूर्त्तिके सामने बहुत मोटे और पांच फीट ऊंचे दो हाथीके दांत खड़े हैं। उसके पीछे प्रायः एक सौ बौद्ध धर्मकी पुस्तकें अलमारियोंमें सजाकर रक्खी हैं। यह पुस्तकें पढ़नेके लिये यहां नहीं रक्खी हैं वरन पूजाकी सामग्रीकी भांति रक्खी हुई हैं।

यद्यपि उन पुस्तकोंको इस भांति रखना एक अद्भुत बात है तथापि इस उपायसे वे उन मूर्ख पुरोहितोंके हाथसे बची हैं जो उनके पन्ने फाड़कर किसी व्यर्थके काममें लगानेमें तनिक भी संकोच नहीं करते।

पूजा करनेके बाद एक पुस्तक उठाकर मैंने पढ़ी वह बुद्ध अमिताभके विषयमें थी। उसके बाद वहांसे विदा हो और स्वर्ण घाटीकी ओरको चला। यहां पासमें कहीं सोनेकी खान है पर यह स्थान ऐसा रमणीक है कि उसका सौंदर्य देखकर यही कह सकते हैं कि यह सोनेका देश है। तीसेकी बरफ से ढकी हुई चोटीकी शोभा वर्णनातीत थी। तीसेके पास और भी कई एक चोटियां हैं। उनमेंसे कई एक सोते निकले हैं जिनमें सात बहुत बड़े हैं। उनमेंसे कोई कोई हजार फीट तककी ऊंचाईसे गिरते हैं। कितनोंको देखनेसे ऐसा ज्ञात होता है मानों पहाड़पर स्वच्छ चद्दर बिछी हुई है।। उस सौन्दर्यको देखकर मैं स्तब्ध हो गया। मुझे यह ज्ञात हुआ कि मानों मैं स्वर्गमें आ गया हूं। बाईं ओर भी बहुतसे झरने हैं पर ऐसे मनोरम नहीं है, जैसे दाहिनी ओरके हैं। केवल उस दृश्यने मेरा सारा परिश्रम सार्थक कर दिया। यहांसे मैं उत्तरकी ओरको चला। यहां मुझे एक और मन्दिर मिला जिसका नाम रिरापुरी था।

पहले मन्दिरसे इसमें आमदनी कम होती है। इस का स्थान आमदनीमें दूसरा है।

यहां पहुंचते पहुंचते मुझे सन्ध्या हो गई। रातको मैं वहीं ठहर गया। प्रधान पुरोहित मेरे ऊपर बड़ा दयालु था। उसने अपने रहनेका कमरा मुझे दे दिया। इसका द्वार कैलाश पर्वतकी ओर था। पुरोहितने मुझे मक्खन मिली हुई एक प्याला चाय

दी क्योंकि मैंने उसको बतला दिया था कि रातको मैं भोजन नहीं करता।

दूसरे दिन भी मैं उसी मन्दिरमें रहा। मेरा दो दिन बड़े मजेमें कटा। तीसरे दिन मैं वहांसे चल पड़ा। बिदा होते समय पुरोहितने मेरे भोजनके लिये कुछ पदार्थ और सवारीके लिये एक पहाड़ी भैंसा दिया। उसने मेरे ऊपर ऐसी दया दिखलाई मानों पूर्व जन्ममें मेरा उसका कोई घना संबंध था।

राहमें मुझे तिब्बतके अनेक यात्री मिले। इस पहाड़पर चढ़ना सहज काम नहीं था। बड़े हृष्ट पुष्ट जन भी मात हो जाते थे। पर मैंने देखा कि तिब्बतके साधारण स्त्री पुरुष भी पग पगपर दण्डवत प्रणाम करते जाते हैं। याकके ऊपर चढ़े रहनेपर भी मैं बहुत थक गया था। यहां हवाकी कमी थी इसलिये मैं हांफने लगा। पांच मील ऊपर चढ़ जाने पर मुझे सांस लेनेमें और भी तकलीफ होने लगी। अतएव वहां मैं थोड़ी देर विश्राम करनेके लिये बैठ गया और औषध खाया। मैंने बैठे बैठे देखा कि एक मनुष्य पागलोंकी भांति तिसेकी बरफकी चोटीको पूजा कर रहा है और अपने पापोंको कबूल रहा है।

मेरे पथ प्रदर्शकने बतलाया कि यह खामका रहनेवाला है। यह बड़ा भारी डाकू है। वह वास्तवमें भयानक डाकू मालूम होता था। उसकी आंखोंसे क्रूरता टपक रही थी। मुझे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह अपने पिछले पापों हीके लिये क्षमा नहीं मांग रहा था पर आगे जो पाप करेगा उनके लिये

भी क्षमाप्रार्थी था। वह इस भांति कह रहा था—'हे कोंग रिंग पोंचे देव ! हे शाक्यमुनि ! हे बुद्धिसत्व ! मैंने बहुतसे पाप किये हैं, मैंने बहुतसे आदमी मारे हैं, मैंने बहुतोंका धन छीन लिया है जिसका अधिकारी मैं नहीं था। मैंने बहुतसी स्त्रियोंको पतिविहीन बना दिया है। इन सब पापोंके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूं। आशा है कि इस प्रायश्चित्तसे मेरे पाप दूर हो जायंगे। मैं फिर भी वही काम करूंगा। इसलिये मैं अपने भविष्य पापाचरणके लिये भी क्षमाप्रार्थी हूं।' मैंने सुना है कि यहांके डाकुओंके प्रायश्चित्तके यही ढंग हैं।

यहांसे आगे बढ़नेपर कैलाश पर्वतका वह भाग मिला जिसको कुबेरका महल बतलाते हैं। इसका नाम सुनते ही मुझे कालिदासके मेघदूतकी याद आगई। यह चोटी प्रायः २२३००० फुट ऊंची है और तिसेकी चोटीसे किसी तरह नीची नहीं है। यहांकी हवा बहुत हलकी थी और ठण्ढक भी बहुत थी। यहांपर मुझे अपनी अवस्था देखकर मालूम हुआ कि यदि मेरे मित्र पुरोहितने मुझे याक न दिया होता तो मैं पैदल यात्रा कदापि नहीं कर सकता था। तिब्बतके यात्रियोंके फेफड़े हमलोगोंसे बहुत बलवान होते हैं इसलिये वे इस तरहकी कठिनाइयोंका सामना विना किसी कष्टके करते हैं। उस पहाड़के नीचे एक तालाब था जिसके बारेमें कहा जाता था कि कुबेर इसमें नहाते थे। इस समय उसके ऊपर बरफ जमी हुई थी। इस तरह परिक्रमा करते हुए जब हमलोग पवित्र क्षेत्रकी सीमासे बाहर हो गये

तब मेरे साथियोंने कहा कि—'अब हमलोग पवित्र स्थानसे बाहर आ गये हैं अतएव अब हमलोग तीर्थयात्री नहीं रहे अब हम शिकार खेलते चलेंगे। मैंने देखा कि ये लोग हिरनका ही नहीं बल्कि मनुष्य तकका शिकार खेलते हैं और यात्रियोंको मारकर धन ले लेते हैं। यह देख मैंने विचार किया कि इन लोगोंसे पृथक् हो जाना ही अच्छा है।

इकतीसवां परिच्छेद।



शोचनीय घटना

१४ सितम्बरको बरफ बहुत गिरी इससे हमलोग वहीं ठहरे रहे। शिकारी कुत्ते खरगोशोंके शिकारके लिये निकले और लौट आये। जब बरफ गिरना बन्द हुआ तो हमलोग पूर्व दिशाको चले। रातमें एक पहाड़ीके ऊपर पहुंचे तो हमारे साथियोंके प्रधानने कहा कि अब हमारी यात्रा यहांपर खतम होती है। पूछनेपर उसने मानसरोवर और कैलाश पर्वतको दिखलाकर कहा कि यहांसे अब हमलोग उन दोनों तीर्थोंको न देख सकेंगे। पवित्रभूमि यहीं पर समाप्त होती है। यह कहकर उसने तीर्थराजको दण्डवत् प्रणाम किया और हम सब लोगोंने भी वैसाही किया। जब मेरे साथियोंने मुझसे कहा कि अब

हमलोग अपने सांसारिक काममें लगते हैं, तो मैं उनका आशय समझ गया कि अब वे मुझसे पृथक् होना चाहते हैं। थोड़ोसी देरमें हमलोग एक स्थानपर पहुंचे जहां १२-१३ खेमे लगे हुए थे। मैं उन खेमोंका हालचाल जनानेके लिये उधरको चल दिया।

मैं भिक्षा मांगता हुआ उधर गया और मेरे साथी वहीं रह गये। दूसरे दिन खेमेके भीतर मैं अपनी धर्मपुस्तक पढ़ रहा था। बाहर दोनों स्त्रियां बातें कर रही थीं। मुझे 'लामा' शब्द सुनाई पड़ा। मेरा ध्यान उस ओर गया। मैंने सुना कि दावा अपनी चाचीसे कह रही थी कि लामा मुझसे कहता था कि हमारी माता मर गई है इस बातका पता लगाना चाहता हूं। इस बातको सुनकर उसकी चाची हंस पड़ी। उसने कहा—'सम्भव है लामाने यह देखकर कि तू उसे प्रेम करती है, हंसीमें यह बात कह दी हो। इसके लिये तू कुछ चिन्ता मत कर। मेरे स्वामीने मुझसे कहा है कि दावाका विवाह लामासे कर दूंगा। यदि लामा इनकार करेगा तो मैं लामाको मार डालूंगा।' वे बातें केवल मुझे सुनानेके लिये ही कही गई थीं। क्योंकि दावाकी चाची इन बातोंको उच्चस्वरसे कह रही थी।

पहले तो यह सुनकर मैं डर गया पर शीघ्र ही मैंने अपनेको सम्हाला और मनही मन कहा कि यदि मैं आसक्तिको दमन करनेके लिये मारा जाऊंगा तो भी मेरे इष्टदेव प्रसन्न होंगे। ऐसा विचारकर मैं पढ़नेमें लवलीन हो गया। उस दिन भी कोई घटना न हुई और न दूसरेही दिन कुछ हुआ। तीसरे दिन

हमलोग वहांसे कूच कर गये और पांच मीलकी दूरीपर पहा-ड़के पास तोकवन ताजममें आकर ठहरे। मैं वहां भी भिक्षुकका ही वेष बनाये हुए था। नगरसे जब मैं लौटकर आया तो देखा कि अकेली दावा खेमेमें है और सबलोग शिकारके लिये गये हैं। मैंने देखा कि षड्यन्त्र चल रहा है और दिनपर दिन अवस्था भयानक होती जा रही है। धार्म्मिक उत्तेजना देकर मैंने उसे इस पथसे हटाना चाहा। यह सोचकर मैं खेमेमें बैठ गया। मेरे बैठतेही दावा जलपानके लिये कुछ सामान लेकर आई। जल-पानकर मैं धर्मग्रन्थ पढ़ने लगा। पर उसने मुझे रोककर कहा—'मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूं जो कि बड़ी ही भयानक है। मेरे पिता और चाचाने कहा है कि यदि आप मेरे साथ विवाह करनेपर राजी न होंगे तो आपकी हत्या कर डालेंगे।' मैंने यह सुनकर शान्त चित्तसे कहा—'मुझे मरनेका भय नहीं है। मैंने अपनी तीर्थयात्रा समाप्त कर ली है, अब मुझे इस संसारमें कुछ नहीं करना है। अतएव मृत्युसे मुझे कोई भय नहीं है। बल्कि मैं इसके लिए बड़ा प्रसन्न हूंगा कि मुझे इतना शीघ्र बोधि-सत्वके राज्यमें जानेका अवसर मिल गया। यदि वे लोग मुझे आज ही मार डालें तो मैं बड़ा कृतज्ञ होऊंगा।' दावाको मेरी बातोंसे बड़ा आश्चर्य्य हुआ। अपनी बातोंका प्रभाव वह डालना चाहती थी उससे बिलकुल ही उल्टा प्रभाव हुआ। यह समझ-कर उसने और कोई बात न कही।

उसी दिन तीसरे पहरको प्रायः ४ बजे वे चारों शिकारसे

लौटकर आये। उन्होंने दावा और मेरी बातोंके विषयमें अवश्य कुछ सुना होगा, क्योंकि जो सबसे अधिक उग्र स्वभावका था वह आते ही दावाको डाँटने लगा—'तू किसी मनुष्यकी खुशामद क्यों करती है।' यह सुनतेही दावाके पिताने दावाका पक्ष लेकर कहा कि 'तुम्हें उसके बीचमें पड़नेकी कोई आवश्यकता नहीं है। उसका पिता उसकी सहायताके लिये बहुत है।'

धीरे धीरे यह झगड़ा बहुत बढ़ गया और दोनों आपसमें गाली गलौज करने लगे। दोनों एक दूसरेकी बुराई प्रगट करने लगे कि अमुकने अमुक २ स्थानोंपर मनुष्य मारे हैं। अमुकने तिब्बत सरकारको भी लूटना चाहा था और पकड़े जानेके भयसे भाग गया था। बात बढ़ गई और हाथापाई होने लगी। एक दूसरेको पत्थर फेंक २ कर मारने लगे। मैंने देखा कि झगड़ा बढ़ता जा रहा है। निदान मैंने सबसे छोटे भाईको जो दावाके पिताके ऊपर झपटना चाहता था, आगे बढ़कर पकड़ लिया। उसने मेरे मुंहपर ऐसा घूंसा मारा कि मैं अचेत होकर गिर पड़ा। दावा और उसकी चाची एक ओर बैठी रो रही थी। मैं भी चोट खाकर एक ओर गिर पड़ा। थोड़ी देरमें सन्ध्या हो गई और लड़ाई भी बन्द हो गयी। रातको कुछ गड़बड़ नहीं हुई।

सवेरे सब भाई एक दूसरेसे पृथक् हो गये। बड़ा अपनी स्त्रीके साथ, दूसरा अपनी लड़कीके साथ और तीसरा अकेलाही चल दिया। मैं भी वहांसे चलनेका उद्योग करने लगा पर मेरा सामान ढोनेके लिये भेड़ आदि नहीं थी। लाचार मैंने दो मोल लीं

और उनके ऊपर सामान लादकर दक्षिण पूरबकी ओर चल दिया। दूसरे दिन रातको मुझे खुले मैदानमें ठहरना पड़ा। इतने दिनों तक आरामसे खेमेंमें रहनेसे आज खुले मैदानमें मुझे कष्ट मालूम हुआ। क्षण भरके लिये भी नींद न आई। दूसरे दिन सन्ध्याको एक मन्दिरमें पहुंचा। उस मन्दिरमें दो पुरोहित थे, वहां मैंने अपने कपड़ों और जूतोंकी मरम्मत की।

मैं मन्दिरमें ही ठहरा था कि मेरी एक भेड़ बीमार होकर मर गई। उसके लिये मैंने प्रार्थना की फिर दूसरी भेंड़को भी मैंने आधे दामोंपर बेच डाला क्योंकि, अपने साथीके न रहनेसे वह बहुत दुःखी थी। वह मरी हुई भेड़ मैंने उसी खरीदारको दे डाली और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक उसे ले लिया। ये लोग भी यात्री थे और मुझसे एक दिन बाद पहुंचे थे। ये लोग भी मेरे साथ ही चले और मेरे सामानका भार अपने ऊपर ले लिया क्योंकि उनके पास कई एक जंगली भैंसे थे।

दूसरे दिन भी रात खुले मैदानमें काटनी पड़ी। उस दिन मैं सोया ही नहीं, पर रातभर समाधिस्थ होकर बैठा रहा। सवेरे हमलोग वहाँसे चले, राह बहुत ही खराब थी। यहाँ तक कि तिब्बतके यात्री भी उसपर कठिनतासे चलते थे।

उन लोगोंने कृपाकर मुझे एक भैंसा दे दिया इससे मुझे कुछ कष्ट नहीं हुआ।

और आगे बढ़नेपर हमलोगोंको एक तालाव मिला जिसमें सोडा निकलता है। उन लोगोंने अपने चमड़ेके बेगोंमें सोडा भर

लिया। मुझे बतलाया कि यह सोडा चायमें मिलाकर पिया जाता है। अब हमलोग नित्य प्रति २५ मील चल लेते थे पर बिना जंगली भैंसेके मैं इतना कभी भी नहीं चल सकता था। वहांसे चलकर हमलोग ब्रह्मपुत्रा नदीके किनारे पहुंचे। वहांसे मेरे साथी मुझसे बिदा हो गये, और मुझे फिर अपना बोझा अपनी पीठपर ही लादकर चलना पड़ा।

बत्तीसवां परिच्छेद

दुर्घटनाकी सूचना।

अपनी पीठपर बोरा लादकर मैं बहुत दूर न जा सका और थककर एक स्थानपर बैठ गया। सौभाग्यवश उसी समय एक तिब्बती जंगली भैंसा लिये हुए वहां आ पहुंचा। मैंने उससे कहा कि यदि तुम मेरे सामानको भी लाद लो तो मैं तुम्हें उचित पुरस्कार दूंगा। मेरी बातको उसने स्वीकार कर लिया और सामान लाद कर चला।

तीन मील आगे बढ़नेपर मैंने देखा कि तीन आदमी घोड़ों-पर सवार हमलोगोंकी ओर आ रहे हैं। उन लोगोंके पास एक २ बन्दूक, एक २ तलवार और एक २ भाला था। सिरपर तिब्बतकी शिकारी टोपियां थीं। उनकी सूरत देखनेसे यह प्रतीत होता था कि ये डाकू हैं। क्योंकि यदि यात्री होते तो इनके पास

सामान लादनेके लिये टट्टू अथवा याक अवश्य ही होता, ये सौदागर भी नहीं थे क्योंकि यदि सौदागर होते तो यहाँकी रीत्यनुसार दलके दल चलते। मेरे साथीकी भी यही धारणा थी। वह भयके मारे कांपने लगा। डाकुओंसे भेंट होना किसी भी अवस्थामें अच्छा नहीं है। पर मुझे भय तनिक भी न मालूम हुआ क्योंकि मैंने सोच रक्खा था कि मेरे सामानमेंसे जो वस्तु वह चाहेंगे, निकाल कर दे दूंगा। मैं केवल अपनी प्राणरक्षा चाहता था और और डाकुओंको उससे कुछ प्रयोजन न था। ऐसा विचारकर मैं आगे बढ़ा। सम्पर्क होते ही उन्होंने मुझसे पूछा—'तुम कहांसे आ रहे हो?' मैंने उत्तर दिया—"कैलास पर्वतका दर्शन करके।" उन्होंने फिर मुझसे पूछा—"तुमने कोई सौदागर इधरसे जाते देखा? वे हमारे साथी हैं और उनकी खोजमें हम जा रहे हैं।" मैंने उत्तर दिया—"नहीं।" फिर उन्होंने कहा—"मालूम होता है तुम लामा पुरोहित हो। तुम अपनी दैवीशक्तिसे बतलाओ कि वे लोग किधर गये हैं?" अब उनकी बातोंका आशय मेरी समझमें आ गया कि वे लूटनेके लिये सौदागरोंकी तलाशमें हैं। अब मेरा भय जाता रहा क्योंकि जो मनुष्य सौदागरोंकी बहुमूल्य वस्तुओंकी खोजमें फिर रहा है वह मुझसे दरिद्र पुरोहितको कभी लूटना न चाहेगा। बल्कि कभी कभी ऐसे काममें पुरस्कार भी मिल जाता है।

मैं सौदागरोंका पता बतलानेके लिये मजबूर हुआ पर मैंने भी सोचकर वही दिशा बतलाई जिसपर उन लोगोंके मिलनेकी

कम ही सम्भावना थी। इससे वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने उधर ही अपने घोड़े दौड़ाये। मुझे उन्होंने कुछ नहीं दिया। चलते समय कह गये कि इस समय हमलोगोंके पास कुछ नहीं है।

जबतक मैं उन लोगोंसे बातचीत कर रहा था मेरा साथी दूर खड़ा हुआ भयसे कांप रहा था। जब डाकू लोग चले गये तो वह मेरे पास आया और पूछने लगा कि क्या बातें हुईं? मैंने सब सुना दिया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुआ।

आठ मील आगे बढ़नेपर हमलोग एक खेमेपर पहुंचे। यही मेरे साथीका खेमा था। वहां और भी दो तीन खेमे थे। मैं अपने साथीके खेमेमें रातको ठहरा। थकावट दूर करनेके लिये एक दिन वहां और रह गया। दूसरे दिन अपने साथीके कहे अनुसार मैंने एक बकरी मोल ली और उसकी पीठपर सामान लादकर आगे बढ़ा।

मैं आगे बढ़ा ही था कि ओले गिरने लगे। अब न मैं देख सकता और न आगे बढ़ सकता था। मेरे तिब्बती कपड़े सब भीग गये और शरीरतक तर हो गया। मेरा कम्पास तो खोही गया था इससे दिशाका ज्ञान भी नहीं हो सकता था। पर वहां ठहरना भी अतिशय भयावह था। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ उसी दुरवस्थामें खड़ा ही था कि भाग्यवश एक अश्वारोही वहीं आ पहुंचा। उसे मेरी दशापर दया आई और मुझे अपने खेमेमें ले चला।

उसने कहा कि लासा जानेवालेको वहां जानेमें अवश्यही चक्कर पड़ेगा पर आगे जाड़ा बहुत है ऐसे समयमें रातको खुले मैदानमें रहना बड़ा भयानक है। मैंने उसके प्रस्तावको सहर्ष स्वीकार कर लिया। उसने बकरीके उपरसे कुछ बोझा उठाकर अपने घोड़ेपर रख लिया। बकरीको लेकर मैं उसके साथ चला और शीघ्र ही उसके खेमेमें पहुंच गया।

दूसरे दिन मेरा साथी बहुत सवेरे उठकर चला गया। उसके पीछे उसके साथी भी खेमा उठाकर चले। मुझे भी उसी ओर जाना था। अतएव मैं भी उनके साथ हो लिया। सन्ध्या होते होते प्रायः १५ मील चलकर हमलोग एक स्थानपर पहुंचे। राहमें उन लोगोंसे कोई बातचीत नहीं हुई। पर मुझे आशा थी कि कलकी भांति आज भी वे मुझे शरण देंगे।

जब वे लोग खेमे खड़ा कर चुके तब मैं उनके पास गया और ठहरनेकी आज्ञा मांगी। पर उन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया। वहांपर और भी ५-६ खेमे थे। मैं उन खेमोंमें भी गया पर वहां भी किसीने घुसने न दिया। अन्तमें मैं आखिरी खेमेमें गया। मैंने विचारा था कि इस खेमेका स्वामी यदि मुझे ठहरानेको राजी न होगा तो मैं बलपूर्वक घुस जाऊँगा। निदान मैं उस खेमेके पास पहुंचा। उसकी स्वामिनी एक बुढ़िया थी। मेरी प्रार्थनापर उसने तनिक भी ध्यान न दिया बल्कि उल्टा मेरे ऊपर कुपित होने लगी। जब मैंने कहा कि और कहीं मुझे स्थान नहीं मिला है तो वह बोली कि मैं हीं तुमको क्यों ठहराऊं?

जब मैं खेमेके भीतर घुसनेकी चेष्टा करने लगा तो वह अपना चिमटा लेकर मुझे मारने दौड़ी।

—:—

तैंतीसवां परिच्छेद



मृत्युके मुखमें

जब मुझे किसीने शरण नहीं दी, तो मैं १०-१२ गजकी दूरीपर जाकर बैठ गया। उस समय मुझे बुद्धदेवके वे शब्द स्मरण आये:—"जिससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है उसे मैं मुक्तिपथमें सहायता नहीं दे सकता।" तो इन लोगोंकी मुक्तिका क्या उपाय है जब इन लोगोंने मुझे अर्थात् उसके भक्तको शरण न दी। पर शरणकी याचना करनेसे मेरा उनका कुछ सम्बन्ध हो गया है इससे सम्भव है उन्हें मुक्ति मिल जाय। यह विचारकर मैं धर्मपुस्तक पढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद उस बुढ़ियाकी लड़कीने मुझे देखा और भीतर हो गई। थोड़ी देर बाद वह खेमेसे निकलकर मेरे पास आई और बोली, तुम्हें हमने खेमेमें नहीं ठहरने दिया इसलिये तुम पिशाचोंका आवाहन करते हो कि वे आकर हमें दुःख पहुंचावें? ऐसा करना उचित नहीं है। मेरी माताने कह दिया है कि तुम हमारे खेमेमें ठहरो, मैंने लड़कीके मुखसे यह बातें सुनकर अपने इष्टदेवको धन्यवाद दिया क्योंकि उनकी ही कृपासे मुझे यह सहारा मिला था। मैं फौरन राजी हो गया।

दूसरे दिन मैं वहांसे बहुत तड़के उठकर चल दिया। प्रायः २॥ मील गया था कि हठात् दो मनुष्य एक चट्टानके पीछेसे निकले और उन्होंने मुझे रोक लिया। यद्यपि वे सशस्त्र थे पर डाकू नहीं मालूम होते थे। देखनेसे यही ज्ञात होता था कि वहींके कोई यात्री हैं। उन्होंने मेरे पास आकर पूछा कि तुम्हारे पास क्या है? मैंने उत्तर दिया कि मेरे पास बौद्धधर्म है। उन्होंने मेरी बातको नहीं समझा और पूछा :—

"तुम्हारी पीठपर क्या है?"

"मेरी खाद्य सामग्री है।"

"तुम्हारी छातीपर यह ऊंची २ क्या वस्तु है?"

"यह मेरी रुपयोंकी थैली है।"

मेरी अन्तिम बात सुनते ही इन्होंने मेरे हाथसे लाठी छीन ली। अब मैं समझ गया कि वे डाकू हैं। मैंने चित्तको साव-धान करके कहा :—

'क्या तुम मुझसे कुछ चाहते हो?'

एक मनुष्यने अपने दांत चमकाकर कहा,-'अवश्य।' मैंने कहा— "अच्छा तो शीघ्रताकी कोई आवश्यकता नहीं है। तुम जो कुछ चाहोगे मैं तुम्हें दे दूंगा। किसी तरहकी गड़बड़की जरूरत नहीं।"

"पहले रुपयोंकी थैली निकालो।"

मैंने तुरन्त थैली निकालकर उनके हवाले कर दी।

"तुम्हारी पीठपर कुछ बहुमूल्य सामान मालूम होता है। दिखलाओ उसमें क्या है।"

मैंने उसे भी स्वीकार किया। उन्होंने मेरा बेग भी देखा जो बकरीके ऊपर लदा हुआ था। उसको खोलकर मेरी पुस्तकें, भारी २ बिछौने और अन्य वस्तुएँ जो उनके कामकी नहीं थीं मुझे लौटा दी। पर मेरा खानेका समान यह कहकर ले लिया कि इसको हमें आवश्यकता है। पर मैं भी उसके बिना नहीं रह सकता था, इसको समझनेवाला कोई नहीं था। तिब्बतके डाकुओंकी यह रीति है कि सब कुछ ले चुकनेपर वे लोग तीन दिनका भोजन उस मनुष्यको दे देते हैं यदि वह उनके कल्याणके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करके खानेको मांगे। मैंने भी वैसा ही विचार करके उनसे कहा कि मेरे पास एक चांदीका बौद्धमंदिर है जिसमें बुद्धदेवकी मूर्त्ति है। यह मुझे भारतवर्षके धर्मपालने दलाईलामाको भेंट करनेके लिये दी है। यह सुनते ही उनमेंसे एकने कहा—'क्या तुम वह मुझे नहीं दोगे।' मैंने उत्तर दिया कि देनेमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है पर यदि तुम उसको ले लोगे तो संभव है कि तुम्हारे ऊपर कोई विपद् आपड़े।

यह कहकर वह चांदीकी डिबिया निकालकर बाहर रख दी और उनसे कहा कि इसको खोलो। उन्होंने उसको हाथतक नहीं लगाया और मुझसे कहा कि तुम्हीं इसे हमलोगोंके सिरसे छुआ दो। मैंने उसे उठाकर उनके सिरसे छुआ दिया और प्रार्थना की कि बुद्धदेव उन दोनोंकी रक्षा करे।

इसके बाद मैं उनसे कुछ खानेको माँगना चाहता था कि सहसा दूरसे दो अश्वारोही आते हुए दिखलाई पड़े। अबतक

मैंने अपनी दृष्टि अश्वारोहियोंकी ओरसे फेरी तबतक डाकू लोग सब सामान लेकर दूसरी ओरको भाग खड़े हुए। वे दोनों खरगोशोंकी भाँति पहाड़ोंमें घुस गये। ऐसी अवस्थामें खाना कैसे मिलता। निदान मैंने अश्वारोहियोंसे ही कुछ खाना माँगना चाहा। पर मेरे पास आनेसे पहले ही वे दोनों दूसरी ओर घूम गये। मैंने पुकारा और हाथके संकेतसे बुलाया भी पर उससे उन्होंने मेरे बुलानेके ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया। शायद उन्हें कोई आवश्यक काम होगा। अब भी मेरे पास आठ गिन्नियां रह गई थीं जिनको मैंने छुपा लिया था। मेरा सामान अब बहुत कम हो गया था अतएव सबको बकरीके ऊपर लादकर मैं आगे बढ़ा। रास्ता पहाड़की ढालू घाटीसे होकर गया था। चलनेमें रात हो गई। रातभर एक चट्टानकी आड़में काटनी पड़ी।

दूसरे दिन दिनभर चलता रहा, पर मुझे कोई मनुष्य न दिखलाई पड़ा। अतएव खानेको भी कुछ न मिला। प्यासमें बरफ खा ली। यद्यपि मैं एक ही बार खाता था पर उसके भी न मिलनेसे मुझे बहुत कष्ट हुआ।

अंधेरे और भूखने मुझे ठहर जानेके लिये मजबूर किया। पास ही एक गड्ढा था उसमेंसे बरफ निकालकर मैंने उसको साफ किया और उसीमें लेटा रहा। इन स्थानोंमें इस बातका भय रहता है कि यदि बराबर श्वास भीतर जाता रहे तो बरफकी आँधी आनेमें वह भर सकता है। अतएव जैसा कि मैंने सीखा था श्वासको बहुत कम कर दिया।

सवेरे जब मैं उठा तो ज्ञात हुआ कि रातको बहुत बरफ गिरी थी पर इस समय आकाश स्वच्छ था। इस स्थानपर आकर मुझे ज्ञात हुआ कि मैं पहले यहाँ आ चुका हूं। चार-पांच मील आगे बढ़नेपर क्यांगचू नदी मिली। यहां किसी जान पहचानीसे भेंट हो जानेकी सम्भावनासे बहुत खुश हुआ। इसी जोशमें मैं पांच मील चला गया पर मुझे मनुष्यका दर्शन नहीं हुआ। चारों ओर बरफ ही बरफ दिखाई देती थी। भूख और प्यासके मारे मैं निराश हो रहा था। मैं एक दम थक गया था। भूखके मारे दम निकल रहा था। इसी समय मुझे एक बात याद आई कि लामा आलचू नदीके उस पार रहता है। वह अपना स्थान छोड़-कर कहीं दूर जाता भी नहीं। अतएव मैंने उसके पास जाना स्थिर किया। नदीको पार करना कोई कठिन काम नहीं था पर उसके ऊपर बरफके जम जानेसे वह बहुत भयानक हो गई थी। मैं लाठीसे बरफको तोड़ता हुआ आगे बढ़ा और किसी तरह पार हो गया। नदी पार होनेपर मालूम हुआ कि डाकुओंसे बचा हुआ जो कुछ सामान मेरे पास था वह भी बकरीकी पीठ-परसे कहीं गिर पड़ा। उसमें भेड़के चमड़ेका बिछौना, कुछ दवाइयां और जूते ही शष रह गये थे। वह भी गये। उनकी खोज करनेमें समय नष्ट करना व्यर्थ समझकर मैं आगे चला। चलते चलते सहसा मेरी आँखोंमें दर्द होने लगा। मैंने बरफके टुकड़े आँखोंपर लगाये पर कुछ लाभ न हुआ। ठंढके कारण तो बुरा हाल था ही, पीड़ाके कारण मैं बेहाल हो गया। मैंने

आँखोंमें लौंगका तेल लगाया और चाहा कि आंखें बन्दकर थोड़ी देर सो रहूं पर ऐसी कठिन पीड़ामें नींद कहां? जब किसी युक्तिने काम नहीं किया तो मैं ध्यानस्थ होकर बैठ गया। इससे हृदयको कुछ शान्ति मिली।

दूसरे दिन अक्टूबर सन् १६०० की पहली तारीख थी। बरफका गिरना आज बन्द था। और मेरी आंखोंमें बहुत दर्द था। आंखें बन्द करके चल नहीं सकता था और खोले हुए रह नहीं सकता था इससे मार्ग चलना कठिन हो गया था। चलते चलते राहमें मैं गिर गिर पड़ता था। चार दिनसे खानेको न मिलनेके कारण जरा भी शक्ति नहीं रह गयी थी। एक छोटासा पत्थर भी राहमें आ जानेसे ठोकर खाकर गिर जाता था। चलते चलते मेरी ऐसी दुरवस्था हो गयी थी कि आंखोंकी पीड़ाके कारण और शरीरमें बल न रहनेके कारण मैं बैठ गया और मुझे यह ज्ञात हुआ कि यहींपर मर जाऊंगा। पर अभी मृत्यु कहीं अड़ोस पड़ोसमें भी नहीं थी। मैं धरतीपर पड़ा हुआ था कि सहसा मैंने एक अश्वारोहीको देखा। मैं खड़ा हो गया और उसे अपने पास आनेका इशारा किया। मैंने चिल्लाकर बुलानेकी भी चेष्टा की पर दो शब्दोंके अतिरिक्त और कुछ भी मुंहसे न निकला। अश्वारोहीने मुझे देखते ही घोड़ा मेरी ओर फेरा। पास आकर उसने मुझसे पूछा—'तुम यहां कैसे आये और क्या कर रहे हो?' मैंने बड़ी कठिनतासे उसको समझाया कि मुझे डाकुओंने लूट लिया और जो कुछ मेरे पास बच गया था वह भी

कहीं गिर गया। आज मुझे बिना अन्नके चौथा दिन है। वह युवक बड़ा ही दयालु था। यद्यपि उसके पास खानेको बहुत था तथापि उसने कहा कि मैं तुम्हें थोड़ीसी मिठाई दे सकता हूं जो कि यहांपर प्रायः अप्राप्य है। उसने जो मिठाई मुझे दी उसे मैंने ऐसी शीघ्रतासे निगल लिया कि मुझे यह भी नहीं मालूम पड़ा कि उसका स्वाद कैसा था।

मैंने उससे पूछा—"क्या मुझे ठहरनेके लिये कहीं स्थान मिल सकता है?" उसने उत्तर दिया—'मैं यात्री हूं। मेरे माता पिता यहीं पहाड़के पास रहते हैं। वहां तुम्हें सब भांतिकी सुविधा मिल सकती है। तुम वहीं आओ। मैं जल्दीमें हूं।' इतना कहकर उसने अपना घोड़ा तेजीसे बढ़ाया।

यहांसे खेमा प्रायः दो मील था पर मैं नहीं कह सकता कि मैं कितनी बार ठोकर खाकर गिरा, सुस्ताया और बरफ खाकर वहां पहुंच सका। वहांतक पहुंचनेमें मुझे प्रायः ३ घंटे लगे और मैं वहां ११ बजे पहुंचा। उस युवकने मेरा सादर स्वागत किया। उसके माता पिताने भी मुझे मृत्युके मुखसे बचनेके लिये बधाई दी और तिब्बतके उत्तम भोजनसे मुझे सन्तुष्ट किया। मैंने पेटभर अन्न नहीं खाया क्योंकि अन्न लगनेका भय था, भोजनोपरान्त थोड़ासा दूध पी लिया। आंखोंकी पीड़ा अभीतक कम न हुई थी। बरफसे आखोंको ठण्ढा करनेके अतिरिक्त मेरे पास और कोई औषध भी न थी। यद्यपि मुझे सोनेके लिये बहुत अच्छा बिस्तर मिला था फिर भी पीड़ाके कारण नींद न आई।

ये लोग यात्री थे। दूसरे दिन सवेरे डेरा डण्डा उखाड़-कर आगे बढ़े। मुझे भी वहांसे चलना पड़ा। जबतक ये लोग असबाब लादनेमें व्यस्त थे, मैं चाय आदि पीकर नित्यकर्मसे निवृत्त होकर खेमोंकी सैरको चल दिया। खेमोंके पास पहुंचते ही कई एक बड़े बड़े कुत्तोंने मेरी अभ्यर्थना की। आंखोंकी पीड़ाके कारण मैं यथेष्ट रूपसे उनसे अपने आपको न बचा सका। जबतक मैं आंखें खोलकर लाठी हिलाता रहा तबतक तो वे मेरे पास न आये ज्योंही पीड़ावश मेरी आंखें बन्द हुई कि पीछेसे एक कुत्तेने मेरी लाठी पकड़ ली और दूसरेने मेरा दाहिना पैर पकड़ लिया। मैं गिर पड़ा।

मैं चिल्ला उठा जिसे सुनकर कई लोग दौड़ पड़े और पत्थर मारकर कुत्तोंको भगा दिया। मेरे घावसे रक्त बह रहा था मैं उसको पकड़कर बैठ गया था। इतनेमें एक बुढ़ियाने आकर मुझे एक औषध दी और कहा कि ऐसे घावोंके लिये यह बहुत उपयोगी है। मैंने औषध लगाकर पट्टी बांध ली पर उठकर खड़ा न हो सका।

पर वहां पड़ा रहना भी असम्भव था। अतएव मैंने उन लोगोंसे पूछा कि कोई आलचू लामाका पता जानता है। उत्तरमें एकने मुझसे पूछा, क्या तुम आलचू लामाको जानते हो? मैंने कहा—"हां"। तब उनमेंसे एकने कहा—"मैं तुम्हें अपने घोड़ेपर बैठाकर वहां पहुंचा दूंगा। वे चिकित्सा भी करते हैं। तुम्हारे घावको और आंखकी दर्दको शीघ्र अच्छा कर देंगे।" मैं लकड़ीके

सहारे उठा और घोड़ेपर सवार हो गया। मैं एक ऐसे स्थानपर पहुंचा जहां दो खेमे लगे हुए थे, तब मैंने देखा कि आलचू लामाके खेमोंसे ये छोटे हैं। पूछनेपर मालूम हुआ कि वह आलचू लामाके श्वशुरके खेमे हैं। मुझे किसी न किसी भांति लामाके पास पहुंचना था उसके विषयमें मैं बात चीत कर रहा था कि लामाकी स्त्रीने भीतरसे मेरा शब्द पहचाना और बाहर निकलकर मुझसे पूछा 'क्या तुम वही लामा हो जो तिसेकी चोटीके दर्शन करने गये थे।'

मैंने पूछा 'लामा कहां हैं ?'

'वह यहांसे दो मील पूर्वमें रहते हैं।'

'मैं उसके पास जाना चाहता हूं। क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा आदमी नहीं है जो मुझे वहां पहुंचा दे ?'

'मेरा अब उससे कोई सम्बन्ध नहीं रहा और न मैं तुम्हें वहां पहुंचा सकती हूं। यदि तुम जाना ही चाहते हो तो जो तुम्हें लाया है उसे वहां तकका मार्ग बता दूंगी।'

'पर तुम अपने घर क्यों नहीं चलती ?'

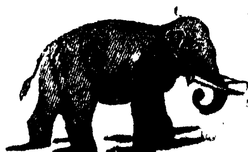
'ओह ! उससे बढ़कर दुष्ट मनुष्य इस संसारमें दूसरा नहीं है। मैंने उसे छोड़ देनेका विचार दृढ़ कर लिया है।'

'यह तो अनुचित काम है।'

इसके पीछे मुझसे उसकी बहुत बातें होती रहीं। अन्तमें मैं आलचू लामाके डेरेकी ओर चला।

जिस समय मैं पहुंचा लामा घरपर नहीं था। उसके

नौकरोंने मुझे टिकाया। जब वह लौटा तो मैंने उससे अपना सब हाल कह सुनाया और औषध मांगी। उसने मेरे घावमें औषध लगाई और जुलाब दिया। उसने कहा कि कुत्तोंका विष शरीरसे निकाल देनेके लिये जुलाब बहुत लाभदायक होता है। मैं उसके यहां एक सप्ताह रहा। इतने दिनोंमें मेरे घाव और आखें बहुत अच्छी हो गईं। एक दिन मैंने लामासे पूछा—"तुमने अपनी पत्नीको मैके क्यों भेज दिया है।" इसके उत्तरमें उसने अपनी पत्नीमें दोष बतलाये। दोष दोनोंहीने बतलाये पर यह कहना कठिन था कि किसका पल्ला भारी है। मैंने उसे समझाया कि मनुष्यका धर्म है कि वह अपनी स्त्रीको सन्तुष्ट रखे। अपनी बातोंका समर्थन मैंने बुद्धधर्मके आधारपर किया। परिणाम यह हुआ कि उसी दिन उसने अपने दो नौकरोंको श्वशुरालय भेजा। उसकी पत्नी कुछ आपत्तिके बाद उसी दिन लामाके घर आ गई। मैं वहां दस दिन ठहरा और समय समयपर दम्पतिको अच्छे अच्छे उपदेश सुनाता रहा। इतनेमें मैं भी एकदम नीरोग हो गया।



चौतीसवां परिच्छेद

गुफावासी साधुसे फिर भेंट ।

आलचू लामाके यहां रहकर स्वास्थ्य लाभकर मैंने मी लांग रिन पोचेके दर्शनोंके लिये पुनः जाना स्थिर किया। मेरे साथ आलचू लामा, उसकी स्त्री और उसके तीन नौकर चले। हम-सब घोड़ोंपर सवार थे और एक घोड़ेपर सामान लदा था। हमलोग तेजीसे चले और प्राय: १३ मीलकी दूरी ग्यारह बजेसे पहले ही पार कर ली। गुफाके पास पहुंचकर हमलोगोंको थोड़ी देर ठहरना पड़ा। जब समीप आया तो गुफाके द्वारपर तीस मनुष्य अपनी अपनी भेटें लिये हुए दर्शन करनेके लिये प्रस्तुत थे।

जब सब लोग दर्शन करके रवाना होने लगे तब लामा महाशयने मुझे रोककर कहा "मुझे आपसे कुछ बातें करनी हैं। यह सुनकर आलचू और उसके साथी मुझसे विदा होकर लासा-की तरफ चले गये। मैं लामा महाशयके सामने बैठ गया, वे कुछ सोच रहे थे। इसका आशय मैं समझ गया। जिस समय मैं आलचू लामाके खेमेपर पहुंचा था उस समय मैंने सुना था कि लोगोंमें यह किंवदन्ती प्रसिद्ध हो गई थी कि मैं चीनी लामाके वेषमें अंग्रेजी गुप्तचर हूं और तिब्बतका हाल मालूम करनेके

लिये आया हूं। सम्भव है कि यही सम्वाद भी लांग रिन पोचेके कानतक पहुंचा हो और इसीके विषयमें वह मुझसे कुछ कहना चाहते होंगे। उन्होंने मुझसे पूछा—"आप इतनी कठिनाइयोंको झेलकर भी क्यों जा रहे हैं?" मैंने उत्तर दिया—"मैं समस्त जीवोंके परित्राणका यत्न करनेके लिये बौद्धधर्मकी शिक्षा समाप्त करने जा रहा हूं।

लामा—समस्त जीवोंके परित्राणकी तुम्हें इतनी चिन्ता क्यों है?

मैं—क्योंकि वे घोर यन्त्रणामें पड़े हैं।

लामा—तुम्हारा अभिप्राय प्राणी मात्रसे है।

मैंने भी उसी तर्जमें उत्तर दिय—'जबतक मैं अहंज्ञान-हीन हूं तबतक मैं समस्त जीवोंका ज्ञान किस प्रकार प्राप्त कर सकता हूं?'

यह सुनकर लामा हंसे और बात बदलते हुए मुझसे पूछा "क्या कभी प्रेमके चक्करमें पड़े हो?" मैंने उत्तर दिया—'एकबार इसके फेरमें पड़कर मैंने बहुत दुःख उठाया था और बड़ी कठि-नाईसे उससे मुक्ति पाई थी पर अब तो वह विचार नहीं है और आगे होनेका भय भी नहीं है।" इसके बाद उन्होंने मुझसे पूछा-"जब तुम्हें डाकुओंने लूटा था उस समय उन्हें घृणाकी दृष्टिसे देखा था और चले जानेपर उन्हें शाप दिया था कि नहीं?" मैंने उत्तर दिया—"घृणा करनेकी कोई बात नहीं थी क्योंकि मैं लूटे जानेके ही योग्य था। मुझे अपने ही ऊपर घृणा आ रही

थी कि मैंने ऐसा पाप क्यों किया जिसके कारण यह क्लेश उठाना पड़ा। लूटे जानेपर मैं प्रसन्न हुआ कि उस पापसे मेरी मुक्ति हो गई। ऐसी स्थितिमें मैं उनको शाप क्यों देता? बल्कि मैंने उनके लिये प्रार्थना की कि इस जन्ममें नहीं तो उस जन्ममें ये लोग साधु प्रकृति ग्रहण करें।" यह सुनकर लामा महाशयने कहा—"तुम्हारी बातोंपर मुझे पूरा विश्वास है पर सम्भव है कि लासाके मार्गमें तुम्हें ऐसे और भी डाकू मिलेंगे जो तुम्हें जानसे मार डाल सकते हैं तब तुम समस्त जीवोंका परित्राण नहीं कर सकोगे। इससे उचित होगा कि तुम लासा जानेका विचार छोड़ दो और नेपालको लौट जाओ। लोसे नेपालको बहुत अच्छी सड़क गई है। यहांसे तुम लो चले जाओ। यदि तुम लासा जाओगे तो मुझे भय है कि तुम अवश्य ही मारे जाओगे। यदि वास्तवमें जीवोंके परित्राणकी सत्कामना है तो और उपायोंसे भी यह सिद्ध हो सकती है। इससे मेरी इच्छा है कि तुम लासा न जाकर नेपाल लौट जाओ।"

जब किसी प्रकार मैं विचलित न हुआ तो उन्होंने पूछा—"तुम किस राहसे जाओगे?"

मैंने उत्तर दिया—"मैं पहाड़की घाटियोंसे होकर सीधे राजधानी जाऊंगा।"

यह सुनकर लामा महाशयने कहा—"पर यह सम्भव है। इसमें तुम्हारी मृत्यु अवश्य है। अच्छा होगा कि नेपाल लौट जाओ। मैंने उत्तर दिया आपका कहना यथार्थ है पर मैं जन्म

और मरणके विषयमें निरपेक्ष हूं। सच्चे आत्मविश्वासके अनुसार कुछ करते जाना ही मेरा परम लक्ष्य है।

कुछ देर लामा महाशय चुप रहे फिर धर्मके गुढ़ रहस्योंकी चर्चा छेड़ दी, विशेषकर तिब्बतकी गुप्तपुस्तक "मणि" के विषयमें और बड़ी संध्यातक बातचीत होती रही।

लामाका सन्देह अधिकांश दूर हो गया उन्होंने कहा—"मुझे बड़ा आश्चर्य है कि तुमसे सच्चे बौद्ध मतावलम्बीको न जाने लोग क्यों गुप्तचर बतलाते हैं।" मेरी यात्राकी सहायताके लिये उन्होंने चाय, बहुतसी रोटी, तांबेकी कढ़ाई और बहुतसी आवश्यक वस्तुएं दीं। सब वस्तुएं लगभग ६०) रुपयोंकी थीं। मैंने कहा इतना सामान पीठपर लादकर न चला जायगा। इसे कुछ कम कर दीजिये। उत्तरमें उन्होंने कहा कि राहमें स्थान २ पर मेरे शिष्य तुम्हें मिलेंगे। तुम्हारे बेगको देखते ही वे तुम्हारा सामान भेज देनेकी व्यवस्था कर देंगे। उन्होंने इस बातका वचन दिया कि प्रातःकाल तुम्हें "मणि" का गुप्तभेद बतला दूंगा।

मैंने सड़कसे होकर जाना ही स्थिर किया क्योंकि पहाड़ी मार्गमें लामाके शिष्य मिलेंगे जो सहायता करनेके बदले अनावश्यक सन्देह करेंगे।

दूसरे दिन "मणि" की गुप्तदीक्षा प्राप्तकर मैं दोपहरके बाद वहांसे रवाना हुआ। बोझ भारी था, १० मील पहाड़ चढ़कर मुझे सामने दो खेमें दिखाई दिये। पास पहुंचनेपर एक मनुष्य

बाहर निकला, उसने आकर मुझे प्रणाम किया। मैं चकित हो गया, मैंने इस मनुष्यको कभी भी नहीं देखा था और न यहां मुझे कोई जानता ही था। पर मैं चुपचाप उसके साथ खेमेंके भीतर चला गया तो मैंने देखा कि आलचू लामा विराजमान हैं। उसने मेरी धार्मिक निष्ठाकी चर्चा इन लोगोंसे की थी और ये लोग मेरा आशीर्वाद लेनेके लिये उत्सुक थे। आलचू लामाके कहनेके अनुसार मैंने उन लोगोंको आशीर्वाद दिया और वहांसे उस मनुष्यको लेकर घोड़ेपर सवार होकर रवाना हो गया। यह घोड़ा और मनुष्य उसने मेरे लिये तैयार किये थे। वहांसे चलकर कई छोटी बड़ी नदियां पार करता हुआ मैं आगे बढ़ा। आगे जाकर मैं एक विपत्तिमें फंस गया जिसका उल्लेख मैं अगले परिच्छेदमें करूंगा।

पैंतीसवां परिच्छेद

सुखके दिन।

एक नदीके किनारे बहुत बड़ा दलदल था। जहांपर यह सबसे कम अर्थात् चार गज चौड़ा था वहांसे उसे पार करने-का मैंने विचार किया। उस दलदलका मैंने भली भांति परीक्षा कर ली। पर ज्योंही मैंने आगे पैर बढ़ाया मैं उसमें धँस गया। जैसे जैसे मैं अपनी लाठीकी सहायतासे बाहर

निकलनेकी चेष्टा करता था वैसेही मैं और भी धंसता जाता था अन्तमें पीठपरका बोझ मैंने किनारेपर फेंक दिया। कपड़े भी उतारकर फेंक दिये। और मैं दलदलके ऊपर लाठीके सहारे लेट गया और लाठीके ऊपर सहारा देकर पैरोंको नीचेसे निकाल ने लगा। इस भाँति बड़ी कठिनाईसे उस चार गजको पार कर जान बचाई।

मैं जाड़ेके मारे कांप रहा था। मैंने गीले कपड़ोंको निचोड़कर पहन लिया। सामने थोड़ी दूरपर सड़कके किनारे एक खेमा लगा हुआ था उसमें ही रात काटी।

तिब्बतमें सड़कोंका प्रायः अभाव है। अच्छी सड़कें तो हैं ही नहीं जिनपरसे होकर घोड़ा गाड़ो जा सके। जिस मार्गसे लोग बहुत जाते हैं उसे ही सड़क कहते हैं पर उनपर गाड़ियां नहीं चल सकतीं। कई वर्षकी बात है नेपालके राजाने दलाई लामाको एक अंग्रेजी ढंगकी चार घोड़ोंकी गाड़ी उपहार भेजी। दलाई-लामाके सलाहकारोंने उसे लौटा देनेको सलाह दी क्योंकि वह बेकार थी। पर यह सोचकर कि नेपालके राजाका अपमान होगा लासामें रख ली गई और आजतक वहीं पड़ी है।

तिब्बतमें लासा और शिगात्ज़ेके अतिरिक्त और कहीं सड़क नहीं है। वहांसे दिनभर चलनेपर मुझे एक खेमा मिला। यह मदिराकी दूकान थी। इस स्थानपर एक मेला लगता था। उसी के निमित्त यह दूकान लगाई गई थी। यहां शाम होते होते मैं पहुंचा, खेमेमें तसरंगनिवासी पूर्व परिचिता एक वृद्धा थी।

मुझे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई। उसने मुझसे पूछा—"क्या आप तसरंग चलेंगे?" मैंने उत्तर दिया-'नहीं।' उसने मेरी इतनी अधिक खातिरदारी की कि यदि दूसरा कोई होता तो मैं उसे कभी भी स्वीकार न करता।

जब मैं वहांसे चला तो बुढ़ियाने मेरा असबाब ढोनेके लिये एक पहाड़ी भैंसा और राह दिखानेके लिये अपना नौकर साथ कर दिया। १२ मील चलकर मैं ग्यालवम नामी व्यक्तिके पास पहुंचा। वृद्धाने मेरे बारेमें उसके पास कहला भेजा था। यह बहुत धनी था अर्थात् इसके पास दो हजार पहाड़ी भैंसे पांच हजार भेड़ें और अतुल धन था। उसका एक खेमा ६० गज लम्बा चौड़ा था और उसीमें पत्थरका एक मन्दिर था।

ग्यालवमकी अवस्था प्रायः पचहत्तर वर्ष और उसकी पत्नीकी अवस्था अस्सी वर्षकी थी। वह अन्धी थी। उनको कोई सन्तान नहीं थी। तिब्बतके नियमके अनुसार वे गोद भी नहीं ले सकते थे। यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर जावे तो प्रायः उसका निकटतम सम्बन्धी उसकी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी होता है। वृद्धदम्पतिने बौद्धधर्म विषयक बहुतसी बातें मुझसे पूछीं जिनको मैंने बहुत अच्छी तरह उन्हें समझाया। मेरे उपदेशोंको सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे—"आप यहां वर्ष दो वर्ष रह कर मेरे लिये कुछ पूजा पाठ कर दीजिये। क्योंकि इह लोकमें तो मुझे कोई कारण नहीं, परलोकके लिये कुछ कर जाना है।"

मैं भी थक गया था और विश्राम चाहता था। इससे थोड़े

दिनके लिये ठहरना स्वीकार कर लिया पर वर्ष दो वर्षतक ठहरना मैंने उचित न समझा। क्योंकि पहले तो मुझे अपने विषयमें फैली हुई किंवदन्तीका भय था और दूसरे वहांकी सर्दीका सहन करना मेरे लिये असम्भव था क्योंकि अपने मेज़वानसे दो समूरके कोट उधार ले चुका था फिर भी सर्दी लगती ही थी।

मेरी स्वास्थ्यविषयक चिन्ता अकारण न थी। एक दिन मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरे गलेमें कोई वस्तु अटक गई है। मैंने उसे बाहर निकाला तो वह रालका एक गोला मालूम हुआ। इसके थोड़ी ही देर बाद मेरे गलेसे रक्त निकलने लगा। मुझे क्षयी रोगका सन्देह हुआ। परन्तु मेरे धर्मने ही मुझे भयभीत न होने दिया। मैं वहीं घासपर बैठ गया और श्वास रोकने लगा। इससे रक्तकी गति बन्द हो गई। पर उतने ही समयमें बहुत रक्त निकल गया था और मेरा चेहरा पीला पड़ गया। जिस समय मैं घरपर आया मेरे मेजबान बहुत ही भयभीत हुए। पर ज़ब मैंने सब हाल कह सुनाया तो बोले "बहुधा चीनी यात्रियोंको यहां यह रोग हो जाया करता है।" उन्हें इस रोगकी बहुत अच्छी औषध मालूम थी उन्होंने उसे मेरे गलेमें लगा दिया जिससे क्षयी रोगकी चिन्ता मिट गई। तीन दिन बाद फिर थोड़ा सा रक्त मेरे मुंहसे निकला। उसपर उन्होंने कहा कि दो बार थोड़ा २ रक्त और निकलेगा फिर कभी नहीं निकलेगा। उनकी यह बात यथार्थ थी क्योंकि लासामें भी वैसा दुःख नहीं हुआ। बोम्बा १५००० फीटकी ऊंचाईपर है और लासा केवल

१२००० फीटकी ही ऊंचाईपर है मेरे मेजबानने दूध आदि पोषक पदार्थ मुझे खिलाये। एक सप्ताह रहकर मैं उनसे विदा हुआ। उन्होंने यी नामक बिल्लीका चमड़ा मुझे दिया और कहा कि यही एक वस्तु है जो मुझे यहांपर उपयोगी होगी। यह बिल्ली प्रायः बरफमें रहती है। यह साधारण बिल्लीसे बड़ी होती है और इसके चमड़ेका तिब्बतमें बहुत मूल्य समझा जाता है। यह चमड़ा एक प्रकारकी टोपी थी जो कन्धोंतक आ जाती थी। वैसी नयी टोपी पचीस और पुरानी दस येनमें आती है। मुझे सद सिक्के और थोड़ा मक्खन एक घोड़ा और पथ प्रदर्शक दिया। वहांसे दस मील चलकर मैं एक गांवमें पहुंचा, और गांवके मुखिया अजोपूके घर ठहरा।

वहांसे मैं तारीख २६ अक्तूबर सन १६०० को विदा हुआ और नित्यप्रति कष्ट उठाता हुआ तारीख १ नवम्बरको तादुन नगरमें पहुँचा। तिब्बतके उत्तरीय प्रान्तमें यह नगर प्रथम श्रेणीके नगरोंमें है। यहां एक मन्दिर बहुत अच्छा है।

छत्तीसवां परिच्छेद

शंका समाधान

दूसरी नवम्बर मैंने मन्दिरका दर्शन करनेमें बितायी। यह तसरंग नगरसे ठीक उत्तर ६० मील दूर है। यहां लो के सौदा-

गर बहुधा आया करते हैं। जिस समय मैं मन्दिरके बाहर घूम रहा था मेरा एक पुराना परिचित मनुष्य जो बड़ा भारी शराबी और ज्वारी था, दिखलाई पड़ा। हिमालयके अधिवासी भी उससे डरते थे। जब मैं लोमें था, वह अंग्रेज़ी गुप्तचर कहकर मुझे गालियां दिया करता था। उसी समय उसके घरका एक आदमी बीमार हो गया। मैंने दवा देकर उसे अच्छा किया तबसे वह कुछ मुलायम हो गया था। पर मुझसे लड़नेके लिये वह सदा अवसर ढूंढता रहा। इसलिये यह स्पष्ट था कि यदि इस अवसरपर मैं उसकी उपेक्षा करूं तो तिब्बत सरकारको मेरी सूचना दे सकता है। ऐसा विचार कर मैं उसके पास गया और हंसकर बोला कि मुझे आपसे आज मिलकर बड़ा हर्ष हुआ। मैंने सुना है कि यहां शराब बहुत अच्छी मिलती है यदि आप मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें तो मैं उत्तमसे उत्तम शराब आपके लिये संग्रह करूं। उसने भी सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मैंने बहुतसी बढ़िया शराब मंगाई और सवेरे ४ बजेतक उसे पिलाता रहा। मैंने स्वयं उसे छुआ तक नहीं, पर मैंने नशेमें चूर होनेका ही भाव प्रकाशित किया। पीते पीते वह अचेत होकर सो गया। मैं भी सोनेका बहाना करके लेट रहा। जब ५॥ बजेके समय शराबवाला सोकर जागा तो मैं भी उठ बैठा। मैंने उससे कहा कि जो मनुष्य सो रहा है मेरा बड़ा भारी मित्र है। इसको कहीं बाहर मत जाने देना और ज्योंही उठे त्योंही उसे बढ़िया शराब पिलाना। जब वह मेरी खोज करे तो बतला देना कि मैं

तसरंग चला गया। यह कह कर मैंने उसका किराया आदि चुका दिया, और उसे यथेष्ट पारितोषिक दिया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुआ। छः बजते बजते मैं वहांसे चल दिया।

मैंने तसरंगकी ओर न जाकर लासाकी सड़क पकड़ी। पर उसका भय मेरे हृदयसे दूर नहीं हुआ था क्योंकि यहांपर यह मनुष्य बड़ा भयानक समझा जाता था। वह सरायवालेपर ही सन्देह नहीं कर सकता था बल्कि मेरी कार्रवाईपर भी सन्देह कर तिब्बत सरकारके आदमियोंसे मेरे लासा जानेके विषयमें कह सकता था और यदि अश्वारोही मेरा पीछा करते तो मैं किसी तरह भी बच नहीं सकता था। इससे मैं अधिकाधिक व्यय करके भी एक घोड़ा या एक मनुष्य समान ढोनेके लिये लेना चाहता था पर वह प्रदेश बिलकुल ही निर्जन था। मैं तीव्र-गतिसे दक्षिणपूर्वकी ओर चला जा रहा था कि सहसा बहुतसे अश्वारोही पीछेसे आते हुए दिखाई पड़े।

यह एक काफला था जिसमें ८०-९० घोड़े और १६ मनुष्य थे। मैंने उनमेंसे एकको रोककर कहा मेरा सामान घोड़ेपर लाद लो और मैं पीछे २ भागता चलूंगा। इसके लिये मैं तुम्हें कुछ दे दूंगा। वह मनुष्य नौकर था इससे ठीक उत्तर न दे सका। निदान दूसरे मनुष्यके पास गया जो स्वामी मालूम होता था। उससे मैंने अपना अभिप्राय कह सुनाया। उसपर उसने उत्तर दिया—"इस समय मैं आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकता। पर सामनेके पहाड़ोंकी घाटीमें हमलोग यह रात काटेंगे। यदि

आप वहांतक पहुंचनेका कष्ट उठावें तो बन्दोबस्त हो सकता है। मैंने उसकी बात मान ली और वहांतक पहुँचनेके लिये हिम्मत बांधी। आठ बजते बजते मैं वहां पहुंचा। वहाँ दो बड़े बड़े श्वेत खेमे लगे थे। सबसे बड़ा और दूसरा अफ़सर मुझे लामा मालूम हुआ। यह दल धार्मिक प्रतीत होता था। उन्होंने मुझे चाय और मांस खानेको दिया। मैंने कहा—"मैं मांस नहीं खाता" और इसका कारण भी बतलाया। मेरे उत्तरपर वे लोग बड़े प्रसन्न हुए और मुझसे पूछा—"कहांसे आये हो।" मैंने उत्तर दिया कि "मैं चीनी पुरोहित हूं।" लामाने यह सुनकर मुझसे चीनी भाषामें बातें करना आरम्भ किया। पर मैंने उससे कहा कि आप पेकिंगकी भाषामें बातचीत कर रहे हैं इससे मैं आपकी बातें नहीं समझ सकता। अतएव हमलोग तिब्बती भाषामें ही बातचीत करने लगे। उन्होंने मुझे चीनी अक्षर पढ़नेके लिये दिये और जबतक उसे पढ़कर मैंने उनका सन्देह दूर न कर दिया तब तक वे पूछताछ करते ही रहे।

मुझे मालूम हुआ कि वह लद्दाखके पासके एक मन्दिरके लामा हैं। वे लोग कश्मीरसे सूखी नाशपाती, अंगूर, सेव, और ऊनी सामान लाते हैं। और यहांसे चाय और बुद्धदेवकी तसवीरें ले जाते हैं। इन लोगोंके साथ मुझे बड़ा आराम मिलता पर मैं उनके साथ लासा तक जाना नहीं चाहता था।

लामाने मुझसे बौद्धधर्मकी शिक्षा और तिब्बती बौद्धधर्मके विषयमें अनेक प्रश्न किये। तसरङ्गमें डाक्टर ग्वालतुसनसे मैं

बुद्धधर्म, व्याकरण आदिकी शिक्षा भली प्रकार पा चुका था इससे मैंने आसानीसे उनके प्रश्नोंका उत्तर दे दिया, बल्कि और भी कई ऐसी बातें बतलाईं जिनसे वे सर्वथा अनभिज्ञ थे।

मेरा उत्तर सुनकर वे बहुत ही विस्मित हुए और व्याकरणके सैकड़ों प्रश्न मुझसे किये मानों वह व्याकरण सीख रहे हों। मेरे व्याकरणज्ञानसे वे बहुत ही सन्तुष्ट हुए और बोले—"तुम मेरे साथ चलो। हमलोग प्रतिदिन दो बजेतक यात्रा करते हैं उसके बाद हमको छुट्टी है इसी समय मैं व्याकरण पढ़ा करूंगा, इसके लिये मैं तुम्हें यथेष्ट रुपया दूँगा और भोजन भी दूँगा।" मैं भी यही चाहता था। यदि वह मुझे कुछ भी न देता तब भी मैं इस कामके करनेके लिये तय्यार था।

दूसरे दिन सवेरे ४ बजे जब मैं सोकर उठा तो मैंने देखा कि वह लोग याकके कन्डेपर चाय बना रहे हैं। प्रायः सब ही लोग उठ चुके थे। उनमेंसे कुछ लोग घोड़ोंको खोजनेके लिये गये जो रातको चरनेके लिये छोड़ दिये गये थे। ये जानवर कभी २ पहाड़ोंपर चले जाते थे। इसलिये इनके खोजनेमें कभी कभी घन्टों लग जाते थे। सब लोगोंने खा पीकर घोड़ोंपर सामान लादा। ये लोग १६ थे जिनमें १५ घोड़ेपर चलते थे और एक पैदल चलता था। यह मनुष्य विद्याभ्यासके लिये लासा जा रहा था। अतएव हम दोनों चाय पीकर पैदल ही चल दिये।

मेरा साथी विद्वान था और उसे अपनी विद्वत्तापर बहुत अभिमान था, यद्यपि बौद्धधर्मके विषयमें जानता बहुत ही

थोड़ा था। मैं उससे बहुत प्रसन्न था पर वह मुझसे भीतर ही भीतर डाह करने लगा। कारण यह था कि जो व्याकरण मैंने लामाको बतलाया था, उसके विषयमें वह कुछ भी नहीं जानता था। वह कहता था कि बुद्धधर्मका वास्तविक ज्ञान प्राप्त किये बिना व्याकरण रटनेमें व्यर्थ समय खोना मूर्खता है। यही कारण था कि वह मुझसे और भी जलने लगा था।

दूसरे दिन बीस मील चलकर हमलोग फिर ठहरे और लामाके आज्ञानुसार मैंने फिर व्याकरणके ऊपर व्याख्यान दिया। इसी तरह हमलोग बराबर बढ़ते गये। अब वह मेरी जांच करने लगा, मेरा गोरा रंग देखकर वह मुझे अंग्रेज समझने लगा। बातों ही बातोंमें उसने मुझसे कहा—"तुम हिन्दुस्तान होकर आये हो तो तुम शरत्चन्द्रदाससे अवश्य ही मिले होंगे जो तिब्बतमें एक बार आये थे।" मैंने उत्तर दिया—"मैं उनका नाम भी नहीं जानता। क्योंकि हिन्दुस्तानकी आबादी ३० करोड़ है चाहे कैसा ही प्रसिद्ध मनुष्य क्यों न हो सब लोग उसे नहीं जान सकते।"

हिन्दुस्तान और तिब्बतमें बहुत भेद है; यह कहकर मैंने शरत् बाबूका कुछ हाल उससे जानना चाहा। इसपर उसने शरत् बाबूका तेईस वर्ष पहले आना, तिब्बत सरकारको धोखा देकर बौद्धधर्मको चुरा ले जाना, पीछेसे उसका पता चलनेपर तिब्बतके सबसे बड़े लामा सांग चेन दोरजी चेनको मृत्युदण्ड होना

इत्यादि बातें बतलाई । उसने कहा शरत्चन्द्र हिन्दुस्तानमें बड़ा प्रसिद्ध आदमी है, यह कैसे हो सकता है कि तुम उसको न जानो ।

शरत्चन्द्र सम्बन्धी घटनाके बादसे यहांके लोग विदेशियों-के प्रति बहुत चौकन्ने हो गये हैं। मैं भी बड़ी सावधानीसे काम लेता था। इसको इस प्रकार जांच करते देख अन्य भी मुझे घेरने और अनेक प्रकारके प्रश्नोंसे तङ्ग करने लगे। विषय बदलनेके खयालसे मैंने उनसे पूछा—"आपलोग बुद्धकी उपा-सना करते हैं कि लोब्न रिनपोचेकी। इस प्रश्नमें वे सब इतने उलझ गये कि फिर उन्हें मेरे ऊपर सन्देह करनेका अवसर न मिला।

सैंतीसवां परिच्छेद



मैदानके पार

अनेक पहाड़ोंपर चलकर ७ नवम्बर सन् १६०० को हमलोग एक लोहेके पुलपर पहुंचे। इसे पुल नहीं कहना चाहिये। यह दोनों सिरोंपर दो चट्टानोंसे लोहेका बँधा हुआ एक तार था जिसे पकड़कर लोग नदी पार करते थे। मैंने सुना कि लासामें एक और भी पुल है जिसमें दो जंजीरें बँधी हैं और उसपर लोग

बहुत आराम से उतर जाते हैं। हमलोग घोड़ोंपर इस नदीको पार कर गये। यहांसे हमें ऐसे मैदानमें चलना पड़ा जहां हरियालीका कहीं नाम तक न था। प्राय: आठ मील चलनेपर हमलोग सक्काजोंग दुर्गमें पहुंचे। इसकी बनावट मन्दिरकी सी थी। यहांपर सदैव सिपाही नहीं रहा करते हैं। परन्तु जब आवश्यकता होती है, वहांके रहनेवाले सिपाहीका काम करते हैं। मैंने सुना कि दो वर्ष हुए, उत्तरी मैदानकी रहनेवाली एक जातिने यहां डाका डाला था जिसमें यहांके २५-३० आदमी मारे गये और दो हज़ार पहाड़ी भैंसे छीन लिये गये।

६ तारीखको राहमें हमें एक विचित्र जानवर दिखाई दिया। यह देखनेमें तो याक मालूम होता था पर याकसे बहुत बड़ा था। पूछनेपर मालूम हुआ कि तिब्बतके लोग उसे डोंग याक अर्थात् जंगली याक कहते हैं। यह साधारण याकसे तिगुना बड़ा होता है। इसकी ऊंचाई सात फीट थी। यह हाथीसे छोटा था पर इसकी आँखें बड़ी भयानक थीं। यह जिस समय क्रुद्ध होता है मनुष्य अथवा और किसी जीवको सींगोंसे मारकर आहत कर डालता है। इसकी जिह्वा ऐसी खुरखुरी होती है कि यदि वह थोड़ी देर भी किसी वस्तुको चाटे तो उसके टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं। मैंने उसकी सूखी हुई जिह्वा देखी। वह घोड़ेपर ब्रश करनेके काममें लाई जा रही थी।

उस दिन सन्ध्याके मेरे एक साथीने मुझसे कहा कि आप पण्डित हैं इसलिये बतलाइये कि आज रातको कोई आपत्ति तो

नहीं आवेगी। मैंने समझा कि इस मनुष्यने जङ्गली याक देखा है इसीसे भयभीत होकर ऐसी बातें पूछ रहा है।

पर यह बात नहीं थी। उसने कहा कि पार साल यहांपर छः सौदागर डाकुओंके हाथ मारे गये थे और आज रातको मुझे ही पहरा देना है। उसे सन्तोष देनेके लिये मैंने उससे कहा—"आज रातको किसी तरहका संकट नहीं उपस्थित होगा। वहांकी स्थिति आपत्ति रहित नहीं थी क्योंकि डोंगयाकका बड़ा भय था। भाग्यवश रात शान्तिसे कटी और प्रातःकाल हमलोग फिर चल दिये।

इतने दिनके सहवासके बाद उस अभिमानी पुरोहितका मन फिरा। उसने मुझसे मेल कर लिया। उसने भली भांति देख लिया कि इस वैमनस्यसे सिवां हानिके लाभ नहीं है क्योंकि उस दलके सभी लोग मेरे भक्त और उपासक होगये थे। इससे मेरा भय जाता रहा कि वह तिब्बत सरकारको मेरे बारेमें सूचित न कर दें।

तीन दिनमें ५५ मील चलकर हमलोग ग्यातो तजाम नगर पहुंचे। पहले पहल इसी नगरमें हमने इतने अधिक पत्थरके मकान देखे। यहांकी भाषा भी कुछ सौम्य थी। ५ मील चलकर हमलोग एक नदीके किनारे पहुंचे और वहीं रात काटी।

नवम्बरका महीना था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। पर साथियोंने इतना अधिक कण्डा बटोर कर आग जला दी कि जाड़ेका पता ही न लगा। तिसपर मुझे तो काफी कण्डा

और बिछौना भी दिया गया गया था। बीस मील चलकर हमलोग सीसम गोम्पाके मन्दिरमें पहुँचे। वहांसे बीस मील चलकर हमलोग सांग सांगतज़म नगर पहुंचे। रात वहीं काटी। इतनी अधिक सर्दी पड़ रही थी कि कण्डेकी आगका कुछ भी असर नहीं पड़ सका। प्रा:तकाल हमलोग एकदम कुहरेसे घिर गये थे।

अड़तीसवां परिच्छेद



बूचड़खानेमें बौद्धग्रन्थ।

हमलोग दक्षिणपूर्वकी ओर चार मील चलकर एक पहाड़के नीचे पहुंचे। वहाँ तीन घर बने थे। मैंने उन मकानोंके ऊपर भेड़ोंके बहुतसे चमड़े लटकते हुए देखे तो मेरे चित्तकी अद्भुत अवस्था हो गई। इतना ही नहीं यहाँ याक भी मारे जाते थे। मैंने सुना कि यहांके लोग मांसको जाड़ेके अन्तमें सुखाकर रखते हैं। क्योंकि सर्दीकी अधिकतासे उसके सड़नेका भय नहीं रहता है। इस मांसको तिब्बतके लोग अनुपम पदार्थ समझते और कहते हैं कि संसारभरमें ऐसी सुस्वाद वस्तु दूसरी नहीं। वे लोग कहते हैं कि गर्मीमें घास खाकर इन पशुओंका मांस बहुत स्वादिष्ट हो जाता है। पर तिब्बतके लोग अपने गांवमें अथवा अपने खेमोंके पास इस तरहकी हत्या करनेका साहस नहीं

करते। इसलिये यह मकान बना रखे हैं और चारों ओरके पशु यहीं लाकर मारे जाते हैं।

यह हत्या किसी एक मनुष्य अथवा किसी एक कुटुम्बके लिये नहीं की जाती वरन् पूरे गांवके लिये की जाती है। जिस दिन हमलोग वहां पहुंचे उस दिन २५० बकरियां और भेड़ें तथा ३५ याक मारे गये थे।

जो रक्त उन पशुओंके शरीरसे निकलता है उसे लोग एक बर्तनमें रोप लेते हैं। इससे वे लोग एक प्रकारका बहुत ही सु-स्वाद भोजन बनाते हैं। जब उन लोगोंको यह भोजन बनाना होता है तो वे जिन्दे याकके शरीरमें चाकू मारकर रक्त निकाल लेते हैं। वे लोग कहते हैं कि इस भांति रक्त निकालकर जो भोजन बनता है वह उतना स्वादिष्ट नहीं होता जितना मारे हुए पशुके रक्तसे बना हुआ। जिस पशुके शरीरसे इस भांति रक्त निकाला जाता है वह फिर भी जीवित रहता है! कैसी निर्दयता है! पर मैं इतने हीमें घबरा गया, यह मेरी भूल थी। ल्हासामें मुझे मालूम हुआ कि अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर इन तीन महीनोंमें प्रायः ५० हजार जीव मारे जाते हैं।

वहांसे चलकर १६ नवम्बरको हम तसांगगोम्बाके मन्दिरमें पहुंचे। बीस तारीखको हम लारङ्ग गांवमें पहुंचे। यह गांव मानूई तुसो नामक झीलके किनारे बसा है।



उन्तालीसवां परिच्छेद



तीसरी राजधानी।

तिब्बतका तीसरा प्रधान नगर।

इस झीलके पास मुझे गेहूंकी खेती देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। जाड़ेकी अधिकताके कारण मैं खेतीकी अवस्थाका निर्णय न कर सका। पर मैंने सुना कि जब १६ सेर बीज बोकर ६४ सेर उत्पन्न हो तो खेती साधारण समझी जाती है और जब ९६ सेर गेहूं उत्पन्न हो तो खेती बहुत अच्छी समझी जाती है। पर लासाके पासकी धरतीमें गेहूं १२८ या १६० सेर तक पैदा होते हैं।

इससे तिब्बतकी खेतीकी दुरवस्था प्रगट होती है। यहांके लोग कृषिमें परिश्रम नहीं करते हैं और न धरतीके सुधारनेकी ही चेष्टा करते हैं। मैंने एक किसानसे पूछा कि तुम अपने खेतोंको साफ क्यों नहीं करते और उसमेंसे पत्थर इत्यादि क्यों नहीं निकालते। उत्तरमें उसने कहा—'हमारे यहां ऐसा करनेकी रीति नहीं है।'

तिब्बतमें जिन खेतोंमें काश्त होती है उनके ऊपर लगान लगानेकी एक अद्भुत रीति है। पहले ही कहा जा चुका है कि तिब्बतके लोग गणितसे नितान्त अनभिज्ञ हैं। अतएव दो याकोंके हलसे जितनी धरती जोती जा सके उसके नापसे लगान लगाया

जाता है। यदि कोई पूछे तो किसान कहेगा कि मेरे पास आधे दिनकी जोतके अथवा एक दिनकी जोतके खेत हैं। और उसीके हिसाबसे उसे लगान देना पड़ता है। वहांके बारेमें आवश्यक बातें जानकर हमलोग आगे बढ़े और प्रायः १२ मील चलकर हमलोग ठहर गये। दूसरे दिन ५ मील चलकर हमलोग नाम सोगोगा झीलके किनारे पहुंचे। इसकी परिधि प्रायः १२ मीलकी था। जल इसका बहुत ही निर्मल था। यहांसे ७॥ मील चलकर हमलोग ठहर गये। दूसरे दिनसे हमलोग तेजीके साथ अर्थात् २५ मील प्रतिदिनके हिसाबसे चलने लगे। इसका कारण यह था कि अबतक तो हमलोग पहाड़ों और जङ्गलोंमेंसे होकर जाते थे। इससे जहां कहीं होता था पशुओंको चरनेके लिये छोड़ देते थे। पर अब घनी वस्तियोंमेंसे होकर जाना पड़ता था इससे चारेकी तकलीफ होती थी। २२नवंबरको १२ मील चलकर हमलोग ब्रह्मपुत्रके किनारे पहुंचे। यहां नदीकी चौड़ाई प्रायः २०० गज थी पर गहराई अथाह थी। अतएव हमलोग घोड़ोंपर नहीं उतर सकते थे। यहांपर उतरनेके लिये हमको नाव मिली जो बिलकुल ही हिन्दुस्तानकी नावोंसे मिलती जुलती थी। इसमें ३०—४० आदमिओं और बीस घोड़ोंके लिये स्थान था। नदीके उस पार होते ही हमलोग ल्हारचे नगरकी सरहद्में पहुंच गये। यह तिब्बतका तीसरा प्रधान नगर है। अब हम कह सकते थे कि हम तिब्बतके भीतर पहुंच गये; क्योंकि तिब्बतका दूसरा प्रधान नगर शिगात्ज़े केवल पांच दिनकी राहपर था।

यह बाईस नवम्बरकी घटना है। २३ को हमलोग साथ ही उसी सरायमें रहे। २४ को मैं उन लोगोंसे बिदा होनेवाला था। इससे उनके सत्कारकी प्रशंसामें मैंने उन्हें 'होके क्यू' पढ़कर सुनाया।

दक्षिणकी ओर एक सराय थी जो चीनके लोगोंकी बनवाई हुई थी। यह सराय बहुत बड़ी है पर मुसाफिरोंके ठहरनेका कोई बन्दोबस्त नहीं है। इसमें चीनी व्यापारी और सरकारी सिपाही ठहरते हैं। रातको हमलोग इसी सरायमें ठहरे। यहां पहुंचकर हमलोगोंको सन्तोष हुआ कि मार्गमें किसी तरहका विघ्न नहीं उपस्थित हुआ और चोर डाकुओंसे भी लूटे नहीं गये। इस उपलक्ष्यमें हमारे साथियोंने रात खूब आनन्दसे बिताई।

रातभर उन्होंने शराबखोरी, आमोद और नाचगानमें बितायी। तारीख २४ नवम्बरको मैं अपने साथियोंसे विदा हुआ। विदा होते समय प्रधानने मुझे व्याकरणके पढ़ानेके बदले दस रुपये दिये और कुछ रुपये अन्य लोगोंने दिये। इनमेंसे चन्द मेरे साथ चलनेवाले थे। इससे मैं अकेला नहीं था। लामा, छोटे लामा और एक नौकर तो मेरे साथ शाक्य मुनिके मन्दिरकी ओर चले और बाकी लोग शिगात्ज़ेको रवाना हुए। लामाने मुझे चढ़नेके लिये एक घोड़ा दिया था इससे मेरी यात्रा बड़ी ही सुगम हो गई थी।

यहाँसे हमलोग सीधे दक्षिणकी ओर चले। पांच मील

चलनेपर हमें गेहूंके खेत मिले जो बहुत अच्छी अवस्थामें थे। तिब्बतमें ल्हारचे ही एक ऐसा स्थान है जहां गेहूं, जौ, मटर और मक्खन सस्ता मिल सकता है। पन्द्रह मील चलकर हम-लोग ठहर गये। दूसरे दिन प्राय: अठारह मील चलकर हम-लोगोंको शाक्य मुनिका भव्य मन्दिर दिखलाई पड़ने लगा। यह मन्दिर पत्थरकी दीवालोंसे घिरा है जिसकी लंबाई २२० गज, ऊंचाई बीस फीट और चौड़ाई छः फीट थी। इस दीवालमें भीतरसे काले रङ्गका मन्दिर जिसके ऊपर सोना मढ़ा था और बुद्धकी विजयपताका फहरा रही थी दिखलाई दे रहा था। बाहरसे मन्दिर बड़ा ही भव्य और विभूतिमान प्रतीत होता था।

चालीसवां परिच्छेद

शाक्य मंदिर।

रातको जिस सरायमें हमलोग ठहरे थे वहींसे हमलोगोंने एक पथप्रदर्शक लिया और उसीके साथ विहारके दर्शनको चले। बड़े फाटकसे भीतर घुसकर अनेक छोटे छोटे कमरोंसे होते हुए हमलोग प्रधान विहारके सामने पहुंचे। पहले तो यही प्रतीत हुआ कि यह भवन एकदम बन्द है पर ध्यानसे देखनेसे मालूम हुआ कि एक आंगनसे प्रकाश आता है। साम-नेके प्रांगणमें प्रवेशकर हमलोगोंने वज्रपाणिकी मूर्त्तियां द्वारके

दोनों तरफ खड़ी देखीं जो प्रायः २५ फीट ऊंची थीं। एकका रङ्ग नीला और दूसरेका लाल था जैसा कि बहुधा जापानी मन्दिरोंमें हुआ करता है। प्रत्येक मूर्त्तिका दाहिना पैर कुछ झुका हुआ और बायां पैर कुछ आगे बढ़ा हुआ था। दाहिना हाथ आकाशकी ओर उठा और बायां धरतीकी ओर झुका हुआ था। इन मूर्त्तियोंको देखकर मैं तिब्बतके कारीगरोंकी प्रशंसा किये बिना न रह सका। अन्य देवताओंकी भी मूर्त्तियां थीं जो तीस तीस फीट ऊंची थीं। बांयीं ओरकी दीवालपर देवताओं और साधुओंके चित्र खिंचे हुए थे जिनकी लम्बाई चौबीस फीट और चौड़ाई बीस फीट थी। इतने भारी मन्दिरमें एक अंगुल भी स्थान चित्रसे खाली न था। आगे बढ़कर एक और आंगन मिला जो ३६ फीट लम्बा और ३० फीट चौड़ा था। साधारण पुरोहित पढ़ते पढ़ाते और आहार करते हैं और बड़े लामा वहीं रहते भी हैं। यहांसे हमलोग प्रधान प्रांगणमें गये जहां बौद्ध-धर्मके देव देवियोंकी मूर्त्तिया हैं। इसमें दो दरवाजे हैं, दक्षिणके द्वारसे पुरोहित आते जाते हैं और उत्तरवालेसे दर्शक। भीतर घुसते ही सोनेकी जगमगाहटसे हमलोग चकाचौंध हो गये। वह दृश्य वर्णनातीत है। छतमें भी सोना मढ़ा हुआ था। खम्भोंपर भी सोना चढ़ा था। मूर्त्तियां जो तीन सौसे भी अधिक थीं, सोनेसे मढ़ी थीं। मध्यमें शाक्यमुनि बुद्धदेवकी मूर्त्ति थी। यह मूर्त्ति ३५ फीट ऊंची थी। यह मिट्टीकी बनी थी और ऊपर सोना चढ़ा हुआ था। इस मूर्त्तिके सामने

सात जलके पात्र, मोमबत्तियां और एक मेज अर्घ देनेके लिये रखी थी। ये सब बढ़िया सोनेकी थीं।

जिस सिलसिलेसे वे मूर्त्तियां रखी थीं उन्हें देखकर चित्त खिन्न हो जाता था और उनकी बहुमूल्यता फीकी पड़ जाती थी। बौद्धशिल्पका यहां अत्युत्तम संग्रह था पर संचय बड़ा बेसिल-सिलेवार था। इसके पीछे एक और कमरा था जो ६० फीट चौड़ा और २४० फीट लम्बा था। यहांपर प्राचीन बौद्धग्रन्थों-का संग्रह, कुछ पुस्तकें नीले कागजपर सुनहरे अक्षरोंमें लिखी थीं। कुछ संस्कृत पुस्तकें ताड़के पत्तोंपर लिखी थीं। इनमेंकी अधिकांश पुस्तकें इस मन्दिरके अधिष्ठाता शाक्य पण्डित और उनके उत्तराधिकारी पुरोहित भारतसे ले गये थे।

तिब्बती भाषाकी धर्मपुस्तकें हाथकी लिखी थीं। जिस समय हमलोग उस कमरेमेंसे निकल रहे थे और प्रधान प्रांगणको निरख रहे थे उस समय बड़ी दुर्गन्ध आई। ऐसी दुर्गन्ध तिब्बतके मन्दिरोंमें साधारण थी। मुझे बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि अभीतक मुझे यह दुर्गन्ध क्यों नहीं मालूम हुई थी। और यह कहांसे आई? बात यह थी कि प्रत्येक मन्दिरमें घीके दीपक जलते थे। पुरोहित लोग चाय और मक्खनका बचा हुआ अंश वहीं फेंक देते हैं जो पड़ा हुआ सड़ा करता है। यही दुर्गन्धका कारण था। आश्चर्य्य तो यह है कि वहांके लोग इस गन्धको उत्तम समझते हैं। इस कमरेके दोनों ओर और भी दो कमरे थे जिनमें अन्य तरहकी मूर्त्तियां थीं। उनमेंसे एक

मूर्त्ति पद्म चुंगनेकी थी जो बहुमूल्य पत्थरोंकी बनी हुई थी। पद्म चुंगने प्राचीन लामा सम्प्रदायका जन्मदाता था। कमरेकी दीवालें और फर्श भी बहुमूल्य पत्थरों और रत्नोंसे जटित थीं। प्रधान मन्दिरके बाहर और भी मकान हैं जिनमें प्रायः ५०० मनुष्य रहते हैं। दक्षिणकी ओर प्रधान गुरु चम्बा-पसांग तिनलेका भव्य निवासस्थान है।

इनसे हमारी भेंट हुई। इनकी मूर्त्ति बड़ी ही सौम्य थी। ऊपरके कमरेमें वे एक छोटे चबूतरेके ऊपर बिछी चटाईपर बैठे थे। मैंने उनसे शाक्य धर्म और अन्य लामा सम्प्रदायमें धर्मभेदके बारेमें पूछना चाहा; पर उस दिन वे बहुत व्यस्त थे। अतएव उन्होंने दूसरे दिन बुलाया। बाहर और भी अनेक विशाल भवन थे। मेरे साथियोंने बतलाया कि यह मकान शाक्य को-मारिन पोचेका है। यह नाम केवल चीनके महाराज और इस मन्दिरके बड़े पुरोहितको ही मिल सकता है। जिस मनुष्यसे ये महाशय बात कर लें वह भी तिब्बतवासियोंकी दृष्टिमें महा-पुरुष था। जब वह किसीको आशीर्वाद देते हैं तो खाली आशी-र्वाद नहीं देते। इनका यह माहात्म्य इस कारण नहीं है कि 'दिग्गज' पण्डित हैं, पर शाक्य पण्डितके वंशधर हैं जिन्होंने यह विहार बनवाया था। इसीसे इतना सम्मान है। वह विवा-हित हैं, मांस भी खाते हैं और कभी कभी मदिरा भी पीते हैं, इतना होनेपर भी केवल सर्वसाधारण ही उनका सम्मान नहीं करते वरन् दलाई लामा भी सामने जाकर तीन बार दण्डवत

प्रणाम करते हैं। यह सम्मान बहुत बड़े लामाको ही प्राप्त है।

मैं जब उनसे मिलने गया तो उनको तीन बार प्रणाम नहीं किया। इसके लिये मेरे साथियोंने लौटनेपर मेरा तिरस्कार किया। पर जब मैंने उस तरह प्रणाम न करनेका कारण बतलाया तो मेरे साथियोंने मेरे कट्टरपनपर बड़ा आश्चर्य किया। दूसरे दिन जब हमलोग धर्माचार्यसे मिलने गये तो देखा कि वे एक बच्चेसे खेल रहे हैं और ऐसा ज्ञात हुआ मानों वह उनका ही बच्चा है। मुझे यह देखकर बड़ा सन्देह हुआ कि क्या ऐसे पवित्र पुरुष भी विवाह कर सकते हैं? पर पीछे मुझे ज्ञात हुआ कि मेरी आशंका ठीक थी।

पहले तो मैंने वहां कुछ दिन रहकर अध्ययन करनेका विचार किया था पर ऐसे घृणित आचार्यके पास पढ़नेकी इच्छा न हुई। दूसरे दिन मैं वहांसे चल पड़ा। अब मेरा कोई साथी नहीं था, अतएव अपना सामान अपने ही ऊपर लादा। दो दिन चलनेपर फिर तुषार-वृष्टि होने लगी।

अतएव मुझे एक गृहस्थके मकानपर ठहर जाना पड़ा। दूसरे दिन तारीख ३० नवम्बरको सौभाग्यसे ७, ८ व्यापारी मिल गये। इन लोगोंके पास ३०-४० गधे थे। मैंने अपना सामान उन व्यापारियोंके हवाले कर दिया। वहांसे चलकर थाकू नदी पार की और सन्ध्याको एक गांवमें ठहरे। व्यापारियोंने अपने गधोंका बोझ उतारकर छोड़ दिया और वे खेतोंमें चरने चले

गये। मैंने गधोंको खेतोंमें चरते देखकर अपने साथियोंसे कहा कि ऐसा नहीं करना चाहिये नहीं तो हम पकड़े जायँगे। इसके उत्तरमें उन्होंने कहा कि 'नहीं' यह खेत प्रतिवर्ष नहीं बोये जाते हैं। इस समय इन खेतोंमें कुछ नहीं है। प्रति दूसरे वर्ष इनमें गेहूं बोया जाता है। वहांसे आगे बढ़ा तो मैंने देखा कि पहाड़ोंमें एक बड़ा भारी मन्दिर बना है। पूछनेपर मालूम हुआ कि तिब्बत सरकार एक ज्योतिषीके कथनानुसार इस मन्दिरको बनवा रही है। ज्योतिषीने कहा है कि जहांपर यह मन्दिर बन रहा है ठीक उसीके नीचे एक सोता है। यह सोता एक राक्षसका मुख है। जबतक यह मन्दिर बनकर उसका मुख बन्द नहीं कर देगा तबतक इस बातका सदा भय रहेगा कि वह फूट निकले और देशभरको डुबा दे।

इस बातका समर्थन एक पुस्तकसे भी हो गया जो चीनसे आई थी। इसको किसीने चोरी चोरी इसी मतलबसे लिखा था। मैंने उस पुस्तकको देखा। उसमें ऐसी ही डरानेवाली बातें लिखी हुई थीं। उसमें लिखा था—संसारमें पाप बहुत होने लगा है अतएव एक भीषण बाढ़ आवेगी और संसारभरकी वस्तुओंको बहा ले जायगी, अकाल पड़ेगा और लड़ाइयां होंगी। यह पुस्तक स्वर्गसे आई है इससे जो मनुष्य इसका विश्वास नहीं करेगा उसको शीघ्र ही मृत्युदण्ड भोगना होगा।

मैंने कहा यह सब झूठी बातें हैं, फिर भी मुझे कोई हानि नहीं पहुंची। यह पुस्तक चाहे किसी अच्छे ही मतलबके लिये

लिखी गई हो पर उसमें ऐसी ही व्यर्थकी बातें भरी थीं। तिब्बतवासियोंको उनके ऊपर ऐसा विश्वास था कि उसका अनुवाद कराकर चारों ओर बांटा जाता था। आश्चर्य इस बातका था कि तिब्बत सरकार इस मूर्खतामें पड़कर इतनी बड़ी रकम व्यर्थ व्यय करनेके लिये उद्यत थी। पर किया क्या जाय जब सर्वसाधारण और सरकार दोनों ही इन फकीरों और झूठे भविष्यवक्ताओंके हाथमें हैं।

इस मन्दिरसे निकलकर मैंने देखा कि चार पांच गिद्ध पासकी पहाड़ीपर बैठे हैं। पूछनेपर ज्ञात हुआ कि यहां मुर्दोंको गिद्धोंके हवाले करनेकी विचित्र प्रथा है। पर उनके पेट भरने योग्य मुर्दे इस प्रदेशमें नहीं मिलते। फल यह होता है कि उनके पेट भरनेके लिये मन्दिरसे मांस दिया जाता है। मृतशरीर गिद्धोंको कैसे खिलाये जाते हैं इसपर हम लासाके वर्णनमें लिखेंगे।

यहांसे आगे चलकर मुझे एक मन्दिर मिला। वहांपर लोग साधनके आठ नियमोंपर चलते हैं। जैसे—मौनसाधन अथवा मांसका निषेध। तिब्बतमें मांसका छोड़ना महत्वका व्रत समझा जाता है।

दूसरे दिन मैं नरतंगके मन्दिरमें पहुंचा। वहां लकड़ीके बने हुए अक्षरोंका असीम भण्डार है। इन लकड़ीके अक्षरोंसे यहां पुस्तकें छपती हैं। यही एक छापाखाना है जहां बौद्ध-धर्मकी पुस्तकें छपा करती हैं। यहां तीन सौ लामा इस

कामको निरन्तर करते रहते हैं। यहांके बड़े लामासे मैं मिला। यह मनुष्य बातचीतमें बहुत ही चतुर था। इसने मुझे बहुतसी बौद्धधर्मकी बातें बतलाईं और मेरे साथ बड़े ही सद्भावसे व्यवहार किया।

इकतालीसवां परिच्छेद।

——:०:——

शिगात्ज़े।

दूसरे दिन ५ दिसम्बरको प्रायः आठ मील चलनेपर एक प्रासादकी सुनहली छत दिखलाई पड़ी। इसके पास ही पुरोहितोंके रहनेके भी बहुतसे मकान थे और लाल रङ्गके मन्दिरके भवन थे जो इनसे ऊंचे थे। यह दृश्य बहुत ही सुन्दर था। ये भवन शिगात्ज़े नगरमें थे। यह तिब्बतका दूसरा प्रधान नगर है। वह प्रासाद तासी लुनपोंका मन्दिर अर्थात् सुमेरु गिरि है। इस मन्दिरका निर्माता गेनदुन तब था। इस मन्दिरमें ३३०० पुरोहित रहते हैं। कभी २ यह संख्या बढ़कर ५००० तक पहुंच जाती है। यद्यपि यह दूसरा प्रधान मन्दिर है तथापि प्रतिष्ठामें यह पहलेके ही बराबर है। इस मन्दिरके चारों ओर सर्वसाधारणके मकान हैं जो प्रायः २५०० हैं। नगरकी जनसंख्या ३०००० है पर यह विश्वसनीय नहीं; क्योंकि यहांके लोग अङ्कगणित नहीं जानते।

मन्दिरमें जाकर मैंने पोटुक कामसाम स्थानका पता पूछा जहां उत्तरपूर्व प्रदेशके लामा रहते हैं। क्योंकि मैं भी उसी प्रदेशका निवासी बनता था और वहीं जाकर ठहरा। मुझे वहां ठहरकर उन लोगोंसे यथासाध्य ज्ञान प्राप्त करना था।

यहांके लामाका पद प्रधानतामें द्वितीय है। यद्यपि राष्ट्रीय शक्ति उसके पास नहीं है तथापि दर्जेमें जो कि चीनके महाराजने उसे दे रखा है दलाई लामासे भी बढ़कर है। दलाई लामाके मर जानेपर जबतक दूसरा दलाई लामा न हो तबतक यही उस गद्दीपर बैठता है।

इस प्रधान लामाका नाम पनचेन रिनपोचे है। जिस समय मैं वहां पहुंचा था उस समय वह कहीं बाहर गया हुआ था इसलिये मुझसे मुलाकात न हो सकी। मैंने सुना कि उसकी अवस्था प्रायः अठारह वर्षकी है। यहां आकर मैंने अपना यही काम कर रखा था कि पण्डितों और लामाओंके पास जाऊं और उनके साथ धार्मिक परामर्श करूं।

एक दिन मैं द्वितीय लामाके गुरु तसान चेनावसे मिलने गया। इस वृद्ध पुरोहितकी अवस्था प्रायः ७४ वर्षकी थी। इसने मेरे ऊपर बड़ी दया दिखाई। ये महाशय तीन हजार लामाओंमें सबसे उत्तम वैयाकरण माने जाते थे अतएव मैंने उनसे व्याकरणके विषयमें कुछ प्रश्न किये। प्रश्न भी ऐसे किये जो मुझे अधिक ज्ञात थे जिससे मुझे ज्ञात हो जाय कि उनकी कहांतक पहुंच है। पर वे उन प्रश्नोंका उत्तर न दे सके। उन्होंने कहा-

कि 'इनका उत्तर मैं नहीं दे सकता पर लासा जाते समय एन-गनमें तुम्हें एक वैद्य मिलेगा जो बहुत अच्छा वैयाकरण है। कदाचित् वह तुम्हें सन्तुष्ट कर सके।' मैं प्रसन्नतापूर्वक वहांसे विदा हुआ। तिब्बतमें भारतवर्षसे आयुर्वेद, इञ्जीनियरिङ्ग, दर्शन, धर्म तथा गायन विद्याका सैकड़ों वर्ष पहले प्रचार किया गया था पर आज एक भी तिब्बती ऐसा नहीं है जो इसका लेशमात्र भी ज्ञान रखता हो। आजकल यहां जो लोग व्याकरण पढ़ते हैं उनकी संख्या परिमित है। अधिकांश संख्या उन्हींकी है जो सरकारी नौकरीमें, सरकारी कागजोंको लिखने पढ़नेके लिये साधारण व्याकरणकी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसलिये कोई आश्चर्यकी बात नहीं कि वहांके विद्वान बुद्धधर्ममें इतनी रुचि और तत्परता दिखलाते पर इतिहास और विज्ञानके विषयमें कुछ नहीं जानते।

कुछ दिनों वहां ठहरकर मैं चलने ही वाला था कि मालूम हुआ कि द्वितीय लामा नगरमें आते हैं। मैं भी उनकी सवारी देखनेके लिये गया। मैं पहले कह चुका हूं कि तिब्बतमें पक्की सड़कें नहीं हैं। अतएव जिस पगडण्डीसे लोग बहुत आया जाया करते थे उसीसे होकर सवारी निकली। दोनों ओर लम्बी लम्बी लकड़ियोंमें मशालें जल रही थीं। सड़कके दोनों ओर दर्शकोंके ठट्ठ लगे हुए थे। थोड़ी देर पीछे द्वितीय लामा एक सुनहरी पालकीमें बैठे हुए निकले। लामा महाशय रेशमी वस्त्र पहने हुए थे। पालकीके पीछे प्रायः तीन सौ अश्वारोही थे। उन

लोगोंके पास हथियारोंके बदले बौद्धधर्मके पूजाका सामान था। साथमें देशी बाजा और ढोल भी थे। यह दृश्य इतना आकर्षक था कि उसे देखकर मैंने अपनेको धन्य समझा।

रातको आकर मैंने अपने साथी लामाओंको बौद्धधर्मके ऊपर एक व्याख्यान सुनाया। इस व्याख्यानको सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए। उन लोगोंने कहा कि हमलोगोंकी बौद्धधर्मकी रूढ़ि शिक्षामें जरा भी तबीयत नहीं लगती क्योंकि हमलोग कुछ समझ नहीं सकते। पर आज मेरा व्याख्यान इतना सरल और मनोहर था कि बुद्ध धर्मके प्रति हमलोगोंके हृदयमें एक तरहका उत्साह उत्पन्न हो गया है। यहांके लामाओंकी इस अज्ञतापर दुःख होता है।

मुझे मालूम हुआ कि इस मन्दिरके पुरोहित धर्मके बहुत पक्के हैं। केवल मदिरापान उनमें एक दोष है। इसके बारेमें एक विचित्र कहावत प्रचलित है। एक बार लासाके दलाई लामा यहांके प्रधान लामासे मिले। दलाई लामाने कहा कि मुझे इस बातका बड़ा दुःख है कि मेरे लामा लोग तम्बाकू पीते हैं। पन-चेन रिनपोचेने इस बातपर खेद प्रगट करते हुए कहा कि मेरे यहांके लामा मदिरापान करते हैं। उन दोनोंने इस बातका निर्णय करना चाहा कि इन दोनोंमें कौन बुरा है और इनके छुड़ानेकी कोई व्यवस्था हो सकती है कि नहीं। पर उनके प्रभा-वसे भी कोई लाभ न हुआ और वे दुर्गुण अब भी प्रचलित हैं। पर मदिरापान रोकनेके लिये एक नियम बनाया जब कोई

लामा बाहरसे घूमकर आता था तो उसे पहरेपर अपने मुंहकी परीक्षा करानी पड़ती थी। यदि उसके मुखसे मदिराकी गन्ध आती थी तो तत्क्षण ही उसे दण्ड मिलता था। कभी कभी पुरोहित लोग मदिराकी बदबू छिपानेके लिये लहसुन या प्याज खा लिया करते थे। जिसकी कड़ी गन्धमें मदिराका गन्ध छिप जाया करता था।

तारीख १५ दिसम्बरको प्रायः १० बजे दिनके मैं मन्दिरसे बिदा हुआ और नगरके बीच होकर दो मील चलनेपर मुझे तसायू नदीका पुल मिला। इस पुलका नाम सम्बाशार है। इसकी लम्बाई ३६० और चौड़ाई ८ गज़ है। इस पुलकी बनावट साधारण पुलोंकी बनावटसे भिन्न है। वहांसे चार मील आगे बढ़नेपर ब्रह्मपुत्र नदी मिली। यहांसे बारह मीलपर पी नामक गांव है। रातको वहीं एक गरीब किसानके घरपर मैं ठहरा। वहांपर घासकी जड़ें ईंधनके काममें लाई जाती थीं।

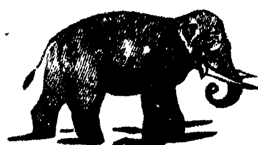
वहां मैंने एक बारह वर्षके लड़केको आगके पास बैठे हुए पढ़ते देखा। उसके हाथमें एक बांसकी कलम थी और वह खड़िया मिट्टीसे पोती हुई तख्तीपर लिख रहा था। वह बारबार अपने पिताको दिखा लाया करता और वह संशोधन कर देता था। इस आर्थिक दुरवस्थामें उनके कठिन परिश्रमको देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। पर पीछे मुझे इसका कारण मालूम हुआ। यदि वहांके किसान पढ़ना और हिसाब करना न जानें तो जमींदार उन्हें खूब लूटते हैं। पढ़ने लिखनेमें ये लोग लासावालोंसे कहीं दत्तचित्त हैं। रातको मैंने उन्हें धार्मिक शिक्षा दी।

प्रातःकाल ४ मील चलकर एक पहाड़ीपर मुझे दो मकान दिखलाई दिये। वहींपर वह प्रसिद्ध वैयाकरण रहता था। दो मीलकी पहाड़ी चढ़कर मैं उसके पास पहुंचा। ऊपर पहुंचकर मुझे मालूम हुआ कि एक मकानमें दो सौ महन्त रहते हैं और दूसरेमें ७२ महन्तिन रहती हैं। रातको मैं वहीं ठहर गया। दूसरे दिन प्रधान पुरोहितसे मुलाक़ात हुई। उसे व्याकरण और छन्दका कुछ भी ज्ञान नहीं था। उससे बुद्धधर्मपर साधारण बातचीत हुई। उसने भी उसी व्याकरणीको चर्चा की।

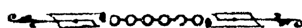
वहांसे विदा होकर मैं उस वैयाकरणके पास पहुंचा और उसे कुछ भेंट दी। साधारण आतिथ्यके बाद उन्होंने मुझसे पूछा—'तुम तिब्बती भाषा कितने दिनोंसे पढ़ रहे हो?' मैंने उत्तर दिया, तीन वर्षसे। उन्होंने चकित होकर कहा—'किसी विदेशी भाषाको सीखनेके लिये यह समय बहुत थोड़ा है।' उन्होंने व्याकरणके कुछ साधारण प्रश्न मुझसे किये जिनका मैंने सहजमें उत्तर दिया। मैंने उनसे पूछा, तिब्बती भाषामें सबसे अच्छा व्याकरण कौन है। उन्होंने उत्तर दिया कि नगुलचू-लामाका। मैं जानता था कि नगुलचूलामाका व्याकरण एकदम अधूरा है। अतएव मैंने पूछा कि सितूलामाके व्याकरणके अनुसार यहां क्यों नहीं पढ़ाई होती। पर आश्चर्यकी बात थी कि सितू-लामाका उन्होंने नाम भी नहीं सुना था। मैंने उनसे पूछा कि तिब्बती भाषामें आप कितने स्वर मानते हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि सोलह स्वर हैं। पर वास्तवमें १६ स्वर संस्कृतमें हैं

तिब्बती भाषामें केवल पांच ही हैं। मैंने कहा कि लोग कहते हैं कि इस भाषामें पांच ही स्वर हैं इस विषयमें आपका क्या मत है। यह सुनकर वह बहुत ही लज्जित हुआ और मुझसे क्षमा मांगने लगा। उनसे मिलकर मुझे विशेष सन्तोष न हुआ। उनके पाससे बिदा होकर जब मैं घरपर आया तो एक लामाने पूछा कि वैद्यराजसे किस विषयपर बातचीत हुई थी। मैंने उत्तर दिया कि व्याकरणपर। यह सुनकर उसने कहा 'हां ठीक है वे व्याकरणके दिग्गज पण्डित हैं। यहां तसानमें उनके बराबरका दूसरा नहीं है। इस दो बारके मिलनेसे मनुष्यको कुछ लाभ नहीं हो सकता। यदि आपको व्याकरणसे प्रेम हो तो कमसे कम २-३ वर्ष उनके पास पढ़िये। मैं बहुत समयसे उनसे पढ़ रहा हूं पर अभीतक कुछ भी नहीं आया है।'

लामाकी ये बातें सुनकर मुझे हंसी आ गई जो उसे बुरी लगी। दूसरे दिन तारीख १८ दिसम्बरको फिर ब्रह्मपुत्रके किनारे पहुंचे। नदी पारकर मैं आगे बढ़ा और पम्बारि-ओं-चेके मन्दिरके नजदीक पहुंचा होऊंगा कि सहसा किसीने मुझे पुकारकर रोका।



बयालीसवां परिच्छेद



अद्भुत शक्ति

पीछे फिरकर मैंने देखा कि दो बलवान मनुष्य हाथमें तिब्बती तलवार लिये खड़े हैं। मैंने उनसे पूछा कि क्या चाहते हो। दोनोंमेंसे छोटेने एक पत्थर उठाकर मुझसे धमका कर कहा चुप रहो! भागे नहीं कि मारे गये। यह सुनकर मैं वहीं पत्थर-पर बैठ गया। उन्होंने आगे बढ़कर मेरी लाठी पकड़ ली और पूछा तुम्हारे पास क्या है और तुम कहांसे आते हो?

'मैं यात्री हूं तिसेसे आ रहा हूं।'

'तुम्हारे पास कुछ रुपया है?'

'हां कुछ है पर आपके लेनेभर नहीं है क्योंकि जंगथंगमें मैं लूटा जा चुका हूं।'

'तुम्हारी पीठपर क्या है?'

'कुछ पुस्तकें और भोजनका सामान।'

'खोलकर दिखलाओ उसमें रुपया भी हो सकता है।'

'नहीं, रुपया मेरी जेबमें है। गठरीमें नहीं है। मैं पुरोहित हूं अतएव झूठ कदापि न बोलूंगा। तुमको जो कुछ चाहिये ले लो।'

मैं उनको रुपया देना ही चाहता था कि तीन अश्वारोही हमारी ओर आते हुए दिखलाई पड़े। उनको देखते ही डाकू

लोग लाठी इत्यादि सब छोड़कर भागे। इस तरह मैं बच गया।

अश्वारोहियोंने आकर मुझसे पूछा—'ये लोग कौन थे?' मैंने कहा 'ये मुझसे मेरा रुपया और सामान लेना चाहते थे।' यह सुनकर उन्होंने कहा 'सामनेवाले मन्दिरमें चले जाओ वहां तुम निष्कण्टक रह सकोगे।'

मैं उन्हें धन्यवाद देकर मन्दिरकी ओर चला और अश्वारोही पश्चिम चले गये। रातको वहाँ ठहरकर मैं आगे बढ़ा। और निश्यामोहोता ग्राममें पहुंचा। इसी भांति यात्रा करते करते तारीख १२ जनवरीको मैं एक और मन्दिरमें पहुंचा। यहांका पण्डा बड़ा ही गंवार था। उसने बिना किसी विचारके मुझसे कहा कि मैं उसके भाग्यकी बात बतलाऊं। क्योंकि मुझमें सर्वसाधारणकी अपेक्षा उसे कुछ विशेषता मालूम हुई। मैंने यह विद्या कभी नहीं पढ़ी थी पर इन मूढ़ विश्वासी तिब्बतवासियों-को मैं फिर शिक्षा देना चाहता था। इससे मैंने कहा मुझे तुम्हारे लिये बहुत दुःख है। तुमको आमदनी काफ़ी होती है। पर दूस-रोंके कारण तुम्हें सदा कष्ट झेलना पड़ता है। तुम्हारा भविष्य अन्धकारमय है। यह बिलकुल ठीक निकला। उसको मुझपर विश्वास हो गया। मेरी दैवीशक्ति देखकर उसे यहांतक आश्चर्य हुआ कि वह अपने पड़ोसी एक अमीरके घर गया और सब हाल जाकर कह सुनाया। उसी दिन सन्ध्याको एक सुन्दरी जो कि उस अमीरकी स्त्री थी अपने बच्चेको लेकर आई और रेखा देख-

नेके लिये प्रार्थना करने लगी। मैं इस बातसे तनिक भी न घबराया। मैंने उसको रोगी और निर्बल देखकर समझ लिया कि यह बालक बहुत दिनोंतक जीवित नहीं रह सकता। अतएव मैंने उससे ऐसा कह दिया। उसने मुझसे पूछा कि क्या इसके बचानेका कोई उपाय है ? मैंने कहा कि हां देवाराधनासे सम्भव है। संयोगवश दूसरे ही दिन वह बच्चा सख्त बीमार हो गया। उसके घरके लोगोंको मेरी दैवीशक्तिपर पूरा विश्वास हो गया। उन्होंने तुरन्त मुझे बुला भेजा और मुझसे देवाराधनाके लिये प्रार्थना की। मैं वहां गया, पर धर्मपुस्तक मेरे पास नहीं थी अतएव एक आदमी रांग लांगबाके पास उसका लानेके लिये भेजा गया। इस बीचमें मैं ध्यानस्थ होकर बैठ गया। थोड़ी देरमें घरमेंसे रोनेका शब्द सुनाई पड़ा। मेरी समझमें कुछ न आया। पर मैंने वहांसे उठकर जाना उचित न समझा। थोड़ी देर पीछे गृहस्वामिनी मेरे पास आई और बोली कि वह बच्चा मर गया। तुम उसको चलकर बचाओ। मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि मेरी बात क्योंकर सच्ची हो गई। भीतर जाकर देखा तो बच्चा बिलकुल अचेत और ठंढा हो गया था।

मैंने नाड़ी देखी। वह मन्द मन्द चल रही थी। मैंने कुछ पुस्तकें वैद्यककी पढ़ी थीं। मुझे मालूम हुआ कि इसके मस्तिष्कपर कोई दबाव पड़ा है जिससे यह अचेत हो गया है। मैंने ठण्ढा पानी मांगा और एक कपड़ा भिगोकर उसके सिरपर रख दिया और मैं उसके हाथ पैर और गरदन धीरे धीरे मलने लगा।

थोड़ी देरमें बच्चेको होश आई। आप समझ सकते हैं उस बच्चेकी दादीको कितना हर्ष हुआ होगा जब कि उसने देखा बच्चा मरकर फिर जीवित हो उठा है। मैंने उससे चुपचाप बैठे रहनेको और उसके शरीरको धीरे धीरे मलते रहनेको कहा। मेरी इस दैवीशक्तिसे वहांपर मेरा बड़ा सम्मान हुआ और उन लोगोंने मुझे वहां ठहर कर धर्मपुस्तक पढ़नेके लिये कहा। वहां मैं जाड़ेके दिनोंमें दो महीने ठहरा। धर्मपुस्तकके पढ़नेके अतिरिक्त मैं अपनी किताबोंको भी पढ़ा करता था। जो समय बाकी बचता था उसमें बाहर सैरको निकल जाया करता था। मेरी हवाखोरीमें बहुतसे बच्चे मेरे साथ हो जाया करते थे। उनमें एक वह भी था जिसको मैंने बचाया था। मुझे बच्चोंसे बहुत प्रेम था और मैं उनको इस भाँति रखता था मानों वह मेरे ही लड़के हों।

तेतालीसवां परिच्छेद



तिब्बतके रीतिरिवाज

तिब्बतके लोग बड़े ही गन्दे होते हैं। जिस घरमें मैं टिका हुआ था उसमें प्रायः बीस नौकर थे। वे लोग नित्य मेरे लिये चाय लाया करते थे। वे प्यालेको कभी न धोते थे। यदि मैं उनसे कहता कि प्याला गन्दा है तो वे उत्तर देते-कलही रातको आपने

ही तो चाय पी थी ? वे लोग प्यालेको मैला तभी समझते हैं जब उसमें कोई नीचे दर्जेका मनुष्य चाय पी लेता है। पर स्वयं अपने अथवा बराबर दर्जेवालोंके प्रयुक्त पात्रको वे जूठा नहीं मानते चाहे वह कितना ही गन्दा क्यों न हो।

यदि मैं नौकरसे प्याला धो लानेके लिये कहता तो वह उसे अपने आस्तीनसे पोंछ देता, आस्तीन इसी तरहके प्रयोगसे एकदम काला हो गया था। वे इस तरह साफकर उसमें चाय डाल देते थे।

ऐसे गन्दे प्यालेमें कोई वस्तु पीना असम्भव था। पर मैं सफाईकी तरफ इतना जोर इस कारण नहीं दे सकता था कि सम्भव था मेरा भेद खुल जाय। बर्तनोंका न धोना इतना गंदा नहीं है जितना शौच आदिके बाद गुप्तस्थानका न धोना है। यह हालत बड़े बड़े लामाओंसे लेकर छोटे छोटे चरवाहों तककी है। मुझे शौचके समय जलका प्रयोग करते देखकर बड़े और छोटे सबोंने मेरा परिहास किया। इसके लिये मैं लाचार था।

उनके यही काम गन्दे नहीं होते थे कि वे अपने शरीरको नहीं धोते। कितनोंने तो पैदाइशके बादसे कभी भी शरीरको नहीं धोया है। आपको इस बातसे आश्चर्य होगा। देहातके लोग और अधिकांश शहरके लोग भी इस बातका अभिमान करते हैं कि उन्होंने अपना बदन कभी साफ नहीं किया है। यदि कोई अपना हाथ भी धोये तो उसका परिहास किया जाता है। अतएव शरीरभरमें हथेली और आंखों हीमें मैल नहीं दिखाई देती

अन्यथा सम्पूर्ण शरीर मैलसे काला होजाता है। शहरके रहनेवाले सभ्य पुरुष और पुरोहित लोग कभी कभी अपने मुख और हाथोंको धो डालते हैं। शेष शरीर ज्यों का त्यों काला बना रहता है। उनकी गरदन और पीठ इत्यादि वैसी ही काली हो जाती हैं जैसी अफ्रिकाके हबशियोंकी हैं। पर उनके हाथ उजले क्यों रहते हैं, इसका कारण यह है कि आटा गूंधते समय हाथोंका मैल आटेमें चला जाता है। अतएव उनके भोजनमें आटा और मैल मिली रहती है। पर ऐसी घृणित व्यवस्था वे क्यों रखते हैं। उन लोगोंमें मिथ्या विश्वास है कि यदि वे अपने शरीरको धोवें तो उनका सौभाग्य भी धुल जावेगा। पर यह बात मध्य-तिब्बतमें नहीं है।

सगाई होनेके समय केवल बहूका मुख देखने होसे काम नहीं चलता है। यह भी देखना पड़ता है कि उसके शरीरपर कितनी मैल जमी है। यदि उसकी आंखोंके अतिरिक्त अन्य सब अंग गन्दे हैं और उसका वस्त्र मैल और मक्खनके कारण चमक रहे हैं तो वह बड़ी भाग्यशाली बहू है अन्यथा वह बड़ी अभागिन है; क्योंकि सफाई करनेमें उसका भाग्य धुल गया। लड़कियां भी इसी मूढ़ विश्वासको मानती हैं। वे भी ऐसे ही स्वामीको चाहती हैं जो अधिकसे अधिक मैल शरीरपर चढ़ाये हो। मैं जानता हूं कि मेरी बातपर लोग सहसा विश्वास न करेंगे और जबतक मैं अपनी आंखों न देखा था तबतक मेरी भी यही दशा थी। नीचे दर्जेके लोग कपड़े नहीं बदलते। नाक

कपड़ों ही में साफ करते हैं। कपड़ोंके ऊपर मैल और मक्खन जमकर वह चमड़ेकी भांति कड़ा हो जाता है। पर ऊंचे दर्जेके मनुष्य और पुरोहित हाथ मुंह भी धोते हैं और कपड़े भी साफ रखते हैं।

इन घृणित रीतियोंके कारण किसीके यहांका निमन्त्रण स्वीकार करते समय मुझे बड़ा क्लेश होता था। तत्संगमें रह-कर मैंने ऐसी आदतें डालनेकी चेष्टा की थी पर फिर भी अपने चित्तको पूर्णतया वैसा नहीं बना सका था। इन सब बातोंके होते हुए भी वहांका प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर मुग्ध हो जाता था।

इन लोगोंकी गिनती भी विचित्र प्रकारकी होती है। कौन दिन कब पड़ेगा यह कोई नहीं बता सकता। सुभीतेके अनुसार एक दिन घटाया या बढ़ाया जा सकता है। जब कभी उनकी गणनामें फर्क पड़ता है तो कई आदमी एकत्र होकर निर्णय कर लेते हैं। नये वर्षका समारोह सरकारी वर्षके अनुसार होता है।

नये वर्षके दिन लाल रंगके रेशमका एक कपड़ा बनाया जाता है और वह भूने हुए आटेकी ढेरमें गाड़ दिया जाता है उसके ऊपर सूखे अंगूर इत्यादि रख दिये जाते हैं। गृहस्वामी पहले कुछ फलोंको उठाता है और तीन बेर घुमकर उनको खा लेता है। उसके बाद उसकी स्त्री, मेहमान: और नौकर चाकर अनुकरण करते हैं। फिर चाय आती है और खाना पीना होता है पर बधाई

देनेकी प्रथा यहां नहीं है। ये लोग सूखा मांस, कच्चा माँस और उबाला मांस खाते हैं। पर भुना मांस इनके यहां निषिद्ध है।

तिब्बतमें मछली बहुत होती है पर तिब्बतके लोग मछली नहीं खाते। ये याक, बकरी और भेड़का मांस खाते हैं। मछलीका खाना पाप है। इनके यहां सूअर भी खाया जाता है पर वही लोग खाते हैं जिनका चीनियोंसे, सम्पर्क है।

प्रातः कृत्यके बाद वे पुनः दस बजे चाय, शराब, रोटी और फल खाते हैं। दिनके दो बजे बढ़िया खाना जिसमें अण्डे भी होते हैं, खाते हैं। यहां एक प्रकारकी मूली होती है उसे ये लोग बड़े प्रेमसे खाते हैं। दार्जिलिंगमें मैंने देखा कि यहांके लोग रोटी तिब्बतसे ही मंगाकर खाते हैं। हिन्दुस्तानमें वैसी रोटी तैयार हो सकती है। पर वे लोग तिब्बतकी बनी हुई रोटीको अधिक चाहते हैं। इस तरह नया वर्ष आया। वहां रहकर तिब्बतियोंके रीतिरिवाजके बारेमें मुझे बड़ी जानकारी हो गई।

ता: १४ मार्चको मैंने वहांसे बिदा होनेका संकल्प किया क्योंकि गर्मीके दिन आगये थे।

चलते समय मुझे कुछ रुपये और पुरोहितोंका जामा मिला। यह लाल रंगकी ऊनका बना हुआ था। उन्होंने मेरा बोरा ढोनेके लिये एक नौकर दे दिया। वे सवारीके लिये घोड़ा न दे सके क्योंकि सभी घोड़े बाहर चले गये थे।

वहांसे प्रायः दस मील चलनेपर याकचू नदीके किनारे चीसमगांवमें पहुंचा। रातको वहीं रहा। वहांसे चलकर थोड़ी दूरपर मुझे एक श्वेत रंगका मकान दिखाई पड़ा। यह न तो मन्दिरही मालूम होता था और न पुरोहितोंके रहनेका स्थान ही। पूछनेपर मालूम हुआ कि वह ओलोंके रोकनेका मन्दिर है।

मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ और अपने साथीकी बातका विश्वास भी नहीं हुआ। पर लासा पहुंचकर मुझे मालूम हुआ कि मेरा साथी सत्य कहता था। गर्मियोंमें गेहूंकी फसल तैयार होती है और इन्हीं दिनोंमें ओले गिरते हैं जिससे कि खेती नष्ट हो जाती है और तिब्बतवासी भूखों मरने लगते हैं। अतएव इन ओलोंसे वे बहुत भयभीत रहते हैं। यही कारण है कि ओले रोकनेकी उन्होंने एक विचित्र रीति निकाली है।

तिब्बतके लोगोंको लामाओंके ऊपर ऐसा विश्वास है कि वह जो कुछ कह देते हैं वही उनके लिये पत्थरपर लकीर हो जाती है। लामाओंने उन्हें यह समझा रखा है कि आठ राक्षस हैं जो मनुष्यको हानि पहुंचाते हैं। यही राक्षस ऊपर स्वर्गमें जाड़ेके दिनोंमें जब कि बरफ बहुत गिरती है उसे इकट्ठा करके ओले बनाकर रख छोड़ते हैं और गर्मियोंमें जब फसल पकती है वे उन ओलोंको फसलके ऊपर फेंकते हैं। इसके लिये लामाओंको एकान्तमें मिट्टीके ओले बनाने पड़ते हैं और उसके ऊपर मन्त्र पढ़ा जाता है और जब आवश्यकता होती है तब उनको हथियारोंकी भांति काममें लाते हैं। इस कामके

लिये चुने हुए पवित्र लामा ही नियुक्त होते हैं और एक गांवमें प्रायः एक लामा इस कामके लिये होता है।

यह काम लामालोग जाड़ेके दिनोंमें करते हैं। यहां केवल दो ही ऋतु होती हैं अर्थात् जाड़ा और गर्मी। यद्यपि यहांकी पुस्तकोंमें चार ऋतुओंका वर्णन है। गर्मी १५ मार्चसे १५ सितम्बरतक रहती है। वर्षका शेष भाग जाड़ा माना जाता है।

मार्च अप्रैलमें खेतीका काम आरम्भ हो जाता है और ओलोंके बचानेवाले लामा उसी समय पहाड़ीके ऊपर उस मन्दिरमें चले जाते हैं। यह मन्दिर सबसे ऊंची पहाड़ीपर बना हुआ है क्योंकि यहांसे यह बात सुभीतेसे जानी जा सकती है कि ओलेवाले बादल किधरसे आ रहे हैं।

जबतक फसल छोटी रहती है तबतक तो समय मिलनेपर लामा अपने घर आते जाते रहते हैं, पर जूनमें फसल बढ़ जाती है तब उसकी रक्षाकी जरूरत पड़ती है और फिर वह मन्दिर नहीं छोड़ सकता। वह अपना अधिक समय पूजा, वन्दना और प्रार्थनामें बिताता है। ओले भी उसी समय अधिक गिरते हैं जब फसल तैयारीपर आती है। इस समय लामाको उसकी रक्षाके लिये अपनी सारी शक्ति लगा देनी पड़ती है।

जिस समय ओले गिरने आरम्भ होते हैं उस समय पुरोहित अपनी माला लेकर मन्दिरसे बाहर निकलता है और ठीक उसी तरह शरीर संचालन करता है जिस तरह कोई अपने बैरीसे युद्ध करता हो। यदि ऐसा करनेसे ओले बन्द हो गये

तो ठीक है ,नहीं तो वह और भी अधिक क्रोधित होकर अपने जादूके गुल्ले फेंक २ कर मारता है। मानों वह बादलोंको उन गुल्लोंसे चूर्ण कर देगा। यदि इसपर भी ओले न बन्द हुए तो वह अपने कपड़े फाड़ फाड़कर आकाशमें फेंकता है। ओलोंको रोकनेमें वह एकदम पागल हो जाता है। यदि ऐसा करनेसे ओले बन्द हो गये तो गांवके लोग आते हैं और उसके इस परिश्रमसे बहुत प्रसन्न होते हैं और उसको यथाशक्ति भेंट देते हैं। और यदि ओलोंने खेतीका सत्यानाश कर दिया और लामाका परिश्रम व्यर्थ गया तो लामाको जुर्माना किया जाता है। इस सेवाके लिये उनको दक्षिणा भी बहुत मिला करती है जिसके कारण वे लोग मितव्ययिताको पास नहीं फटकने देते। पर साथ ही साथ यदि ओलोंने हानि पहुंचाई तो अर्थदण्ड तो देना ही पड़ता है उसके अतिरिक्त कभी कभी कोड़े भी खाने पड़ते हैं।

इसके अतिरिक्त यहां एक दूसरी प्रथा प्रचलित है। कौन जिले किसके अधिकारमें रहेंगे इसका निर्णय करना लामाके हाथमें रहता है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक वर्षकी फसलका वही जिम्मेदार है। इस तरह वह निर्णयका काम भी करता है जिसके लिये उसे पर्याप्त वेतन मिलता है। इस तरह ये लोग बड़े धनी प्रतीत होते होंगे पर तिब्बतके उस सम्प्रदायके लामा दरिद्र रहते हैं। क्योंकि "मुफ्त माल दिल बेरहम" वाली कहावत ये पूर्णतः चरितार्थ करते हैं पर इनकी प्रतिष्ठा अधिक है।

इस मन्दिरसे सात मील पूर्व चलकर मैं यासे नगरमें पहुंचा। उसके पूर्व एक पहाड़ है उससे याकचू नामक एक नदी निकलती है जो ब्रह्मपुत्रकी सहायक है। इससे दो मीलपर एक झील है जो मेरी समझमें संसारभरमें सबसे बड़ी है। इसका नाम यामदोसो है। पर मांगोलिक लोग इसका नाम पालती बतलाते हैं। पालती एक नगरका नाम है जो इस झीलके निकट है। इसकी परिधि १८० मील है। इसके बीचमें एक टापू है जिसके ऊपर पहाड़ है। लोग कहते हैं कि टापू अन्य झीलोंमें हैं, पर यह टापू सबसे बड़ा है। पर वास्तवमें यह टापू नहीं क्योंकि यह दो तरफसे ग्रामभूमिसे मिला है।

यहांका दृश्य वर्णनातीत है। हिमालयकी तुंग चोटियां कतार बांधकर दक्षिणपूर्वसे आरंभ होकर दक्षिणपश्चिमकी ओर गई हैं जिससे झीलके सौन्दर्यने अनुपम रूप धारण कर लिया है। जब कभी तूफान उठता है तो जलकी तरंगें आकर पहाड़ोंसे टकराती हैं। इससे जो गर्जन पैदा होती है उसकी मधुरता शब्दोंमें नहीं कही जा सकती। पहाड़पर खड़ा होकर जो दृश्य मैंने देखा वह आज भी आंखोंके सामने नाच रहा है।

यहांसे ४ मील पूर्व चलकर मैं पालती नगर पहुंचा। इस नगरमें एक महल है। उस झीलमें इस महलका प्रतिबिम्ब बहुत ही मनोहर दिखाई देता है।

इसी महलके नीचे मैं ठहर गया, दूसरे दिन प्रातःकाल ४ बजे ही चल पड़ा।: मार्गका दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

पर रास्ता इतना ही बीहड़ था कि कभी कभी तो ठोकर खाकर गिर पड़ता था और कभी बरफमें धंस जाता था।

यहांसे आगे चलनेपर मुझे एक झील मिली जिसका पानी बहुत विषैला है। इसके विषैले होनेका एक अद्भुत किस्सा वहां मैंने सुना। प्रायः बीस वर्ष हुए एक हिन्दुस्तानी शरत्चन्द्र दास अंग्रेज़ोंका भेजा हुआ यहां आया था। उसने ऐसा मन्त्र पढ़ा कि इस सोतेका पानी रक्तवर्ण हो गया। पीछे एक लामाने आकर इस पानीका रङ्ग तो बदल दिया पर विषको दूर न कर सका।

वास्तवमें इस झीलके पास ऐसी वस्तुएं हैं जिनके कारण इसका पानी विषैला हो सकता है। यहीं ठहरकर हमलोगोंने भोजन किया। यहां हमको एक नेपाली यात्री मिला। यह बड़ा ही हंसोड़ था। इसका और मेरा साथ हो गया।

चवालीसवां परिच्छेद



लासाके पथपर।

इस नेपाली सिपाहीसे मुझे राहमें बहुत आराम मिला। लासामें नेपालका जो वज़ीर रहता है उसीके सिपाहियोंमेंसे यह एक था। उसको अपनी माताके दर्शनोंके प्रेमने उसको नेपाल जानेके लिये विवश किया था पर शिगात्जेमें आकर उसको

अपनी प्रणयिनीकी यादने विवश किया जिसे वह लासा छोड़ आया था। अन्तमें प्रणयिनीका प्रेम ही बलवान रहा और वह सिपाही फिर लासाको लौट गया। उससे मैंने पूछा कि नेपाल सरकारके कितने सिपाही लासामें रहते हैं। उसने कहा कि यहां कुछ ही दिनसे नेपाली सिपाही रहने लगे हैं।

प्रायः दस वर्ष हुए यहां नेपालके पालपो जातिके प्रायः ३०० व्यापारी रहा करते थे। वे लोग बड़े ही उद्योगी थे और ऊनी सूती कपड़े, रेशम, मूंगा, हीरा, जवाहिर और सूखे मेवोंका व्यापार करते थे। दैवसंयोगसे पालपोके एक व्यापारीने लासाकी एक स्त्रीको एक मूंगा चुरानेका अभियोग लगाकर पकड़ा। पर जब मूंगा नहीं मिला तो वह व्यापारी ऐसा कुपित हुआ कि उसके रोनेपर भी वह उसे पकड़कर अपने घरके भीतर ले गया। जब छुटकारा पाकर वह घरके बाहर निकली तो उसने सारी घटना लोगोंसे कह सुनाई। सेरा विहारके लड़ाकू पुरोहितोंको यह सुनकर बहुत क्रोध आया और जब उनको पता लग गया कि यह बात ठीक है तो अपने अफसरके पास गये और सब हाल कह सुनाया। यद्यपि उस समय वहांके बहुतसे आदमी बाहर थे फिर भी प्रायः १००० जमा हो गये। जब लासामें पालपो व्यापारियोंने सुना कि सेरासे एक हजार मनुष्य तलवारों और लोहेके छड़ोंसे सजकर आ रहे हैं तब सब व्यापारी जो कि प्रायः तीन सौ थे भाग गये। सेराके आदमी जब लासा पहुंचे और खाली घर पाये तो उन घरोंको

खूब लूटा। दूसरे दिन जब व्यापारी लोग अपने अपने घरोंको लौटकर आये तो उन्होंने देखा कि जो कुछ उनके पास था वह सब ले गये हैं। उनकी हानि प्रायः दो लाख तीस हज़ार येन-की हुई थी।

यह झगड़ा बहुत बढ़ गया और उसके निपटारेमें पाँच वर्ष लगे। व्यापारियोंकी हानिको तिब्बत सरकारने अपने पाससे पूरा किया और तबसे नेपाल सरकारके पच्चीस सिपाही लासामें रहते हैं।

इस झगड़ेको निपटानेमें नेपालकी ओरसे प्रधान जीवबहा-दुर थे जिनके विषयमें मैं पहले लिख चुका हूं। वह पहले नेपाल सरकारके अधीन एक मुंशी थे पर अब वे तिब्बतमें नेपालके वज़ीर होकर रहते हैं।

थोड़ी दूर आगे बढ़कर गनपाला पहाड़ीके नीचे पहुंचा। जिसकी ऊंचाई प्रायः २॥ मील थी। उसके ऊपर पहुंचकर मैंने पहली बार लासाको देखा। एक मैदानमें एक पहाड़ीके ऊपर दलाई लामाके रहनेका मकान था। इसका नाम तिसेपोताला है। इस मकानके दूसरी ओर लासा नगर बसा हुआ है। पहा-ड़ीसे उतरकर मैं ठहर गया क्योंकि बहुत थक गया था।

तारीख १७ मार्चको मैं फिर प्रायः २॥ मील नीचे उतरा और ब्रह्मपुत्रके किनारे पहुंचा। छः मील किनारे २ पैदल चल-कर चकसमपर ब्रह्मपुत्रको नावमें पार किया। इस स्थानपर पहले नावका पुल था जिसका ध्वंसावशेष अबतक विद्यमान

है। वहांकी नावें भारतीय नावोंकी तरह चौखूंटी होती हैं पर केवल जाड़ेमें ही इनका प्रयोग हो सकता है। गर्मीके लिये ये बिलकुल बेकार हैं। गर्मीमें ये लोग याकके चमड़ोंकी नावसे काम लेते हैं। तीन याकके चमड़ोंको एकमें मिलाकर ये लोग सी लेते हैं और जलके लिये उपयोगी बनानेके लिये वे इसे रङ्ग देते हैं। चमड़ेकी नाव पानीको तेजीसे सोखती है इससे ५ या ६ घण्टे से अधिक वह काममें नहीं आ सकती, पर धूपमें सुखाकर यह फिर चलाई जाती है। यह इतनी हलकी होती है कि तिब्बती मल्लाह इसे कन्धे पर उठाकर बहावकी तरफ मीलोंतक ले जाते हैं और वहां असबाब लादकर बहावमें छोड़ देते हैं।

यहाँसे तीन मील नदीके रेतमें चलकर वामडो झीलपर पहुंचा। यह झील ११५०० फीटकी ऊंचाई पर है। अभीतक मैंने बहुत दिनोंसे कोई हराभरा स्थान नहीं देखा था। यह स्थान बड़ा ही रमणीक प्रतीत हुआ। यद्यपि मेरे सामानके लिये मेरे पास कुली था फिर भी मेरे पैर ऐसे घायल हो गये थे कि अपने लिये मुझे एक घोड़ा किरायेपर लेना पड़ा। यहांसे आगे बढ़कर मैं चूशर नगर पहुंचा।

मार्गमें मुझे इससे खराब एक भी नगर न मिला। यहांके निवासी बड़े ही निठुर, बड़े डाकू और चोर हैं। ये लोग यात्रियोंका सामान चुरा ले जाते हैं और बहुधा पकड़े भी नहीं जाते। तिब्बतमें प्रसिद्ध है कि चूशरके बराबर चोर और बदमाश कोई नगर नहीं है। मैं अपने सामानके लिये सदैव ही सतर्क रहा

करता था। जब इतने चोर थे और इतने यात्री वहां आते जाते थे तो पाठक समझते होंगे कि अवश्य ही वहां धनिक भी बहुत होंगे। पर मुझे पूछनेपर ज्ञात हुआ कि इस नगरसे बढ़कर गरीब और कहीं नहीं हैं। मैं इतना थक गया था कि पैदल चलना कठिन था। वहांसे मैंने एक गधा किरायेपर लिया और जङ्ग नगर पहुंचकर गधेको छोड़ दिया। यहां ठहरा हुआ मैं सोच रहा था कि लासा किस भांति पहुंचा जाय कि सहसा मुझे एक दल मनुष्योंका मिल गया जो कि लासाको राजकर देनेके लिये जा रहे थे। उनके पास भी किरायेके घोड़े थे। मैंने भी किराये-का घोड़ा ले लिया और उनके साथ ही साथ नाग नगर पहुंचा। वहां रातभर ठहरकर अगले दिन नेथंग नगर पहुंचा।

——:o:——

पैतालीसवां परिच्छेद।



लासा।

नेथंगमें मोक्षेश्वरी जननीका एक मन्दिर है। तिब्बतमें प्रायः इस देवीकी बहुत पूजा होती है। कहते हैं कि यह मन्दिर भारत-वर्षके एक योगी अतीशने बनवाया था। उसने वहां अपना सम्प्रदाय भी चलाया। मैं उस मन्दिरमें २१ देवियोंकी पूजा करने गया। वहांसे चलकर सिंगजोंला नगरमें पहुंचा और

वहीं रात काटी। दूसरे दिन तारीख २१ मार्चको मुझे लासा पहुंचना था।

मैंने एक घोड़ा किराये किया और अपने साथीको अपना सामान सहेज दिया और मैं इधर उधरकी सैर करने निकला। थोड़ी दूर आगे बढ़कर मैंने एक विशाल विहार देखा जो देखनेमें एक गांवसा बसा हुआ मालूम होता था। दलाई लामाके अधीन लामाके समीप इससे बड़ा विहार कोई नहीं है। इसमें ७७०० लामा प्राय: रहा करते हैं। कभी २ बढ़कर ६००० तक हो जाते हैं। गर्मीके दिनोंमें बहुतसे लामा दौरेपर निकल जाते हैं। तब भी वहां ६००० से कम नहीं रहते हैं। यह तिब्बतका एक विद्यापीठ है। इसके अतिरिक्त दो और भी विद्यालय हैं जिनमें एक सेरामें और एक गनदेनमें है।

सेरा विद्यालयमें ५५०० छात्र और गनदेनके विद्यालयमें ३३०० छात्र रहते हैं। यह गणना तो नाममात्रके लिये है। आवश्यकतानुसार यह संख्या न्यूनाधिक भी हो जाती है। सड़कके किनारे इस विहारके नीचे एक स्थान है जहां दलाई लामाके भोजनके लिये याक और भेड़ बकरे मारे जाते हैं। यहांके आदमी बड़े अन्धविश्वासी हैं। दलाई लामाके लिये नित्य सात भेड़ मारी जाती हैं। उनके ऊन और चमड़े इत्यादिको वे लोग प्रसादकी भांति ले जाकर रखते हैं। दलाई लामा भेड़के अतिरिक्त याक और बकरी इत्यादिका मांस भी खाते हैं। यह मांस भी वहींसे आता है।

एक बड़े आश्चर्यकी बात है कि जब दलाई लामा लासामें रहते हैं तो उनके लिये भेड़ बकरीका मांस इतनी दूरसे क्यों आता है। इसका यह कारण है कि लासा मन्दिरके बहुत समीप है। वह यह नहीं जानना चाहते कि हमारे लिये पशुओंकी हत्या भी हुई है। वह उनकी हत्याकी आज्ञाका दायित्व अपने ऊपर नहीं लेना चाहते हैं। यह मांस उनके पास इस भांति पहुंचा है मानों उन्होंने बाजारसे मोल लिया है अतएव वह उसके पापके भागी नहीं हैं।

यहांसे पांच मील और आगे बढ़नेपर मैं उस पहाड़ीके नीचे पहुंच गया जिसपर दलाई लामाका महल बना हुआ है। इसीको मैंने गेनपालाकी पहाड़ीपरसे देखा था।

यह महल ऐसा सुन्दर है कि इसका चित्र भी बड़ा ही चित्ताकर्षक है। यहांके विषयमें एक विचित्र कथा प्रसिद्ध है कि एक मनुष्य कुछ गधोंपर घीके कुप्पे लादे हुए लासा होकर जा रहा था कि उसने इस महलको देखा। देखते ही वह ऐसा चकित हुआ कि उसने इसको देवोंका भवन समझा। आश्चर्यसे मुग्ध होकर उसे अपने गधोंकी सुध भी भूल गई। कुछ देर पीछे जब उसे चेत हुआ तो देखा कि गधे कहींके कहीं चले गये हैं। खोजनेपर नौ गधे तो उसे मिले, पर एक नहीं मिला। किसीने उससे पूछा—"क्या खोज रहा है।" उसने कहा—"मैं दस गधे लेकर आया था परन्तु मैं महल देखनेमें लग गया था उसी समय कोई मेरा एक गधा चुरा ले गया।" परन्तु वास्तवमें बात यह

थी कि जिस गधेके ऊपर वह चढ़ा हुआ था उसको वह गिनना भूल गया था। वस्तुतः उस महलके सौन्दर्यने ही उसे इतना मोह लिया था। मैं यहांसे प्रायः आधा मील चलकर एक पुलपर पहुंचा जो १२० फीट लम्बा और १५ फीट चौड़ा था। इसके ऊपर चीनी ढङ्गकी छत भी बनी हुई थी। पुलसे पार होकर और थोड़ी दूर चलकर मैं लासाके पश्चिमी फाटकपर पहुंचा। यह फाटक भी चीनी फैशनका बना था। फाटक पार करके मैं प्रायः २५० गज ऊंचाईपर पहुंचकर एक मैदानमें पहुंच गया। यहींपर बुद्धदेवका मन्दिर था। राजा स्रगतसानगेम्बोने राजकुमारी अनचिङ्गसे विवाह किया था। वह चीनके थंगके कुटुम्बके तासङ्ग राजाकी बेटी थी। उसने अपने पितासे "तिब्बतमें बौद्धधर्म फैलानेका" वचन ले लिया था और साथ ही अपने साथ बुद्धदेवकी एक मूर्त्ति जो कि हालहीमें भारतवर्षसे लाई गई थी अपने साथ तिब्बतमें लानेकी आज्ञा मांगी। राजपुत्रीकी प्रार्थना मान ली गई। कन्याही उस मूर्त्तिको वहां लाई थी। तबसे ही वह मूर्त्ति यहांपर स्थापित है।

तभीसे तिब्बतमें बौद्धधर्म फैला। वहां नये प्रकारके बौद्धधर्मके फैलानेकी आवश्यकता प्रतीत हुई और धर्मप्रचारके लिये नयी लिपि बनानेकी आवश्यकता हुई। अतएव १६ पण्डित भारतवर्षको बौद्धधर्म सीखने और नयी २ वर्णमाला निकालनेके लिये भेजे गये। तिब्बती भाषाके अक्षर बनाये गये और बुद्धदेवके उपदेशोंका तिब्बती भाषामें उलथा किया गया।

१३००० वर्षतक इसी भांति होता रहा। यह मूर्त्ति चीनमें न बनी थी। यह भारतवर्षसे बौद्ध शिल्पी विश्वकर्माके हाथकी बनी हुई थी। वह चीनसे होकर तिब्बतमें आई थी।

जिस समय मैं अपने इष्ट देवताके सामने पहुंचा मैंने भगवानकी ही कृपासे अपनेको यहांतक सकुशल पहुंचा हुआ जाना। मेरी आंखोंसे प्रेमके आंसू झर पड़े। मैंने इस कृपाके लिये मूर्त्तिके आगे दण्डवत् किया। सारी कथाहीसे मेरी बुद्धके प्रति गाढ़ भक्तिका पता लगता है। अन्य बौद्ध देवताओंके प्रति भी मैं उदासीन था तोभी भगवान बुद्धमें मेरी सबसे अधिक भक्ति थी। मैंने अपनेको भगवानके ही अर्पण कर दिया था। मैं उसके धर्मपर न्योछावर हो चुका था।

लासामें बहुतसी सरायें हैं परन्तु वे आदर योग्य नहीं हैं। अतएव अपने मित्र तिब्बतके मन्त्रीके पुत्रके घरही ठहरनेका विचार किया। इस नवयुवकसे मेरा परिचय दार्जिलिङ्गमें हो गया था। उसने लासामें अपने घर ठहरानेके लिये मुझे वचन भी दे दिया था। मैं उसको बहुत चाहता था। मैंने उसके लिये बहुत कुछ किया था। मैं प्रत्युपकार नहीं चाहता था। मैं उससे मिलना ही चाहता था। मैं उसके घरपर गया। उसका मकान बन्देशाके नामसे पुकारा जाता था। यह एक अच्छा लम्बा चौड़ा भवन था। मैं उसके घरमें घुसा और उसका पता लगाया। परन्तु मुझे मालूम हुआ कि उसको पागल हुए प्रायः दो वर्ष हुए हैं और उसको पागलपनेकी तरङ्ग नियत

समयपर आया करती है। मैंने सुना कि वह अपने भाईके यहां नैमसेलिङ्ग ग्राममें रहता है। वहां भी मुझे यही सम्वाद मिला। वहां मैं दो घण्टे ठहरा परन्तु वह न लौटा। अन्तमें वहांसे सेराविहार लौट आया। मैंने विचार कर लिया था कि यहां रहकर विहारमें प्रविष्ट हो जानेका भी प्रबन्ध हो जायगा। वहांसे एक कुलीपर सामान रखवाकर मैं सेराविहारको चल दिया। रीबंग विहारके समान यह विहार भी एक पहाड़ी ढलावपर बना हुआ था और दूरसे एक ग्रामसा जान पड़ता था। मैं चार बजे विहारमें पहुंचा। पिटक खामत्सानके शयनागारमें उपस्थित हुआ। यहां तो मैं तिब्बती ही समझा गया। परन्तु अभीतक मैं चीनी बना हुआ था अब मैं तिब्बती बन गया। क्योंकि मैं महीनों नहीं नहाया था, न हजामत ही बनाई थी अतएव तिब्बतवासी बननेमें कोई कठिनता न हुई। हां, यह बात तो अवश्य थी कि तिब्बत निवासियोंकी परीक्षा बड़ी कठिन होती है। परन्तु मैं उन लोगोंसे तिब्बती भाषा भी कुछ कम नहीं जानता था। आखिर मैं तिब्बती समझा गया। इसी भेषमें मैं वहां रहने लगा। उस समय सेराविहारका प्रधान लाठोया नामक एक वृद्ध पुरुष थे। यह बहुत ही सज्जन और दयालु थे। उन्होंने तुरन्त ही मुझे विहारमें ले लिया। आगे चलनेके पूर्व मैं इस विद्यालयका संक्षेपमें वर्णन करना चाहता हूं।

सेरा विद्यालयके तीन विभाग हैं। पहले विभागमें ३८००, दूसरेमें २५०० और तीसरेमें ५०० पुरोहित रहते हैं। पहले दो

विभागोंमें १८ शयनगृह हैं जिनको खामत्सान कहते हैं। छोटेसे छोटे खामत्सानमें ५० मनुष्योंके रहनेके लिये स्थान है। बड़ेसे बड़ेमें एक हज़ारसे भी ऊपर लोग रह सकते हैं। जिसमें मैं ठहरा था उसमें २०० पुरोहित थे। प्रत्येक खामत्सा-नका अलग २ प्रबन्ध है। सब खामत्सान मिलाकर सेरा कह-लाता है। इसके बड़े २ विभाग यहीं हैं। यहां अधिक विभाग प्रविभागोंका मैं वर्णन नहीं करता।

छियालीसवां परिच्छेद



सेराके योद्धा लामा

तिब्बतमें दो तरहके लामा हैं। एक तो विद्वान और दूसरे योद्धा। विद्वानोंको लोबनेर और योद्धाओंको थावतो कहते हैं। विद्वान लोग सेरामें पढ़ने आते हैं। उनको तीनसे आठ येन तक प्रति मास खर्च दिया जाता है। जो नियमानुसार पूरा कोर्स लेते हैं उनको ८ येन प्रतिमास मिलता है। उन लोगोंका विद्या-भ्यास प्रायः बीस वर्षमें पूरा होता है। यह लोग बौद्धधर्मके तर्क और दर्शनशास्त्रका अभ्यास करते हैं। यहां जो लोग पढ़ने आते हैं वे पहले ही पर्याप्त पढ़कर यहां आते हैं। अतएव यहांके

स्नातक ३०-३५ वर्षके होकर निकलते हैं। कोई २ अच्छे चतुर विद्यार्थी अट्ठाईस वर्षकी वयसमेंही आचार्यकी पदवी पा जाते हैं।

योद्धा पुरोहित प्रायः अपनी शिक्षाके लिये रुपया खर्च नहीं कर सकते। अतएव वे याकका गोबर और कीचू नदीसे लकड़ी ढोकर लाते हैं और अपनी मजूरी कमाकर अपना पेट पालते हैं। इस भांति वे लामा विद्यार्थियोंकी सेवा करते हैं। वेही नित्यप्रति सारंगी, वीणा, वेणु आदि भांति भांतिके बाजे बजाकर देवताकी पूजा करते हैं। ये काम ऐसे नहीं हैं जिनको कोई घृणाकी दृष्टिसे देखे। इन कामोंके अतिरिक्त और भी काम है जो योद्धा लामाओंको करने पड़ते हैं। वे नित्यप्रति एक पहाड़ी-पर जाकर एक निशानेपर गुलेलोंसे या पत्थर फेंककर अपने बलकी परीक्षा करते हैं। वे कूदते हैं, दौड़ते हैं, पहाड़ीपर चढ़ते हैं, पहाड़ीपरसे नीचे कूदते हैं और समय २ पर अच्छे गीतोंको खूब उच्च स्वरसे गाते हैं, क्योंकि उन्हें अपने स्वरका बड़ा अभिमान होता है। वे गदायुद्धका अभ्यास भी करते हैं। जब मन्दिरमें उनको कोई विशेष काम नहीं रहता है तो तीन २ और पांच २ इकट्ठे होकर बाहर अभ्यास करनेके लिये निकल जाते हैं। पाठकोंको आश्चर्य होगा कि तिब्बतमें इन लामाओंसे क्या काम लिया जाता है परन्तु वास्तवमें ये लोग बड़े उपयोगमें आते हैं। इनका एक काम तो यही है कि जब उच्च कोटिके लामा उत्तरी देशमें यात्राके लिये निकलते हैं तो इन्हीं लोगोंको अपनी रखवालीके लिये साथ रखते हैं। ये बड़े साहसी होते हैं। इन्हें

विवाहका बन्धन न होनेसे मरनेसे भय नहीं लगता। ये लोग कभी पीछे पैर नहीं देते, ऐसे निर्भय और विकट होते है कि तिब्बतमें उनका बहुत ही भय है। यद्यपि ये लोग आपसमें बहुत कम झगड़ते हैं पर ये बहुत युद्धप्रिय होते हैं। ये लोग छोटीसे छोटी बातपर भी मरनेको तत्पर रहते हैं। धनके लिये ये लोग बहुत कम लड़ते हैं परन्तु सुन्दर युवा लड़कोंके पीछे बहुधा लड़ाइयां हो जाया करती हैं। किसी लड़केको चुरानेसे तो अवश्य ही द्वन्द्व युद्ध खड़ा हो जाता है।

यदि किसी पुरोहितको कोई द्वन्द्वयुद्धके लिये बुलावे तो वह कभी टाल नहीं सकता। यदि लामा महाशय न लड़ना चाहें तो मन्दिरमें उनका निर्वाह होना कठिन है वरन् वह वहांसे निकाल दिया जाता है। इन योद्धा लामाओंके नेता होते हैं जो कि अपने ही कानून काममें लाया करते हैं। कभी २ ये लोग ऐसे काम भी कर बैठते हैं जो कि कभी भी पुरोहितोंके या अन्योंके भी करने योग्य नहीं हैं। नियमोंको यथोचितरूपसे पालन करनेके लिये अन्य अधिकारियोंको नियुक्तकर जब कोई विशेष घटना हो जाती है तब सभी नायक अपने योद्धाओंके सहित वहां उपस्थित होते हैं। जब किसी द्वन्द्वयुद्धका समय निर्णय हो जाता है, जो प्रायः सन्ध्याको हुआ करता है, तो एक नियत स्थानपर दोनों योद्धा अपनी २ तलवारें लेकर उपस्थित होते हैं। मध्यस्थ लोग उनकी युद्धरीतिका न्याय किया करते हैं। यदि दोनोंमेंसे कोई पुरुष भीरुता अथवा दुष्टता करे तो मध्यस्थ टूट

जाते हैं। ऐसी अवस्थामें उनमेंसे एक दूसरेको मार डालता है। यदि दोनों ही धर्मानुसार लड़ते हैं और घायल हो जाते हैं तो मध्यस्थ दोनोंको अलग कर देता है और आपसमें मेल करा देता है। लासा ले जाकर उन दोनोंको साथ बैठाकर चांग नामक शराब पिलाकर मित्रता करा देता है। यद्यपि सेरा विहारमें मादक द्रव्यका पीना मना है परन्तु फिर भी बहुतसे लामा लासा जाकर शराब पीकर बहुतसे असभ्यताके व्यवहार किया करते हैं।

वहां किसीको किसी भांति यह मालूम होगया कि मैं डाकृरी भी जानता हूं अतएव लामाओंमें मेरा बड़ा आदर होने लगा। जब कभी वे अपनी युद्धशिक्षाका अभ्यास करते हुए हाथ पैरमें चोट खा जाते थे तो मेरे पास आते और मेरी दवासे तुरन्त ही अच्छे हो जाते थे। मैं समझता हूं कि औषधसे जितनी शीघ्रतासे अधसभ्य जातियोंको लाभ होता है वैसा सभ्य जाति-योंको नहीं होता है। चोट खाये हुए हाथ पैर मेरी औषधसे ऐसी जल्दी अच्छे हो जाते थे कि वे लोग मेरा वहां रहना अनिवार्य समझने लगे। मैं उनकी चिकित्सा बिना फीसके ही करता था वरन् औषध भी बिना मूल्य ही वितरण करता था। यदि कोई लामा कुछ लेनेके लिये आग्रह करे तो मैं उसकी भेंट भी ले लिया करता था। ऐसा करनेसे वे लोग मुझसे प्रेम करने लगे। अपने यहांके वैद्योंके यहां उनके घाव बहुत देरमें और बहुत कठिनतासे अच्छे होते थे, तिसपर भी फीस लगा करती

थी। परन्तु मैं बिना कुछ लिये चिकित्सा कर देता था। इससे मेरा बड़ा आदर होने लगा। सभी लामा मुझे मिलते समय प्रणाम किये बिना न रहते थे।

इसके अतिरिक्त वे लोग सब तरहसे मेरी रक्षा करते थे। वे अपने कर्त्तव्यों और वचनोंके बड़े सच्चे होते हैं। वे देखनेमें कुछ रूखे स्वभावके मालूम होते हैं तो भी वे शिक्षित लामाओंकी अपेक्षा अधिक सच्चे होते हैं। शिक्षित और उच्च कोटिके लामा पहले देखनेमें सरल और कृपालु मालूम होते हैं, परन्तु भीतरसे वे बड़े धोखेबाज और अपना मतलब साधनेमें लगे रहते हैं। योद्धा लामा प्रायः छली, कपटी और दिलके बुरे नहीं होते। मैंने उनमें और भी बहुतसे अवगुण देखे हैं। लामाओंसे व्यवहार करते हुए मुझे कई बार बड़ा कष्ट हुआ है। वे अपने उन्हीं नरम गरम चोलेकी आड़में कभी कभी बहुत नीचता और छलका व्यवहार करते हैं। जब मैं सेरामें पहुंचा तो हजामत कराये मुझे दस महीने हो चुके थे। वहां एक लामासे जब सिर और दाढ़ीको मुड़वाना चाहा तो उसने दाढ़ी मूंडनेके बारेमें बहुत आश्चर्यसे कहा कि क्या आप ऐसी सुन्दर दाढ़ीको भी मुड़वाना चाहते हैं। उसने समझा मैं हंसी कर रहा हूं। यहां लामा दाढ़ीको बड़ा मूल्यवान समझते हैं। उनके दाढ़ी ही नहीं होती। खामपालके निवासियोंके अतिरिक्त शेष तिब्बतभरमें मैंने कहीं दाढ़ी नहीं देखी। वे लोग दाढ़ी बढ़ानेके बड़े उत्सुक रहा करते हैं। जब उन लोगोंको मालूम हुआ कि मैं डाक्टर हूं, तो बहुतसे लोग मेरे

पास आकर दाढ़ी बढ़ानेकी औषध मांगा करते थे। वे समझते थे कि 'मैंने भी किसी औषधका प्रयोग करके ही अपनी दाढ़ी ऐसी सुन्दर और इतनी बड़ी की है।'

मुझको यहां रहकर विद्याध्ययन करना था अतएव मैंने एक टोपी, एक जोड़ा जूता और एक माला अन्य लामाओंकी भांति मोल ले ली थी। चोला मुझको पहलेसे ही मिल गया था अतएव वह मुझको मोल नहीं लेना पड़ा।

जिस विभागमें पढ़ना चाहता था उस विभागके प्रधान अध्यक्ष जीतासिंगके पास मैं परीक्षा देनेके लिये गया। मुझे कोई परीक्षा नहीं देनी पड़ी। मैंने तिब्बतकी बढ़िया चाय उनको भेंट की। उन्होंने पहले मुझसे पूछा कि 'तुम कहांसे आये हो? तुम मंगोलियन मालूम होते हो।' जब मैंने स्पष्ट इनकार किया तो उन्होंने बहुतसे भौगोलिक प्रश्न किये। वे वहांके भूगोलसे बहुत अच्छा परिचित थे। मैंने भी उन्हें ठीक २ उत्तर दिया क्योंकि मैं भी पैदल ही घूमा था। उन प्रश्नोंका उत्तर देना मेरे लिये क्या कठिन था। अब मैं विद्यालयमें भरती होनेके योग्य हो गया। अतएव मैंने जिह्वा निकालकर तिब्बतकी रीतिके अनुसार प्रणाम किया। उसी समय अध्यक्षने मेरे सिरपर दायां हाथ रखा और दो फीट लम्बा एक लाल कपड़ेका टुकड़ा मेरे गलेमें लपेट दिया। विद्यालयमें भर्ती होनेका यही चिह्न था। यही कपड़ा गलेमें पहनकर मान्य लामाओंके सामने जाना होता था। मुझे मुख्य लामाके पास जाना था जो सब नियमोंका निरी-

क्षण किया करता था। उससे भी आज्ञा लेनी थी। मुझे मुख्याध्यक्षसे आज्ञा मिल ही चुकी थी अतः इस निरीक्षक लामाकी आज्ञा भी प्राप्त करनी कठिन न थी। इस प्रकार मैं बड़े लामाके पास जाकर विद्यालयमें पढ़नेका अधिकारी हो गया और अब मैं न्यायशास्त्रकी प्रवेशिका परीक्षाकी तय्यारी करने लगा।

एक अध्यापकके पास मैं पढ़ने लगा परन्तु मैंने देखा कि जो जो शास्त्र मैं पढ़ना चाहता हूं उनके लिये एक अध्यापकसे काम नहीं चलेगा। अतएव मैंने एक और अध्यापकसे भी पढ़नेका प्रबन्ध किया। मेरे आश्रमके सामनेवाले आश्रममें एक हृष्ट पुष्ट लामा रहता था। वह बहुत विद्वान मालूम होता था। एक दिन उसने मुझको अपने कमरेमें बुलाया और पूछा, क्या तुम रूतोकी मण्डलीके साथ तो जंगथंगसे शाक्यमन्दिरमें नहीं आये थे? उस मण्डलीमें एक भद्रपुरुष था जिसने मुझसे बड़ी सज्जनताका व्यवहार किया था। यह वही आदमी था जिसने मुझसे भोजनके लिये पूछा और मैंने मना कर दिया था इसीसे मुझे जंगथंगसे आया हुआ समझ गया था। पर अब मेरा भेद खुल गया।

लामाने मुझसे पूछा कि मैंने सुना है कि तुम चीनी हो, चीनसे आये हो और चीनी भाषा बहुत अच्छी लिखते हो। जब मैंने मान लिया कि मैं तिब्बतनिवासी नहीं हूं तो उसने बहुत भयभीत होकर शोकसे कहा कि तब तो तुमको पातेखामत्साम जाना चाहिये था। इससे हमारे आश्रमको हानि पहुंचनेकी बहुत? सम्भावना है। तुमने हमलोगोंके नीतिके विरुद्ध काम क्यों किया।

इसके उत्तरमें मैंने कहा कि राहमें डाकुओंने मुझे लूट लिया था जैसा कि आपने सुना होगा अतएव चीनी बनकर पातेखामत्-सानमें भर्ती नहीं हो सकता था; क्योंकि वहां प्रति वर्ष कुछ रुपया फीस देनी पड़ती है। यह सब भेद मैंने उसे कहकर उससे वहीं रहने देनेके लिये प्रार्थना की। क्योंकि मैं और कहीं जा नहीं सकता था। ईश्वरकी कृपासे वह बहुत सज्जन पुरुष था। उसने कहा कि मेरे शिष्यने तुम्हारे लूटनेके विषयमें कहा है। मुझे बड़ा शोक है। अच्छा, मैं तो कुछ नहीं कहता, देखो और कोई सन्देहकी बात न खड़ी हो। तबसे मैं निर्विघ्न होकर अपने पढ़नेमें लगा। जंगथंगके लिये मैं भी तय्यार हुआ। मैंने खूब स्वाध्याय किया। दैवयोगसे मेरे कन्धोंमें सूजन आगई जिसकी चिकित्साके लिये मुझको फ़स्द खुलवानेकी आवश्यकता हुई। मैं नगरमें एक दवा बेचनेवालेके पाससे दवा ले आया और आप ही फ़स्द खोलकर औषध प्रयोगसे मैं शीघ्र ही अच्छा हो गया।



सैंतालीसवां परिच्छेद



तिब्बत और उत्तरी चीन।

उस समय चीन और * बक्सरकी लड़ाई हो रही थी। सातवीं अप्रैलको चीनके महाराजके कल्याणके लिये एक विशेष प्रार्थनोत्सवका आयोजन हुआ। यह उत्सव केवल सेरा हीमें नहीं हुआ था वरन् तिब्बतके इन्हीं मन्दिरोंमें यह प्रार्थनोत्सव मनाया गया। सेराकी इस प्रार्थनाको मैं भी देखने गया था। जिस विहारमें मैं था उसमें गुप्तरूपसे सात दिनतक लामा लोग गुप्त पूजा करते थे। ये लोग चीनके विजय-लाभके लिये ही गुप्त उपचार करते थे। पूछनेपर मुझको मालूम हुआ कि पेकिङ्गपर विदेशी लोगोंने आक्रमण कर रखा है और चीनके हारनेकी संभावना है। वे कहते थे कि अब इस पूजासे विजय-कार्यमें कोई लाभ नहीं, तोभी वे चीननरेशकी स्वस्थताके लिये उद्योग कर रहे हैं। मैं पूरा २ हाल जाननेके लिये बड़ा उत्सुक हो रहा था परन्तु विहारवाले मुझसे कुछ भी न कहते थे। सेरामें प्रार्थनाका

---

* चीनसे विदेशियोंको निकालकर बाहर कर देनेके लिये एक गुप्त समितिका संगठन हुआ था। वह बक्सरके नामसे प्रसिद्ध थी। उसको यूरोपके सभी देशोंने मिलकर १९०० में दबा दिया था।

काम तसोचन हालमें आरम्भ हुआ। यह कार्य बाजारवालोंके जलूससे आरम्भ हुआ। पहले वंशीवादक आये फिर ढोल और लम्बी बांसुरीवाले और उनके बाद धूपपात्री और पंशाखा लिये हुए भी प्रविष्ट हुए। उनके पीछे तिब्बतके रूपवान दस लड़के बौद्धधर्मकी सजीली पोशाकें पहने हाथोंमें धूपपात्रियाँ लिये हुए आये। उनके पीछे पचास भालाबरदार सड़कके दोनों ओर थे। प्रत्येक भाला चीनी भालेकी तरह डण्डेपर अस्थिररूपसे फली लगाकर बनाया गया था। फलीकी मूठके नीचे सुनहरी चीनी रेशमकी सोलह २ फीट पट्टियां लटक रही थीं। पूरा भाला २५ फीट लम्बा था। भालोंके हथ्थे सोने या गिल्टके थे। एक इतना भारी था कि मुश्किलसे दो जवानोंके लिये भी उठा लेना कठिन था। इसके बाद ६ फीट ऊंची तिकोनी मेजें थीं जिनपर नाना प्रकारकी मक्खनकी बनी हुई बहुतसी मूर्त्तियाँ रखी हुई थीं। इसके पीछे और मेजें थीं जो चार फीट ऊंची थीं। इसके ऊपर लाल रंगकी मूर्त्तियां थीं जो पके आटे, मक्खन और शहद-से बनाई गई थीं। इन मेजोंको सात या आठ आदमी उठाये हुए थे। इनके पीछे प्रायः दो सौ पुरोहित अच्छे २ झिलमिल करते हुए कपड़े पहने हुए निकले। इनमेंसे सौके हाथमें ढोल और सौके हाथमें खरतालें थीं। इनके पीछे प्रधान लामा जिसे गुप्त प्रार्थना करनी थी अपने उच्चपदके अनुसार भव्य पोशाक पहने हुए आया। उसके पीछे उसके शिष्य थे। यह दृश्य बड़ा ही हृदय-ग्राही था। लासाके पुरवासी इस जलूसको देखनेके लिये आये

थे। वह सब जलूस विशाल भवनसे निकलकर बाहर मैदानमें आया और एक झोपड़ीके सामने आकर खड़ा हो गया। वहां प्रधान लामाने मेजपर रखी मूर्त्तिके सामने स्तुति गाई और दो सौ लामाओंने धर्मपुस्तकोंसे गाथायें पढ़ीं और ढोल और खरतालें बजाईं। एक लामा खरताल लेकर लामाओंकी कतारोंके साथ २ घूमने लगा। वह सब वाद्य-वादकोंका नायक प्रतीत होता था। क्योंकि वह सबकी गतियोंके साथ उनको ताल देता था। उसके चरणनिपात अन्य नर्त्तकोंकी अपेक्षा बहुत विषम थे। शीघ्रही मुख्य लामाने अपने भालेको गिरा देनेका संकेत किया जिसपर भालेवालोंने अपने भाले झोपड़ीपर फेंके और आटेकी बनी तिकोनी मूर्त्तियां भी उसी झोपड़ीपर फेंक दी गईं। तब उस झोपड़ीमें आग लगा दी गई। उसके जलते हुए सब लोग करतलध्वनि करने लगे और सब 'ल्हा किया लो! ल्हा किया लो!' का शब्द पुकारने लगे। इस शब्दका अर्थ है 'ईश्वरकी जय हो।' इस प्रकार यह उत्सव समाप्त हुआ। दूसरे दिन विहारके सब लामाओंको लासामें बुलाया गया। यहां उन लोगोंसे दलाई लामाके कल्याणके लिये प्रायः एक महीने तक प्रार्थना कराई गई। मैं भी लासा गया था और एक पालपो व्यापारीके घर ठहरा।

लासामें मुझको बक्सरकी लड़ाईका बहुत कुछ हाल मालूम हुआ। यह सम्वाद या तो चीनसे आये हुए व्यापारी लाये होंगे अथवा नेपाल या भारतवर्षके व्यापारियोंने दिया होगा। परन्तु

यह सब उपहास योग्य था। इनमेंसे कोई भी विश्वसनीय नहीं था। कोई कहता था कि चीनके राजा गद्दीसे उतर गये हैं, उन्होंने अपने बेटेको गद्दीपर बैठा दिया है। कोई कहता था कि चीनका राजा हार गया है और सीनानमें रहता है। कोई कहता था कि ये सब दुःख उस दुष्ट वजीरके कारण हुए हैं जिसने राजाका एक विलायती रमणीसे विवाह कर दिया है। कोई कहता था कि जापान एक देश है, वहाँकी फ़ौजें बड़ी बलवान हैं। उन्होंने पेकिङ्ग ले लिया है। कोई कहता था कि चीनमें अकाल पड़ा है इससे वहांके मनुष्य मर गये हैं।

यद्यपि यह बातें नितान्त निर्मूल थीं तथापि जापानका नाम सुनकर मुझे हर्ष हुआ। किसी व्यापारीने मुझसे कहा कि जापान बड़ा बलवान है। ज्योंही उसने पेकिङ्गपर अधिकार किया त्योंही उसने जहाज भर भरकर चावल, गेहूं और कपड़े चीनमें पहुंचा दिये और हजारों चीनियोंको अकालसे बचा लिया। किसी किसीने यह भी कहा कि जापान बड़ा चतुर है वह किसीके साथ मित्रता नहीं करता। अंग्रेजोंकी तरह उसने भूमिपर अपना कब्जा करनेके लिये यह सब नीति चली है। इसी प्रकार अफवाहोंपर अफवाह सुनी जाने लगी। पर किसीका निश्चय नहीं था। इतना अवश्य पता लगता था कि चीनसे किसी देशका युद्ध छिड़ा हुआ है। इसी समयमें पालपोका व्यापारी जिसके यहां मैं ठहरा हुआ था नेपाल जानेके लिये तैयार हुआ। मैंने उसको दो पत्र डाकमें डालनेको दिये जिनमें एक जापानी

मित्रके नाम था। यह मनुष्य बहुत ईमानदार था। इसने मेरे दोनों पत्र ठीक ठिकानेपर पहुंचा दिये। यहाँ तिब्बतमें इस कामके लिये बड़ी चतुरताकी आवश्यकता है। यहाँके मनुष्यों-पर विश्वास करना बड़ा ही कठिन है।

चोएन-जो अर्थात् दलाई लामाके कल्याणार्थ पूजा मैंने कभी न देखी थी। शाक्यमन्दिरमें यह पूजा हुई। मुख्य लामाओंके अतिरिक्त और किसीको भीतर जानेका अधिकार नहीं था। प्राय: बीस हजार लामा इस पूजामें लगे थे और दर्शक भी प्राय: २५ हजार थे। सवेरे पांच बजे वंशी बजाकर मन्दिरमें लामा लोग बुलाये गये। ये लोग धर्मपुस्तककी गाथायें उच्चारण करते थे। आधे २ घण्टेके पीछे इनको मक्खनमिश्रित चाय दी जाती थी। इन बीस हज़ार लामाओंमें पूजा करनेवाले बहुत थोड़े थे। कुछ तो योद्धा पुरोहित थे और कुछ आवारा लोग थे जो केवल पेट ही भरनेके प्रयोजनसे आये थे। मन्त्रोच्चारणके बदले या तो वे अश्लील गीत गाते, आपसमें झगड़ा फसाद करते या अश्लील हास्य परिहास करते थे।

इस गिरोहमें कुछ लामा ऐसे थे जो शान्तिरक्षाका काम कर रहे थे। उनको चायसे कुछ काम नहीं था। यदि किसीको लड़ते देखते तो बिना पूछताछ किये ही वे उन्हें बेत मार देते थे। उनसे लामा बहुत डरते थे। वे लोग ऐसी निर्दयतासे मारते थे कि कभी २ पिटनेवाले मर भी जाते थे। परन्तु इसमें उनका कोई अपराध नहीं माना जाता था। यदि दङ्गा करनेवाला मर

गया तो उसकी लाशको गिद्धोंके लिये बाहर फेंक दिया जाता था।

योद्धा लामा सवेरेको दो घण्टे अभ्यास करते हैं। इस समयमें उनको रोटी, चाय, मांस और भात मन्दिरकी ओरसे मिलता है। उन्हें एक थाली भात और ३ प्याले चाय दिया जाता है। जब वे अपने वासस्थानको लौटते हैं तो अमीर लोग उनको भिक्षा देते हैं। तिब्बतके अमीर और जमीन्दार लोग बहुत ही उदार होते हैं। वे इन लामाओंको ८ या ९ हजार रुपयेतक दान देते हैं। इस कामके लिये मङ्गोलिया तकसे भी बहुत रुपया आता है।

एक बार इन पुरोहितोंमें एक रूसका गुप्तचर भी मङ्गोलियासे आया था। वह डाक्टर था। उसको इस विषयकी सान-नी-किनकेकी पदवी प्राप्त थी। वह बहुत दान देता था। उसकी ख्याति भी इससे बहुत हुई थी। बहुतसे व्यापारी अपने व्यापार-की दृष्टिसे बहुत दान करते हैं। यह डाक्टर इतनेसे ही सन्तुष्ट था कि दानसे पुण्य बढ़ता है। इस प्रकार पुरोहितोंको बहुत आय हो जाती थी। सालभरके लिये उत्सवोंके अवसर ही पुरोहितोंके बड़े लाभके होते थे। परन्तु श्रद्धाशून्य मनसे दान देनेसे उसके आत्माकी कुछ भी उन्नति न हुई। इन लामाओंके लिये यही समय वर्षभरमें सबसे बढ़कर आनन्ददायक है। समृद्धि ही दुराचारको बढ़ाती है। इन दिनोंमें वे लोग बड़े झगड़ालू हो जाते हैं। यदि उनका आपसमें झगड़ा हो जावे तो

वे लासामें द्वन्द्वयुद्ध नहीं करते थे। अपने आश्रमोंमें जाकर ही यह झगड़ा करते हैं। लासामें तो मजिस्ट्रेट लामाके कठोर शासनमें रहते हैं। इससे लासामें वे लोग लड़ने झगड़नेका साहस न करते थे।

जब महापूजा समाप्त हुई तो चार मनुष्य देवराजका रूप बनाकर और आठ मनुष्य राक्षसोंका रूप बनाकर चले। एक २ दलके साथ तीन सौसे पांच सौतक लामा थे। धार्मिक समारोहमें जो गाम्भीर्य होना चाहिये वह गाम्भीर्य इन लोगोंके पास भी फटकने नहीं पाया। यह लोग आपसमें युद्धक्रीड़ा करते हुए यहांतक कि दर्शकोंसे भी परिहास करते जाते हैं। चिर काल होनेसे इसके सम्बन्धमें विशेष छोटी २ बातें मुझे स्मरण भी नहीं रहीं और उनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक भी नहीं।

अड़तालीसवां परिच्छेद



सेरा कालिजमें प्रवेश।

मैंने तिब्बतके सब त्यौहार नहीं देख पाये क्योंकि मुझको अपनी प्रवेशिका परीक्षा इन त्यौहारोंसे पहले ही पास कर लेनी चाहिये थी। अतएव मैं समय पाते ही अपने अवकाशका समय भी तैयारी करनेमें लगाता था। अधिक परिश्रम

करनेसे मैं बीमार हो गया परन्तु औषधसे फिर शीघ्र ही ठीक हो गया। इससे मेरे साथियोंको बड़ा आश्चर्य हुआ और वे लोग पूछने लगे कि क्या तुमने डाक्टरी पढ़ी है। मुझको भी कह देना पड़ा कि हाँ मैंने कुछ पुस्तकें देखी हैं। इस कारण मुझको उन लोगोंकी भी चिकित्सा करनी पड़ती थी।

त्यौहार समाप्त हो जानेपर तारीख १८ अप्रैलको मैं चालीस और विद्यार्थियोंके साथ परीक्षाके लिये गया। मुझे लिखित और मौखिक दोनों ही परीक्षायें देनी पड़ीं।

इनके अतिरिक्त धर्मपुस्तकोंके स्वाध्याय और पठनकी भी परीक्षा हुई। यद्यपि यह परीक्षा कुछ कठिन न मालूम हुई परन्तु फिर भी चालीसमेंसे केवल सात ही पास हुए। पास होनेवालोंमें कुछ योद्धा लामा भी थे। ऋण लेकर इन्होंने कठिन परिश्रम करके इस परीक्षाको पास किया था। यह लोग विद्याध्ययनके अतिरिक्त कुछ और भी चाहते थे। इन विद्यार्थियोंको यहां १ से १५ येनतक छात्रवृत्तियां मिला करती हैं और उसीके पानेके लिये ये लोग परीक्षा देकर पास हुए थे। मैं पहले दर्जेमें भर्ती किया गया। इसमें १५–२० वर्षसे लगाकर ४०-५० वर्षतकके छात्र थे। यहां तिब्बती ढङ्गका बौद्धतर्कशास्त्र पढ़ाया जाता था। गुरु-शिष्य पढ़ते पढ़ाते समय ऐसे उत्साहसे बातचीत करते हैं मानों परस्पर विवाद करते हों। पढ़नेकी रीति भी नयी ही है। प्रश्नोत्तर भी नये ही ढङ्गसे होते हैं। तार्किक एक विशेष मुद्रामें बैठा रहता है। प्रश्नकर्त्ता बायें हाथमें

माला लिये हुए सामने खड़ा हुआ प्रश्न करता है। प्रश्न करते समय वह आगे बढ़ता है। आगे बढ़कर दाहिना हाथ उठाकर बायें हाथपर बलपूर्वक मारकर कहता है-"ची! चितोन-चाओ चान" 'जगतके प्रत्यक्ष सत्यके आधारपर आओ हमलोग तर्कमें प्रवृत्त हों।' (चोका तात्पर्य मञ्जु श्री बोधिसत्वका हृदय है। उसका स्मरण करना उससे एक हो जानेके बराबर समझा जाता है। उसको तत्वज्ञानमय माना गया है।) इतना कहकर न्यायशास्त्रके अनुसार प्रश्नोत्तर आरम्भ होता है। जैसे प्रथम प्रश्न है—'बुद्धदेव मनुष्य थे कि नहीं?' चाहे उत्तर निषेधमें हो या स्वीकारमें प्रश्नकर्त्ता आगे फिर प्रश्न करेगा—"बुद्ध तो मृत्युको पार नहीं कर सके, क्या मृत्युको पार कर गये थे?" यदि इसका उत्तर 'हां'में हो तो वह कहेगा नहीं, यह कभी नहीं हो सकता, बुद्ध साधारण मरनेवाले व्यक्तिसे भिन्न था। यदि इसका उत्तर कुछ और अधिक प्रतिभाका होगा तो वह कहेगा, "हां बुद्ध भगवान स्वयं मृत्युसे परे थे तोभी मानवदेहसे मृत्युके वशवर्त्ती थे।" वह यह भी बतलावेगा कि बुद्धके तीन शरीर थे जिनको संस्कृतमें धर्मकाय, सम्भोगकाय, निर्माणकाय और तिब्बती भाषामें क्रमसे चोएकू, लोनचोएकू, और तुलकू कहते हैं। इनका तात्पर्य यह है—धर्मकाय या चोएकू वह शरीर है जो सत्यके पवित्र धर्मोंसे बना हुआ है। वह सबमें व्याप्त है। सम्भोगकाय या लोनचोएकू वह देह है जो उसके मुख्य राशिसे उत्पन्न होकर सत्यके प्रकाशके साथ पूर्ण आनन्दका अनुभव करता है।

तीसरा निर्माणकाय या तुलकू वह देह है जो उसके ऊपर दया और सब भूतोंके प्रति हित कामनाओंसे बना है।

उसके उत्तरमें यदि कुछ निर्बलता रह जाय तो प्रश्नकर्त्ता अवश्य उसका लाभ उठाता है और कहलाकर छोड़ता है कि बुद्ध भगवान मनुष्यरूपसे भारतवर्षमें उत्पन्न हुए थे। चाहे उत्तर निषेधमें हो या स्वीकारमें, प्रश्नकर्त्ता लगातार प्रश्न करता जाता है और प्रत्येक प्रश्नको हाथ पर हाथ बजाकर सबल करता जाता है और पैर भी नीचे पटकता है। गुरू शिष्यको यह भी सिखा देता है कि पैर इतने बलसे पटकना चाहिये कि पाताल-तक टूट जाय और हाथ पर हाथ इतने बलसे बजाना चाहिये कि ज्ञानके शंखनादके निर्भयहृदय और उत्साह भरे भावोंसे सब जंगतके पापी दैत्य भी भय खा जायं। प्रश्नोत्तररूपसे वाद्-विवाद् करनेका यही अभिप्राय हैं कि संसारसे मुक्त होकर सत्यकी गहरी तहतक पहुंच जाय और नरकवासी पापियोंको बल न पकड़ने दे।

एक बार एक देहाती उस विहारमें दर्शन करने आया। जब वह भीतर पहुंचा उस समय गुरू लोग विद्यार्थियोंको पढ़ा रहे थे। दैवयोगसे पढ़ाते २ अंगविद्यापर विवाद हो रहा था। उसका नाम तिब्बतीमें 'कानसा' है। उसका अर्थ हुक्केकी नली भी होता है। इसी समय गुरू उत्तेजित हो उठे और साथ ही साथ विद्यार्थीने भी वही भाव धारण कर लिया। देहातीने समझा कि इन दोनोंमें हुक्केके ऊपर लड़ाई हो रही है। यह

समझकर वह बड़ा ही विस्मित हुआ क्योंकि विवादके जोशमें आपसमें घूंसोंतककी नौबत आ गई थी। तीसरे वर्ष वही देहाती फिर दर्शनोंको आया। उस समय भी प्रश्नोत्तर हो रहे थे। फिर भी उसने यही समझा कि हुक्केपर ही यह नोकझोंक हो रही है। उसने तुरन्त ही वहांपर जाकर गुरूजीको अपना हुक्का भेंट कर दिया और कहा कि महाशय! आपलोग तो बड़े विद्वान हैं परन्तु फिर भी ऐसी छोटीसी वस्तुके ऊपर वादविवाद कर रहे हैं। मेरा हुक्का ले लीजिये और इस पुराने झगड़ेको समाप्त कीजिये। इस देहातीकी यह बात सुनकर सब लोग हंस पड़े।

यह विवाद इतने जोश और आवेशमें होता है कि किसी प्रकारकी शिष्टता और विनयकी सीमा नहीं रहती थी। तोभी उन प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये साधारण योग्यता नहीं चाहिये प्रत्युत बहुत अधिक स्वाध्यायकी आवश्यता होती है।

तिब्बती लामाओंमें तर्कहीकी प्रधान शिक्षा होती है। विद्यार्थी भी इस तर्कशास्त्रको इतनी उत्सुकतासे पढ़ते हैं कि विदेशोंसे भी विद्यार्थी बड़े कष्ट संकट झेलकर यहां पहुंचते हैं। यहांसे पढ़कर आचार्य होकर निकलनेमें कमसे कम बीस वर्ष लगते हैं। इस विद्यालयकी इस शास्त्रके लिये दूर २ तक ख्याति फैली हुई है। मंगोलियाके भी विद्यार्थी यहां पढ़ने आते हैं। जिस समय मैं वहां था उस समय भी प्रायः ३०० मंगोलियन पढ़ते थे। यह विद्याध्ययन एक बहुत रमणीक उपवनमें होता है।

धरतीपर श्वेत बालू बिछी होती है और ऊपरसे वृक्षोंकी छाया होती है वहीं गुरु-शिष्य-सम्वाद हुआ करना है। जब प्रथम वादविवाद समाप्त हो जाता है तब गुरू अपने सारस्वत उपवनमें चले जाते हैं। वह भी एक सुन्दर नाना भांतिके फूलोंसे सजी पुष्पवाटिका होती है जिसके चारों ओर पत्थरकी बाड़ और चीनी फैशनका द्वार होता है और वृक्षोंके नीचे श्वेत बालू बिछी होती है। वहां सब लामा लोग इकट्ठे होते हैं और धर्म-पुस्तकका पाठ शुरू होता है। पढ़नेके बाद परस्पर प्रश्नोत्तर शुरू होता है। यहां बठकर किसीको किसीसे प्रश्न करनेकी मनाई नहीं है, परस्पर कोई ऊंच नीच नहीं होता। इससे उनकी सहजमें ही ज्ञानवृद्धि होने लगती है। अन्य स्थानोंपर एक प्रश्न-कर्त्ता और समाधाता होता है। शेष सब श्रावक होते हैं। एक एक कक्षामें पचास २ श्रावक होते हैं। समय समयपर प्रश्नकर्त्ता और उत्तरदाता बदल सकते हैं। विद्याउपवनोंमें कोई रोकटोक नहीं होती। वृद्ध और युवा सभी परस्पर प्रश्नोत्तर कर सकते हैं। इससे वहां कोलाहल हो जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

नये विद्यार्थी जो विद्यालयमें भर्ती होते हैं वे मांग २ कर ईंधन भी जमा किया करते हैं। मुझको भी ईंधन मांगनेके लिये दो दिनके लिये लासा जाना पड़ा था। परन्तु तीसरे दिन मेरे वासस्थानके पास ही दो लामाओंमें झगड़ा हुआ और एककी बांह उतर गई। जिसकी बांह उतर गई थी वह अपने गुरूका बड़ा प्रिय शिष्य था। गुरूको इस बातका बड़ा दुःख हुआ

कि मेरे शिष्यका हाथ बिगड़ जायगा। यहां तिब्बतमें हड्डीका बैठाना कोई नहीं जानता। वे गरम लोहेसे जला देते हैं और कुछ औषध पीनेको देते हैं। बस, इतनी ही चिकित्सा यथेष्ट समझी जाती है। मैंने जब उस लड़केका रोते चिल्लाते सुना तो मुझको बहुत दुःख हुआ। मैंने उन लोगोंसे कहा कि इसको किसी डाकृरके पास ले जाओ। जिसके उत्तरमें उन्होंने यह कहा कि इससे कुछ भी लाभ न होगा और रुपया व्यर्थ खराब हो जायगा। जब मैंने उन लोगोंको समझाया कि उतरी हुई हड्डी ठीक हो सकती है तो उन लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ और मुझको उस रोगीके पास ले गये। मैंने जो स्थान सूज गया था वहां सूईसे छेदकर रक्त निकाल दिया और थोड़े ही समयमें वह लड़का बिलकुल ठीक हो गया।

—:—

उनचासवां परिच्छेद



साक्षात् बोधिसत्वसे भेंट।

मेरे इस कामसे मेरी ख्याति और भी बढ़ गई। लोग दिन-भर मेरे पास आने लगे जिससे मेरी पढ़ाईमें विघ्न होने लगा। जितना ही मैं उन लोगोंसे बचता था उतनाही वह लोग और भी अधिक घेरते थे। शेषमें मुझे लासामें एक चीनी अत्तार

थीन होथांगके पाससे कुछ औषधियाँ ले आनी पड़ीं। मैं जो कुछ औषध रोगीको दे देता था बहुधा उससे वह रोगी अच्छा हो जाया करता था। कुछ तो मेरे ऊपर उनका विश्वास होनेके कारण अच्छे हो जाते थे और कुछ दवाकी तासीर थी। तिब्बतमें जलोदर बड़ा कष्टसाध्य रोग समझा जाता है। तिब्बतवाले इस रोगका इलाज नहीं जानते। मैंने इस रोगके लिये भी एक औषध तय्यार कर और ईश्वरकी कृपासे प्रति दस रोगियोंमें ७–८ मेरी चिकित्सासे अच्छे भी होने लगे। परन्तु चिररोगी मेरी शक्तिसे बाहर थे।

इस कामसे मेरी ऐसी ख्याति बढ़ी कि पहले तो मैं अपने विहारमें ही वैद्य माना जाता था। परन्तु अब ल्हासामें ही नहीं बल्कि शिगारेज़तक मैं प्रसिद्ध हो गया। मेरे बुलानेके लिये बहुधा तीन २ दिनकी यात्राके स्थानोंतकसे लोग घोड़े भेज दिया करते थे। मैं ग़रीबोंसे फ़ीस नहीं लेता था। उनको बिना दाम ही दवा दिया करता था। इससे मेरी ख्याति और भी बढ़ती जाती थी और मैं औषधियोंका देव माना जाने लगा।

तिब्बतमें क्षयरोग भी कई भांतिका होता है। जो रोगी मेरे पास रोगकी प्रथम अवस्थामें आ जाते थे उनको चिकित्सा करके मैं चंगा कर देता था। परन्तु जो चिररोगी रोगके बढ़ जाने पर आते थे उनको कोई औषध नहीं देता था और उनसे ईश्वरके भजनमें लवलीन रहनेके लिये कह देता था। ऐसा करनेसे क्षयके रोगी मुझसे भयभीत होने लगे क्योंकि वह जानते थे कि

जिसको मैं औषध नहीं देता और ईश्वर भजनके लिये कहता हूं वे अवश्य ही मर जाते हैं। बहुतसे मृत्युकी बात सुनना नहीं चाहते थे। विशेष करके स्त्रियां इससे बहुत घबराती थीं। तिब्बतवासियोंमें एक विचित्र रीति है कि जब वे बीमार होते हैं तो ज्योतिषीसे पूछते हैं कि वे किस वैद्यसे चिकित्सा करावें। इसके लिये दुष्ट वैद्य उन ज्योतिषियोंको निरन्तर घूस देते हैं कि वह उनको ही चिकित्साके लिये बतलावें। जब इन ज्योतिषियोंको मेरी ख्यातिके विषयमें मालूम हुआ तो वह रोगियोंको मुझसे चिकित्सा करानेकी सलाह देने लगे। मैंने कभी किसी ज्योतिषीसे कुछ नहीं कहा था, न मैं किसीके पास गया ही। कदाचित् किसीने मुझे कभी देखा भी न होगा। केवल मेरी ख्याति सुनकर ही वह मेरे पास रोगियोंको भेजता होगा। यदि कोई उच्च पदाधिकारी अथवा पुरोहित बीमार होता तो ज्योतिषी मेरा ही नाम बतला देते। कभी घोड़ा और कभी परिचयपत्र लिये हुए वे स्वयं मेरे पास आ जाते। कभी बड़े आदरसे प्रार्थना-पत्र भी भेजते। जहां कहीं भी मैं जाता मेरे ऊपर लोग बड़ा प्रेम दिखलाते और आदरसे स्वागत करते थे। क्योंकि रोगीके जीवन-मृत्युको मेरे ही अधीन समझते थे।

ख्याति हवाकी भांति चारों ओर फैल गयी थी। मेरा नाम राजप्रसादमें भी पहुंच गया। वहांसे मेरे लिये बुलावा आया। वास्तवमें दलाई लामा बीमार नहीं थे। केवल मुझे देखना चाहते थे। तिब्बतमें दलाईलामाके दर्शन करना कोई सहज बात नहीं है।

यदि उनकी सवारी निकल रही हो तो चाहे कोई दर्शन कर ले परन्तु उनसे बातें करनेका सौभाग्य साधारण पुरोहित क्या बड़े २ लामा तकको भी प्राप्त नहीं होता। अतएव मेरे लिये यह बड़े सौभाग्यकी बात थी। मैं घोड़ेपर सवार होकर राज-महलोंको चल दिया। दलाई लामा उस समय पोटालामें नहीं थे। वे नगरके बाहर देहातमें नोल पुलिकामें थे। यह महल नया जंगलमें अभी ही बना था। गर्मियोंके दिनोंमें वह वहीं रहा करते थे।

मैं एक चौड़ी सड़कपर प्रायः १५० गज़ चला होऊंगा कि एक पत्थरकी २० फीट ऊंची दीवारके पास पहुंच गया। पश्चिमी फाटकसे घुसनेपर भीतर सड़कके दोनों किनारोंपर बहुतसे श्वेत सन्दूक रखी हुई देखे जोकि डाकके खम्भोंकी भांति दिखाई देते थे। प्रत्येक सन्दूक छः गजकी दूरीपर रखी हुई थी। जब दलाई लामा सड़कपर निकलते हैं तो इनमें धूप इत्यादि सुगन्धित पदार्थ जलाए जाते हैं। यद्यपि वहांपर खुला हुआ मैदान भी बहुत बड़ा था परन्तु सड़कके किनारेपर बड़े २ ऊंचे वृक्ष लगे हुए थे। वहांसे आगे बढ़नेपर एक मैदान मिला जिसमें पुरोहितों और लामाओंके रहनेके स्थान थे। प्रत्येक मकानमें एक २ फुलवाड़ी थी। जितने वृक्ष और पौधें तिब्बतमें मिल सकते हैं वे प्रायः सभी वहां सुशोभित थे।

अहातेके किनारे २ कुत्तोंके लिये कठघरे बने हुए थे। उनमें ५०-६० भयानक कुत्ते जञ्जीरोंसे बँधे थे। यह बड़े भीषण रूपसे

भूँकते थे। लोग कहते हैं दलाई लामाको कुत्तोंसे इतना प्रेम है कि यदि कोई मनुष्य उनके लिये कोई मजबूत कुत्ता लावे तो वह बड़े प्रसन्न होते हैं और लानेवालेको बहुत कुछ इनाम भी देते हैं। अतएव बहुत दूर २ से आये हुए कुत्ते वहांपर बंधे हुए थे। इनसे पहलेके दलाई लामाओंमेंसे किसीको भी कुत्तोंसे ऐसा प्रेम नहीं था। फाटकसे प्रायः पचास गज़की दूरीपर एक मकानपर पहुंचकर मैं घोड़ेसे उतर पड़ा और राजवैद्यके मकानमें पहुंचाया गया।

राजवैद्यके मकानमें चार बड़े बड़े कमरे थे। एक बैठक, स्वाध्यायालय, भृत्यगृह और एक पाकशाला थी। मकानतक पहुंचनेका मार्ग एक रमणीक उपवन था जिसके अन्तमें एक पर्दा टंगा हुआ था। उसको पार करनेपर एक और बाग़ मिला। उसके एक तरफ मिलनेकी बैठक थी।

मिलनेके कमरेमें चीनी ढंगके सरकानेवाले श्वेत किवाड़ लगे हुए थे। उनमें काँच लगे थे। इस कमरेमें दो मूर्त्तियाँ सुनहरी चौकीपर रखी हुई थीं जिनमें एक बुद्धदेवकी और एक तसांग खापाकी थी। यह भी एक नये सम्प्रदायके प्रवर्तक थे। उनके साथ नाग, मोर और पुष्पोंकी छटा थी। इस मकानमें चांदीके दीपकोंमें मोमबत्तियां और घीके दीपक जल रहे थे। वैद्यराज एक तिब्बती फैशनकी दरीपर बैठे हुये थे। उनके सामने दो डेस्कें रखी हुई थीं। उन्हींके सामने समूरका बिछौना अतिथियोंके लिये बिछा हुआ था। मुझे उसी बिछौनेपर बैठनेकी

आज्ञा मिली। बैठते ही एक नौकर बहुत बढ़िया चाय लाया जिसको पहले उसने वैद्यराजके प्यालेमें और फिर मेरे प्यालेमें डाला। मैंने सुना था कि वैद्यराज बड़े दयालु हैं। आश्चर्यकी बात है कि उनका मुख मेरे मुखसे ऐसा मिलता जुलता था मानों हम दोनों सगे भाई हैं।

वैद्यराजने मुझसे कहा कि 'दलाई लामा बीमार नहीं हैं। केवल तुम्हारी ख्यातिको सुनकर उनकी इच्छा तुम्हें देखनेकी है। मुझे आज आपसे बातचीत करनेका अवकाश नहीं है। काम बहुत है। लामा महाशयसे आप थोड़ी ही देर बातें कीजिये। लामा महाशयको जो कुछ आपसे पूछना है उस विषयमें मैं आपको समझा दूंगा।'

इतना कहकर वैद्यराज मुझे दलाई लामाके महलकी ओर ले चले। द्वारपर एक लामा पहरेदार था। यह लामा एक तंग आस्तीनोंवाला चोगा पहने हुआ था। हरएक लामा वैसा कोट पहननेका अधिकारी नहीं है। यह लामा लट्ठ हाथमें लेकर पहरा देता था। भीतर एक और द्वार था जिनपर चार लामाओंका पहरा था। इन चारोंके पास भी छोटे २ चार दण्डे थे। इस फाटकके भीतर घुसकर मैंने देखा कि दोनों दीवारोंपर एक भयानक मंगोलियनके चित्र बने हुए हैं वह लगामोंसे एक सिंहको लिये जा रहा है। अन्दरसे दलाई लामा प्रगट हुए।

दलाई लामाके आगे आगे राजप्रतिनिधि दन-पेन-चेनमो, और धर्म प्रतिनिधि चोए-चोन-केनबो थे। और उनके पीछे यजनी-चिन-

पोचे धर्मगुरु थे। दाहिने हाथकी कुर्सीपर दलाई लामा विराज गये। दो वज़ीर दोनों ओर खड़े थे। धर्मगुरु सामने कुछ नीची कुर्सीपर बैठ गये। सात आठ प्रधान लामा सामने बैठ गये। वैद्यराज मुझे दलाई लामाके सामने ले गये। मैंने तीन बार प्रणाम किया। दलाई लामाने मेरे सिरपर हाथ रख दिया तब मैं लगभग चार गज़ पीछे हटकर वैद्यराजके पास जा खड़ा हुआ।

दलाई लामाने कहा कि 'तुमने सेरा विहारमें रहकर बहुत अच्छा काम आरम्भ किया है। तुम लामाओंकी चिकित्सा करके उनको बहुत सहायता पहुंचाते हो। मेरी इच्छा है कि तुम कुछ समय और भी वहां ठहरकर इस कामको जारी रखो। मैंने उत्तर दिया, कि 'श्रीमान्‌की जैसी आज्ञा है वैसा ही करूंगा।' मैंने सुना था कि दलाई लामा चीनी भाषा बहुत अच्छी जानते हैं। अतएव मुझे भय था कि यदि वह मुझसे चीनी भाषामें बातें करने लगेंगे तो मेरी कलई खुल जायगी। परन्तु मैंने अपने मनमें दृढ़ विचार कर लिया था कि यदि आवश्यकता पड़ेगी तो मैं सत्य कह दूंगा कि मैं जापानी हूं। क्योंकि दलाई लामासे भेंट कर लेना जापानीके लिये कुछ कम गौरवकी बात नहीं है। भाग्यवश उन्होंने चीनी भाषामें कोई बात नहीं कही। तिब्बती भाषामें ही चीनके बौद्धधर्मके विषयमें पूछते रहे जिसका मैंने उचित उत्तर दिया। उन्होंने बड़ी प्रसन्नतासे कहा कि मेरी इच्छा है कि मैं तुमको यहां कोई उच्च पद दूं। मेरा मान बढ़ानेके लिये मुझे चायका प्याला दिया गया जिसको मैं रीति अनुसार पीने लगा। मैं उसे-

पूरा पी भी न पाया था कि इतने हीमें श्रीमान् उठकर चले गये।

दलाई लामाकी पोशाक साधारण लामाओंकीसी नहीं थी। उन्होंने कन्धेपर एक रेशमी पोशाक खुली नीचेतक लटकती हुई पहनी हुई थी जिसे संघारो कहते थे। कमरमें तिब्बती ऊनका पटकल लपेटा हुआ था। नीचेकी तरफ 'नेमा' पहने हुए थे जो चीनी ऊनका बना हुआ था। उनके सिरपर एक धार्मिक मुकुट था। प्रायः दलाई लामा बिना मुकुटके नंगे सिरही रहा करते हैं। उनके बायें हाथमें एक माला थी। उस समय उनकी वयस प्रायः छब्बीस वर्षकी होगी। लम्बाई पांच फुट आठ इंच थी। तिब्बतमें प्रायः यही साधारण कद होता है।

दलाई लामा देखनेमें बहुत वीर थे। भौंहें ऊपर उठी हुई थीं। उनकी आंखें बड़ी तेज थीं। एक बार एक चीनी ज्योतिषीने कहा था कि तिब्बतके दलाई लामाके समय एक युद्ध अवश्य होगा जिससे देशमें बड़ा विद्रोह फैलेगा; क्योंकि वीर पुरुष होने पर भी उनके मुखपर दूरदृष्टिके चिह्न दिखलाई पड़ते हैं। उनका चेहरा बहुत रोबदार था। उनके सामने आकर कोई भी मनुष्य सिर झुकाये बिना नहीं रह सकता था। मुझे उनसे मिलनेका कई बार सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी बातोंसे उनकी रुचि राज-नीतिकी ओर धर्मकी अपेक्षा अधिक प्रतीत होती थी। वे बौद्ध वातावरणमें पले थे। उनकी उसी धर्ममें श्रद्धा भी बहुत थी। वे इस धर्म और उनके अनुयायियोंके सब दोषोंको जड़से सुधार देना चाहते थे। राजनैतिक विषय सदैव ही उनके चित्तमें घूमा

करते थे। वह अंग्रेजोंसे बहुत भयभीत थे और सदैव ऐसीही चेष्टा करते रहते थे कि जिसमें वे लोग तिब्बतके भीतर न आने पावें। उनके पास उनके बैरी भी बहुत रहा करते थे। यदि वह अपने बचावका ध्यान न रखते तो अभीतक कई बार विषके प्रयोगसे मर गये होते। जब ऐसे षड्यन्त्री पकड़े जाते थे तो उनको फांसीपर चढ़ा दिया जाता था।

चौथेसे नवें लामातक,पांच लामाओंमें कोई भी पच्चीस वर्ष-को अवस्थातक नहीं पहुंचा। सब ही १८ से २२ वर्षके भीतर ही विष देकर मार डाले गये। यह बात वहांके प्रायः सभी लोग जानते थे। जब कोई चतुर दलाई लामा गद्दीपर बैठता तो उसके दर्बारी अपने इच्छानुसार अपने स्वार्थ नहीं साध सकते थे। इनमेंसे कई एक बहुत चतुर हो गये थे, क्योंकि वे २२-२३ वर्षतक बहुत अच्छी शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। इति-हाससे पता चलता है कि सर्वसाधारणके उपकारार्थ उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी थीं।

जिस मनुष्यके घरपर मैं टिका हुआ था वह किसी समयमें मालका वज़ीर था। उसने जब इन भूतपूर्व दलाई लामाओंका यह हाल मुझे सुनाया तो मैं आंखोंसे आंसू टपकाये बिना न रह सका।

दलाई लामाका दर्बार द्रोही चोरोंके छिपनेका खोह था। ये चोर दलाई लामाके दर्बारी कहाते थे। वे अपने भरसक प्रयत्न-से राजभक्त दर्बारियोंका बल कम करनेमें लगे रहते थे।

राजभक्त दर्बारी संख्यामें भी कम थे और उनका बल भी कुछ न था। इन्हीं कुचक्रियोंकी कुटनीतिसे यह भूतपूर्व माल वज़ीर अपने सहयोगी दल सहित दर्बारसे बाहर निकाल दिया गया था। ये कुचक्री लोग लोगोंके सामने पवित्र धर्मके महाराज दलाई लामाको बड़ा मान सत्कार दर्शाते हैं। नहीं तो वे अपने आसनपर कभी जम न सकते। उनके स्वार्थके विघातक कोई भी कारण उपस्थित होते तभी वे आपसमें गुप्त मन्त्रणामें लग जाते और राजभक्त दर्बारियोंपर झूठा दोषारोपण करनेका ढंग करने लगते। वे कभी २ प्रगटमें उनको निर्लज्जतासे गालियां-तक देने लगते और कहा करते कि अमुक २ पुरुषने दलाई लामाका समुचित सत्कार नहीं किया। वे इस अपमान करनेके अपराधी हैं। इस धूर्त कपट नीतिसे वे दुष्ट दर्बारी ही सच्चे भक्त विद्वान लामा सिद्ध होते और दलाई लामा सदा ऐसे भुजंग लामाओंसे घिरे रहते हैं।

फलतः दलाई लामा बड़े ही संकटमें रहते हैं। वह अपने खाने पीने तकमें बड़े सावधान रहते हैं कि कहीं भोजनमें ही उन्हें विष न दे दिया जाय। ऐसे कुचक्री धुर्तोंसे भरा दर्बार सारे संसारमें और कहीं भी न होगा। यह सोचकर मैं आंखोंसे आंसू बहाये बिना न रह सका। वर्तमान दलाई लामा इतने बुद्धिमान तथा सावधान रहते थे कि धूर्त बदमाश दर्बारी उनके विरुद्ध कोई भी काम नहीं कर सकते थे। तब भी वे बड़े संकटमें थे। अपनी अवस्थाकी अपेक्षा वे बहुत अधिक बुद्धिमान थे। यद्यपि

अवस्था छोटी थी तोभी वे दुःखित दीनोंके प्रति बड़े दयालु तथा अपनी प्रजाके प्रेम और आदरके पात्र थे। स्थानीय शासक पदाधिकारी उनसे बहुत विरुद्ध थे क्योंकि वे उन्हें उनके पदोंसे हटाकर उन्हें दण्डित करना चाहते थे। उन्हें कैदमें डालकर उनके दुष्ट कार्योंका दण्ड दिया चाहते थे। मैंने दलाई लामाके भीतरके महल भी कई बार देखे। वे बहुत ही सुन्दर थे। यह चीनी, तिब्बती और भारतीय ढंगपर थे। उनके बागमें बनावटी क्रीड़ाशैल चीनी ढंगपर बना था। इसके भीतर एक हरा मैदान कुछ फुलवारीसे घिरा था। वह स्थान निःसन्देह बड़ाही मनोहर था। महलका भीतरी भाग तिब्बती ढंगका और छत चीनी ढंगका और शेष भाग भारतीय ढंगका था। राजकीय उद्यानमें बहुतसे कृत्रिम शैल बने हुये थे और जहाँ तहाँ आड़, झाऊ, चीड़ और देवदार आदिके वृक्ष लगे थे। तिब्बतमें कुछ एक फूलदार पौधेही गर्मियोंमें खिलते हैं। सर्दियोंमें खूब फूल होते हैं। गुलाब, गेन्दा गैनियाँ, सूर्यमुखी आदि नाना फूल बरामदेमें खिल रहे थे। फर्शपर बेशकीमती जड़ाऊ पत्थर, हीरे माणिक चमक रहे थे और भीतोंपर नाना प्रकारके चित्र अंकित थे। भवनमें एक ओर तिब्बती ढंगकी दो चटाइयोंपर दलाई लामाका राजसिंहासन था। उसके एक तरफ चीनी ढंगकी दरी बिछी थी। जिसपर चीनी ऊनी गद्दा बिछा था। दरीपर एक बढ़िया कीमती चौकी रखी थी। इसी प्रकार और भी बहुतसे कमरे थे जिनमें मुझे जानेकी इजाज़त नहीं मिली थी। वे बाहरसे भी बहुत सुन्दर थे।

मैं बहुधा वैद्यराजके यहां आता जाता था। उन्होंने मुझे बहुत सी दवायें बतलाईं। उन्होंने बतलाई सही परन्तु मैंने जो विद्या किताबोंसे ग्रहण की थी वह उसके पास नहीं थी। इसके आधारपर ही मैं उनसे बहुत देरतक विवाद कर सकता था। इसी कारण वह मेरा बहुत आदर करते थे। उन्होंने कहा कि "मैं दलाई लामासे कहूंगा कि वह तुमको राजवैद्य कर दें।" मैं इसपर सहमत नहीं हुआ। मैंने कहा कि मैं विद्या पढ़ना चाहता हूं और मेरा विचार है कि भारतवर्ष जाकर संस्कृत पढ़ूं। यह सुनकर उनको बहुत दुःख हुआ। लासा नगरमें इस समय कोई अच्छा वैद्य भी नहीं था। उसने कहा—"बौद्धधर्मावलम्बीके लिये केवल यही काम है कि दूसरोंकी रक्षा करें।" इसके उत्तरमें मैंने कहा—"वैद्य तो मनुष्योंको केवल इस लोकके साधारण कष्टोंसे बचा सकता है। परन्तु वह आत्माकी मुक्तिके लिये कुछ भी नहीं कर सकता'। डाक्टर चाहे कितना भी चतुर क्यों न हो क्या वह रोगीको मरनेसे बचा सकेगा?"

कभी नहीं! इसके अतिरिक्त मुझे भय है कि उनका परोपकार करनेकी अपेक्षा मैं उनको अधिक हानि पहुंचा दूं। क्योंकि मेरे पास कुछ थोड़ी सी इनी गिनी दवाइयां हैं। मैं उनके रोगोंको भले ही शमन कर दूं, परन्तु मैं उनकी आत्माको शान्ति नहीं दे सकता। बौद्ध उपदेशक लोगोंको बहुत अधिक दुःखदायक और चिरकालिक रोगोंसे मुक्त कर सकता है। उस भवरोगको शान्त करनेका उपाय जानना बड़ा आवश्यक है। बुद्ध

सबसे बड़ा वैद्यराज था। उसने ८४ हज़ार हृदयरोगोंके लिये ८४ हज़ार औषधियोंका उपदेश दिया है। हम उसके शिष्य हैं हमें उपाय सीखना चाहिये। यह सुनकर वैद्यराजने मेरा पक्का निश्चय जानकर कहा कि यदि ऐसाही है तो मैं दलाई लामासे कह दूंगा कि वह तुमको लासामें रखें, बाहर न जाने दें। यह सुनकर मुझे बहुत भय हुआ कि मैंने अपना रहस्य क्यों खोल दिया। तुरतही उसको ठंढा करनेके लिये मैंने वार्तालापका विषय बदल दिया। तिसपर भी अब मुझपर ऐसी घटना घटी जिसका मुझे स्वप्नमें भी विचार न था।

पचासवां परिच्छेद

सेरा विहारकी जीवनचर्या

अब सेरा विहारमें इस बातपर विचार आरम्भ हुआ कि जो मनुष्य ऐसा माननीय है कि दलाई लामा और बड़े २ दर्बारी उसे बुलाते हैं, उसे क्या साधारण लामाओंके साथ रहने दिया जाय। सोच विचार होनेके पश्चात् यह निर्णय हुआ कि मेरे लिये एक बढ़िया मकान सबसे पृथक् बना दिया जाय। मैं यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि सर्वसाधारणके रहनेके कमरे बहुत मैले, दुर्गन्धयुक्त और अन्धकारमय थे। मैं २१ जुलाईको दलाई लामाके पास गया था। उसी महीनेके अन्तमें मुझे एक पृथक्

साफ सुथरा कमरा मिल गया। विद्यालयमें यह नियम था कि कोई नया विद्यार्थी अकेले कमरेमें नहीं रह सकता है और यदि कोई धनी अपना धन खर्च करना चाहे तो उसको भी मैलेसे मैला एक कमरा मिल सकता था। परन्तु मैं मैला कमरा भी लेनेमें समर्थ न था। हरएक लामाको चतुर्थ श्रेणीका कमरा भी वहां मैली कुचैली अन्धेरी कोठरीमें १६ साल रहनेके बाद मिलता था। ३ वर्षके बाद उसे तृतीय श्रेणीके आश्रममें स्थान मिलता था। परन्तु यह बात याद रखनी चाहिये कि यह सब बात रुपयेपर निर्भर थी। वह जब आचार्यकी पदवी पा लेता था तब उसे दूसरी श्रेणीका आश्रम मिलता था। उच्च कक्षाका आश्रम केवल पूर्वजन्मके उन लामाओंको दिया जाता था जो वहां स्वाध्यायके लिये आते थे। परन्तु मुझे फिर भी दूसरे दर्जेका कमरा मिल गया था। यह मकान दोमंजिला था। भोजन बनानेका भी सामान था। ऊपरकी मंजिल बहुत अच्छी थी। इस मकानके लिये सामान और भृत्योंकी भी आवश्यकता थी। भाग्यवश मेरे पास इतना रुपया हो गया था कि मैंने उस मकानमें उपयुक्त सामान मोल ले लिया।

यहांके लामा लोग भिन्न २ आश्रमों और कक्षाओंमें थे तोभी वे तीन भागोंमें बांटे जा सकते हैं। उत्तम, मध्यम और निकृष्ट। मध्यम लामाओंका व्यय प्रति मास साल येन है। मकानका किराया उनको देना नहीं पड़ता है। यदि विद्यार्थी अधिक हो जाते हैं तो विद्यार्थी अपने लिये आप ही अपना स्थान खोज लेते

है। ऐसी अवस्थामें उसको केवल तीन येन किराया देना पड़ता हैं, मैंले कमरेके लिये भी पच्चीस सेन देने पड़ते हैं।

विद्यार्थियोंके कपड़ोंमें एक ऊनी टोपी, एक कुर्ता, एक जोड़ा जूता और एक लामाओंका लबादा होता है। इन सबके लिये उसे बीस येन देने पड़ते हैं। सवेरेको चाय मक्खन और सेंकी रोटी मिलती है। यद्यपि तीन बड़े २ देग चायके विहारमें आते हैं परन्तु जो लामा धनी हैं वह अपनी चाय आप ही तय्यार करा लेते हैं। तीसरे पहर फिर चाय मिलपी है। इसके साथमें मांस भी मिलता है। वह प्रायः सूखा और कभी २ कच्चा होता है। रातको रोटी, मूलीकी, तरकारी और घी मिलता है। यहांके लोग चाय अधिक पीते हैं। क्योंकि मांसके साथ खानेको तरकारी कम मिलती है। चायका प्याला चांदीके ढकनसे ढका रहता है। चाय ठंढो हो जानेपर पी जाती है। उसके बाद उसमें और चाय डाल दी जातो है और बीस मिनट तक उसे ठंढा होने देते हैं। सरदियोंमें पांच छः मिनट हीमें ठण्ढो हो जाती है। इस बीचमें परस्पर विवाद हो किया करते हैं। मध्यम श्रेणीके लामाओंके भोजनोंकी यही रीति है। बहुतसे लामाओंके पास धरती भी है। वह लोग याक, घोड़े, भेड़, और बकरी भी पालते हैं। परन्तु मध्यम श्रेणीवालोंके पास पचास याक और दस घोड़ोंसे अधिककी सम्पत्ति नहीं होती है। यह पशु खेत जोतनेके काममें भी लाये जाते हैं। इस निजी सम्पत्ति या वैयक्तिक व्यापारके बिना उनका गुजरान नहीं चलता, इनको

मन्दिरसे आय और भक्तोंके दानसे भी पर्याप्त गुज़रान चलती है।

कोई २ लामा और काम भी करते हैं अर्थात् व्यापार करते हैं। पशु पालते हैं। बौद्धधर्मके पूजाकी वस्तुयें तैयार करते हैं। बुद्धदेवकी तस्वीरें बनाते हैं। वे दर्जी, बढ़ई, राज, मोची और संगतराशीका काम भी करते हैं। उनके पास एकसे छः सौ तक भूमिके टुकड़े हैं। एक टुकड़ा भूमिको एक जोड़ी याक अच्छी तरहसे एक दिनमें जोत सकते हैं। ५ लाख येनकी पूंजीसे व्यापार करनेवाले लामा हममेंसे तीन चार ही थे। वे बड़ी शानसे रहते थे। उनकी पोशाक भी बढ़िया तिब्बती ऊनकी बनी होती थी।

बढ़िया चाय बनानेके लिये छः घण्टेतक उसको उबालते हैं। इतनी देरमें वह गहरे भूरे रंगकी हो जाती है। तत्पश्चात् याकके घी और नमकमें मिलाते हैं। पहले पहल मैं इस चायको न पी सकता था क्योंकि इसके ऊपर तेलसा तैरता मालूम होता था।

तिब्बतके उच्च श्रेणीके लोगोंमें यही पान बड़ा उत्तम समझा जाता है। वे इसके साथ नित्य प्रातः 'त्सू' या रोटी भिगो २ कर खाते हैं। त्सूमें खांड, मलाई और घी मिला होता है। तिब्बती लोग प्रातः भोजनमें कच्चा पका हुआ सूखा मांस भी खाते हैं। लामा लोग मध्याह्नमें चावल भी खाते हैं, चावल तिब्बतमें नेपालसे जाता है। वे चावलोंके साथ अंगूर, खांड और घी मिलाकर

खाते हैं। चावलके बाद वे रोटी या अण्डेकी खीर खाते हैं। रातको वे आटेका हलवा या मांसको खीरके साथ मिलाकर खाते हैं। मांसकी खीर, मांस, कन्दा, मलाई और घी मिलाकर पकाई जाती है। यह उच्च श्रेणीके लोगोंका भोजन है। वे बिना मांसके एक दिन भी नहीं रह सकते। यदि एक दिन भी उनको मांस न मिले तो वे अपनेको कमज़ोर होता हुआ मानने लगते हैं।

उच्च श्रेणीके लोग बड़े सुखसे जीवन बिताते हैं। उनके अपने बंगले होते हैं, अपने सुन्दर भवन और मन्दिर होते हैं। उनको अपनी जायदादसे बड़ा धन मिलता है। वे अपने घरोंपर सत्तर-अस्सी नौकर रखते हैं। इन्हीं नौकरोंमेंसे खज़ानची और नम्बरदार भी होते हैं।

नीची श्रेणीके लोगोंकी दशा बड़ी ही शोचनीय होती है। लेखनी उनकी दशाका आधा भी वर्णन नहीं कर सकती। योद्धा लामा लोग भी अपनी रक्षा अपने आप कर लेते हैं। वे किसान और पहरेदारी कर लेते हैं। वे अपने घरके पेशेसे भी कुछ कमा लेते हैं। तिसपर भी अपने पेटभर ही कमा पाते हैं। कुछ लामा-इनसे भी गरीब होते हैं, ये विद्यार्थी लामा होते हैं जिन्हें अपने पठनकालमें ही अपने पेटके लिये भी कमाना होता है। उन्हें अपने विद्यार्थीपनेके खर्च भी उठाने पड़ते हैं। उन्हें स्वाध्यायसे ही फुर्सत नहीं मिलती, उन्हें अपने द्रव्य कमानेका अधिक अव-काश ही नहीं मिलता। श्रद्धालुओंके दान और मन्दिरकी छात्र-

वृत्ति दोनों मिलकर भी दो तीन येनसे अधिक नहीं होते। यह उनके गुजारेके लिये पर्याप्त नहीं होता। चाय तो उन्हें मन्दिरसे मुफ्त मिल जाती है परन्तु रोटी जो मुख्य भोजन है बिना कमाये नहीं मिलती। तर्कशिक्षाके बाद तात्संगमें इन्हें ३ प्याले चाय मिलती है परन्तु एक मास उनकी परीक्षामें ही लग जाता है। इस दशामें उनको ५० सेन और अपनी गांठसे लगाने पड़ते हैं। उन्हें हाथ सेंकनेके लिये ईंधन भी दरकार होती है। उन्हें फिर तरोताज़ा होनेके लिये भोजन भी चाहिये। धनियोंकी उबाल कर रद्दी करके फेंकी हुई चायको ही वे उबाल २ कर अपनी चाय बना लेते हैं। याकका गोबर ही वे ईंधनके लिये बर्तते हैं। याकके गोबरकी पाथियोंका एक बोरा ३५ सेनमें खरीदना पड़ता है। एक आदमीको सालमें ४ बोरे लगते हैं। गरीब लोग एक ही बोरेमें काम चला लेते हैं। गरीब लामाके मकानमें एक भेड़की बालोंवाली खाल, एक लकड़ीका प्याला, एक माला और एक मैली कुचैली गद्दी जिसे रातको बिछाकर सो जाता है-बस इतनी ही कुल सम्पत्ति होती है। कोनेमें एक चूल्हा, एक मिट्टीका तसला और एक घड़ा धरा होता है। बस एक कमरेमें इससे अधिक सामग्री नहीं होती। एक कोनेमें खूंटीपर एक झोली टंगी होती है। जिसमें आटेकी रोटियां रखी जाती हैं। यह झोली शायद ही कभी पूरी भरती होगी। उनकी सबसे अधिक मूल्यवाली सम्पत्ति तर्कशास्त्रकी पुस्तकें होती हैं। ऐसा कोई ही लामा होगा जिसके पास कमसे कम

४, ५, पुस्तकें तक भी न होंगी। यह भी उनकी चिरस्थायिनी सम्पत्ति नहीं होती क्योंकि परीक्षाके उपरान्त वे इन पुस्तकोंको बेच देते हैं। रातके समय उनके बिस्तरेमें केवल ओढ़नेका लबादा और एक चादर होती है। इसके अतिरिक्त एक मैला कुचैला कम्बल होता है। एक कम्बल प्रायः कइयोंकी संयुक्त सम्पत्ति होती है। कई कमरोंमें मिट्टीका बर्तन भी कइयोंका एक होता है।

मैं एक बार गरीब विद्यार्थियोंको बीमारीकी दशामें देखने गया। मुझे उनकी दुर्दशा देखकर बड़ा दुःख होता था। ये इतने ग़रीब होते थे कि इनको बिना मूल्य औषधके साथ २ कभी २ द्रव्यकी सहायता भी मुझे देनी पड़ी। इन ग़रीब विद्यार्थियोंके विषयमें मुझे यहां तक भी पता लगा कि इन्हें कभी २ दो २ दिन फाका भी करना पड़ता है। जब उनको थोड़ा भी रुपया मिल जाता है वे तभी रोटी खरीदनेके लिये लासा चले जाते हैं। बहुतसे लौटते समय सीधे अपने आश्रममें आकर मारे भूखके होटलोंमें चले जाते हैं। वहां उनका सब रुपया खर्च हो जाता है। वे फिर वैसेके वैसे ही दरिद्र हो जाते हैं। मैं जब भी ऐसे दरिद्र विद्यार्थियोंसे मिलता था उन्हें कुछ देता ही था। वे इस कारण मेरा इतना आदर करते थे कि वे मुझे देखते ही खड़े हो जाते और मेरे गुज़रते हुए प्रणाम करते थे।

इक्यावनवां परिच्छेद

मेरे तिब्बतके बन्धु और दाता।

मुझे चिकित्सा करते रहनेके कारण बहुतसी औषधियां मोल लेनी पड़ती थीं। अतएव चीनी अत्तार चीन होथङ्गके यहां बहुधा जाना पड़ता था। चीनमें प्रत्येक औषध उबालकर उसका अर्क बनाकर प्रयोग करते थे। परन्तु तिब्बतमें सब औषधियोंके चूर्ण बना लेते हैं। यहांतक कि सींग और पत्थरको भी चूर्ण कर लेते हैं। कभी कभी इन औषधियोंके लिये मुझे उसके यहां दो दो दिनतक ठहरना पड़ता था। मैं लासाभरमें उसका सबसे बड़ा ग्राहक था। अतएव वह मेरा बड़ा आदर किया करता था। उसने मुझको वैद्यककी एक पुस्तक भी पढ़नेको दी जिससे मुझे बहुत लाभ हुआ था। अब मैं हरएक रोगीको निधड़क अपने हाथमें ले लेता था। यद्यपि ऐसा काम करनेमें मैं बहुत भूल करता था क्योंकि 'नीम हकीम ख़तरए जान'। मैं शरीर-विज्ञान अच्छा जानता था। कोई दूसरा वैद्य इतना भी नहीं जानता था?

इस दूकानके स्वामी लीटसूशूकी वयस प्रायः तीस वर्षकी थी। उसका मकान बहुत सुन्दर था। इस घरमें उसकी स्त्री, एक पुत्र और एक कन्या थी। इनके अतिरिक्त लीटसूशूकी

सासु और तीन दासियां भी थीं। यह लोग मुझे अपने घरकासा समझती थीं। मैं भी जो वस्तुयें अपने इष्ट मित्रोंसे पाता वे उनको भेंट कर देता था। यदि कोई मुझको रोटी, शक्कर, ईख और अंगूर इत्यादि इतने अधिक दे जाता था कि मेरे खर्चसे बच रहते तो मैं अत्तारके घर जाकर उसके बच्चोंको बांट देता था। वे मेरी सदा जोहमें रहते थे। किसी कारण यदि मैं उसके घर दो दिन भी न जाता तो घरके सब लोग घबरा जाते थे। बच्चोंसे मेरा ऐसा प्रेम हो गया था मानों वर्षोंसे साथ रहे हों। इस बच्चोंके मेलने जब मैं तिब्बतसे बिदा हुआ उस समय बड़ा लाभ पहुंचाया था।

इस अत्तारके यहां दवा लेने बड़े बड़े मनुष्य आया करते थे। इनमेंसे एक व्यक्ति मात्सांग भी था जो कि चीनी अम्बानका मन्त्री भी था। यह व्यक्ति बहुत पढ़ालिखा और अनुभवी पुरुष था। यद्यपि उसका पिता चीनी था परन्तु उसकी माता तिब्बती थी और तिब्बतमें ही इसका जन्म भी हुआ था। यह चीनी और तिब्बती दोनों ही भाषायें बहुत अच्छी बोलता था। उसने चीनी भाषा खूब पढ़ी थी और दो बार पेकिङ्ग हो आया था। वह तीन बार भारतवर्ष जाकर कलकत्ता और बम्बईमें सौदागरी करके बहुतसा ज्ञान प्राप्त कर चुका था। उसके आफिसमें काम थोड़ा होता था अतएव वह प्रायः खाली रहा करता था और अत्तारसे उसकी मित्रता थी इस कारण बहुधा अत्तारके यहां आया जाया करता था। इसी कारण उससे मेरी भी जान पहचान हो गई

थीं। उसने मुझे तिब्बतके बहुतसे गुप्त भेद बतलाये। तिब्बत-वासियोंके अच्छे और बुरे सब तरहके आचार बतलाए। उस-की बातोंसे मालूम हुआ कि वह जो कुछ कहता है सत्य ही कहता है।

चीनी अम्बानका मन्त्री था। अतएव उसको इन दोनों सर-कारोंका बहुत कुछ ज्ञान था। वह ऐसा बातूनी था कि मेरे पूछनेके पहले ही सब बातें कह दिया करता था। उसी जान पहचानसे यह लाभ हुआ कि जब मैं पढ़ते २ थक जाता तो उसकी बातोंसे दिल बहलानेके लिये अत्तारकी दूकानपर जा पहुंचता था।

एक दिन मैं अत्तारके द्वारपर खड़ा हुआ था कि एक अमीर पुरुष एक सेवकके साथ दूकानके सामनेसे निकला। कुछ आगे जाकर उसने नौकरसे कहा—'यह वही है'। वह पुरुष फिर लौटकर मेरे पास आया और मुझसे कहा कि 'क्या तुमही हो?' पहले तो मैंने नहीं पहचाना परन्तु फिर शीघ्र ही पहचान लिया। यह वही पारा वजीरका लड़का था जिससे दार्जिलिङ्गमें मेरी भेंट हुई थी। आजकल वह कुछ कृश हो रहा था। वह देखनेमें पागल मालूम नहीं होता था। वह किसी आवश्यक कामके लिये जा रहा था परन्तु मुझे देखकर अत्तारके घरके भीतर चला आया। अत्तारकी स्त्री उसको जानती थी। उसने उसको बैठनेके लिये कुर्सी दी। मैंने उसको समझा दिया कि यहांपर हमारी दार्जिलिङ्गके भेंटके विषयमें कोई बात न होनी चाहिये। वह

भी इस बातको जानता था कि यह बात छिपी ही रहनी चाहिये।

उसने जितनी देर वहां बैठकर बातचीत की उससे यह प्रतीत न होता था कि उसमें किसी भांतिका पागलपन है। वह बहुत समझदार मालूम होता था। और बातोंके प्रसङ्गमें उसने कहा कि 'तीन महीने हुए मेरे एक नौकरने चोरी की थी। उसके लिये मैंने उसको कुछ अधिक दण्ड दिया जिसके कारण उसने मेरे कान्हमें छुरी घोप दी। वह इतनी गहरी चली गई कि आंत बाहर दिखाई देने लगीं। इसी कारण मैं इतना दुबला हो रहा हूं।' जब वह अत्तारके यहांसे विदा हुआ तो अत्तारकी स्त्रीने मुझसे कहा कि 'इस मनुष्यने अपने घावके विषयमें सब झूठ कहा है। यह चोट उसके अपने ही कामोंसे लगी है। मुझे घरका सब हाल मालूम है। पहले मेरा विवाह इसके बड़े भाईसे हुआ था। मैं निर्धनकी लड़की थी इससे उसने मुझे अपने घरसे निकाल दिया। यह मनुष्य बड़ा फ़ज़ूलखर्च था। इसके ऊपर बहुतोंका कर्ज़ हो गया था। इसी कारण इसको यह चोट खानी पड़ी थी। यह मनुष्य पागल नहीं है, समय २ पर आवश्यकतानुसार पागल बन जाया करता है। दूसरोंसे रुपया उधार लेनेमें यह मनुष्य बड़ा चतुर है।'

तिब्बतमें भी वसन्तोत्सव होता है। यहांका वसन्त बहुत थोड़े दिनों रहता है। इस समय यहांके वासी अपने २ कोठे

खेतों और जंगलोंमें जाकर लगाते हैं। इस उत्सवको वहां लिंका कहते हैं। एक बार मैं भी इस उत्सवमें बुलाया गया था। बहुत खेमे खेतोंमें लगे हुए थे। इन लोगोंमें एक ६० वर्षकी बूढ़ी लामाइन थी जिसके साथ सात आठ और भी लामाइनें थीं। इसने खेमेके स्थानपर एक लकड़ीका मकान खड़ा किया था। उसके भीतर रंगीन पर्दे और बाहर श्वेत कपड़े लगे हुए थे। यह मकान भी अस्थिर था, जब चाहे उठाया जा सकता था। यह स्त्री प्रायः १५ वर्षसे बीमार थी और उसको भी मालूम होता था कि उसकी दशा दिन पर दिन गिरती जा रही है। उसने कहा कि 'मैं समझती हूं कि मेरी यह बीमारी असाध्य है। यदि आप मेरी नाड़ी देखकर कोई औषध दें, क्योंकि आप बहुत अच्छे डाक्टर हैं, तो सम्भव है कि कुछ लाभ हो जावे।' मैंने उसको देखा तो ज्ञात हुआ कि उसको गठिया थी। मैंने उसको थोड़ासा टिंक्चरकेम्फर दिया, और कुछ दवा पेटके लिये भी दी क्योंकि उसके पेटकी अवस्था भी अच्छी नहीं थी। विश्वासमें बड़ी शक्ति है। इस औषधने उसको बहुत लाभ पहुंचाया। पन्द्रह वर्षके पुराने दर्दमें बहुत कमी हो गई। रातको नींद भी अच्छी आने लगी। कुछ ही दिनोंमें वह कुछ चलने फिरने भी लगी। उस समयके उसके हर्षकी सीमा न थी। उसने अपने आरोग्यलाभके विषयमें अपने घर सम्वाद भेज दिया। पीछे मुझे मालूम हुआ कि उसका विवाह, यद्यपि धर्मानुसार नहीं, भूतपूर्व अर्थसचिवके साथ हुआ था। यह नये सम्प्रदायका पुरो-

हित भी था। बौद्धधर्मके लिये कितनी लज्जाकी बात है कि वह एक लामाइनके साथ बंधा हुआ था। अमीर लामा प्रायः स्त्रियां रखते हैं। वे भी उनसे नाजायज तौरपर सम्बन्ध रखती हैं। बहुतसे तो अपनी औरतोंको अन्यत्र रखते हैं। लामाइनें उनको इस कार्यके लिये उचित जान पड़ती हैं। यह बूढ़ी तो अब बूढ़ापेके कारण दोहरी हो गई थी।

थोड़े दिनों पीछे अर्थसचिवका एक नौकर बीमार हुआ। मुझे विश्वास था कि मैं ही बुलाया जाऊंगा। क्योंकि इन लोगोंका मेरे ऊपर विश्वास जम गया था। पर मैं समझता था कि बुद्धकी आत्मा ही इतना अद्भुत कार्य कर रही है। अस्तु! मैं इनके यहां चिकित्साके लिये गया। मेरा इससे भी परिचय हो गया। यह बड़ा विद्वान पुरुष था। इसकी लम्बाई ७ फीट छः इञ्चकी थी। तिब्बतमें इतना लम्बा मनुष्य मैंने नहीं देखा।

इसकी पोशाकमें और लोगोंसे दुगुना कपड़ा लगता था। वह मनुष्योंको खूब जानता था। वह व्यापारमें भी चतुर था। वह बड़ा दयालु, श्रद्धालु और सच्चा था। उसमें दोष था तो यही कि उसने स्त्री रख छोड़ी थी। मेरे सामने दोनोंहीने अपने दोषोंपर पश्चात्ताप किया। उसका दिल बुरा नहीं था। उसके राजस भावने ही उसकी पवित्रतापर धब्बा लगा दिया। उसपर दुनियावी विचारोंका बड़ा प्रभाव पड़ा था। उसे मेरी दशासे बड़ी सहानुभूति थी। वह मुझे बार बार कहा करता था कि मुझे बड़ा शोक है कि तुम्हें सेरामें और भी बीमार देखने थे ऐसी

दशामें मैंने तुम्हें यहां आनेका कष्ट दिया। उसे इससे भी बड़ा दुःख हुआ कि मुझे पढ़नेके लिये कम अवसर मिलता था। उसने मुझे सावधान कर दिया और कहा कि 'तुम्हारी यहां पर बहुत ख्याति हो रही है सम्भव है कि कोई तुम्हें ईर्षासे विष दे देवे क्योंकि यहां बहुधा ऐसी बातें हुआ करती हैं। और मुझसे बहुतसे वैद्योंकी रोजीमें हानि पहुंची थी।' उसने यह भी कहा कि यदि मैं साधारण रूपसे अपनी जीविका चला सकूं और अपने पढ़नेमें लग जाऊं तो वह मेरे लिये बन्दोबस्त कर सकता है। मैं इसपर सहमत हो गया और चिकित्सा करना छोड़कर उसीके घरपर रहने लगा। यदि कोई रोगी बहुत बड़ी बीमारीका आता और मुझे लेजानेके लिये हठ करता तो मैं चला भी जाता था। उससे मुझको दो लाभ हुए कि मेरी पढ़ाई भी ठीक होने लगी और लासाके वैद्योंसे स्पर्द्धा भी न रही।

——:——

बावनवां परिच्छेद



लासामें जापान।

मेरे दिन बड़े आनन्दसे गुज़रने लगे क्योंकि मैंने बहुत रुपया इकट्ठा कर लिया और यदि किसी अन्य वस्तुकी आवश्यकता होती थी तो अर्थसचिव प्रस्तुत कर दिया करता था। मैंने अपने सेरा विहारके कमरेको एक नवयुवककी देखरेखमें कर

दिया और आप अर्थसचिवके यहां चला आया। मैंने उस लड़केको समझा दिया था कि वह किसीसे न कहे कि मैं अर्थ-सचिवके घर चला आया हूं और यह भी कह दिया कि जहांतक हो सके रोगियोंको वह और और वैद्योंके यहां भेजनेका उद्योग करता रहे। मैंने उस लड़केके खाने पीने तथा पढ़नेका भी बन्दो-बन्त कर दिया था। बीच २ में मैं सेरा विहारमें भी जाया करता और तर्कका अध्ययन किया करता था। अर्थसचिवने मुझ-को बहुत अच्छा मकान रहनेके लिये दे रखा था, उसमें भीतोंपर सुन्दर रङ्गीन चित्र और फर्शपर दरी बीछी हुई थी, जिसपर सुन-हरे फूल तिब्बती ढंगपर बिने हुए थे। एक आबनूसकी बनी मेज़ और छोटा सा बुद्धदेवका मन्दिर भी था। सामान सभी पर्याप्त और बहुत साफ सुथरा था। यहां मुझे मेरे गुरू लामा लोग भी बाहर बुलाकर स्वाध्यायमें विघ्न नहीं करते थे। सब प्रकारसे यहां सब भांतिका सुख था। यदि दुःख था तो केवल इतना ही कि यह स्थान सेरा विहारसे कुछ दूर पड़ता था।

सौभाग्यवश मुझे एक गुरू बहुतही अच्छे मिल गये। अर्थ-सचिवके सौतेले भाई थे जिनका नाम टीरिन पोचे था। इनके पिता भी चीनी थे। वह सात ही वर्षकी अवस्थामें पुरोहित हो गये थे। अब उनकी अवस्था ६७ वर्षकी थी। गेनडनकी गद्दीपर दलाई लामाके अतिरिक्त और किसीको बैठनेका अधिकार नहीं था। परन्तु दलाई लामाके ल्हासामें रहनेके कारण यही उस गद्दीपर बैठाये गये। टीरिनपोचेने तीस वर्ष

रहस्यमय शिक्षा पाई थी और डाक्टर पदवी प्राप्त करके इस गद्दीके अधिकारी हुये थे। इस गद्दीको दलाई लामाके अतिरिक्त वह पा सकता था जिसने ५०-६० वर्ष विद्याध्ययन किया हो, परन्तु जातिका कसाई, लुहार, शिकारी या किसी और छोटी जातिका पुरुष विद्वान होकर भी इस पदको नहीं पा सकता था।

इससे प्रत्यक्ष है कि टोरिन पोचे बहुत विद्वान थे। ऐसे विद्वानोंको अपना गुरु बनाकर मैं अपनेको बड़ा सौभाग्यशाली समझने लगा। यह रियायती अधिकार तिब्बतमें प्रायः बहुतोंको नहीं दिया जाता। इसमें जाति-बन्धनकी बड़ी मुख्यता दी जाती है इस कारण ऐसे बड़े पुरुषके साथ वार्तालाप करना भी सर्व-साधारणके लिये बड़ा कठिन है। अस्तु, मुझे इस प्रकारसे तिब्बती बौद्धधर्मके रहस्य जाननेका बड़ा उत्तम अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने मुझे देखते ही पहचान लिया और साफ तो नहीं कहा परन्तु परोक्ष भावसे मुझे जनाया कि यहां मेरे रहनेमें भय है। मुझे भी उससे भय मालूम हुआ। तोभी उसने मुझे विश्वास-पात्र पाया और सच्चे हृदयसे मुझे पढ़ाया। बौद्धधर्मका सच्चा रूप मुझे बतलाया गया। मैं इसके लिये उनका बड़ा कृतज्ञ हूं। बहुतसे विद्वानों, अनुशीलकों, धार्मिक उपदेशकों और सन्यासियोंसे भी जिनके साथ मेरी भेंट हुई थी मैंने उतना ज्ञान ग्रहण न किया था जितना इस महानुभावसे सीखा। यही बौध गुरू थे जिनका प्रभाव भूतपूर्व अर्थसचिवपर भी पड़ा था। उन्हींकी आज्ञासे उसने अपने किये पर बड़ा पश्चात्ताप किया था।

इसकी स्त्री भी कुछ कम न थी। दोनोंने ही पापसे छुटकारा पानेके लिये २० वर्ष पूर्व नैपालके काठमाण्डूनगरकी तीर्थयात्रा की थी। उनकी तीर्थयात्रा तथा तितिक्षाकी कथा सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जैसे जैसे दान-पुण्य उन दोनोंने किये थे उनको जानकर मैं उसको दोषी नहीं मानकर उनसे अधिक सहानुभूति अनुभव करने लगा। उन्होंने मुझे सिखा दिया कि मोहक प्रेमका कितना बल होता है। उसने मुझे इससे बचानेके लिये सावधान कर दिया था। ज्यों ज्यों मेरा परिचय इस परिवारसे बढ़ा मुझे इसके विषयमें और भी अधिक अनुभव होने लगा। मुझे उस परिवारकी दशा और भृत्योंकी अवस्थाका पता लगा और घरकी सब विशेष बातोंका पता लग गया। वर्त्तमान अर्थसचिवसे मिलनेका मुझे बहुत कम अवसर मिला।

इसी बन्धुकी कृपासे मैं वर्त्तमान अर्थसचिवसे मिला जोकि मोमकानके पास ही रहता था। यह बड़ा शान्ति और दृढ़ इच्छाका पुरुष था। उसने भी मुझसे अपने घरका सा सम्बन्ध रखा। वह भी मुझे अपना पुत्र सा समझता था। वह अपनी अर्थसचिवकी कुर्सीपर बैठकर अपनी सरकारका आवश्यक रहस्य भी मेरे सामने खोल देता था। हम दोनों बड़े विश्वास पूर्वक आपसमें बातें किया करते थे। जब कभी कोई गम्भीर बात दर्बारमें उपस्थित होती थी वह पहले अपनी सम्मति नहीं देता था। प्रत्युत अपने मित्र भूतपूर्व अर्थसचिवसे सलाह लेता था। वह उसे अपनेसे बड़ा समझता था। भूतपूर्

सचिव इन विषयोंपर नाना दृष्टियोंसे विवाद कर लेनेके बाद अपनी सम्मति देता था। भूतपूर्व अर्थसचिव और भी ऊंचे धर्मपथपर चला जाता यदि उसका आचारविषयक कलंक बाधक न होता। दोनों सचिव कभी कभी सलाहें करते हुये मुझसे भी सलाह ले लेते थे। इससे तिब्बतकी राजनीतिमें मेरा पर्याप्त प्रवेश हो गया था। तिब्बतकी राजनीतिके विषयमें बहुत कुछ मालूम हो गया। यदि मैं सेरा विहारमें ही पढ़ता रहता तो और लामाओंके तर्कके अतिरिक्त और कुछ भी मालूम न होता। विहारोंमें तो लामा लोग यही जानते हैं कि दलाई लामाके आगे कैसे सिर झुकाना चाहिये। वे शासनके रहस्योंके विषयमें तिलभर भी नहीं जानते। लामाओंसे शासनके सभी रहस्योंको छिपाया जाता था। इन दोनों सचिवोंकी कृपासे मुझको तिब्बतका चीन, इग्लैण्ड, रूस और नेपालके साथ राजनैतिक सम्बन्ध मालूम हो गया।

एक दिन मैं लासाके बाज़ारकी पोर्का गलीमें जा रहा था जहां बहुत सी दूकानें लगी हुई थीं। इधर उधर देखते देखते मुझे एक दूकानपर जापानी दियासलाई दिखलाई पड़ी। और आगे बढ़नेपर जापानी चिकें और कांचके बर्तन भी दिखलाई पड़े। जापानी वस्तुयें देखकर मुझको बड़ा हर्ष हुआ और दूकानोंको विशेष रूपसे देखता हुआ बढ़ने लगा और आगे चलकर मैंने एक दूकानपर बहुत अच्छा साबुन रखा हुआ देखा। मुझको साबुन देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा बढ़िया

साबुन भी तिब्बतमें बिक जाता है। मैं दूकानमें गया और साबुनके दाम पूछे। उसने कुछ उत्तर न दिया और मेरे मुखकी ओर ताकने लगा। मुझे भी ध्यान आया कि ऐसा चेहरा मैंने कहीं देखा है। उसे कदाचित् दार्जिलिंगमें देखा था। मैंने मन ही मन समझ लिया कि सम्भव है दार्जिलिंगवाले सौदागरका यह कोई सम्बन्धी हो परन्तु उससे कुछ न बोला। मुझे निश्चय हो गया था कि यह वही व्यापारी त्सारोङ्गवा है। उसने मुझे न पहचाना, क्योंकि मैं दार्जिलिंगमें जापानी वेषमें रहता था और दाढ़ी मूंछ मुड़ाये रहता था। परन्तु यहां मैं तिब्बती लामाओंके वेषमें था इसके अतिरिक्त मैंने मूंछ दाढ़ी भी बराबर बढ़ा रखी थी। इस कारण वह मुझे बादमें भी न पहचान सका। थोड़ी देर पीछे उसने कहा कि इस साबुनके दाम बहुत हैं और दूसरा साबुन मुझे दिखलाया। मैंने कम दामोंवाला न लेकर उसकी ही दो टिकियां ले लीं और घर चला आया। अर्थसचिवको वह साबुन बहुत पसन्द आया। उसने एक टिकिया मुझसे मांगी परन्तु मैंने उसको दोनों ही दे दीं।

दो दिन पीछे मैं उसी साबुनवालेकी दूकानपर फिर गया और वही साबुन इस भयसे खरीदना चाहा कि कदाचित फिर न मिले। साबुन देनेके बदले वह मेरे मुखकी ओर देखकर मुझसे पूछा कि क्या तुम मुझे पहचानते हो। उसकी बोली सुनकर मैं साफ पहचान लिया कि यह मेरा दार्जिलिंगका मित्र त्सारोंगवा ही है।

मैं हंस पड़ा और बोला—"हां मैं पहचानता हूं।" वह तुरन्त ही उठा और मुझे अपने घर चलनेके लिये कहने लगा। नौकरोंसे दूकान बन्द कर देनेको कहा क्योंकि सन्ध्या समय हो आया था। उसका मकान यद्यपि छोटा था परन्तु साफ सुथरा था। वह मुझे छतपर बैठकमें ले गया। वहां उसकी स्त्री भी मिली जो दार्जिलिंगसे उसके साथ आई थी। मैंने उसको तुरन्त ही पहचान लिया परन्तु वह मुझे न पहचान सकी। उसके स्वामीके कहनेपर भी वह मुझको न पहचान सकी। जब स्वामीने याद दिलायी कि तुम दार्जिलिंगमें बीमार हुई थी तब इन्होंने ही दवा दी थी तब उसको याद आई। याद आते ही वह इतनी प्रसन्न हुई जिसका कुछ ठिकाना नहीं।

उन दोनोंको इस बातसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजधानीमें तिब्बतवासीतक तो घुस नहीं सकते फिर ये दूसरे देशका बासी यहां कैसे पहुंचा। मैंने उनसे कहा कि मैं जगथांगकी राहसे आया हूं तोभी उनको विश्वास नहीं हुआ और कहने लगे कि उस सड़कपर तो कड़ा पहरा रहता है, उस सड़कसे आना असम्भव है। मैंने सब तरह समझाया कि मैं जंगलों पहाड़ोंके रास्तोंसे होकर आया हूं परन्तु उन दोनोंको तिसपर भी विश्वास न आया। अब मुझे बड़ी विपद्का सामना आ पड़ा कि इन दोनोंके सामने मैंने अपना भेद प्रगट कर दिया। यदि इन्होंने किसीसे कह दिया तो अर्थसचिवकी असीम कृपायें और बिहारके लामाओंकी दयालुता सब मनोमोदक हो जायंगे।

यदि इस सौदागरने लोभवश मुझे पकड़वा दिया तो सब परिश्रम व्यर्थ जावेगा।

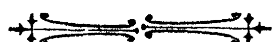
सोचते २ मैंने एक युक्ति निकाली। मैंने गम्भीर भावसे उनकी आंखोंपर तीव्र दृष्टिसे देखते हुए उनसे कहा कि मैं तुम्हें एक लाभकी बात सुनाता हूं कि तुम मुझे पकड़कर सरकारमें ले जावो और कह दो कि यह जापानी लामा तिब्बती वेषमें छिपा पाया गया है। मैं यदि आपही जाकर कहूंगा तो कोई मेरा विश्वास नहीं करेगा और यदि तुम यह काम करो तो मुझे यह कष्ट उठाना न पड़ेगा और अधिकारी लोग विश्वास कर लेगें। इसके अतिरिक्त तुम्हें बहुत कुछ द्रव्य भी इनाम मिलेगा।

मेरे शब्द सुनते ही स्त्रीके मुखपर जर्दी आ गई और कांपने लगी। मैंने दोनोंके मुखोंपर प्रगट हुए विकारोंपर दृष्टि की परन्तु मुझे मालूम हो गया कि इन दोनोंमेंसे किसीको भी ऐसी इच्छा नहीं है कि मुझे पकड़वा दे जैसा कि मैंने अनुमान किया था। सौदागरने बुद्धदेवके मन्दिरकी ओर हाथ उठाकर कहा— "चोहो रिन योचे, मैं ऐसा धोका कभी नहीं दे सकता चाहे प्राण जायं।" इस शपथको सुनकर उसकी स्त्री भी कांप गई। मुझे भी उनकी सत्यतापर विश्वास हो गया। यही शपथ सबसे पक्की समझी जाती है। यद्यपि यह बात सत्य है कि तिब्बतके लोग शपथ बहुत खाया करते हैं और उनके साथमें रहनेसे मुझे भी ४०-५० शपथें याद हो गई थीं परन्तु उन सब शपथोंसे यह "चोहो रिन योचे" बहुत कड़ी शपथ है और उस सौदागरने ऐसे

भावसे यह शपथ खाई थी कि मुझे उसपर पूरा विश्वास हो गया कि यह मेरे साथ धोखा न करेगा।

चलते समय उन्होंने मेरा ठिकाना पूछा। जब मैंने कहा कि मैं सेराका वैद्य हो गया हूं तो वह बड़े प्रसन्न हुए। उनको बड़ा विस्मय हुआ कि मैं ऐसी उच्च पदवीपर कैसे पहुंच गया। उनको इस बातका गर्व भी हुआ कि लासाके ऐसे उच्च पदाधिकारीसे उनकी मित्रता है। तबसे मैं बहुधा उनके यहां जाता रहा और जब कभी जाता अच्छार मित्रकी भांति उनको भी कुछ न कुछ भेंट अवश्य दे आता था।

तिरपनवां परिच्छेद



तिब्बतके छात्र।

तिब्बतमें तीन विद्यालय हैं परन्तु इन तीनोंमें केवल तिब्बत-वासी ही नहीं पढ़ते हैं और लोग भी पढ़ते हैं। सबसे अधिक संख्या मंगोलोंकी होती है। इससे कम तिब्बतवालोंकी और सबसे कम खामलोगोंकी होती है। इन तीनों स्थानोंके छात्रोंकी रहन सहन रीति नीति एककी दूसरेसे पृथक् पृथक् है। तिब्बतके छात्र शान्त, शिष्ट और बुद्धिमान होते हैं। परन्तु श्रमकी दृष्टिसे बड़े आलसी हैं। मैले रहनेका अभ्यास भी उनमें उनके इस जातीय आदत आलस्यके कारण ही है। जाड़ेके दिनोंमें तिब्बतका साधारण विद्यार्थी या तो अपनी धर्मपुस्तकका पाठ करता है

अथवा रसोईघरमें चाय और रोटीके लिये चक्कर लगाता है। गर्मीके दिनोंमें वह अपनी कोठरीके सामने बैठकर धूप सेंकनेके अतिरिक्त कुछ नहीं करता।

वह उनके एक मैले टुकड़ेको जिससे वह अपनी नाक साफ़ किया करता है, सिरपर रखकर उंघते उंघते सुखाया करता है। इससे अधिक और उसके आलस्यका क्या प्रमाण होगा। किसी बूढ़े मनुष्यके लिये यह कोई बड़ा दोष नहीं है परन्तु बहुतसे युवा पुरुष भी इस भांति बैठे रहा करते हैं। तिब्बतवासी कितने आलसी होते हैं यूरोपवासी इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

परन्तु मंगोलियन ऐसे नहीं होते। उनको कभी किसीने आलस्य करते न देखा होगा। वह लोग विद्याध्ययनमें बड़ा परिश्रम करते हैं क्योंकि वह समझते हैं कि वह दूर देशसे विद्याभ्यासके लिये ही आये हैं। मंगोलियन विद्यार्थियोंमें पांच सौमें चार सौ विद्यार्थी अच्छे व्युत्पन्न होते हैं। परन्तु तिब्बतमें पांच सौमें साढ़े चार सौ किसी कामके नहीं होते हैं। हां, योद्धा लामा प्रायः तिब्बती ही हुआ करते हैं।

मंगोलियन और खामवालोंकी इनमें गिनती बहुत कम है। मंगोलियनोंमें भी एक दोष होता है कि वे लोग बड़ी जल्दी क्रुद्ध हो जाते हैं। तनिक सी बातपर वे आपेसे बाहर हो जाते हैं। यह लोग अहंकारी भी बहुत होते हैं क्योंकि वे स्वयं जानते हैं कि वे स्वयं श्रमी और लगनवाले हैं और आचार्यकी पदवी

उनमेंसेही बहुधा पाया करते हैं। यद्यपि ये लोग सर्व गुण-सम्पन्न होते हैं परन्तु इस अहंकारके कारण उनका हृदय संकुचित हो जाया करता है। चंगेज़खांकी भांति इन लोगोंमेंसे प्रत्येक विद्यार्थी एक उत्साही नेता बननेका साहस करता है। इनका उत्साह शीघ्रही उठकर शीघ्र ही ठण्ढा हो जाता है अतएव ये कोई बड़ा काम नहीं कर सकते हैं और स्थिरता और धीरता-से अपने देशकी उन्नति नहीं कर सकते।

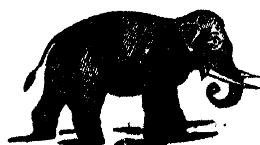
खामवासी इस विषयमें मंगोलियावासी और तिब्बतवासी दोनोंहीसे नम्बर ले गये हैं। यद्यपि इनका देश चोरों और लुटेरोंका गढ़ समझा जाता है परन्तु वे लोग सहजमें ही आपेसे बाहर नहीं हो जाते। वे धीर और विवेकी होते हैं। ये लोग शरीरमें भी दोनों जातियोंसे बलवान होते हैं। ये लोग वीर, सत्यवादी और खुशामदके बड़े द्वेषी होते हैं। सेरा विहारमें रहकर मुझे यही मालूम हुआ कि खामके विद्यार्थी अधिक सरलस्वभाव और विश्वासी होते हैं। मंगोलियनको जब किसी व्यक्तिसे कुछ वस्तु लेनी होगी तो वह इतनी खुशामद करेगा कि जिसकी सीमा नहीं। यह बुराई तिब्बतवालोंमें उनसे भी बढ़कर है। परन्तु खामवाले ऐसे मनुष्योंसे मित्रता ही कभी नहीं करते। खामवासियोंके लिये कहा जाता है कि वहांके डाकू भी यदि आवश्यकता पड़े तो निर्बल, निधर्न और संकटमें पड़ेको बहुत कुछ सहायता करते हैं। खामलोगोंकी स्त्रियां और बच्चे भी मनुष्योंकी उदासतामें भी बड़ी सहानुभूति प्रगट करते

हैं। उनकी पोशाक कोई सुन्दर नहीं होती और न उनका कोई रूप ही अधिक मनोहर होता है। पर तिब्बती स्त्रियां अपने पतियों, भाइयों और पिताओंके समान ही बाहरसे भोली भाली मनोहर होकर भी दिलमें क्रूर और छल कपटसे भरी होती हैं। तिब्बती लामाओंके विद्याभ्यासका एकमात्र उद्देश्य खूब रुपया कमाना और अपने संकुचित क्षेत्रमें प्रसिद्धि पाना होता है। सत्यकी खोज, धार्मिक तपस्या, स्वयं मुक्त होने तथा दूसरोंको दुःखोंसे छुड़ानेके लिये ज्ञान प्राप्त करनेका विचार उनके चित्तमें तिलभर भी नहीं होता। उनका सारा विद्याभ्यास, प्रसिद्धि, रोबदाब और द्रव्यलाभके लिये होता है। वे स्पर्द्धाके संसारमें परिश्रम करनेसे बड़ा घबराते हैं। वे यहां भी आलस्यमें रहकर स्वर्गकासा मजा लेनेमें लगे रहते हैं। एक हजारमें ९९९ को तो अपने भावी जीवनका कोई विचार ही नहीं होता। उनके धार्मिक जीवनमें कुछ भी गम्भीरता नहीं होती। देनेकी अपेक्षा लेना उनका ध्येय है। यही कारण है कि लामा जिनको बड़ा उच्च जीवनका होना चाहिये था, इतने नीच स्वभावके होते हैं।

यदि किसीके पास रुपया है और विद्या नहीं है तो वही सब पद प्रतिष्ठाका भागी है। यह नगदको ही नारायण समझते हैं। वे रुपया जिस भांति भी मिले उसी भांतिका उचित और अनुचित सब काम करनेके लिये तय्यार रहते हैं। बहुतसे व्यापार और खेतीबारी भी किया करते हैं। पुरोहित लोग यजमानोंके घरोंपर जाकर धर्मगाथाएं सुना २ कर दक्षिणा बटोरा करते

हैं। इस देशमें जो छात्र बिना छात्रवृत्ति या अन्य किसी सहायताके उपाधि पानेके लिये श्रम करते हैं उनकी अवस्था बड़ी शोचनीय है।

कालिजकी सर्वोच्च उपाधि पानेमें प्राय: २० वर्ष लगते हैं। इतने दिनोंमें कठिन परिश्रम और दु:ख उठाना पड़ता है। आधे जीवनको केवल इसी आशासे दु:ख सहते हुए काटते हैं कि जीवनका शेष भाग सुखसे कटेगा। सर्वोच्च उपाधि पानेके लिये विहारके सब शिक्षकोंको एक भोज देना पड़ता है। इस भोजमें मांसका शोरवा और रोटी देनी पड़ती है। ऐसा भोज ५०० येनसे कममें नहीं हो सकता है। अवश्य ही किसी दरिद्र पुरुषका इतना रुपया इकट्ठा करना सहज काम नहीं है। परन्तु उपाधि पानेकी लालसा भी थोड़ी नहीं होती है अतएव किसी न किसी भांति इतना रुपया प्राप्त कर ही लेते हैं। धनी लामा जो पहले गरीब विद्यार्थियोंको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं इस अवसरपर सूदके लालचसे बड़ी प्रसन्नतासे उधार देते हैं परन्तु इस उधार लिये हुए रुपयेका चुकाना बादमें और भी कठिन हो जाता है। वास्तवमें यहांका छात्रजीवन बड़ा कठिन है।



चौवनवां परिच्छेद



विवाह और विवाहित जीवन ।

मैं अर्थसचिवके यहां रहा करता था अतएव मुझको और सचिवोंसे मिलनेका भी सौभाग्य प्राप्त होता था। इनमेंसे एक शोखांगवा नामक प्रधानसचिव भी था। तिब्बतमें चार प्रधान सचिव और तीन अर्थसचिव रहा करते हैं। इनमेंसे एक सबका प्रधान हुआ करता है। और वही सब कामोंका उत्तरदाता होता है। शेष सचिव उसके सहायक होकर काम करते हैं। शोखांगवा द्वितीय सचिव था। जब मैं लासामें था तो उसकी पुत्रीका विवाह यूटकके राजकुमारसे हुआ था। इस विवाहमें मैं भी निमन्त्रित था। वहां जो कुछ मैंने देखा उसका वर्णन करनेसे पहले मैं दो चार रीतियोंका तिब्बतके विवाहके विषयमें उल्लेख करता हूं। कोई भी एक सामान्य रीति ऐसी नहीं है जो तिब्बतभरमें समानरूपसे वर्ती जाती हो। देश २ की प्रथा न्यारी है। बहुतसे अंगरेजोंने भी विवाहके विषयमें कई पुस्तकें लिखी हैं परन्तु ऐसा मालूम होता है कि वे लोग लासा तक नहीं पहुंच सके थे। ये तो चीनी तिब्बततक अथवा तिब्बतके उत्तरी सीमाप्रान्तोंतक पहुंचे थे। अतएव उसका

वर्णन ठीक भी हो सकता है परन्तु वह उसी देशका होगा लासाका प्रतीत नहीं होता। इसके अतिरिक्त एक और भी बात है। ऐसे यात्रीको जो केवल यात्रा करते हुए चले जाते हैं उन्हें ऐसी रीतियोंका ज्ञान लेना असम्भव नहीं तो कष्टसाध्य अवश्य है। ये रीतियां पग पगपर बदलतीं हुई चली गई हैं, उनके विषयमें ठीक २ लिखना असम्भव है। परन्तु मैंने जो बातें लिखी हैं वह विवाहोंमें निमन्त्रित होकर और जिनके यहां निमन्त्रित हुआ हूं, उनके घरोंमें एक कुटुम्बीकी भांति रहकर आँखोंसे देख देखकर लिखी हैं।

यह बात बहुत लोग जानते हैं कि तिब्बतमें एक नई रीति यह है कि एक स्वामीकी कई स्त्रियां न होकर एक स्त्रीके कई २ स्वामी भी होते हैं। यह काम तीन तरहसे होता है। एक तो, जब कई भाई एक ही स्त्रीसे विवाह करनेमें राजी हों। दूसरी अवस्था जब दो या तीन मनुष्य चाहे वह भाई न भी हों परन्तु आपसमें सलाह करके एक स्त्रीसे विवाह करनेके लिये राजी हो जांय और तीसरी अवस्थामें स्त्री अपने स्वामीके ऊपर अपना प्रभाव डालकर दूसरे मनुष्योंसे विवाह कर लेनेपर उसको राजी कर लेवे। ऐसी अवस्थामें कि जब एक कुटुम्बकी वृद्ध माँ मर जावे तो चाहे पिता चाहे पुत्र और विवाह कर लेता और वही कुटुम्बभरकी स्त्री हो जाती है। किसी भी सभ्य देशमें ऐसी चाल नहीं है और न वह लोग ऐसे सम्बन्धोंको लज्जाजनक ही समझते हैं। इसपर भी उनके यहां कुछ अपवाद भी हैं, जैसे

सगे भाई बहिनमें और चचेरे भाई बहिनोंमें भी विवाह समाज और कानून दोनों दृष्टियोंसे वर्जित है।

पत्नीके पतिके ऊपर अधिकार भी विचित्र हैं। स्त्रीके जितने स्वामी हैं वह सब रुपया कमाकर स्त्रीको लाकर देंगे। यदि कई स्वामियोंमें कोई स्वामी औरोंसे कम रुपया लाता हो तो स्त्रीको अधिकार है कि वह उसको जैसे चाहे कठोर वचन कह सकती है। जब किसी स्वामीको कुछ रुपयोंकी आवश्यकता होगी तो वह स्त्रीसे उतना रुपया मांग ले और उसे अपना अभिप्राय: भी वैसे ही पूरा पूरा कहे, जैसे पुत्र अपनी मातासे मांगा करता है। यदि स्त्रीको मालूम हो जावे कि उसका अमुक पति अपनी पूरी पूरी कमाई उसे नहीं देता है तो वह क्रोधमें आकर स्वामीको थप्पड़ भी मार देती है। संक्षेपमें स्त्री ही अपने स्वामियोंपर शासन किया करती है।

स्त्री ही अपने पतियोंको दूकानपर जाने अथवा और और कामोंमें लगनेकी आज्ञा दिया करती है। स्वामीका धर्म केवल इतना ही है कि पत्नी जो आज्ञा दे उसीके अनुसार काम करके उसको प्रसन्न रखनेकी चेष्टा सदैव करता रहे। यदि दो अथवा अधिक मनुष्योंमें किसी बातपर विवाद होता है तो वे लोग पहले अपने घर जाते हैं और अपनी स्त्रीसे सलाह लेते हैं, यदि उसे कोई उज़् न हो तो फिर अपना निबटारा करनेके लिये आते हैं। यद्यपि तिब्बतमें सर्वत्र बहुपतित्वकी प्रथा है परन्तु जहां स्वामीका स्त्रीपर वश है वहां एक ही पति भी हो सकता है।

जहांतक मुझे तिब्बतवासियोंके विषयमें ज्ञान है अपने स्वामीको स्त्री स्वयं नहीं बरती। यह काम उसके मातापिताका है, यहांतक कि इस विषयमें सलाह तो क्या वह कोई बात भी नहीं कर सकती। कन्याके मातापिता जिससे विवाह करना चाहें उसके लिये वह इनकार नहीं कर सकती है। केवल इतना ही नहीं है बल्कि जबतक विवाहका दिन नहीं आ जाता कन्याको यह बात किसी भांति प्रगट नहीं होती कि किस पुरुषसे उसका विवाह होनेवाला है। ऐसे ही विवाह प्रायः बादमें टूट जाया करते हैं। कहीं कहींपर दूर देशमें और लासामें भी कन्या भी अपने भावी पतिको पसन्द करके पितासे कह देती है, परन्तु यह रीति वहुत ही कम पाई जाती है।

यहां विवाहसम्बन्धका तोड़ देना भी कोई कठिन काम नहीं है। स्त्री पतिको न चाहे अथवा पति स्त्रीको न चाहे इतने पर ही विवाहसम्बन्ध टूट सकता है। तिब्बतमें चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष बहुधा २० से २५ वर्षतककी वयसमें विवाह हुआ करता है। समवयस्क होनेके सिवा ऐसे विवाह भी हुआ करते हैं जिनमें पुरुषकी वयस स्त्रीसे बहुत बड़ी हो। यदि किसी स्त्रीके पुत्र हो तो उसके पतियोंमेंसे सबसे बड़ा भाई ही उस पुत्रका पिता माना जायगा, शेष भाई चचा माने जायँगे। एक अंगरेज़ने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि ऐसी अवस्थामें बड़ा भाई बड़ा पिता और छोटा भाई छोटा पिता माना जाता है परन्तु यह बात मेरे देखनेमें कहीं भी नहीं आई।

यह काम मातापिताका ही है कि पुत्रके विवाह-योग्य हो जानेपर जाति, पांति, धन और पदमें अपने ही तुल्य कुटुम्बको खोजकर उसका विवाह कर दें। ज्योंही उनको कोई ऐसा घर मिल जाता है त्योंही वरका पिता पुत्रीके मातापिताके पास किसी मनुष्य द्वारा सम्वाद भेजता है कि क्या वह अपनी पुत्रीको उसकी पुत्रवधू बननेके लिये दे सकता है। यदि लड़कीका पिता केवल इनकार करता है तो मध्यस्थ समझ लेता है कि यह काम नहीं होगा और यदि वह कहता है कि 'देखा जावेगा' अथवा ऐसे ही कोई और उत्तर दे देता है तो वह मध्यस्थ बार-म्बार लड़कीके मातापिताके पास जाता है और भांति भांतिसे वह उसके घर और वरकी प्रशंसा करता है। बारम्बार जानेसे पुत्रीका पिता किसी विशेष शर्तपर विवाह करनेको सहमत हो जाता है और किसी ज्योतिषी अथवा किसी उच्चकोटिके लामाके पास जाकर इस विषयमें पूछताछ करता है कि यह विवाह अनिष्टकारक तो नहीं होगा। यह पूछ लेनेपर मध्यस्थको पूरा उत्तर दिया जाता है।

यह सब बातें सगाई हो जानेके बादतक भी वर और कन्या दोनोंसे ही गुप्त रखी जाती हैं। वर और कन्या दोनों विवाहके दिनतक एक दूसरेको नहीं देखते और न किसीको अपने विवाहके विषयमें कुछ मालूम होता है। वे विवाहके दिन ही दोनों एक दूसरेको देख पाते हैं। कुछ लड़केकी ओरसे कोई तय्यारी नहीं होती है। कन्याको अवश्य खूब सजाया जाता है क्योंकि यदि

ऐसा न किया जावे तो कन्यावालेकी बहुत निन्दा होती है। वर-पक्ष कुछ रुपया लड़कीके दूधकी पिलवाईके नामसे कन्या-वालेके पास भेज देता है। इतना हो चुकनेपर वर और बधू दोनोंके ही पिता फिर ज्योतिषीके पास जाकर सब हाल पूछते हैं, उसके पीछे विवाहकी तय्यारियां होती हैं।

विवाहके दिन सवेरे कन्याके मातापिताको मालूम होता है कि मध्यस्थ मनुष्य कब वरके घरसे आवेगा। वे सहसा कन्यासे कहते हैं कि 'आजका दिन बहुत अच्छा है हमारी इच्छा है कि मन्दिरको जावें और तुम भी हमारे साथ चलो। हाथ मुंह धो डालो और अपने बाल गुंधवालो क्योंकि वहां लिंकाकी जेव-नार होगी।' अथवा वे इसी भांतिकी और किसी उत्सवका नाम ले देते हैं। यह सुनकर लड़की बहुत प्रसन्न होती है और अच्छे अच्छे कपड़े पहन लेती है। परन्तु कोई २ लड़की अपनी प्रखर बुद्धिसे मामला समझ लेती है कि उसे अपने घरसे विदा होना होगा अतएव वह रोने धोने भी लगती है।

जो कन्या इस बातसे अनभिज्ञ होती है वह भांति भांतिसे अपना श्रृङ्गार करती है। यद्यपि तिब्बतमें सर्वसाधारण कभी हाथ मुंह नहीं धोते हैं परन्तु धनी मनुष्य नित्य ही सवेरे सोतेसे उठकर हाथ मुंह धोते हैं। जिस भांति वह लोग अपना मुख धोते हैं वह भी मज़ाक ही है। जब वह सोतेसे उठता है तो दासी अथवा दास एक बर्तनमें गरम पानी लाता है। धनी उसमेंसे थोड़ा सा पानी अपनी चुल्लूमें लेकर मुखमें रख लेता

है। थोड़ी देर मुखमें रखनेके बाद उसे फिर हाथमें लेकर उसी पानीसे मुख धोता है। जब मुखमें पानी नहीं रहता है तो हथेलीपर कई बार थूक २ कर उससे ही मुखको साफ किया करता है। बहुतसे चौड़े बर्तनमें भी मुंह धोते हैं परन्तु अधिक प्रचलित रीति यही है।

अबोध कन्यायें अपने मां बापकी आज्ञा सुनते ही बड़ी प्रसन्न होती हैं और हाथ मुंह धोकर अपना श्रृङ्गार करने लगती हैं। वह अपने कंघेसे बाल काढ़कर सूई लगा लेती हैं। इधर माता-पिता नये कंघे, सूई और श्रृङ्गारकी अन्य वस्तुयें उसके पास लाते हैं (यह सामग्री गुप्त भावसे दूल्हाके घरसे आती है जिनको कि मध्यस्थ मनुष्य दे जाता है) और लड़कीसे कहते हैं कि 'बेटी तुम्हारा यह कंघा और सूई इत्यादि बिलकुल पुराने हो गये हैं हम तुम्हारे लिये सब नया सामान और साथ ही बढ़ियां तेल भी शिरके लिये लाये हैं। तुम बहुत ही अच्छी तरहसे श्रृङ्गार कर लो।' जब यह सब हो चुकता है तब मातापिता लड़कीसे कहते हैं कि तुम्हारी अमुक लड़केसे सगाई हो गई है। आज तुम्हारा उससे विवाह होगा। यह एक ऐसी रीति है जो कि लासामें ही नहीं वरन् शिगातुज़ेतकमें प्रचलित है।

परन्तु जो लड़की अपने मातापिताके बिना कहे ही समझ लेती है कि उसका विवाह है वह अपने बाल इत्यादि नहीं सम्भालती वरन् रोने बैठ जाती है और कहती है, "हाय हाय मैं अपना घर नहीं छोड़ना चाहती। मेरे मातापिताने यह काम अच्छा

नहीं किया कि ऐसे पुरुषसे विवाह किया जिसे कि सम्भव है कि मैं नया हूं। इसे मेरा कैसे छुटकारा होगा ?" ऐसा कह कहकर वह बहुत दुःखित होती है और अपने श्रृङ्गारकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं देती। ऐसी अवस्थामें उसकी सहेलियां उसको प्रसन्न करनेकी चेष्टा करती हैं और मातापिताकी आज्ञा माननेको कहती हैं और उसका श्रृङ्गार करनेमें हाथ बंटाती हैं।

इस तय्यारीके हो चुकनेपर धनी मातापिता प्रायः दो सप्ताह तक या कुछ दिन और भी जेवनार किया करते हैं और निर्धन लोग तो केवल दो ही तीन दिनतक करते हैं। इस समयमें कन्या-पक्षके आत्मीय और कुटुम्बी लोग आ आकर कोई रुपया, कोई खाद्य सामग्री और कोई कपड़े इत्यादि मातापिताको भेंट करते हैं। इसकी कोई नियत संख्या नहीं। वे सब प्रायः अपनी हैसियत और सम्बन्धके अनुसार भेंट देते हैं। यदि आत्मीयगण धनी हैं तो बहुत भेंट आ जाती है नहीं तो साधारण ही रहती है। मेहमानोंका चाय और शराबसे आतिथ्य किया जाता है। वे लोग चाय और शराब पेट भर २ कर पीते हैं। इस समयको वे लोग 'चाकंग पेमा' कहते हैं अर्थात् इससे बढ़कर सुखमय जीवन और नहीं है।

जिस समय ये लोग चाय और शराब पीते हैं उस समय वे कुछ नहीं खाते। तीसरे पहरको मांस और रोटी खाते हैं। बहुधा ये लोग याकका मांस खाते हैं, उसके अतिरिक्त बकरी, भेंड़ और सुअरका मांस भी खाते हैं। परन्तु गायका मांस बहुत कम

खाया जाता है और विशेष करके विवाहमें तो कभी भी नहीं खाते हैं। इनके यहां विवाहमें तीन तरहका अर्थात् कच्चा, सूखा, और उबाला हुआ मांस काममें आता है। भूना हुआ कभी काममें नहीं आता है। उबाला हुआ मांस तेल और नमकमें रांध लिया जाता है। कभी २ नमक और पानीमें भी तय्यार किया जाता है। रातको भी मेहमानोंको भोज दिया जाता है। इस प्रकार दिनभरमें ३-४ बार भोज दिया जाता है। इसके अतिरिक्त चाय और मदिरा भी बीच २ में उड़ती रहती है। इस भोजमें पुरुष और स्त्रियां मालाके दानोंकी भांति चक्र बांधकर नाचते रहते हैं। वे बाजेके सुर और तालोंके ऐसे अनुकूल नाचते हैं जैसे बैण्डपर सिपाही लोग कवायद करते हों। इससे उनके सद्भोजोंमें कोई विच्छेद नहीं पड़ता। उनके देखनेमें बड़ा आनन्द आता है। इस नाचमें एक बाजा काममें आता है जिसका नाम उडेमन्यान है।

ये भोज विवाहसे पहले ही हुआ करते हैं जिनको कि निर्धन मनुष्य नहीं किया करते। अस्तु, इनके हो चुकनेपर विवाहके नियत दिनकी सन्ध्याको वरके मातापिता अपने कुछ आदमियों और मध्यस्थको कुछ नौकरोंके साथ कन्याके घर उसको बिदा करा लानेको भेजते हैं। यह लोग अपने साथ कुछ भेंट लाते हैं जिसको कि नूरिन अर्थात् कन्याके धात्री शुल्कके नामसे कन्याके पितामाताको देते हैं। वे लोग उसके लेनेमें पहले बहुत कुछ आनाकानी किया करते हैं और ऐसा ज्ञात होता है

मानों वह उस रुपयेको लेना नहीं चाहते परन्तु कुछ शिष्टाचार दिखलाकर पीछे ले लेते हैं। नूरिनकी कोई बंधी हुई तादाद नहीं है। दो डालरसे पांच सौ डालरतक लड़केवालेकी आर्थिक दशाके अनुसार हुआ करती है। बहुत तो नहीं परन्तु कोई २ इस रुपयेको नहीं भी लेते हैं और कहते हैं कि "हम अपनी ही प्यारी पुत्रीके लिये धात्री शुल्क नहीं चाहते हैं। हम तो केवल इतना ही चाहते हैं कि वह जहां रहे प्रेमसे रहे और अपने कुटुम्बमें भी सुखी रहे।

यह सुनकर मध्यस्थ बधूके पहननेको वरके मां बापकी ओरसे कपड़े, कमरबन्द, चीनी जूते और जो वस्तुयें विवाहके समयमें आवश्यक होती हैं सब देता है। इनको लेनेसे बधू इनकार नहीं कर सकती। यदि वह उसके शरीरपर ठीक न भी हो तो भी उसको पहननी पड़ती हैं। इन वस्तुओंके साथ २ एक बहु-मूल्य रत्न भी दिया जाता है। यह रत्न लासामें प्राय सब ही स्त्रियां मस्तकपर पहना करती हैं। यद्यपि यह रत्न सौभाग्यवती होनेका चिह्न है परन्तु लासामें मैंने देखा कि बहुधा कुमारी कन्यायें भी पहन लेती हैं। शिगात्ज़े और इसके आस पासके नगरोंमें कुवांरी कन्यायें यह रत्न नहीं पहनतीं बल्कि केवल विवाहित स्त्रियां ही इसे शिरके सीमन्त भागपर पहनती हैं जिससे देखनेवालेको ज्ञात हो जाता है कि यह स्त्री विवाहिता है। जब कोई स्वामी अपनी स्त्रीको छोड़ना चाहता है तो राजद्वारमें न जाकर केवल उस स्त्रीके शिरका वह रत्न ही उतार लेता

है। केवल इतनेसे ही पतिपत्नीका सम्बन्ध टूटा हुआ समझा जाता है।

जो वस्तुयें वरकी ओरसे आती हैं उनके सिवा और भी वस्तुयें कन्याको उसके मातापिता देते हैं जिनमें मुख्य ५-६ आभूषण होते हैं। रातको वरके घरके आदमी वहीं रहते हैं और घरवालोंके साथ मदिरा इत्यादि पीते हैं।

इस रातको वरपक्षके मध्यस्थ और और मनुष्योंको सचेत रहना पड़ता है। यदि वे लोग मदिरा पीकर अचेत हो जावें तो लड़कीवालोंका यह धर्म है कि उनकी जो वस्तु पावें चुरा ले जावें। यदि लड़कीवाले इस चुरानेके काममें कृतकार्य हो जाते हैं तो प्रातःकाल जब सब मेहमान एकत्र होते हैं उस समय वह चुराई हुई वस्तु सामने लाई जाती है और कन्यावाले इसका बड़ा गर्व करते हैं। बीस टङ्क तिब्बतके दण्ड स्वरूप लड़केवालोंसे लिये जाते हैं। अतएव वरपक्षके जहांतक बनता है मदिरा नहीं पीते और उनके तकल्लुफ़पर बिलकुल ध्यान नहीं देते हैं। जहांतक हो सकता है खूबही मदिरा पिलाते हैं। पाठक समझ सकते हैं कि ऐसी ऐंचातानीमें कितना कोलाहल होता होगा। परन्तु कोलाहलमें भी कन्यावाले अपनी पुरानी रीतिको हाथसे नहीं जाने देते। यदि कभी रीतिके बाहर कोई काम हो जावे तो उन्हें जन्मभरके लिये लज्जासागरमें डूबना पड़ता है। वरपक्षवाले मदिराके न पीनेके लिये विशेष रूपसे बहाने बनाते हैं। वह कहते हैं कि "चंगसे बढ़कर संसारमें

कोई विष नहीं है। वह वस्तु झगड़ेकी जड़ और ज्ञानका शत्रु है।" इसी भांतिकी और भी बहुत सी बातें उनको अपने बचावके लिये किंवदन्तीके रूपमें कहनी पड़ती हैं। परन्तु पुराने रीति-रिवाजके बाहर कोई बात नहीं होती।

यदि मदिरा पीनेपर खूब नोकझोंक न हो तो सर्वसाधारण समझते हैं कि अभी विवाह ठीक प्रकारसे हुआ ही नहीं।

पचपनवां परिच्छेद

विवाहकी रीतियां।

जिस दिन विवाह होनेवाला होता है उस दिन प्रातःकालको कन्याके घर भोज होता है। उसी समय लामा जो कि बहुधा लाल टोपीवाले कहलाते हैं, बुलाये जाते हैं। उनसे कहा जाता है कि गांवके नामसे और कुटुम्बके देवताओंके नामसे पूजा प्रारम्भ करो। इस पूजाका आशय यह है कि देवताओंसे यह प्रार्थना की जाती है कि आज हमारी लड़की श्वशुरालय जाती है वे हमारी रक्षा करें, किसी प्रकारका विघ्न उपस्थित न होने दें। इसके बदलेमें वे देवताओंको भेंट चढ़ाने और धर्मपुस्तकोंसे स्तुति करनेका प्रण करते हैं। ये सब पूजा पाठकी पद्धतियां लाल टोपीवाले पुरोहितोंके मन्दिरोंमें होती हैं। साथ ही कन्याके गृहमें तिब्बतके प्राचीन धर्मके अनुसार थोन सम्प्रदायके देवता लूई-:गयालयो या नागराजकी पूजा की जाती है। तिब्बती पुराणोंके

अनुसार वह देवता हरएक गृहका देवता समझा जाता है। यह साधारण विश्वास है कि यदि यह देवता रूठ जाय तो घर बारकी सब सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। इसलिये कहीं वह देवता कन्याके साथ न चला जाय और शेष घरको दरिद्र न कर दे इस भयसे वे उस देवताको कन्यासे पृथक् ही रखते हैं। थोन धर्मपुस्तकोंसे जो मन्त्र पढ़े जाते हैं उनका आशय बड़ा मनोरंजक है। वे कहते हैं कि कन्याका पहला वर अधिक सुखसम्पन्न है। नागराजको कन्याके साथ जाना उचित नहीं। यहां रहकर उसे सहस्रों सुख मिलेंगे इत्यादि। तिब्बतमें यह सर्वत्र विश्वास फैला हुआ है कि यदि देवता अप्रसन्न हो जावे तो कुटुम्ब भरका सत्यानाश कर देगा। वह देवता लड़कीके साथ चला जावेगा और कुटुम्बके ऊपर विपद् आ पड़ेगी।

जब भोज समाप्त हो जाता है तो एक लामा जिसे पहलेसे ही उपदेश याद रहते हैं लड़कीको उपदेश देता है। ये उपदेश बहुत ही सरल भाषामें होते हैं। वह उपदेश नीचे लिखे अनुसार हैं:—'जब तुम अपने पतिके घर जावो तो सब लोगोंके ऊपर दया भाव रखो। अपनेसे बड़ोंका कहना मानना अपना कर्त्तव्य समझो। केवल स्वामीके मातापिता ही नहीं वरन् स्वामी और उसके भाई बहनोंसे भी वैसाही भाव रक्खो जैसा तुम अपने भाई बहनोंसे रखती हो। नौकरोंके साथ ऐसा व्यवहार करो मानों वह तुम्हारे पुत्र हैं।' इन उपदेशोंके बीचमें उपदेशक एक कहानी भी सुना देता है जिससे लड़कीके हृदयपर बहुत अच्छा

प्रभाव पड़ता है। जब उपदेशका काम पूरा हो चुकता है तो लड़कीके मातापिता आकर लड़कीके सामने बैठते हैं और आंखोंमें आंसू भरकर वही उपदेश सुनाते हैं। उनके पीछे आत्मीय और कुटुम्बी आते हैं और उच्च स्वरसे रो रोकर वधूके हाथ पकड़कर उपदेश सुनाते हैं। इन रीतियोंके हो चुकनेपर लड़की अपने घरसे विदा हो जाती है। दहेजकी मात्रा कोई नियत नहीं है जो धनी हैं वे अपनी पुत्रीको धन, रत्न और भूमि तक देते हैं और जो धनी नहीं हैं वह कुछ कपड़े ही देकर सन्तुष्ट हो जाते हैं।

जब लड़की विदा होने लगती है तो बड़े उच्च स्वरसे रोने लगती है, उसको घोड़ेपर बैठाना बड़ा ही दुष्कर कार्य हो जाता है। वह भूमिपर गिर पड़ती है और वहांसे न उठनेके लिये यथासाध्य हठ करती है। उस समय उसकी सूरत ऐसी हो जाती है मानों वह अपने मातापितासे अलग होना नहीं चाहती। ऐसी अवस्थामें उसके कुटुम्बी पकड़कर उसे घोड़ेपर बैठा देते हैं। यहांकी स्त्रियां अंग्रेज़ोंकी भांति नहीं चढ़ती हैं। वे जैसे पुरुष चढ़ते हैं वैसे ही चढ़ती हैं। यहां रिकाबें बहुत छोटी होती हैं। पहले पहल जब मैं वहांकी रीतिके अनुसार चढ़ा तो मेरे पैरोंमें थोड़ी ही दूर चलनेपर बहुत पीड़ा होने लगती थी।

जब लड़की घोड़ेपर सवार होकर श्वशुरालयको विदा होती है तो उसके शरीरपर वही वस्त्र होते हैं जो उसके श्वशुरालयसे आते हैं और शिर और हाथोंपरके आभूषण पिताके दिये हुए होते हैं। उसके शिर और मुखपर एक ऊनी कपड़ा

पड़ा रहता है जिसका नाम रिनचेन नानगा है। यह बहुमूल्य कपड़ा मेंड़की ऊनसे बनाया जाता है और उसमें लाल, पीली, काली, हरी और श्वेत धारियां रहती हैं। इस कपड़ेके कारण उसका मुख कोई देख नहीं सकता। एक रेशमी धारीदार कपड़ेकी एक छोटी झंडी पीछे गर्दनपर लगाई जाती है जिससे गर्दन भी ढकी रहती है। यह सौभाग्यकी झण्डी कहलाती है। यह प्रायः १४ इंच लम्बी हुआ करती है।

जब कन्या विदा होती है तो जो विदा करने आते हैं और जो विदा कराकर ले जाते हैं दोनों ही घोड़ोंपर चढ़कर साथ २ जाते हैं। राहमें दोनों ओरसे भोज हुआ करते हैं। यह ज्योनारें तीन एक ओरसे और तीन दूसरी ओरसे दी जाती हैं। दो दो अथवा तीन तीन मीलपर जैसी दूरी हो उसी हिसाबसे दी जाती हैं। अन्तिम भोजके बाद ही बरका घर समीप आ जाता है।

इन ज्योनारोंमें मदिरा बहुत थोड़ी पी जाती है; क्योंकि सब लोग समझते हैं कि हमलोग एक बड़ा भारी काम कर रहे हैं और इसके उत्तरदाता हम ही हैं। हमारा धर्म है कि वह अपने घर आरामसे पहुंच जावे। अतएव कोई किसीको अधिक मदिरा पीनेपर दबाव भी नहीं देता है। निमन्त्रण देनेवालेका धर्म है कि निम्नलिखित पुरुषोंके आगे बहुत ही आदरसे अच्छे अच्छे भोजन रखे और उन्हें खानेको कहे और खानेवालोंका धर्म है कि एकदम भोजनोंपर टूट न पड़ें। ऐसा करनेसे वे गँवार और असभ्य समझे जाते हैं।

जब बहू अपने श्वशुरालयके पास पहुंच जाती है तो कुछ लोग उसके स्वागतके लिये आते हैं। कोई भी यह आशा नहीं करता कि द्वारप्रवेशके समय कोई अड़चन होगी। परन्तु बात सर्वथा विपरीत होती है। जहां वह द्वारपर पहुंचा है कि द्वारके भीतरसे साकल बन्द है। यह रिवाज विदेशियोंकी आंखमें बड़ा अद्भुत लगता है। जो आदमी स्वागतके लिये आते हैं उनमेंसे एक आदमी आटे इत्यादिकी मिली हुई एक तलवार लिये रहता है जिसको तोरमा कहते हैं। इस तोरमाके ऊपर लालरंग चढ़ा होता है। परन्तु जिसके पास यह होती है उसके अतिरिक्त और किसीको मालूम नहीं होता कि तोरमा किसके पास है। यह किसी लामाके हाथसे बनवाई जाती है और मन्त्रसे अभिमन्त्रित होती है। इस मनुष्यका यह काम है कि वधूके साथ बाहरसे जो दुष्ट आत्मायें या छूतकी बीमारियां आ रही हों उनको मार भगावे। ज्योंही वधू आगे बढ़ती हुई उस मनुष्यके पास पहुंचती है त्योंही वह अपनी तोरमाको वधूके मुखपर मारता है। तोरमाके मुखपर लगकर टूटते ही उसके मुखका कपड़ा लाल रङ्गका हो जाता है। वह मनुष्य तोरमा फेंककर ही घरके भीतर भाग जाता है और तुरन्त ही उसके लिये द्वार भी खुल जाता है। ज्यों ही वह भीतर घुसा कि द्वार फिर बन्द हो जाता है। यदि उन लोगोंसे पूछा जाय कि यह रीति क्यों रखी गई है तो उत्तर मिलता है कि लड़की जब अपने घरसे विदा होती है तो उसके

घरके और गांवके देवता उसका साथ छोड़ देते हैं। राहमें जब उसकी रक्षाके लिये कोई देवता नहीं रहता है तो बाहरके भूत प्रेत और छूतकी बीमारियां उसके साथ हो जाती हैं। यदि ऐसी ही अवस्थामें वधू घरमें चली जावे तो भूत प्रेत इत्यादि घरमें जाकर नव दम्पतिको हानि पहुंचावें इसीलिये, तोरमाका प्रयोग किया जाता है।

फिर तोरमा फेंकनेवाला मनुष्य तोरमा फेंककर घरके भीतर क्यों भाग जाता है? और घरका द्वार फिर क्यों बन्द किया जाता है? यह इसलिये कि तोरमा फेंकनेके बाद कन्या-पक्षके लोग जो उसके साथ आते हैं वरपक्षके उन लोगोंको पकड़ते हैं जो घरके बाहर रह जाते हैं। जितने मनुष्योंको कन्यापक्षके पकड़ लेते हैं उन सबसे २ टंका प्रति मनुष्य दण्ड लेते हैं। इसी भयसे वह घरके भीतर भाग जाता है कि कहीं वह न पकड़ जावे। जब वह पुरुष घरके भीतर पहुंच जाता है तो भीतर वाले जोकि वधूके आनेकी राह देख रहे थे लड़कीके साथ आनेवालोंसे कहते हैं कि हमको शेया गाकर सुनाओ तब हम वधूको भीतर घुसने देंगे। (शेयामें कुछ थोड़ेसे अच्छे २ शब्द और घरवालोंकी प्रशंसा कही जाती है) कन्यापक्षके पुरुषोंमें जिसका काम शेया सुनानेका होता है वह उत्तर देता है कि हम शेया कहना तो चाहते हैं परन्तु आता नहीं है इससे नहीं कह सकते हैं। यह सुनकर घरके भीतरवाला पुरुष थोड़ा किवाड़ खोलकर उसमेंसे काता दिखाता है और कहता है कि

काता यह है और यह कहकर शीघ्र ही उसे छिपा लेता है। काता एक प्रकारका रेशमका रूमाल होता है। इस काताको छुपानेका कारण यह है कि यदि उस काताको वधूकी ओरका कोई पकड़ ले तो घरके भीतरवाले मनुष्यको पकड़नेवालेको २० टंका दण्ड देना पड़े। इसीलिये काताको शीघ्र ही छुपा लिया जाता है। काताको देख लेनेपर शेया कहनेवाला पुरुष इस भांति शेया आरम्भ करता है—"यह उस भवनका द्वार है, हीरे मोती आदि बहुमूल्य पदार्थ भरे पड़े हैं। जहां सोनेके खम्भे और चांदीके द्वार हैं। इसके भीतर एक पूजाभवन है और एक महल बना हुआ है जिसमें ऐसे मनुष्य रहते हैं जो गुणमें देवताओंके समान हैं।" इस शेयाकी समाप्तिपर द्वार खुल जाता है।

यहांपर यह कह देना भी आवश्यक है कि जब वधू किसी गांवमें होकर निकलती है तो गांववाले उसको पकड़कर अपने घर ले जाते हैं कि उसके साथके भूतप्रेतादिक उस गांवको और उसकी खेतीको हानि पहुंचावेंगे। अतएव उसके साथी जब उस हानिके बदलेमें कुछ रुपया दे देते हैं तब वधूको छोड़ देते हैं। परन्तु जहांतक मैंने देखा है नगरोंमें यह रीति प्रचलित नहीं है। दूर दूर गांवोंमें ऐसा अवश्य होता है और यह रीति भी प्रायः तभी देखनेमें आती है जब कन्यावाले पड़ोसवालोंसे अधिक परिचित नहीं होते।

जब घरका द्वार खुलता है तो वरकी माता थोड़ा दही

और चेमा (एक प्रकारका हलवा) लेकर बाहर आती है और उसमेंसे थोड़ा थोड़ा सबको दिया जाता है। यह भोग सबके हथेलीपर दिया जाता है और तुरन्त खा लिया जाता है। इसके बाद सब लोगोंको घरमें ले जाती है और वहां सब लोगोंको भोज दिया जाता है। इसी समय प्राचीन सम्प्रदायका लामा बुलाया जाता है और देवताओंको और ग्रामवालोंको भी सम्वाद पहुंचा देता है कि एक वधू घरमें और आगई है। देवताओंसे प्रार्थना करता है कि इसकी रक्षाका भार भी वह अपने ऊपर ले लें।

इस रीतिके हो चुकनेपर दुलहेके मातापिता वधूके प्रत्येक साथीको एक एक काता देते हैं। तत्पश्चात् फिर भोज होता है। यह भोज कमसे कम २-३ दिन और अधिकसे अधिक महीनेभर चलता है। इसी अवसरपर सम्बन्धी लोग अपनी अपनी भेंटें भी लाकर देते हैं। यदि धनी घरकी कन्या है तो वह अपने घरके एक दो नौकर सदैव ही अपने साथ रख लेती है। कन्यापक्षके लोगोंके चले जानेके पीछे एक महीने अथवा एक वर्षके पीछे वधू अपने मयके जाती है। उसके साथ पति भी जाता है और कुछ दिन वहां रहकर अपने घर लौट आता है। एक या तीन मासके बाद जिस दिन श्वशुरालय लौटना है उसका स्वामी आकर उसको फिर ले आता है।

यदि पतिके कोई भाई हुआ तो नव वधूका छः महीनेसे १२ महीनेतकके बीचमें उससे भी विवाह कर दिया जाता है।

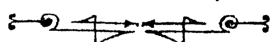
यह विवाह पतिके घर ही पर बिना धूमधामके हो हो जाया करता है। इसमें मध्यस्थका काम वरकी माता ही करती है। बड़ा भाई जिससे पहले विवाह हुआ है जब किसी प्रयोजनसे कहीं बाहर चला जाता है उस समय यह विवाह किया जाता है। यदि भाईके तीन चार भाई भी हों तब भी कोई कठिनता नहीं होती है। प्रत्येक भाईका भो उससे इसी भांति बारी बारीसे विवाह हो जाता है। कभी २ स्वामीके भाइयोंसे बिना कुछ रीति रस्मके ही विवाह हो जाते हैं।

तिब्बतमें बहुपतित्वकी रीति इस प्रकारकी है। इसी रीति-को सासूम कहा जाता है। जब किसी स्त्रीके कई पति होते हैं तो बहुधा देखा गया है कि घरपर सब इकट्ठे नहीं रहते। अपनी २ बारीपर प्रत्येक भाई घरपर उपस्थित रहा करता है।

अबतक भी वहां वह बहुपतित्वकी रीति बराबर जारी है। यदि वहांका कोई व्यापारी बाहर जावे और लोग वहांकी इस रीतिपर उपहास करें तो वह उन्हें झूठा समझकर, उनकी उपेक्षा कर देता है और उत्तर देता है कि, 'लक-सूमिण्डू' अर्थात् वहां ऐसी रीति नहीं है। यह रीति उस समयकी चली हुई है जब वहां वोन धर्म प्रचलित था। यद्यपि अब वहां बौद्धधर्मका प्रचार है परन्तु वे लोग बौद्ध धर्मको कर्तव्य व्यवहारोंमें नहीं लाते और न उस धर्मके सिद्धान्तोंको अधिक स्पष्टरूपसे जगतमें फैलानेका उद्योग करते हैं। इसीसे वहां ऐसी घृणित रीति चली आ रही है। यह दोष वहांके लामा-

ओंका है जो कि ऐसी रीतियोंके प्रचलित रहनेके लिये उत्सा-हित किया करते हैं न कि बौद्धधर्मका।

छपनवां परिच्छेद



तिब्बतमें राजदण्ड

अक्टूबरके आरम्भमें एक दिन मैं घरसे निकलकर बाजारकी ओर चला। पारकर लासाका एक प्रसिद्ध बाजार है। यहांपर अपराधियोंको सर्वसाधारणके समक्ष दण्ड दिया जाता है और यहां भांति भांतिसे दण्ड दिया जाता है। किसीके हाथोंमें हथकड़ी हैं। किसीके पैरोंमें बेड़ी हैं। किसीके हथकड़ी और बेड़ी दोनों ही रहती हैं। उस दिन मैंने प्रायः २० अपराधी देखे। कई खम्भोंसे बंधे हुए थे और किसीके बेड़ियां पड़ी हुई थीं। यह सब अच्छे कपड़े पहने हुए थे और उनकी गर्दनोंमें लकड़ीका एक एक तख्ता पड़ा हुआ था जो तीन तीन फीट लम्बा चौड़ा और १-५ इंच मोटा था। इस तख्तेके बीचमें गर्दनकी मुटाईके बराबर एक छेद था। उसके दो टुकड़े होते हैं जिन्हें गर्दनमें पहनाकर तालेसे बन्द कर दिया जाता है। इसके साथ एक कागज लटकता रहता है जिसपर अपराधीके अपराध और नियत दण्डका सब विवरण लिखा रहता है। कोड़ोंकी तादाद तीन सौसे सात सौ तक हुआ करती है। यद्यपि मेरी

इच्छा बहुत थी कि सब लोगोंके अपराध-विवरण पढ़ लूं परन्तु बहुतसे लोगोंको दण्ड मिले थे। दो तीन अपराधियोंके कागज मैं पढ़ सका। मुझे मालूम हुआ कि यह अपराधी टंगेलिंग विहारके हैं। यदि दलाई लामा मर जावे तो इसी विहारके लामाको वह गद्दी दी जाती है। इस विहारकी पदवी बहुत ऊंची है और यहां लामा भी बहुत रहा करते हैं।

लासामें मेरे पहुंचनेसे कुछ पहले टेमोरिनयोचे नामक एक लामा वहांका प्रधान बनाया गया था। उसके नीचे नारपूचे-रिंग नामक लामा था। उसके ऊपर यह अपराध लगाया गया था कि उसने भूत प्रेतोंकी सहायतासे दलाई लामाको अभिचार क्रियासे मारनेकी चेष्टा की थी। अभिचार भी बौद्ध-मन्त्रसे नहीं प्रत्युत् वोन धर्मके अनुसार किया था। उसने एक कागजपर कुछ मंत्र लिखकर दलाई लामाके जूतोंकी एड़ीमें छुपा दिया था। यह जूते दलाई लामाको भेंटमें दिये गये थे। इस मंत्रका वह प्रभाव था कि जब जब दलाई लामा उस जूतेको पहनते तो अवश्य किसी न किसी रोगसे पीड़ित हो जाते थे। परन्तु भाग्य-वश दलाई लामाके एक नौकरने जूतीमें लगे इस कागजका पता लगा लिया था।

इस षड्यन्त्रमें बहुतसे लोग पकड़े गये। टेमोरिनयोचे महाशय उस षड्यन्त्रके मुखिया समझे जाकर पकड़े गये। उनके ऊपर यह दोष लगाया गया था कि दलाई लामाको इस प्रकार मारकर उनके पदपर वे स्वयं गद्दीपर बैठना चाहते

थे। उसने नारपूचेरिंगको जो कि उनका प्रधान मन्त्री था, ऐसा दुष्ट कार्य करनेके लिये उत्साहित किया था। इसके अतिरिक्त नारपूचेरिंगने और बहुतसे निरपराध मनुष्योंको बड़ी बेरहमीसे मारा था। उसके शत्रुओंने इस अवसरपर दिल खोल-कर उसके अत्याचारोंको खूब पोल खोल दी। इस कारण वे दोनों कैद कर दिये गये।

यह घटना मेरे लासा पहुंचनेसे पहलेकी है। जब मैं लासा पहुंचा तो टेमोरिनयोचे मर चुका था और नारपूचेरिंग अभी तक कैदमें कठिन दण्ड भोग रहा था। बन्दीगृहके छतमें ही केवल एक छिद्र था। इसमेंसे कैदीको भोजन पहुंचाया जाता था और उसमेंसे बीच बीचमें उसकी परीक्षाके निमित्त बाहर निकाला जाता और बड़ी यन्त्रणा दे देकर अपराध स्वीकार कराया जाता था। भाग निकलनेकी आशा तो दुराशामात्र थी परन्तु समय समयपर उसको सूर्यके दर्शन भी कराये जाते थे। उस दिन उसकी यन्त्रणाका ठिकाना नहीं रहता था। उस दारुण दुःखको सुनने मात्रसे मेरा हृदय कांप जाता था। नारपूचेरिंगके नाखूनोंमें बांसकी पच्चरियां ठोकी जाती थीं। जब पच्चरें ठोकते २ नाखून निकल जाता था तो उसके चमड़े और मांसमें डंडियां ठोकते थे। एक समयमें एक ही उंगलीके नखकी यह दुर्गति की जाती थी। इसी भांति उसकी दसों उंगलियां फोड़ दी गई थीं।

अभागा नारपूचेरिंग अभीतक इन कष्टोंको सहता चला

आता था और किसी भांति अपने साथियोंके नाम बतलानेपर राजी न था। वह कहता था कि मैंने ही यह सब काम किया है। मेरे स्वामीका इस विषयमें कुछ सम्बन्ध नहीं था। इधर टेमोरिनयोचे कहता था कि उसने मेरे ही कहनेसे ऐसा काम किया है इसमें नरपूचेरिंगका कोई दोष नहीं है।

जब मैं लासा पहुंचा, उस समय नरपूचेरिंगको बन्दीगृहमें दो वर्ष हो चुके थे। इतने दिनोंमें उसके मुखसे उसके स्वामीकी बुराईमें एक शब्द भी कोई न पूछ सका था। इससे यही जाना जाता है कि टेमोरिनयोचे इस काममें नहीं था। यह दोनों सगे भाई थे अतएव एक दूसरेको बचानेकी चेष्टामें लगे हुए थे। कुछ भी हो जिस समय मैंने नरपूचेरिंगके कष्टके विषयमें सुना तो मुझे उसकी इस दशापर बड़ी दया आई।

उस दिन जो अपराधी मैंने देखे थे वे सब नरपूचेरिंगके अधीनस्थ ही थे। उनके अतिरिक्त १६ वोन धर्मके पुरोहितोंको प्राणदण्ड हुआ था। और न जाने कितने लोगोंको इस अपराधमें देशसे निकाल दिया गया था। मैंने जो लोग देखे थे उनके अपराध ऐसे गुरुतर नहीं थे। अतएव किसीको देशनिकाला और किसीको तीन सौसे ५०० तक कोड़ोंका दण्ड मिला था। इन हलके अपराधोंके अपराधी भी तीनसे सात दिनतक कैदमें रखे जाते हैं। मुझे इन लोगोंके देखनेसे बड़ा ही दुःख हुआ। इन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि मानों मैं नरकोंका दृश्य देख रहा हूं। इन निःसहाय गरीब दुःखियोंको देखकर मेरा

दिल फटता था। ऐसे शोकजनक दृश्यको देखनेके बाद मैं आगे बढ़ा। थोड़ी ही दूर आगे गया होऊंगा कि मैंने देखा कि बुद्धमन्दिरके पश्चिमकी ओर एक सुन्दर महिला काठमें फंसी है। एक लाल रंगका भूटानी रेशमी कपड़ा उसके शिरपर पड़ा हुआ था जिसको वह काठके बहुत बड़ा होनेके कारण यथेच्छ इधर उधर हटा नहीं सकती थी। उसकी आंखें बन्द थीं। तीन पुलिसके कानेस्टिबल उसके पास खड़े हुए थे। कुछ रोटियां और बढ़िया भोजन उसके पास ही रक्खा हुआ था जो कि उसके कुटुम्बियोंने भेजा होगा। यह भोजन उसको पुलिसके सिपाहियोंके हाथोंसे ही खाना पड़ता था क्योंकि उसके हाथोंमें हथकड़ियां पड़ी हुई थीं। यह सुन्दरी उसी नारपूचेरिङ्गकी पत्नी थी। यह तिब्बतके प्रधान लामाओंके प्राचीन घरानेकी थी।

पहले जब नारपूचेरिङ्ग कैद हुआ था उस समय वह साधारण रूपसे कैद था। उसको कोई यन्त्रणा नहीं दी जाती थी। परन्तु उसकी पत्नीने जेलरको रिश्वत देकर मिला लिया और अपने स्वामीके पास आने जाने लगी। यह समाचार उच्चपदाधिकारियोंको मिल गया। अतएव वह भी बन्दीगृहमें डाली गई।

जिस दिन मैं उस स्थानपर पहुंचा था उसी दिन वह बाहर निकाली गई थी। बाहर निकालनेका यह आशय नहीं था कि छोड़ दी जावेगी, वरं तीन सौ कोड़े लगाये जानेकी आज्ञा हुई थी। कोड़े लगानेके पश्चात् सर्वसाधारणके समक्ष अपमान करनेका विचार था।

जिस समय मैंने देखा उस समय वह बेचारी प्रायः अचेत थी। उसका मुख पीला पड़ चुका था। फिर भी बहुतसे लोग बड़ी उदासीनतासे देख रहे थे। उनके दिलमें वहां पहुंचकर सहानुभूति प्रगट करनेतकका विचार नहीं उठता था। मैंने सुना था कि वहां धनी लोगोंने दण्डाज्ञाको ऊंचे २ पढ़ा। उसमें इतने कोड़े लगाने और सात दिनके लिये काठमें ठोंककर अपमानित करने और अन्तमें किसी दूरदेशमें कालेपानी भेजकर भी उसे बेड़ियोंमें जकड़े रखनेका दण्ड दिलाया था। बहुतसे दर्शक उस महिलापर ठट्ठातक उड़ा रहे थे और कहते थे "इनकी खूब गत बनाओ—इन्होंने जो दूसरोंको बड़ा कष्ट दिया था उसीका यह फल है।"

इन हृदयहीन लोगोंके दुष्ट हृदयका वर्णन करना असम्भव है। नारपूचेरिङ्के वंशपर आई इस विपत्तिपर खुश होनेवाले वे ही लोग थे जो नारपूवंशकी समृद्धदशामें उनका कृपापात्र बननेके लिये स्पर्द्धालु थे। ये पशुहृदय पुरुष इस दया-धर्मको समझ ही नहीं सकते थे जो हमें यह सिखाता है "पापसे घृणा करो और पापीपर दया करो।" फिर भी उनको मनुष्य समझकर उनसे हमदर्दीकी आशा की जा सकती थी। पर उनकी ऐसी निर्लज्जताके दारुण व्यवहारको देखकर मैं इस परिणामपर पहुंचा कि यहां तिब्बतमें राजनैतिक फूट इतनी पराकाष्ठातक है कि निर्दोष महिलाओंपर तक घोर अत्याचार हो सकता है। मुझे इस नारचू महिलाके लिये बड़ा दुःख था।

जब मैं घर पहुंचा तो जो कुछ देखा था अर्थसचिवको कह सुनाया। उसको भी उस स्त्रीकी दुरवस्था सुनकर बहुत दुःख हुआ। उसने कहा कि एक दिन वह था कि नारपूचेरिंग और उसकी स्त्रीकी बुराईके विषयमें कोई एक शब्द भी मुखसे निकालनेका साहस नहीं करता था। यह अवश्य है कि नारपूचेरिंगमें दो एक अवगुण अवश्य थे परन्तु टेमोरिन पोचे बड़ी साधुप्रकृतिका मनुष्य था। वह नितान्त निरपराध होनेपर भी अपने नौकरोंके षड्यन्त्रसे आपत्तिमें फंसा। यह सब बातें मैं आपसे गुप्तरूपसे कहता हूं। तिब्बतमें बड़ी राक्षसी निष्ठुरतासे दण्ड दिया जाता है। उसका वर्णन करना असाध्य है।

नाखूनोंमें बांसके पच्चरें ठोकनेके विषयमें मैं पहले कह आया हूं। अपराधीके शिरपर शिलाओंका बोझ रख देते हैं। शिलाएं एक एक करके रखी जाती हैं और कष्टकी सीमा नहीं रहती। पहले तो उसकी आंखोंसे पानी निकलना आरम्भ होता है। पीछे एक २ शिलाओंका बोझ बहुत बढ़ जानेसे उसकी आंखें निकल पड़ती हैं। यों तो कोड़ोंका दण्ड साधारण दण्ड है परन्तु वहां विलो वृक्षकी हरी लकड़ीसे अपराधी पीटा जाता है। यह लकड़ी नंगे शरीरमें घुस जाती है और शरीर क्षतविक्षत होकर रुधिरकी नदियां बह निकलती हैं। यह दृश्य कैसा भयानक है। जबतक कोड़ोंकी पूरी गिनती न हो जावे कोड़े निरन्तर लगते ही रहते हैं। कभी २ यन्त्रणाको और भी कठोर करनेके लिये कोड़ा मारना थोड़ी देरके लिए बन्द करा दिया जाता है। अपराधीको

थोड़ा पानी पिलाकर फिर कोड़ा लगाना आरम्भ किया जाता है। इस दण्डके दश अपराधियोंमेंसे नौ तो अवश्य ही मरणोन्मुख हो जाते हैं। ऐसे बहुतसे घायल अपराधी चिकित्साके लिए मेरे हाथमें आये। उनके घाव देखकर बड़ा रोमाञ्च हो जाता है।

सभी जेलखाने देखनेमें बड़े भयानक हैं परन्तु तिब्बतके जेलखाने तो बहुत ही भयानक हैं। अच्छे २ जेलखाने भी मिट्टीकी चहारदीवारीसे घिरे होते हैं। लकड़ीका नीचे फर्श होता है। दोपहर दिनको भी उसके भीतर उजेला नहीं पहुंचता। ऐसे ठण्डे देशमें मकानके भीतर धूपका न पहुंचने देना ही एक दारुण दण्ड है।

यहांके कैदियोंको एक बार दो मुट्ठी अन्न भोजन मिलता है। इससे पेट भरना असम्भव है। अतएव कैदी अपने मित्रोंसे भोजन मंगानेकी चेष्टा किया करते हैं। परन्तु जो वस्तु बाहरसे भेजी जाती है वह पूरी २ वहां नहीं पहुंच सकती। क्योंकि आधीसे अधिक तो जेलर अपने गलेके नीचे उतार देते हैं।

सबसे साधारण दण्ड जुर्माना है। उससे बढ़कर कोड़ोंका लगाना, आंखोंका निकालना और हाथोंका काट लेना है। पहले हाथोंको खूब कसकर बांध दिया जाता है। इस भांति २४ घण्टे बँधे रहनेसे वह भाग चेतना रहित हो जाता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जिसके हाथ काटने होते हैं उसको कलाइयोंमें रस्सी बांधकर उसे वृक्षोंमें लटका दिया जाता है

और बाजारू लड़कोंसे कह दिया जाता है कि इसको पकड़ २ कर खींचो। ऐसा करनेसे हाथ कलाईसे टूट जाते हैं। यह दण्ड बहुधा उन चोरों और डाकुओंको दिया जाता है जो कि ५-६ बार उसी दोषमें पकड़े जाते हैं। लासामें ऐसे फकीर बहुत हैं जिनके हाथ कटे हैं और आंखें फूट गई हैं। वहां ऐसे अन्धोंकी ही अधिक संख्या है।

इनके अतिरिक्त और भी दण्ड हैं जिनमें कान काट लेना और नाक काट लेना बड़े रोमांचकारी हैं। यह दण्ड उन स्त्री पुरुषोंको मिला करता है जो चाल चलनके अच्छे नहीं होते। यह दण्ड उस स्त्रीका स्वामी ही दे सकता है और पीछे राजद्वारमें उसकी इत्तिला दे देता है।

देशनिकालेकी यहां दो रीतियां हैं। एक तो यह है कि अपराधीको किसी दूर देशमें भेज दिया जाता है और दूसरा यह कि उसे किसी वहींके जेलखानेमें भेज दिया जाता ।
सबसे बड़ा प्राणदण्ड यहां पानीमें डुबाकर मारनेका है। इसकी दो रीतियां हैं। एक तो यहांके अपराधीको चमड़ेकी मशकमें बन्द करके पानीमें डाल देते हैं और दूसरी यह कि उसके हाथ पैर बांधकर शरीरमें शिला बांधकर लटका देते हैं और इस भांति वह डूब जाता है। उसे बाहर निकालकर देखा जाता है। जब अपराधीके प्राण निकल जाते हैं तभी उसके शरीरके टुकड़े २ कर दिये जाते हैं, और सब टुकड़े पानीमें फेंक दिये जाते हैं, केवल शिर रख लिया जाता है। यह शिर ३ दिनसे

दिनतक सर्वसाधारणको दिखलाकर एक मकानमें रख दिया जाता है जो कि इसी कामके लिये बना होता है। इस विषयमें एक और बात प्रसिद्ध है कि जिसका शिर उस मकानमें रक्खा जाता है उसका इस संसारमें फिर जन्म नहीं होता।

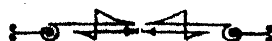
इनके अतिरिक्त और भी बहुतसे दण्ड हैं परन्तु उनके यहां लिखनेकी मैं आवश्यकता नहीं समझता हूं। पाठक इतनेसे ही समझ सकते हैं कि तिब्बतके अज्ञात देशमें दण्डविधान कैसा है।

मैं लासामें सन् १६०१ के अक्तूबरके मध्यतक रहा। वहांसे मैं सेराको आया। मेरे मित्रने कृपा करके अपना एक घोड़ा मुझे दे दिया था। कलकी रातसे बरफ गिरनी आरम्भ हो गई थी। इस मौसममें यह बरफ पहली ही बार गिरी थी। राहमें थोड़ी दूरपर एक नदी है। यह सरदियोंमें सूख जाती है। यहांपर लामाओंके कुछ लड़के बरफ़की गेंदें बना बनाकर खेल रहे थे। यह लड़कोंका खेल मुझे बहुत उत्तम लगा। मैं बहुत देरतक खड़ा हुआ उसको देखता रहा। इसे देख मुझे अपनी बचपनकी बातें याद आने लगीं। मैंने देखा कि बच्चोंकी प्रकृति प्रायः सारे संसारमें एक जैसी होती हैं।

इसी समयमें एक मनुष्य लासाकी ओरसे आ रहा था। वह मेरे पास आकर मेरे मुखपर ताकने लगा। मैंने उसको देखते ही पहचान लिया कि मानसरोवरकी यात्रामें मार्गके साथी यह उन तीन भाइयोंमेंसे छोटा भाई था जिसने मेरे मुखपर

बिदाईके समय प्रेमसे चुम्बन किया था। वह मुझे देखकर बड़ा विस्मित हुआ वरन् भयभीत हो गया क्योंकि उसने पहले फटे कपड़े पहिने फकीरोंकी भांति यात्रा करते हुए देखा था परन्तु अब मैं अमीरी ठाठसे जा रहा था। कुछ भी हो वह मुझे देख-कर कतराया और जल्दी २ पैर बढ़ाता हुआ आगे बढ़ने लगा। मैंने उसको रोका और पूछा कि क्या तुम मुझे भूल गये हो? उसे कहना पड़ा कि 'पहचानता हूं' मैंने उसे सेरा चलनेको कहा। मैंने उसे अपने साथ ले लिया और बिहारमें अपने मकानमें बड़े आदरसे ठहराया। जब वह बिदा हुआ तो उसको कुछ भेंट भी दी। जब मैंने उससे कृतज्ञता प्रकाश की कि मेरी यात्रामें उसने मेरी बड़ी सहायता की थी तो उसकी आंखोंसे आंसू आ गये। सिर झुकाकर बड़ा लज्जित सा हुआ। बिदा होते समय उसने अपने भाइयोंके विषयमें कहा कि वे अपनी जन्मभूमिमें ही सुखसे इकट्ठे रहते हैं।

सत्तावनवां परिच्छेद



घोर अन्त्येष्टि और घोरतर चिकित्सा

मैं मासिक परीक्षासे कुछही पहले सेरा बिहारसे लौट आया था और परीक्षाकी तय्यारी कर रहा था कि इस समयमें मेरा एक परिचित मित्र मर गया। मुझे भी उसकी अन्त्येष्टि क्रियाके

समय उपस्थित रहना पड़ा। ऐसी अन्त्येष्ठि क्रिया मैंने संसारमें कहीं भी न देखी। यहां न कफनकी आवश्यकता है न टिकटी की। केवल दो लम्बे डण्डोंमें कुछ छोटे २ डंडेपर दो लकड़ियां आड़ी २ बांध दी जाती हैं। इस लकड़ीके चौखटेमें रस्सी बुनी जाती है और इसके ऊपर एक चादर बिछाकर मुर्दा रख दिया जाता है। मुर्देके ऊपर एक श्वेत कपड़ा ओढ़ा दिया जाता है। दोनों ओरसे दो मनुष्य डण्डोंके बीचमेंसे शिर निकालकर उसको उठा लेते हैं।

मृत शरीरकी अन्त्येष्ठि क्रिया ३-४ दिन पीछे होती है। इस बीचमें और और भी क्रियायें होती हैं। सबसे पहले एक लामा बुलाया जाता है और अन्त्येष्ठि क्रियाके लिये अच्छा दिन पूछा जाता है। और फिर विधि पूछी जाती है। लामा अपनी सब सम्मति क्रियापद्धतिके विषयमें दे देता है। अपनी धर्मपुस्तक खोलकर मृत पुरुषके सम्बधियोंको उसके विशेष विशेष स्थलोंका पाठ करनेके लिये कह देता है। अन्त्येष्ठिके लिये विशेष दिन नियत कर देता है। और घड़ी मुहूर्त आदि सब नियत कर देता है। वही सब पद्धति भी बतला देता है। अन्त्येष्ठि करनेकी पद्धति चार तरहसे की जाती है। पानीमें बहाना, अग्निमें जलाना, धरतीमें गाड़ना, और पक्षियोंको खिलाना।

इन चार रीतियोंमेंसे अन्तिम रीति अर्थात् पक्षियोंको खिला देना ही सबसे अच्छा समझा जाता है। इस विधिको तिब्बतमें

चागापो कहते हैं। इससे दूसरे नम्बरपर अग्निदाह, तीसरे नम्बरपर जलसमाधि और चौथे नम्बरपर कब्रमें गाड़ना समझा जाता है। यह अन्तिम क्रिया तबही काममें लाई जाती है जबकी रोगी चेचकसे मरा हो। इस विधिके विषयमें वे खूब समझते हैं कि चेचकसे मरे हुए शवको पक्षियोंको खिला देना अथवा नदीमें बहा देनेसे अन्य गाँवोंमें भी यह रोग फैल जाता है। अतएव उसको धरतीमें गाड़ देते हैं। मुर्दोंको जला देना भी बहुत अच्छा समझा जाता है परन्तु ईंधनकी इस देशमें बहुत कमी है। याकके गोबरकी पाथियोंसेही शवको जला दिया जाता है। प्रायःअमीरोंके लिये ही यह रीति रखी गई है। पानीमें समाधि देनेकी विधि प्रायः सर्वप्रचलित है। यह विधि प्रायः महानदियोंके तटपर की जाती है। जलमें समाधि देनेके पहले शवका अंग काट काटकर अलग अलग कर दिये जाते हैं और टुकड़े २ करके पानीमें डाले जाते हैं। यह रीति इसलिए रक्खी गई है कि यदि समस्त शरीर पानीमें डाल दिया जावे तो उसको आंखोंसे ओझल होनेमें बहुत देर लगेगी।

यह चारों रीतियां भारतवर्षके शास्त्रीय सिद्धान्तोंके आधार-पर की जाती हैं। उनके अनुसार मानव शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु इन चार तत्त्वोंका बना हुआ है वे समझते हैं। वे तत्त्व पृथ्वी, जल, अग्नि और वायुमें ही मिल जाने चाहिये यों कब्रमें गाड़ना शरीरको पृथ्वीतत्त्वमें मिला देनेके समान है। इसी प्रकार दाहसे शरीर अग्निमें और जल समाधियों-

से जलमें और पक्षियोंको खिला देनेसे वायुतत्त्वमें मिला दिया जाता है। लामाओंके शरीर पक्षियोंको ही खिलाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त ऊंचे दर्जेके मनुष्योंको दलाईलामा तथा उसके अधिनस्थ उच्च अधिकारियोंको तथा अन्य माननीय लामाओंको बोधिसत्वका अवतार समझा जाता है। उनको विशेष रूपसे समाधि दी जाती है।

मेरे जान पहचानवाले लामाके लिये वायु समाधि ही पसन्द की गई जिसका वर्णन मैं संक्षेपसे देता हूं। "हमलोग उसके शवको लेकर एक नदीके किनारेपर पहुंचे। इस नदीके किनारेपर एक पहाड़ी थी जिसपर सहस्रों मांसाहारी पक्षी बैठे हुए थे। शवको ले जाकर एक बारह गजके ऊंचे पत्थरपर रखा। यह पत्थर ऊपरसे समतल १५ अंगुलके लगभग चौरस था। यही स्थान था जिसके ऊपर यह अन्त्येष्ठि की जाती थी। ज्योंही शव चट्टानके ऊपर रखा गया त्योंही उसके ऊपरका कपड़ा हटा दिया गया और लामा पुरोहित धर्मपुस्तकमेंसे ढोल आदि बाजेके साथ २ मन्त्र पढ़ने लगा। इसी समय एक मनुष्य एक बहुत चौड़ी तलवार हाथमें लेकर शवके पास आया और उसने उसका पेट काटकर आंतें निकालीं। इसके पीछे सब अंग अलग अलग कर दिये गये। उसके पीछे एक पुरोहित और कई और मनुष्य आये। उन्होंने हड्डीसे मांस अलग किया जैसे डोम किया करते हैं। इस इतने समयमें गिद्ध उतर २ कर वहांपर इकट्ठे होने लगे। बड़े बड़े मांसके टुकड़े जंघे आदि गिद्धोंके सामने फेंके गये। मांसके

फेंकनेकी देर थी कि गिद्धोंने उसको बड़ी बीभत्सतासे खा डाला। अब हड्डीकी बारी आई। परन्तु हड्डी इसी तरह नहीं फेंकी गई। उस चट्टानपर छोटे २ दस गढ़े थे। इनमेंसे एक गढ़ेमें उन हड्डियोंको डालकर एक भारी पत्थरसे उनको पीसा गया। जब वह बारीक आटा सो बन गई तो उनमें थोड़ासा पका हुआ आटा मिलाया गया। आटा मिल जानेपर वह भी गिद्धोंके भेंट किया गया। यदि कोई वस्तु मुर्देकी बची थी तो वह उसके बाल थे।

वास्तवमें तिब्बतवासी एक प्रकारके नरभक्षक हैं। मैं इस रीतिको देखकर भौंचक रह गया। कफ़नका कपड़ा यमदूत वालोंको दे दिया गया। यद्यपि उन लोगोंका नाम यमदूत रखा गया है परन्तु वास्तवमें उनका काम शव मांसका काटना और हड्डियां पीसना है। पुरोहित लोग भी उनको इस काममें सहायता करते हैं क्योंकि हड्डीका पीसना कोई सहज काम नहीं है। जब हड्डी पीसनेवाले पीसते २ थक जाते और चाय पीने लगते थे उतनी देरमें पुरोहित महाशय वह काम करते थे। चाय तय्यार करनेसे पहले वे रक्तसे भरे हुए हाथ भी नहीं धोते। हाथोंमें मांस और रक्तके छिछले लगे रहते हैं उन्हीं हाथोंसे वे चाय पका डालते हैं और रोटियां भी पका लेते हैं। अधिकसे अधिक वे हाथोंको झाड़ लेते हैं जिससे बड़े २ रक्त मांसके लोथड़े झड़ जाते हैं। इस प्रकार अपने भोजन और चायके साथ मांस, हड्डियां और भेजेका भाग पकाकर खाही जाते हैं।

उनको इस बातकी कुछ भी परवा नहीं है। उन्हें अपने इस कार्यमें कुछ भी वीभत्सता या घृणा मालूम नहीं होती। वे इस बातके आदी हो चुके हैं।

मैंने उनसे कहा कि चाय बनानेसे पहले हाथ धो लेने चाहिये तो वे बड़े चकित हुए। उन लोगोंने मेरा परिहास करके कहा कि इन्हीं हाथोंसे चाय बहुत सुस्वादु मालूम होती है। इसके अतिरिक्त यदि मुर्देके शरीरका कुछ अंश हमलोगोंके पेटमें चला जावे तो वह आत्मा भी बहुत प्रसन्न होती है। यह मैंने पहले भी सुना था कि तिब्बतवाले राक्षसके वंशके हैं। परन्तु जब मैंने यह दृश्य देखा तो विश्वास हो गया कि अवश्य ही यह लोग नरभक्षक हैं जो अबतक भी अपनी वंशपरम्पराकी आदतको नहीं छोड़ते।

जितनी देर यहां यह काम होता रहता है मुर्देके पास भी मन्त्र-पाठ होता रहता है। यहांसे सब लोग उसके घर जाकर खूब भोजन करते हैं। इस समय लामाओंको मदिरा नहीं दी जाती।

जब कोई उच्च पदाधिकारी मरता है तो उसको एक सन्दूक़में रखते हैं और उसके ऊपर इतना नमक डालते हैं कि वह चारों ओरसे नमकसे ढक जाता है। जबतक यह काम होता है तबतक बाजे ढोल इत्यादि बजते रहते हैं और धर्मपुस्तकका पाठ होता रहता है। इसके पीछे वह सन्दूक तीन महीनेतक एक मन्दिरमें रखा रहता है। इस इतने समयमें उसपर वैसे

ही भेंट पूजा चढ़ती रहती है जैसे जीवित समयमें चढ़ती है और शिष्य लोग निरन्तर पहरा देते रहते हैं। सोने चांदीके पात्रोंमें घीके दीपक जलते रहते हैं। सन्दूकके सामने सात पात्रोंमें अभिमन्त्रित जल रखा रहता है। इन्हीं पात्रोंका जल और फूल उसके ऊपर चढ़ाये जाते हैं। उस सन्दूककी हर कोई पूजा कर सकता है। जो पूजा करने आता है वह कुछ रुपयेकी भेंट भी चढ़ाता है। तीन महीनेमें शव नमकके कारण बिलकुल सूख जाता है और शव लकड़ीके अनुसार कड़ा हो जाता है। मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि यहांके नमकमें सोडा इत्यादि कोई क्षार भी मिला रहता है अथवा नमकमें कोई और वस्तु मिला दी जाती है तब उसे मुर्देपर डालते हैं।

जब यह शव सन्दूकसे बाहर निकाला जाता है तो बिलकुल सुकड़ा हुआ होता है। आँखें गड्ढोंमें घुस जाती हैं। शवको निकालकर एक प्रकारकी मिट्टीमें चन्दनका बुरादा और कुछ विशेष औषध मिलाकर शरीरपर लेपन करनेसे शरीर फिर ज्यों का त्यों हो जाता है। उसपर असली रंग आ जाता है, सुखापन नहीं रहता है। तब उसको उस सन्दूकमें रखकर एक छोटेसे मकानमें रख दिया जाता है। यह समाधिमन्दिर इसीके लिये बनाये जाते हैं। ऐसी समाधियां शिगात्ज़ेमें मैने बहुत देखी हैं। इनकी छतोंपर चांदी और सोनेका काम भी किया जाता है।

कुछ भी हो इन शवोंकी, क्या छोटा क्या बड़ा, सब ही पूजा करते हैं। लामा और सर्वसाधारण सभी इन समाधियोंकी

पूजा करते हैं। बहुतसे चीनी लोग इस प्रकारसे तिब्बतियोंकी शव-रक्षा-विधिपर बड़ा आक्षेप करते हैं। उनका कथन है कि तिब्बती लोग मुर्दको भूमिमें गाड़ना अधम क्रिया समझते हैं। क्योंकि मुर्देको गाड़नेसे आत्मा नरकको चली जाती है। दलाई-लामाके शवकी यह रक्षाविधि एक प्रकारसे भूमिमें गाड़ देनेके बराबर ही है। इस प्रकारसे दलाईलामाका शव न तो पक्षियों-को काट-२ कर खिलाया जाता है, न जलाया जाता है, न पानी-में डाला जाता है, परन्तु नमकमें रखनेके बाद मिट्टीमें ही रखा जाता है। अब मैं एक अद्भुत औषधिका उल्लेख करता हूं। प्रथम तो वह नमक जिसमें मुर्दा गाड़ा जाता है। यह नमक बड़ा पवित्र समझा जाता है। इसका भोग प्रायः अमीरोंको ही मिलता है। इस भांति विशेष मिट्टीमें शवका रखना धनी लोगोंके वंश-की विधि है। सर्वसाधारण इतना खर्च नहीं कर सकते हैं। मु-र्दोका नमक बहुत ही दामोंपर और बड़े सिफारिशसे मिलता है। यह सब रोगोंपर एक असली दवा मानी जाती है उनका विश्वास है कि इसको जलमें घोलकर पीने या खानेसे संसारका कोई रोग शरीरमें नहीं रह सकता है। यह भी हजारों रोगोंको अच्छा करता है परन्तु मुझे विश्वास है चाहे इसके रोग-नाशक गुण किसी प्रकारके हों तो भी अशिक्षित व्यक्तियोंके सब प्रकारके रोग अवश्य इससे दूर हो जाते होंगे। उनका हिया तो शान्त हो जाता होगा। नमकके साथ ही मुझे एक और ऐसी ही सर्व रोग-हर औषध याद आ गयी है कि इससे रोग तो क्या दूर होते

हैं उसकी यदि कोई वास्तविकता भी सुनले तो नीरोग भी रोगी हो जाय क्योंकि यह औषध दलाईलामा अथवा और उच्च पदाधिकारी लामाओंके मलमूत्रसे बनाई जाती है। इस मलमूत्रमें और कुछ पदार्थ मिलाकर गोली बना देते हैं और उनको लाल रंग देते हैं। यह औषध बाजारोंमें नहीं मिलती। यदि कोई चाहे तो उसको बड़े २ आदमियोंसे सिफारिशसे मिल सकती है। और दाम भी बहुत खर्च करने पड़ते हैं। तिब्बतवासी इस गोलीको बहुत रुपया खर्च करके भी अपने पास रखनेकी इच्छा करता है। इसको बहुमूल्य मोदक 'त्साचेनारपू' कहते हैं। यह एक मृत्युंजयमणि समझा जाता है। जब रोगीके ऊपर सब औषधियां निष्फल हो चुकती हैं उस समय यह गोली दी जाती है। बहुधा इसके विश्वासके कारण रोगी अच्छा भी हो जाता है और यदि न भी अच्छा हुआ तो भी गोलीकी शक्ति कम नहीं समझी जाती है वरं यह समझ लिया जाता है कि रोगीकी मृत्यु ही आ गई थी। इन गोलियोंके बनानेकी रीति सब गुप्त रखी जाती है। इस गुप्त नुस्खेका रहस्य केवल दलाईलामाके बहुत ही अन्तरंग सेवकोंको मालूम रहता है।

अट्ठावनवां परिच्छेद

विदेश पर्यटन और तिब्बतकी वर्जन नीति

नवम्बर १९०१ के आरम्भमें ही मैं अपने मित्र अर्थसचिवके यहां लासा लौट आया। हालमें जो अर्थसचिव था वह मेरे मित्रकी पत्नीका भतीजा था। आजकल काम कुछ कम रहनेके कारण वह मेरे मित्रके यहां बहुधा आया करता था। कभी २ मैं भी उसके घरपर चला जाता था। एक दिन बातों ही बातोंमें एक पादरिन अङ्गरेजकी चर्चा आ गई जिसने लासातक आनेकी चेष्टा की थी। अर्थसचिवने मुझसे पूछा कि 'मैं यह नहीं समझ सकता हूं कि अङ्गरेज यहां आनेके लिये इतने उत्सुक क्यों रहा करते हैं। उनको यहांपर ऐसा क्या आवश्यक काम है। अभी ८-९ वर्ष हुए होंगे कि एक अङ्गरेज पादरिन तिब्बत और चीनकी हद्दपर नकचूखाततक आई थी। उसके साथ दो नौकर थे। लासा आनेकी उसने बहुत चेष्टा की थी।'

मैं सुनते ही समझ गया कि अर्थसचिवका मतलब Miss annie R. Taylor एक मिशनरी स्त्रीसे है जिसने उत्तरी चीनसे लासा होते हुए दार्जिलिङ्ग जानेकी चेष्टा की थी। मेरे मित्रको उसका नाम इत्यादि कुछ मालूम नहीं था। परन्तु मैं उसके विषयमें दार्जिलिङ्गमें सब हाल सुन चुका था। उस

स्त्रीके साथ जो मनुष्य पथप्रदर्शक होकर गया था उससे भी मैं मिला था। मुझे जो कुछ मालूम था उसमेंसे एक शब्द भी मैंने अपने मित्रसे नहीं कहा वरं उस कहानीके सुननेके लिये मैंने बड़ी उत्सुकता दिखाई। अर्थसचिवने सब हाल कह सुनाया कि कैसे तिब्बत निवासियोंने उसे रोक लिया। भाग्यवश उस समय वहांका अधिकारी बड़ा दयालु था नहीं तो वह अवश्य मारी जाती। यह सम्वाद वहांके मजिस्ट्रेटने लासाको भेजा। अतएव मेरा मित्र अर्थसचिव वहांको भेजा गया कि उस विदेशी महिलाके साथ उचित व्यवहार करे। आशय यह था कि वह मिशनरी स्त्री तुरन्त ही वहांसे हटा दी जावे। मन्त्री महाशय अपने साथ दो नौकर और बहुतसे कुली लेकर गये। वे सब मिलाकर तीस व्यक्ति थे।

नकचूखामें पहुंचकर उन्होंने शीघ्र ही मिशनरी स्त्रीको बुला भेजा। यद्यपि मिस टेलर तिब्बतकी भाषामें ही बातचीत कर रही थी परन्तु उसको बातें मन्त्रीकी समझमें कुछ न आईं। क्योंकि उसकी बोली लासाकी आम बोलीसे बिलकुल भिन्न थी। बहुत कठिनतासे उन्होंने मिस साहिबाके कथनका अर्थ समझ पाया कि वह तिब्बतके बौद्धधर्मके विषयमें ज्ञान प्राप्त करनेके लिये आई हैं। इसी उद्देश्यसे वह लासाकी यात्रा करके दार्जिलिङ्ग होती हुई घरको लौट जाना चाहती है। इसके पीछे उसने पासपोर्ट भी दिखलाया जो चीनके महाराजने उसको दिया था। अर्थसचिवने कहा कि "मैं आपके इस विचारको

बहुत पसन्द करता हूं परन्तु बड़े दुःखकी बात है कि हमारे दलाईलामाकी बहुत कड़ी आज्ञा है कि कोई भी परदेशी तिब्बतके भीतर न जा सके। यदि कोई इस निषेध करनेपर भी आगे बढ़नेकी चेष्टा करे तो सम्भव है कि उसके ऊपर कोई विपत्ति आ पड़े। क्योंकि जिस परदेशीको तिब्बत सरकार भीतर जानेको रोक रही है और जानेवाला नहीं मानता है तो उक्त सरकार इस वन पर्वतोंकी भूमिमें उसके मरने जीनेकी उत्तरदाता नहीं हो सकती। सरकार नहीं चाहती कि कोई व्यक्ति बिना किसी प्रयोजनके दूसरेके देशमें जाकर व्यर्थ संकटोंमें पड़े। अतएव अच्छा है कि आप यहींसे लौट जावें।" यद्यपि यह बात अर्थसचिवने बड़े आदरसे तो भी बड़ी दृढ़तासे कही।

श्रीमती टेलर भी अपने 'सिद्धान्तपर अटल रहीं। वह अपनी प्रार्थना एक दो दिन नहीं बल्कि लगातार ४-५ दिनतक करती रहीं। उनका कथन था कि जब मुझे चीनके महराजने पासपोर्ट दे दिया है और तिब्बतभी उसके मातहत है, फिर क्या कारण है कि तिब्बत सरकार मुझे लासा जानेसे रोकती है। मन्त्रीने कहा कि यह बात सत्य है कि किसी २ विषयमें तिब्बत सरकार चीनके अधीन है परन्तु इस वर्जननीतिमें वह चीन सरकारकी मातहती माननेके लिये तय्यार नहीं है। और यदि आप अब भी अपना विचार छोड़नेको तय्यार न हों तो मैं आपके दोनों पथप्रदर्शकोंको पकड़वाकर तिब्बती कानूनके अनुसार दण्ड दूंगा।

इतना सुननेपर मिस टेलरने आगे बढ़नेका विचार छोड़ दिया और चीनको लौट जाना चाहा। यह सुनकर मन्त्री महाशयने मिस टेलरको कुछ आवश्यक वस्तुएं भेंट करके चीनको बिदा किया।

इतना हाल सुनाकर अर्थसचिवने एक बार आश्चर्यसे कहा कि मैं बहुत चेष्टा करनेपर भी नहीं समझ सका कि ये लोग यहां आनेके लिये इतने उत्सुक क्यों रहा करते हैं।

मैंने और कुछ न कहकर केवल इतनाही कहा कि मेरी समझमें भी यह बात नहीं आती। यह मैंने सुना है कि विदेशियोंके लिये साहस कर यहां आना कोई नई बात नहीं है। अर्थसचिव स्वयं भी जानते थे। उस स्त्रीके समान और भी बहुत से लोगोंने यहांतक आनेकी चेष्टा की है। इसके बाद बात चीन तिब्बतके पुराने इतिहासके विषयमें होने लगी।

सबसे पहले विदेशी यात्री जिसके विषयमें तिब्बतके इतिहासमें भी कुछ वृत्तान्त मिलता है वह पोरडिनोडका फ्रायर ओडरिक नामक एक रोमनकेथोलिक पादरी था जो कि अपना धर्म फैलानेके लिए १३२८ ई०में तिब्बतमें आया था। परन्तु वहां उसका प्रयत्न सफल न हो सका क्योंकि तिब्बतके लिये उसके पास कोई नयी बात नहीं सीखनेको थी और उस समयमें तिब्बतमें बहुत अच्छे लामा थे।

फ्रायर ओडरिक भी वहांका क्रिया-कर्म देखकर बहुत चकित था। वहांके बहुतसे सिद्ध स्वयं ईसाके समान बहुतसे विस्मय-

जनक चमत्कार करनेमें समय थ। ओडरिकने तिब्बतियोंको सिखानेके स्थानमें स्वयं उसने बहुत कुछ सीखा। वह बहुत सी बातें लिखकर ले गया था। उसने अपने भ्रमणवृत्तान्तका बहुत सा भाग अग्निसात कर दिया था। अतएव उसके विषयमें बहुत थोड़ा हाल तिब्बतका ज्ञात है।

दो भाई ग्रुवर और डा० आरबिले जो कदाचित् फ्रांसीसी युवक थे सन् १६६१ ई०में तिब्बत आये थे। मालूम नहीं वह लासातक पहुंचे कि नहीं परन्तु यह कहा जाता है कि ये पेकिनसे लासा होकर नेपालको राह भारतवर्षमें आये थे। जिस समय वारेनहेस्टिंग्ज भारतवर्षके वाइसराय थे उन्होंने सन् १७७४ में तिब्बत और भारतवर्षके बीच व्यापारप्रयोजनसे कमिश्नर जार्ज बोगलको तिब्बत भेजा। वे अपनी पत्नीके साथ तिब्बतको रवाना हुए परन्तु शिगात्जेतक ही पहुंचे। सन् १७८१में हेस्टिंग्ज़ने फिर कैप्टेन टर्नरकी अधीनतामें एक कमिश्नरको भेजा। टर्नर महाशय दो वर्ष तिब्बतमें रहे। केवल एक मनुष्य सन् १८११ ई० में लासा पहुंचा। उसका नाम था टामस मेनिग।

जबतक हेस्टिंज भारतवर्षमें रहे तबतक भारतवर्ष और तिब्बतके बीच व्यापार चलता रहा। उनके चले जानेपर वह फिर एकदम बन्द हो गया और भी बहुतसे परस्परके सम्बन्ध थे सो सब दूर हो गये। इसी समयमें पादरी लोग लासा और तिब्बतके और नगरोंमें स्वच्छन्दता पूर्वक आने जाने लगे और अपना काम करने लगे। धीरे २ उनकी स्वच्छन्दता यहांतक

बढ़ी कि लासा सरकारने केवल उनको ही नहीं परन्तु परदेशी लोगोंको भी वहां जानेसे रोक दिया। सन् १८७१में रूसका वासी कर्नल प्रीजवेस्की खाम देशसे होकर तिब्बतमें पूर्वी सीमासे प्रविष्ट होकर जा पहुंचा। लासासे जब ५०० मील दूर रह गया तब रोक दिया गया। यही व्यक्ति दूसरी बार फिर चीनकी ओरसे तिब्बतमें घुसा परन्तु लासासे १७० मील दूरपर रोक दिया गया।

सन् १८८६में एक अंग्रेज कैप्टेन हिलने तिब्बतमें जानेकी चेष्टा की परन्तु चीन और तिब्बतकी सीमापर वह भी रोक दिये गये। इसके अतिरिक्त मेरे मित्र मन्त्री महाशयने यह भी कहा कि दो जापानी लामा भी वहां आये थे परन्तु वह भी भीतर न जाने पाये। उनके विषयमें यह स्पष्ट ज्ञात नहीं हुआ कि वास्तवमें बौद्ध लामा थे कि और किसी पेशेके थे।

अन्तिम यात्री शरत्चन्द्रदास मेरे गुरु थे जो कि सन् १८८१-८२ में आये थे। इन्होंने तिब्बत सरकारसे एक अद्भुत रीतिसे पास ले लिया था जिसकी सहायतासे वह शिगात्जे तक पहुंच गये। शिगात्जेमें दो महीने रहकर वह भारतवर्ष लौट गये। उनके अनुसन्धानका सम्वाद ब्रिटिश सरकारने सुना और उसी तरहका एक पास और भी उनको देकर सन् १८८२में उन्हें वहां फिर भेजा गया। दूसरी बार वह शिगात्जे होकर लासा पहुंचे। उन्होंने बहुत ही होशियारीसे काम लिया था अर्थात् दिनको

बहुत कम बाहर निकलते थे। यदि निकलना पड़ता था तो इस बातका ध्यान रखते थे कि किसीका भी ध्यान उनकी ओर न खिंचे। वह बहुधा एक मन्दिरके एक कमरेमें रहा करते थे। वह लासामें केवल बीस दिन रहे। इतने ही दिन रहकर तिब्बतके और नगरोंमें चले गये। सालभरके भीतर ही वे दार्जिलिङ्गको लौट गये।

मैं पहले किसी परिच्छेदमें लिख आया हूं कि जब तिब्बत वासियोंको मालूम हुआ कि बाबू शरत्चन्द्र दास किस कामके लिये आये थे तो देशभरमें हल चल सी मच गई। जिस मार्गसे वे तिब्बतमें प्रविष्ट हुए थे उस मार्गके प्रायः सब अधिकारियोंसे जवाब तलब किया गया और आगेके लिये बड़ी ताड़ना की गयी। जिस जिस मनुष्यका उनसे कुछ भी सम्बन्ध पाया गया उनकी दुर्गतिका ठिकाना न रहा। उन लोगोंको बन्दीगृहमें डाल दिया गया और उनकी धन सम्पत्ति जब्त कर ली गयी और बहुतसे मार डाले गये। इसके पीछे तिब्बतने और भी अधिक रुकावट कर दी।

इसके पीछे और भी बहुतसे लोग आये जिनमेंसे २५-२६के नाम तो मैंने सुने थे उनके अतिरिक्त भी सब मिलाकर ४०, ५० होंगे परन्तु कोई लासातक न पहुंच सका। मैंने बहुधा जापानी अखबारों और मासिक पत्रोंमें बहुतसे लोगोंके तिब्बतके विषयमें लेख पढ़े परन्तु उनका वर्णन कुछ भी विश्वसनीय नहीं है। क्योंकि जो कुछ लिखा गया है वह सब कुछ तिब्बतके विषयमें निकली

पुस्तकोंसे संग्रह करके लिखा गया है। इसका एक उदाहरण मैं यहांपर लिखता हूं कि एक व्यक्ति ए०शोभाडो कोरोस एक हंग्रीवासी विद्वान है जिसने तिब्बती भाषाका अंग्रेजीमें कोश बनाया था। परन्तु उसने तीन वर्ष लद्दाखमें रहकर एक लामासे तिब्बती भाषा पढ़ी और वह कोश बनाया। लद्दाख नगर तिब्बतके दक्षिण पश्चिमके कोनेपर है। यहां यह शोभा महाशय प्रायः तीन वर्ष रहे थे। लेखक इस कोशको लिखनेके लिये स्वयं तिब्बत जाना चाहता था परन्तु सीमाप्रान्तके पहरेवालोंने उसकी आकांक्षाको पूरा न होने दिया। सोचते सोचते उसने दार्जिलिङ्गकी राहसे प्रवेश करनेको ठानी और वहीं पहुंचा। दुर्भाग्यवश वहां वह जङ्गली बुखारसे पीड़ित होकर मर गया। तिब्बती भूमिमें पैर भी न रख सका। उसकी कब्र अबतक वहांपर विद्यमान है। सम्भव है कि यह कब्र उसी स्थानपर है जहां वह बीमार पड़ा था। लेखकोंने लिखा है कि यह शोभा महाशय कई वर्ष लासामें रहे थे। परन्तु यह बात कहांतक सत्य है इसको पाठक स्वयं ही जान सकते हैं। एक और महाशयने एक कोश इसी कोशके आधारपर बनाया परन्तु वह इससे अच्छा है। परन्तु यह महाशय भी तिब्बतमें कभी नहीं गये, इनको भी लेखकोंने यह सौभाग्य दिया कि वे लासा बहुत दिनोंतक रहे। यह भूलें जापानी और पश्चिमी दोनों ही लेखकोंने की हैं।

इन लोगोंके अतिरिक्त रूसी पादरी अथवा गुप्तचर बहुधा

जाते आते रहे हैं यद्यपि तिब्बतवासी परदेशी लोगोंका बहुत आदर करते हैं। परन्तु इन पादरियों और गुप्तचरोंने जा जाकर तिब्बत सरकारकी शंकाको बहुत कुछ बढ़ा दिया है। तिब्बत सरकारको सदैव इस बातकी चिन्ता रहती है और ऐसा ही चीन सरकारने उसको समझा भी दिया है कि यदि तिब्बत सरकार परदेशी पादरियोंको अपने यहां आने देगी तो बौद्ध धर्म नष्ट होकर ईसाई धर्म प्रचलित हो जावेगा। इस बातसे तिब्बत सरकार बहुत घबरा गई परन्तु फिर भी वर्जननीतिकी कठोरता उतनी नहीं थी जितनी कि शरत बाबूके जानेके पीछे हो गई। तबसे तो तिब्बतकी यह अवस्था हो गई है कि वहांकी सारी जाति गुप्तचरों और पहरेदारोंका काम करती है।

यद्यपि वह वर्जन नीति सब ही जातियोंके लिये है तथापि अङ्गरेजोंके लिये यह बहुत ही कठोर प्रतिबन्ध है। जिस समय मैं ल्हासामें था उस समय डा० सेवनहेडनने उत्तरकी ओरसे कई बार भीतर आनेकी चेष्टा की थी परन्तु उनकी चेष्टाएं सब निष्फल हुईं। अन्तमें उन्होंने तिब्बतमें जानेका विचार सर्वथा त्याग दिया।

विदेशी यात्रियोंका इस प्रकार बार २ तिब्बतमें जानेके लिये प्रयत्न करनेसे ही तिब्बतके लामाओं और अन्य निवासियोंको इन यात्रियोंके हार्दिक भावोंपर सन्देह हो जाता है कि हो न हो विदेशी लोगोंके हृदयमें अवश्य कोई तिब्बतके लिये अपकार करना है। अङ्गरेज लोगोंके विषयमें तिब्बतवालोंको

यह विश्वास हो गया है कि वे इसलिये तिब्बतमें आना चाहते हैं कि वे यहांकी सोनेकी खानोंपर अधिकार किया चाहते हैं। परन्तु यह बात मेरी समझमें नहीं आई। मैं जहांतक समझता हूं अंग्रेजोंका अभिप्राय यही है कि वे लोग तिब्बतमें रूसका अधिकार वहां नहीं चाहते जिसका कि भय है। क्योंकि यदि तिब्बत रूसके हाथ पहुंच जावे तो भारतवर्षकी रक्षामें बड़ा सन्देह हो जाय।

तिब्बतके खजानेके मन्त्रीने एक बार मुझसे कहा था कि तिब्बत किसी राज्यके अधीन होकर उसको कर देने लगे तो उसके लिये बड़े दुःखकी बात होगी परन्तु सबसे बड़े दुःखकी बात यह है कि ऐसा होतेही हमारे बौद्धधर्मपर कोई और धर्मघात करे। इसलिये तिब्बत सब हानियां सहकर भी विदेशियोंके सब प्रकारके उपायोंका विरोध करेगा। विदेशियोंको राजगद्दीके लिये होनेवाला हेरफेर और परस्पर प्रतिद्वन्दिताका सर्वथा पता लगना चाहिये। यदि उनको इसका थोड़ासा भी भेद मिल जाय तो वे तुरन्त इस अन्तःकोपको अपनी भेदनीतिसे अपने हस्तगत करके अपना मनोभिलषित स्वार्थ पूरा कर लें। इसलिये तिब्बत सरकारको अपनी सब बातें एक समस्या बनाये रखने तथा सबसे अपरिचित स्थिति रखनेके लिये विदेशियोंको प्रविष्ट न होने देनेका कड़ा प्रबन्ध करना चाहिये। इस प्रकार यह वर्जन नीति जो केवल धर्मरक्षाके लिये चलाई गई थी अब एक राजनीतिक रूपसे बरती जाने लगी। जबसे

शरत्‌चन्द्र दासका गुप्त भेद खुला तबसे कोई भी विदेशी अन्दर नहीं आने पाता। इस प्रसङ्गमें अर्थसचिवने कहा कि इस घटनासे तिब्बतवालोंने विदेशियोंके कुचक्रसे बचनेके लिये अपने द्वार और भी कड़ाईसे बन्द कर लिये।

उनसठवां परिच्छेद



गन्दसे भरी राजधानी।

अर्थसचिवसे गत परिच्छेदमें वर्णित बातें करनेके थोड़ी देर पीछे पुराने अर्थसचिव और उसके नौकरोंके साथ मैं लासा नगरकी प्रदक्षिणाके लिये चला। यह चक्कर छः मीलका था। तिब्बतके लोग इस प्रदक्षिणाको बड़ा पवित्र मानते हैं और कहते हैं कि इस परिक्रमाका करना लासाके सब मन्दिरों और तीर्थोंके दर्शनके बराबर है। इस परिक्रमाके करनेकी कई विधियां हैं। एक साधारण परिक्रमा, दूसरी प्रति पगपर दण्डवत् प्रणाम करते हुए, तीसरी प्रति तीसरे पगपर दण्डवत् प्रणाम करते हुए। परन्तु हमलोग इस समय धार्मिक अभिप्रायसे नहीं जा रहे थे केवल साधारण सैरके लिये निकले थे। इस समय मैं बड़ी कठिनतामें पड़ गया था। कारण मेरा साथी बहुत लम्बा पुरुष था। उसकी टांगें भी बहुत लम्बी २, उसका कदम भी बहुत बड़ा पड़ता था, उसके साथ चलनेके लिये दौड़ना पड़ता था।

लासासे पूर्वमें इस चक्करके किनारेपर एक स्थानपर याकके सींगोंसे बनी हुई बाड़से घिरा एक बाड़ा था जो प्रायः २४० गज़ लम्बा और १२० गज़ चौड़ा होगा। इस बाड़ेमें कितने सींग लगे होंगे इसकी संख्या करना तो असम्भव था। यह स्थान याकोंके मारनेके लिये बनाया गया था। इसको मैंने प्रथम इतने ध्यानसे न देखा था परन्तु आज बहुत ध्यानसे देखा। जब मैंने मन्त्री महाशयसे कहा कि देखिये कितने जीवोंकी यहांपर हत्या हुई होगी तो उन्होंने भी इस बातपर शोक प्रकाशित किया।

शीघ्र ही हम उसके द्वारपर पहुंच गये। भीतर झांकनेसे ज्ञात हुआ कि आज भी तीस याक मारनेके लिये लाये गये हैं। तिब्बतके समान बौद्ध देशमें ये पशु बड़े बुरे तरीकेसे मारे जाते हैं। क्योंकि मारनेके पूर्व उनके बध्य पशुके शिर स्पर्शादिके समय मन्त्र आदि भी नहीं पढ़ा जाता। पशुओंका घात बहुत ही अधार्मिकतासे केवल पेशेके मतलबसे किया जाता है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि लासामें केवल चीनी मुसलमान ही इस कामको करते हैं। वे इस बातका कोई विचार नहीं रखते। मरनेवाले पशुके पास ही और भी पशु खड़े २ थर्राते रहते हैं। यह दृश्य देखकर मुझे बड़ी दया आई।

अर्थसचिवको भी यह दृश्य देखकर बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा कि इस समय मुझको ऐसी घृणा है कि मांसका एक ग्रास भी मेरे मुंहमें जाना असम्भव है परन्तु मनुष्यका स्वभाव ऐसा है कि वह शीघ्र ही दया भूल जाता है और घर पहुंचनेपर यदि

मांस खानेको न मिले तो क्रोध आता है। वह भी इस परिणाम-पर पहुंचे बिना न रह सका कि वास्तवमें तिब्बतके लोग राक्षसों की जातिके हैं और अब भी उनके शरीरोंमें वही रक्त बह रहा है।

सरकारकी तरफसे इस चक्करकी सड़ककी सदैव मरम्मत होती रहती है। क्योंकि इसकी प्रदक्षिणाके लिये बहुतसे यात्री आया करते हैं।

इस सड़ककी लासाकी और सड़कोंसे कुछ तुलना नहीं है। और सड़कोंपर केवल इतना ही नहीं कि गड्ढे पड़े हुए हैं वरं बीच बीचमें मल मूत्र करनेके चौबच्चे बने हुए हैं जिनमें कि स्त्री पुरुष दोनों ही खुले तौरपर मल मूत्र करते हैं। पानी, कीचड़ और कूड़ा कर्कट विशेष करके गर्मीकी ऋतुमें अवर्णनीय है। यद्यपि कुत्ते उस मलसे अपने पेट भरते रहते हैं परन्तु फिर भी कुत्तोंकी संख्या इतनी नहीं है कि उस कामको पूरा कर सकें। पासके ही उथले कुओंसे लोग पानी पीते हैं। इस परिस्थितिके साथ लासा नाम बड़ा असङ्गतसा जान पड़ता है। क्योंकि लासा शब्दका अर्थ है 'देवताओंकी भूमि' अतएव यह स्थान बहुत पवित्र समझा गया है। पालावन अतीशने भी तिब्बतमें एक स्थानका उल्लेख किया है जिसमें सब गन्दे घृणा-जनक पदार्थ भरे पड़े हैं।

मैंने चीनके नगरोंके मैलेपनका हाल भी सुना है परन्तु मैं समझता हूं कि वे भी लासेके समान और घृणित नहीं हो सकते। इन लोगोंको स्वास्थ्य रक्षाका ज्ञान बिलकुल नहीं है। आश्चर्य

इसी बातका है कि नगर इतना मैला होनेपर भी लोग
बीमार क्यों नहीं होते हैं। मेरी समझमें यह बात है कि लासाको
जलवायु बहुत ही अच्छी है इसीसे यहां रोग नहीं फैलता है।
जाड़ेमें यहां बहुत ठण्ड हुआ करती है दिनमें भी थर्मामीटर
४०—५० डिग्रीतक जाता है। गर्मीके दिनोंमें ८० डिग्री हो
जाता है। यही कारण है कि इतने मैले रहनेपर भी वहांके लोग
अधिक रोगग्रस्त नहीं होते। यही विचार मेरे मनमें मार्गभरमें
उठते रहे।

साठवां परिच्छेद

तिब्बतमें लामा धर्म

यहांपर मैं थोड़ासा तिब्बतके धर्मके विषयमें लिखूंगा क्योंकि
उसके बिना जाने वहांकी राजनैतिक अवस्थाओंका समझना
कठिन होगा। यह लामा धर्मके दो सम्प्रदाय हैं जिनमेंसे एक
पुराना और एक नया है। पुराने धर्मके अनुयायियोंको लाल टोपी
वाले और नयेको पीली टोपीवाले कहते हैं।* पुराने सम्प्रदायकी
और भी बहुतसी उपशाखायें हो गई हैं जैसे शाक्य, कर्माप,

* प्राचीन ग्रन्थोंमें रक्तांबर या रक्तपट और पीतांबरके भेद बौद्धोंमें मिलते
। इन्हींको रक्तांबर और पितांबर समझना चाहिए।

दुःखपा, जोकूचे नया आदि। परन्तु मूल सिद्धान्तोंमें तथा निर्माणमें इनमें कोई भेद नहीं है।

इस पुराने मतका चलानेवाला एक तान्त्रिक था जिसका नाम लोवन पद्मचुग्ने था। उसका यह नाम इसलिये पड़ा था कि उरकेन राजाके राज्योंमें, जो काबुलमें है। राजाके उद्यानमें दानकोश नामक तालाबमें वह एक पद्मके फूलसे उत्पन्न हुआ था। इस तान्त्रिकके विषयमें बहुतसी विचित्र २ कहानियां प्रचलित हैं। यह यद्यपि ब्राह्मण था तोभी उसने मांस, मदिरा और मैथुनका ही अपने शिष्योंको उपदेश दिया। उसने बड़े विचार और युक्तिपूर्वक अपने इन मन्तव्योंको बुद्धदेवके सिद्धान्तोंके साथ मिलाकर रखा और बतलाया कि आनन्दमय जीवन बिताना परम गतिका रहस्य है। इसी साधनसे इस संसारका प्राणी पांच प्रकारके पापोंसे भरे संसारमें शीघ्र ही बुद्ध पद तथा मुक्ति या निर्वाण पदको पा सकता है।

पांचों प्रकारकी भोग वासनाओंको तृप्त करनेका (पंचमकार) सिद्धान्त भी इसी स्थानपर आश्रित है कि पांचों वासनाएं महा बोधिकी प्रकृतिके भाग हैं। सबसे बड़ा मनुष्यका मानसिक विकल्प काम है। अतः वह मैथुनसे ही महाबोधिपदको पा सकता है। उसीसे वह आत्माकी सत्ताका प्रथम तत्त्व अर्थात् अपने आपको भूलकर मग्नताको पा सकता है। पशु-मांस खानेकी दूसरी मनोवासना है यह दया धर्मकी पोषक है। क्योंकि पशुकी आत्मा खानेवालेमें विद्यमान बोधिके उपकारक प्रभावके नीचे

आ जाती है और इस प्रकार सहजमें वह परम पदतक पहुंच जाती है। मदिरा मनुष्यको हर्ष और आनन्द देती है हम उसे पी-कर ही आनन्दमय जीवन बिता सकते हैं। इसी प्रकारके विवेकसे हम परमगति पा सकते हैं। संक्षेपतः पुराने सम्प्रदायके अनुसार मद्य मांस और मैथुन आदि भोगवासनाओंके साथही साथ पवित्र विवेकके परमपद पा सकता है। इस सम्प्रदायका विस्तारसे मैं यहां उल्लेख स्थानाभावसे नहीं बल्कि अत्यन्त वीभत्सता और अश्लीलताके कारण नहीं कर सकता। तो भी इतना अवश्य कहूंगा कि यह सम्प्रदाय बुद्ध धर्मकी अधीनतामें इन भोग्य इच्छाओंको पूरी करनेकी आज्ञा देता है।

जापानमें भी शिंगोन सम्प्रदायकी तातेकावा शाखा ऐसे ही भ्रष्टाचारकी बातोंका प्रचार करती थी। परन्तु अब वह लुप्त-प्राय है। इस सम्प्रदायकी धर्मपुस्तकें प्रायः संस्कृतमें हैं जिनकी रचना भारतमें हुई परन्तु तिब्बतवाले उनपर अपनी तिब्बती टीकाओंके साथ उनकी रक्षा करते हैं। अब वह अपने पुराने रूपसे बहुत कुछ परिवर्तित रूपमें हो गया है। क्योंकि लामा लोगोंने उस सम्प्रदायके मन्तव्योंको अपने विचारोंके अनुसार उसमें बहुत कुछ बदल डाला है। क्योंकि इस सम्प्रदायकी तिब्बती धर्मपुस्तकोंमें अपने मूल शिक्षाओं और मन्तव्योंसे बहुत भिन्न रूप दिया गया है। यह पुराना धर्म बहुत अधिक प्रचलित है प्रायः इसीपर लोगोंकी बहुत अधिक श्रद्धा है।

इस धर्मकी मैं लासासे कई पुस्तकें अपने साथ लाया था।

परन्तु यह पुस्तकें बड़ी अश्लील और महाभ्रष्ट हैं। सर्वसाधारणके पढ़ने योग्य नहीं हैं अतः मैंने उन्हें अपने सन्दूकमें ही रख छोड़ा है। पांच सौ वर्ष पहलेतक यह मत तिब्बत भरमें बड़े जोर शोरसे फैला था। यह इस देशके लिये बड़े भारी अधःपतनका कारण हुआ। इसके विरुद्ध आवाज उठी तथा नये सम्प्रदायके रूपमें प्रगट हुआ। इसके अनुयायी पीली टोपीवाले पीताम्बरी कहलाते हैं।

इस मतके फैलानेवाले महात्मा पालधन अतीश थे। यह भारतवर्षसे ईसाकी ग्यारहवीं सदीमें आये थे। इनके तीन सौ वर्ष पीछे जेतसौंगखाया नामक महात्माने इसकी और भी वृद्धि की। उसने अपना मुख्य आधार यही मन्तव्य रखा कि लामाको अवश्य तपस्वी होना चाहिये। तपस्यासे शून्य लामा नहीं कहा जा सकता, सब दशाओंमें भोग वासनाओंका परित्याग आवश्यक है। लामा भी इन्हीं भोग तृष्णाओंकी तृप्ति करनेमें फंसा हुआ साधारण व्यक्तिसे अधिक नहीं। तेसांगखपाने अपने सिद्धान्तोंको प्रथम स्वयं पालन करके अपनेको आदर्श बनाया। उसने प्रथम लामाओंके लिये सदाचारके विशेष नियमोंका प्रतिपादन किया, परन्तु इन नियमोंकी दीक्षा लेनेवाले बहुत कम लामा निकले, अन्तमें उसके अनुयायियों और प्रचारकोंका संघ बनाया गया और उसीके आधारपर आन्दोलन शुरू किया गया। गन्दने स्थानपर अपने सम्प्रदायकी धर्मपताका खड़ी की, यह स्थान लासासे ४० मीलपर है।

नया धर्म यद्यपि जातीय भ्रष्टधर्मके मुकाबिलेके लिये उठा पर आप भी उस जातीय भ्रष्टाचारसे मुक्त न रह सका। यह भ्रष्टाचार प्रायः तिब्बतके सभी धर्मोंमें थोड़ा बहुत पाया जाता है। नये सम्प्रदायने भी अपने मन्तव्यमें पुराने सम्प्रदायोंसे कुछ भिन्न २ रूपमें भ्रष्टाचारकोंको कतिपय बातोंको स्थान दिया। नये सम्प्रदायने पुराने सम्प्रदायकी मूर्त्तियोंका विरोध नहीं किया; यद्यपि वे प्रायः स्त्री पुरुषोंकी नियमित मूर्त्तियां ही थीं जिनमें अश्लीलभाव स्पष्ट ही प्रगट हुआ करता था। नये सम्प्रदायने उन सब मूर्त्तियोंके रूपोंकी नयी भावात्मक व्याख्यायें प्रकाशित कीं। मूर्त्तिगत पुरुषको समुचित साधन (शिव) और स्त्रीको महाविद्याका प्रतिरूप माना गया। और यह सिद्धान्त निकाला गया कि दोनोंके समुचित संयोगसे ही बुद्ध उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार बुद्धोंकी उत्पत्ति इस नये सम्प्रदायके अनुसार तृष्णाभोगोंसे नहीं है।

मांसको दयाका रूप माना गया। और उसको खाना उचित नहीं बतलाया। मदिराको बुद्धिका प्रतिरूप माना। इसका अभिप्राय यही समझाया गया कि यह मनुष्योंको अपनी आध्यात्म बुद्धिका सदुपयोग सिखानेके लिये रखी गयी है।

इस प्रतिनिधिवादके अनुसार नये सम्प्रदायने अपने पुराने सम्प्रदायके सब उपदेशोंकी व्याख्या की। पुरानी सभी मूर्त्तियां भी सम्मत मानी गयीं। उनकी नयी व्याख्याएं की गयीं। बाहरसे दोनों सम्प्रदायोंकी भिन्नता भी प्रतीत नहीं होती। हो

सकता है परिस्थितियोंसे बाधित होकर नये सम्प्रदायको ऐसा रूप धारण करना पड़ा। अस्तु मैं साम्प्रदायिक मन्तव्योंकी विशेष गम्भीरतामें न जाकर इस प्रकरणको यहीं छोड़ता हूं और तिब्बतमें फैले अवतारवादपर कुछ प्रकाश डालता हूं।

तिब्बतमें अवतारवाद बड़ा ही प्रबल है, उन लोगोंको विश्वास है कि साधु सन्तही फिर उत्पन्न होकर जीवोंका उद्धार करते हैं। जिस किसी मनुष्यमें कुछ भी विशेषता हो जाती है वह स्वयं अपनेको फिरसे जन्म लेकर मुक्ति पानेकी सोचा करता है। परन्तु इस अवतारवादमें भी वर्त्तमानमें बहुत परिवर्तन हो गया है जिसका आगे वर्णन करेंगे।

इकसठवां परिच्छेद

तिब्बतमें लामा शासन

चार सौ वर्षसे अधिक हुए कि गेंदनतूब नामक एक पुरोहित नये धर्मका एक प्रचारक हो गया है। इसीने सबसे पहले भविष्यवाणी कहनेकी प्रथा चलाई। यह भावी अवतार रूपमें जान लेनेकी प्रथामें बदल गयी। कहते हैं कि गेंदनतूबने अपने मरनेके समय कहा कि मैं अमुक स्थानपर अमुक घरमें जन्म लूंगा। अनुसन्धानसे मालूम हुआ कि ठीक उसी स्थानपर और उसी घरमें एक बालकने जन्म ग्रहण किया। इससे भी बढ़कर आश्च-

यंकी बात यह है कि जिस समय वह बालक बोल भी नहीं सकता था उसी समय उसने कहा कि मुझको टशीलुनयोंके मन्दिरमें ले चलो। यह वही मन्दिर था जहां गेंदनतूबकी मृत्यु हुई थी। इस बातसे उसके भक्त शिष्योंके हृदयोंमें विश्वास हो गया कि उनके गुरुने जन्म ले लिया है। अतएव वह बच्चा उसी मन्दिरमें लाया गया और द्वितीय प्रधान लामा बनाया गया। उसका नाम गेंदनग्यास्तसो रक्खा गया।

तृतीय और चतुर्थ लामाके समयमें कोई विशेष बात नहीं हुई। परन्तु पांचवें और छठे लामाओंके समयमें यह अवतार-वाद बहुत प्रबल हो उठा। पञ्चम लामाके समयमें जिसका नाम गांकवांग ग्यास्तसो था यद्यपि नये मतका प्रतिनिधि था परन्तु उसने पुराने सम्प्रदायकी पुस्तकोंसे ले लेकर इस सम्प्र-दायको बहुत बढ़ाया। भविष्यवाणीका गम्भीर कार्य ४ मन्दिरोंको दिया गया। नीचंग, सामयी, लामों और गोनांग। पञ्चम लामाके समयसे लामा शासनका प्रचार तिब्बतमें हो गया। पहले प्रधान लामाओंको धार्मिक अधिकार ही था देशके शासनमें उनका कोई अधिकार नहीं था। उनके पास कुछ राज्य ही नहीं था। पञ्चम लामाके समयमें एक मंगोलियन गौमतेन जिन चोगयाल नामक वीरने तिब्बतपर चढ़ाई की और छोटी २ तेरह जातियोंको पददलित किया। प्रत्येक जातिके दश २ सहस्र घर थे अर्थात् उस सम्पत्ति भवनमें एक लाख ३० हजार घर थे। इस भांति समस्त तिब्यतको विजय करके उस समय जो लामा गद्दीपर था उसके

ही हवाले करके वह अपने देशको चल दिया। तबहीसे तिब्बतके अधीश्वर लामा चले आते हैं। तबसे ही वहां पुरोहित शासन प्रणाली चली आती है।

प्रथम लामा पेनडुलब मरते समय कह गये थे कि उनका जन्म कहां होगा। उनके पीछे किसी लामाने यह बात नहीं कही। तिब्बतके लोगोंका विश्वास है कि प्रधान लामाकी मृत्युके ४६ दिनके भीतर ही वह कहीं न कहीं जन्म ले लेता है। अतएव जब मरनेवालोंने कुछ न कहा तो उनका जन्मस्थान खोजना बड़ा कठिन हो गया। अतएव यह काम उन चार मन्दिरोंके पुरोहितोंपर पड़ा जिनके विषयमें मैं ऊपर कह आया हूं।

जो लोग इस बातका पता लगाते हैं उनके कामोंपर यदि ध्यान दिया जाय तो वह पागल मालूम होंगे। कई एक पुरोहित मिलकर दैवज्ञका काम करते हैं और इनमेंसे ही एक मामूल होता है। शेष पुरोहित उसके सहायक होते हैं अर्थात् ढोल इत्यादि बाजे बजाते हैं। और लोग मन्त्र-पाठ करते हैं। मामूल बहुत अच्छे रेशमी सुन्दर २ वस्त्र पहनकर बैठता है। वह अधलेटा हुआ आंखें खोलकर अपनेमें देवताका आवाहन करता है और इसी समयमें उसके सहायक बाजे बजाते हैं। थोड़ी देर पीछे वह कांपने लगता है। थोड़ी देर काँपकर या तो पीछेके बल गिर पड़ता है अथवा उछलता है और इसी समयमें उसके शरीरमें देवताका आविर्भाव होता है। और उसी कांपती हुई अवस्थामें कह देता है कि अमुक लामाका जन्म अमुक स्थानपर

अमुक घरमें हुआ है। घरका द्वार अमुक दिशामें है। और इतने मनुष्य उस घरमें हैं। अमुक दिन अमुक घरमें बालक उत्पन्न हुआ है वही उपरोक्त लामाका अवतार है। इसके कथनानुसार खोज की जाती है और बालक खोज लिया जाता है। जबतक बालक दूध पीता रहता है तबतक वह अपनी माताके पास ही रहता है। इसके बाद मन्दिरमें लाकर उसको विद्याभ्यास कराया जाता है और इस बातका उसको विश्वास दिलाया जाता है कि अमुक लामाका वह अवतार है।

पञ्चम लामाके समयसे यह भविष्यद्वाणी कहनेकी रीति बहुत अधिक बर्ती जाने लगी और छोटे बड़े सब ही कामोंमें इसका उपयोग होने लगा। तिब्बतके चार विहारोंमें ही यह काम होता है और नेचंगका विहार ही चारोंमेंसे अधिक सम्मानित है।

प्रधान लामाके मरनेपर इन चारों विहारोंके पुरोहित इकट्ठे होते हैं और वे लामाके पुनः जन्मग्रहणका हाल पता लगाते हैं। बहुधा ऐसा होता है कि चारों विहारोंके चार चक्र बैठते हैं। चारोंका निर्णय भिन्न २ होता है। ऐसी अवस्थामें वे तीन या चार बालकोंका निर्णय कर लेते हैं।

जब यह चारों बालक पांच वर्षके होते हैं तो लासा लाये जाते हैं और देश भरके बड़े २ सभ्य वहां एकत्र होते हैं। चीनके प्रतिनिधि जो लासामें रहते हैं, प्रधान लामा, प्रधान मन्त्री और उपमन्त्री, और प्रधान लामागण यहांपर इकट्ठे होते हैं। पहले

इन चारों लड़कोंके नाम चार कागजके टुकड़ोंपर लिखे जाते हैं और इन चारों कागज़ोंको एक सोनेके पात्रमें रखकर बन्द कर देते हैं। सात दिनतक इस पात्रकी पूजा होती रहती है। सात दिन पीछे वेही सब लोग फिर एकत्र होते हैं और चीनी प्रतिनिधि दो हाथी दांतकी छोटी २ लकड़ियां हाथमें लेकर आँखोंपर पट्टी बांधकर एक गोली काग़ज़की उन लकड़ियोंसे पकड़कर उठा लेता है। उस काग़ज़पर जिसका नाम होता है वही दलाई-लामा बनाया जाता है।

यद्यपि इस काममें बेईमानीके लिये बहुत कम अवसर मिलता हैं परन्तु मैंने सुना है कि इन चारों बालकोंके पिता चीनी प्रतिनिधिको बहुत बड़ी २ रकमें घूंसमें देते हैं। क्योंकि जिस बालकका नाम निकलता है उसके पिताको चीनके महाराज ड्यूककी उपाधिके अतिरिक्त बहुत सम्पत्ति भी मिलती है। मैं निश्चित रूपसे इस बातको नहीं कह सकता परन्तु मैंने सुना अवश्य है कि बड़ी घूँसें दी जाती हैं।

यह देवज्ञ लामा बड़े धनी होते हैं। मैंने सुना है कि नेचंग लामा लखपती हैं। घूँस लेनेका एक प्रमाण और भी है कि जो बालक प्रधान लामाके लिये चुना जाता है वह किसी धनीका ही पुत्र हुआ करता है कभी निर्धनका बेटा लामा नहीं हुआ। कोई २ धनी अपना बालक उत्पन्न होनेसे पहले ही इन लामाओं-से ठहरा लेते हैं कि मेरा पुत्र ही प्रधान लामा बनाया जाय। इस प्रकार अवतार निर्वाचनका चाहे पहले कोई विशेष लाभ

होता होगा परन्तु वर्तमानमें ऐसे चुने हुए अवतार तो पूर्वकी शुद्ध चरित्र आत्माओंका अवतार न होकर सब हीनचरित्र तथा पापोंके अवतार होते हैं।

एक बार मैंने एक तिब्बतवासीसे कहा भी था कि यह लामा बनानेकी रीति बहुत बुरी है। इसमें बेईमानीके सिवाय कुछ नहीं है।

इतना मैं अवश्य कहूंगा कि इन लामाओंमें दशमेंसे आठ साधारणतः बहुत बातोंमें अच्छे होते हैं। कारण यह है कि उनकी देखरेख भली भांति की जाती है और साधारण शिष्योंकी भांति कठोर दण्ड न पाकर बड़े आदरसे शिक्षित किये जाते हैं। जब वे कोई ऐसा अपराध भी करते हैं जो इनको कभी न करना चाहिये तो भी कठोर दण्ड न देकर उन्हें उनके मान और आदरका खयाल दिलाकर उनकी आत्मिक चेतनाको जगाया जाता है। बच्चोंको वास्तवमें इसी प्रकारसे शिक्षा देनी चाहिये। अपराध हो जानेपर उनको वज्र मूर्ख तथा निश्चरित्र समझने तथा उनको बुरा भला कहनेसे उनके हृदयपरसे आत्मसम्मानका, आत्मविश्वासका भाव उड़ जाता है और न उन्हें नैसर्गिक उन्नतिका अवसर ही मिलता है। सदा शिक्षा ऐसी विधिसे देनी चाहिये जिससे वे अपना आत्मसम्मानका भाव न खो बैठें। तिब्बतवासी इस प्रकारकी शिक्षा विधिको इस प्रकार उन्नति शिक्षापद्धतिके विचारसे नहीं काममें लाते प्रत्युत उसके प्रति उनका बड़ा आदर होता है।

अवतार निर्णय की विधिको सर्वसाधारणसे बहुत छिपा

कर रखा जाता है। लामाके अवतारोंके विषयमें उच्च पदके लामाओंकी तरफ बहुत सी गढ़न्त कथाएं फैलाई जाती हैं जिन पर सर्वसाधारण आंख मींचकर विश्वास कर लेते हैं। जो लोग इन सब रहस्योंको जानते हैं वे इन सब छल कपटोंसे बड़ी घृणा करते हैं। वे इस अवतार विधिको कोरी घूंस खोरी समझते हैं। वस्तुतः यह भविष्यवाणी करनेवाले लामाओंका छल कपट है जो धनियों और जमींदारोंके पैसेके वश होकर किया करते हैं। इसीसे उनको अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। उनको इस बातका पूरा २ अवसर दिया जाता है कि वह स्वयं ही अपनेको सम्हालें, और ज्ञानकी वृद्धि करें।

इस भविष्यवाणीका प्रयोग जैसा कि मैं लिख चुका हूं केवल बड़े २ नहीं वरं छोटे २ कामोंमें भी किया जाता है। यदि किसी मन्त्रीसे कोई भूल हो जावे तो वह तुरन्त ही उसके प्रतिकारके लिये किसी भविष्यद्वक्ताके पास विशेषतया नेचङ्गके पास जाता है और उसको एक हजार येनसे दस या बीस हजार येन-तक जैसा उसका अपराध हो उसके अनुसार उसे घूंस देता है। वह उसके दण्डमें कुछ न्यूनता अथवा परिवर्त्तन कर देता है।

अब उसके किये हुए अपराधके लिये मन्त्री सरकारमें बुलाया जाता है तो वह चुपचाप जाकर राजदरबारमें बैठ जाता है। क्योंकि उसको विश्वास होता है कि छूट जानेके लिये वह यथेष्ट घूंस दे चुका है। जब उसके अपराधके दण्ड-विधानका

समय आता है तो उसमें भी धर्माधिकारी या पदाधिकारी दैवज्ञ-के पास देवताकी अनुमतिके लिये जाते हैं। दैवज्ञ तो पहले ही सोनेकी बेड़ियोंसे बँधा रहता है। वह उसके अनुकूल ही देवता-को मामूलमें आवाहन करके कहता है, इसे छोड़ दो, इसने जान-कारीमें अपराध नहीं किया है। यह उत्तम हृदयका मनुष्य है, यदि इसको दण्ड मिलेगा तो देशके ऊपर कोई बड़ी विपद आ पड़ेगी। या तो सरकार उसे छोड़ ही देती है या उसे नाममा-त्रका दण्ड दे दिया जाता है।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि कोई मन्त्री या बड़ा अधि-कारी नेचंग को घूँस नहीं देता। परन्तु उस अवस्थामें नेचंग महाशय उसके विरुद्ध उसपर बड़ी भारी विपत्ति डालते हैं और भविष्यवक्ताको उसके विरुद्ध बुलवा कर उससे बदला लेते हैं। उसकी बहुत निन्दा की जाती है। इनके विरुद्ध अपराधीको तो बड़ी यमयातना भोगनी पड़ती है। इसलिये भविष्यवाणी करानेवाले लामाओंके हाथोंमें वस्तुतः बड़ी ही दानवी शक्ति है। पदाधिकारी लोग इनसे इतना अधिक डरते हैं जितना वे अपने ऊपरके बड़े अधिकारीसे भी नहीं डरते। नेचङ्गका वस्तुतः प्रभाव दलाईलामापर भी बहुत है। यद्यपि उपस्थित दलाई-लामा बहुत समझ बूझकर काम करते हैं परन्तु फिर भी नेचङ्गके शब्दोंकी उपेक्षा करना उनकी देशकी प्रथाके विरुद्ध है।

कभी २ ऐसा भी होता है कि कोई ऐसी समस्या आ पड़ती है कि जिसका उत्तर नेचंग महाशयकी समझमें ही नहीं आता

है। जैसे यदि तिब्बत और इङ्गलैण्डके विषयमें कोई प्रश्न उपस्थित हो तो वह बेचारे क्या उत्तर दे सकते हैं और उनको भले बुरेका ज्ञान ही क्या है। ऐसी अवस्थामें भी मध्यस्थ देवताका आवाहन किया जाता है परन्तु मामूल कांपते रहनेके अतिरिक्त मुखसे कुछ नहीं कहता। वह कांपते २ गिर कर अचेतसा हो जाता है। यह अवस्था देखकर उसके सहायक कानाफूसी करने लगते हैं और दलाईलामाके पूछनेपर कहते हैं कि ज्ञात होता है कि देवता ऐसे अपवित्र प्रश्न करनेसे अप्रसन्न हो गया। अतएव यह प्रश्न ज्यों का त्यों रह जाता है और राजदरबारमें जैसी व्यवस्था उचित समझी जाती है वैसा ही किया जाता है।

तिब्बतके पढ़े लिखे और सच्चे धर्मप्रेमी लोग इन भविष्यवाणीके ठेकेदार पुरोहितोंके इन सब कार्यों से बहुत घृणा करते हैं परन्तु प्रकाशमें उनके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं निकालते, वे इन्हें दैत्योंके मन्त्रीऔर धर्मके शत्रुके नामसे पुकारा करते हैं। यहां दो लामा हुआ करते हैं—एक दलाईलामा और दूसरे तसाईलामा। भाग्यवश यह दोनों लामा केवल इन नेचङ्ग चतुरोंके हाथसे नहीं चुने जाते।

मैं प्रसंगवश यहां कुछ वर्णन तसाईलामाके विषयमें कहना चाहता हूं। इस समय जो तसाईलामा हैं वह एक अज्ञात पुरुषके वीर्यसे और एक गूंगी मातासे उत्पन्न हैं अतएव उनके पिताका नाम किसीको मालूम नहीं है। कोई कहता है कि उनके पिता एक तपस्वी और कोई कहता है कि वे एक पुरोहितके लड़के हैं।

परन्तु बहुत सम्भवतः यह वृत्तान्त बहुत सत्य है जो मुझे बहुत ही विश्वस्त पुरुषसे पता लगा है। उसका कथन है कि तसाई-लामा सेरा विहारके मेताके-सङ्ग नामके एक बड़े विद्वान पुरुषके पुत्र हैं। वे पुराने सम्प्रदायके ग्रन्थोंका खूब स्वाध्याय करके अपनी धुनमें पागल हो गये और देश भरमें घूमते रहे। एक गूंगी औरतसे एक पुत्र उत्पन्न किया, वही पुत्र अब इस सम्मान्य पदका अधिकारी हुआ। लोग कहते हैं, तसाईलामा-की सूरत बहुत कुछ उस पागल विद्वानसे मिलती है। यह सब बात भी सेराके एक बड़े विश्वासी विज्ञ व्यक्तिसे ज्ञात हुआ था जिसकी सचाईके लिये कोई अन्य प्रमाण नहीं दे सकता।

बासठवां परिच्छेद



राज्यव्यवस्था।

यद्यपि इस परिच्छेदमें मैं पुरोहिती शासन या लामाई शासन (इस सम्बन्धमें और विषयोंमें भी) के विषयमें जो कुछ लिखूंगा वह सब उसका आधार मेरा वही ज्ञान है जो मैंने लामामें प्राप्त किया। इसका वर्णन मैं पूरा २ नहीं लिख सका हूं। कारण प्रथम तो मुझे उसके विषयमें कुछ ज्ञान ही न था और दूसरे जो बातें मुझे मालूम हुईं वे सब लोगोंसे बातों ही बातोंमें मालूम हुईं। यदि मैं उसके विषयमें किसी मित्रसे कुछ पूछताछ करता तो

सम्भव था कि मेरे ऊपर शङ्का करने लगते। इसी कारण मैं बहुत पूछ भी नहीं सकता था। जो बात पूछी भी गई है वह गोलमाल शब्दोंमें पूछी गई कि जिसमें सन्देहका पात्र न बन सकूं। अतएव अब भी बहुत सी बातें रह गयी हैं जिनका मुझे ज्ञान भी नहीं।

राज्यके उच्च पदाधिकारियोंमें पुरोहित और गृहस्थ दोनों ही विभाग हैं। इन दोनोंहीकी संख्या बराबर है। ऊंचे दर्जेके पुरोहित जो इस काममें नियुक्त हैं वह 'त्सेदङ्ग' कहलाते हैं और अन्य गृहस्थ अधिकारियोंको 'उङ्खोर' कहते हैं। इन दोनों विभागोंके ऊपर चार २ महामन्त्री हुआ करते हैं। पुरोहितोंके महामन्त्री 'टङ्गयकचेनमो' कहलाते हैं और गृहस्थोंके महामन्त्री 'शाव' कहलाते हैं। इन चारोंमें एक अफसर होता है और उसीको वास्तविक अधिकार हुआ करते हैं। शेष तीन उसके सहायक हुआ करते हैं।

केबिनेटमें चार प्रधानमन्त्री, तीन अर्थसचिव, दो युद्ध-मंत्री, एक नगर-मंत्री, एक धर्म-सचिव, एक न्यायमंत्री और चार महामंत्री रहा करते हैं।

इन स्थानोंपर क्या पुरोहित और क्या गृहस्थ सबही उच्च जातिके लोग रखे जाते हैं। गांक्यावोनवो शांलगो ज़ातिके लोग इन स्थानोंपर नहीं रखे जाते हैं।

तिब्बतकी राज्यव्यवस्थाका कोई कायदा नहीं है। तिब्बतकी शासन-व्यवस्था वर्तमानमें मिली जुली है। एक ओर ताल्लु-

केदारी और दूसरी ओर नवीन पद्धतिकी स्थानीय सरकार भी है। जमीन्दारों और सर्वसाधारणका सम्बन्ध ताल्लुकेदारीका सा है। पहले यह भूमि उनको राजसेवाके पारितोषिकके रूपमें दी गयी थी परन्तु उसीमेंसे ताल्लुकेदारीका उद्भव हो गया। जमीन्दार लोग अपनी जागीरमें रहनेवाली प्रजाके पूर्णतया स्वामी हैं। वे उनके ऊपर 'पालटैक्स' कर लगाते हैं और जैसा जो अमीर गरीब होता है उससे वैसाही कर भी एक टंकासे लेकर सौ टंकातक लिया जाता है। यदि कोई मनुष्य टैक्स देनेसे इन्कार करे अथवा न दे सके तो उसको कोड़ोंका दण्ड दिया जाता है। उसकी धनसम्पत्ति जब्त कर ली जाती है। केवल लामाही इस टैक्ससे बचते हैं। इस कारण बहुतसे लोग पुरोहित लामा बन बैठते हैं। टीरिंगपोचेने मुझसे कहा कि 'मैं नहीं समझ सकता कि इतने फकीरोंको तिब्बतमें देखकर हर्षित होना चाहिये कि दुःखी होना चाहिये। बहुतसे लोग कहते हैं कि यह हमारे देशकी धार्मिक उन्नतिका चिह्न है अतः प्रसन्न होना चाहिये। परन्तु मैं समझता हूं कि कुछ एक हीरे हजारों ईंट पत्थरके टुकड़ोंसे कहीं अच्छे हैं। इसमें सन्देह नहींकि तिब्बतके धर्ममें कूड़ा करकट बहुत है और रत्नोंकी संख्या बहुत ही कम है।

जब इस बातपर विचार करते हैं कि सर्वसाधारण प्रजापर कितना भार है तो उनका लामा या पुरोहित बनकर अपनेको बचा लेना कोई आश्चर्यकर नहीं मालूम होता। यहांके गरीब पुरोहितोंकी

अवस्था भी सर्वसाधारणसे बहुत अच्छी है क्योंकि प्रति मास सरकारकी ओरसे उनको कुछ न कुछ मिलता ही है। इसके अतिरिक्त धनी दाताओंकी ओरसे भिक्षामें भी बहुत मिलता रहता है। परन्तु गृहस्थ मनुष्यके लिये यह कुछ भी नहीं है। वह अपना और अपने कुटुम्बका पेट आपही परिश्रम करके भरता है। इसके अतिरिक्त उसको अपना कर भी देना पड़ता है। प्रायः उसके द्वारपर दारिद्र्यका व्याघ्र सदा मँडराया करता है। ऐसी दशामें वह गृहस्थ बेचारा अपने कुटुम्बके पालन पोषणके लिये ताल्लुकेदारोंका कर्जदार हो जाता है। जब वह कर्जको न चुका सके तो वह अपने लड़के या लड़की अपने महाजनको सेवकरूपमें दे देता है। ऐसा देखा गया है कि जिस गृहस्थने १० येन कर्ज लिये थे उसे भी अपना लड़का १०–१५ वर्षके लिये सेवामें दे देना पड़ा है। उन बच्चोंकी अवस्थापर पाठक विचार कीजिये। सचमुच ये जमीन्दारोंके गुलामसे बन जाते हैं। उनके विकासका द्वार उनके मां बाप अपने हाथों बन्द कर देते हैं।

मेरे इस कहनेका यह आशय नहीं है कि तिब्बतमें जागीरदारी ही है। नहीं,वहां केन्द्रिक-शासन-पद्धति इसके साथ ही साथ चलती है। क्योंकि जागीरदार लोग सदा अपनी जागीरमें ही नहीं रहा करते बल्कि वे अपना काम अपने अधीनस्थ लोगोंके ऊपर छोड़कर चले आते हैं और सरकारकी ओरसे उनको और सूबोंका प्रबन्ध भी करना पड़ता है।

अतएव तिब्बतमें दो तरहकी रिआया हैं अर्थात् एक वह जो

जागीरदारोंके अधीन हैं और एक वह जो कि मुख्य सरकारके अधीन हैं दोनों अधीन शासन एक दूसरेकी सीमामें ले जाते हैं। इससे प्राय: प्रजाको पालटैक्स ताल्लुकेदारोंको देकर मुख्य सरकारको भी कर देने पड़ते हैं।

मालगुजारी एकत्र करनेके लिये दो तीन कमिश्नर नियुक्त किये जाते हैं जो कि उच्च पदाधिकारी लामाओं अथवा गृहस्थोंमें-से चुने जाते हैं। इनको न्याय-दान और शासन दोनों ही प्रकारके अधिकार हुआ करते हैं। यह लोग दौरा करके सामान टैक्स और चुंगी इत्यादि वसूल करते हैं।

मालगुजारी बहुत नामोंसे वसूल की जाती है। इन नामोंमें सबसे पहला नाम लामाओंकी आजीविकाका है। यह आजी-विका लासा और बाहर दोनों ही स्थानोंके लामाओंको मिला करती है। केवल लामामें २५ हजार लासा सरकारी वृत्ति पाते हैं। मंदिरों और धार्मिक कामोंके लिये भी बहुत रुपया वसूल किया जाता है। सरकारी नौकरोंको तनख्वाहें बहुत कम पता लगती हैं। प्रधानमन्त्रीकी सालभरकी आय छः सौ कोकू अर्थात् ४ हजार बुशल गेहूं है। तनख्वाहोंमें प्राय: अनाज ही दिया जाता है। खजानेके मन्त्रीको ३६० कोकू मिलते हैं। एक बड़े आश्चर्यकी बात है कि बहुधा सरकारी नौकर अपनी तनख्वाहें लेना छोड़ देते हैं। मेरे मित्र अर्थसचिवने निरन्तर दस वर्षतक नौकरी की परन्तु कभी भी अपनी तनख्वाह नहीं ली। मैंने विस्मित होकर उससे पूछा कि तुमने अपनी तनख्वाह क्यों नहीं ली तो उसने

उत्तर दिया कि मेरी जागीरसे ही मुझे इतनी आय हो जाती है कि मैंने दलाईलामाको इसके लिये कष्ट देना उचित न समझा। उसने यह भी कहा कि तिब्बतमें और भी ऐसे बहुतसे सरकारी नौकर हैं जो या तो लेते ही नहीं अथवा वेतनसे बहुत कम लिया करते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो कि अपनी पूरी तनख्वाह लें लिया करते हैं। यह भी एक आश्चर्यकी बात है कि वह अफसर जिन्होंने अपनी तनख्वाहें छोड़ दीं हैं वे भी रिश्वत लेनेमें संकोच नहीं करते हैं। यदि सत्य पूछा जाय तो तिब्बतमें जैसी घूंसखोरी है ऐसी कहीं भी न होगी। और इसको यहां ऐसा बुरा भी नहीं समझते जैसा और सभ्य देशोंमें समझी जाती है। मेरा मित्र अर्थसचिव बहुत ही शुद्ध चालचलनका था परन्तु जो भेंटें उसके सम्मानके कारण उसके पास आया करती थीं उनको वह ले लिया करता था।

सरकारी नौकरोंमें १६५ लामा और १६५ गृहस्थ हैं। उनको भांति २ के काम करने पड़ते हैं। कभी वे लोग किसी सूबेके गवर्नर बनाये जाते हैं कभी न्याय-विभागमें नियुक्त किये जाते हैं। ऐसी अवस्थामें एक पुरोहित अथवा एक गृहस्थ नहीं भेजा जाता है। वरं दोनों हीमेंसे एक एक भेजा जाता है। कभी कभी दो दो और कभी कभी चार २ भी भेजे जाते हैं। ऐसी अवस्थामें भी कभी २ घूंसके कारण अन्याय हुआ सुनाई पड़ता है। ऐसी दशामें उपस्थित दलाईलामा उन जजोंकी धन सम्पत्ति जब्त करनेमें कुछ भी आगा पीछा नहीं करते। यदि

झगड़ा भारी हुआ तो दलाईलामा आप ही उसका न्याय करते हैं।

यह कहना चाहिए कि दलाईलामाके कामका निश्चय नहीं है। वह धर्मकी शिक्षा देनेवाला है। वही न्याय भी करता है और प्राणदण्ड और देशनिकाला भी देता है। धर्म्ममें जिस प्रकारकी दण्डाज्ञाका निषेध भी है। दलाईलामाको जज बनकर वह दण्डाज्ञा भी देनी पड़ती है। वह स्वयं गृहस्थ नहीं, वह मद्यादि किसी मादक द्रव्यका सेवन नहीं करता। उसका यह पद वस्तुतः बहुत ही असाधारण रूपसे उच्च है। सब लामा दलाईलामाका शिष्य होनेकी प्रतिज्ञा करते हैं। मुझे भी ऐसी दीक्षा लेनेके लिये कहा गया था परन्तु मेरी अश्रद्धा इस कार्यमें बाधक थी। तो भी मुझे गूढ़ शिक्षाओंके लिये भी आज्ञाएं मिल चुकी थीं। इस दीक्षाका मेरे धार्मिक विश्वासोंसे कोई भी सरोकार न था। दलाईलामाकी स्वयं स्थिति ऐसी बनावटी थी या अन्य लामा भी उसी प्रकारके थे। वे अंशतः लामा थे और अंशतः साधारण गृहस्थ थे। कभी २ उनमें कोई भेद ही मालूम नहीं होता। जैसा मैंने पहले कहा था कि तिब्बती लामा जमीन्दारी और व्यापार भी करते हैं और वे ही अपने नवयौवनमें सिपहगिरीका काम करते हैं।

मेरे इस कहनेका तात्पर्य यह है कि यहांके लामा और गृहस्थोंमें कोई भेद है तो यही कि लामा सिरपर बाल नहीं रखते हैं और पुरोहिताईका लबादा पहनते हैं। मुझे यह कहते

हुए बड़ा दुःख है कि यहां लामाधर्म बड़ी अवनत दशामें है। जेत्सांग खापाने इसे जो उन्नतरूप दिया था वह अब कहीं लुप्त हो गया है।

तिरसठवां परिच्छेद



शिक्षा और जातियां

शिक्षाका तिब्बतमें बहुत विस्तार नहीं है। शिगात्ज़ेके आस पास प्रदेशके वासी प्रायः तीन काम सीखते हैं अर्थात् लिखना, पढ़ना और हिसाब। परन्तु और स्थानोंमें मातापिताके पास इतना भी धन नहीं है कि इतनी शिक्षा भी दे सकें। सिवाय विहारोंके और स्थानोंके लड़के और लड़कियां—और विशेषतः लड़कियां बिलकुल ही अशिक्षित रहती हैं। यहां शिक्षालय बहुतही थोड़े हैं जो कि लासा और शिगात्ज़ेके अतिरिक्त और कहीं नहीं हैं। यदि कहीं लड़के पढ़ते भी हैं तो घरेलू स्कूलोंमें ही पढ़ते हैं।

यदि कोई उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहे तो लामा बनकर सरकारी विहारमें ही पढ़े। अन्यत्र कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहां उच्च शिक्षा मिल सके। सर्वसाधारण श्रेणीके विद्यार्थियोंको यहां स्थान मिल जाता है नहीं तो सरकारी स्कूलोंमें नीची श्रेणियोंके विद्यार्थियोंको प्रवेशही नहीं मिलता। नीची जातिके बालकोंके

लिये तो उनका द्वार सदा ही बन्द रहता है। तिब्बतमें सबसे नीची एक ही जाति है। उसीकी उपजातियां हो जाती हैं जो मछुआ,मल्लाह,सुनार,लुहार और कसाईका काम करती हैं। लुहार एक कारणसे नीच समझे गये हैं कि वे लोग ऐसे हथियार बनाते हैं जिनसे जीवोंकी हत्या भी की जाती है। यह सबसे बड़ा पाप है। इन लोगोंको लामा या पुरोहित बनने नहीं दिया जाता। यदि वे किसी प्रकार विहारमें प्रविष्ट भी हो जाते हैं तो प्रायः उनको छल कपटसे अपनी जाति छिपानी पड़ती है। इस प्रकार उनमेंसे भी बहुतसे अपने जन्मस्थानसे पर्याप्त दूर देशोंमें जाकर लामा बन गये हैं। इन नीची जातियोंकी अपेक्षा साधारण लोग अधिक लाभमें रहते हैं।

सरकारी शिक्षालयोंमें भर्ती होनेका अधिकार केवल चार जातियोंको है। एक नेरपा जो कि राजाके कुटुम्बी हैं। दूसरे गांपा जो लामाओंकी औलादमेंसे हैं। तीसरे वे लामा हैं जो प्राचीन सम्प्रदायके अनुयायी थे और चौथे शालंगो कहलाते हैं। ये लोग पुराने अमीरोंकी औलादमेंसे हैं।

गेरपा जातिमें वही लोग हैं जो पहले कालके महामन्त्रियों और सर्दारोंकी औलादोंमेंसे हैं। ये लोग याबशो कहाते हैं। ये वर्त्तमान और भूतकालके सब मिलाकर दलाईलामाओंके ३३ घर हैं। इसी जातिमें तिब्बतका सबसे प्रथम राजवंश टिचेनल्हा वारीशा भी सम्मिलित है। ये सब सर्दार कहाते हैं। प्रथम राजवंशज अभी तक भी विद्यमान हैं। उनके मुख्य अध्यक्षका

पद भी दलाईलामाके समान उच्च ही है। लामाई शासनके उच्च पद याब्शी लोगोंको सुगमतासे मिल जाते हैं। ये प्रधान मन्त्री, महामन्त्री तथा अन्य राज्यके उच्च पद पाते हैं। साथही वे इन उच्च पदोंके लिये योग्य समझे जाते हैं। यदि उनको वे उच्च पद न मिलें तो उनसे उतर करके जो पद हों वेही उनको दे दिये जाते हैं। तशीलुनपोंके याब्शी और होते हैं। उनके अधिकारी पूर्वोक्त याब्शी लोगोंसे कुछ भिन्न भिन्न होते हैं। दलाईलामा तथा प्रथम राजके वंशज प्रायः तिब्बतके राजवंश कहाते हैं। सुगमताके लिये हम इनको एक अलग जाति मान सकते हैं। यद्यपि ऐसे घराने भी हैं जो इनसे जाति और अधिकारमें बहुत भिन्न नहीं हैं। उनमेंसे एक देपानचेका है। यह जाति सेनापतियों और सर्दारोंकी श्रेणी है। ये लोग प्रायः तभी विशेष पदोंपर नियुक्त होते हैं जब कि तिब्बत किसी विशेष युद्धमें लगा होते हैं।

इनसे कुछ नीचे इतिहासप्रसिद्ध पुरुषों और राजसेवामें विशेष आदर पाये मन्त्रियोंके सन्तानोंकी जातियां होती हैं। यद्यपि इनका नाम सर्दारोंकी गणनामें बहुत पीछे होता है तो भी योग्य व्यक्ति समझकर इनको मन्त्री आदि पद सुप्राप्य होता है।

तिब्बतमें प्रायः योग्यता और मान एक साथ नहीं रहते। क्योंकि चाहे बेचनेवाले कमही होते हैं अधिकार पदोंकी प्रायः खरीद फरोख्त होती रहती है। योग्य उच्च अधिकारियोंको उनके सहयोगी सदा घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। प्रायः उन्हींके गुप्त

षड्यन्त्रोंके कारण पदच्युत कर दिये जाते हैं। इस प्रकारसे बहुतसे उच्चपद खरीदनेवालोंके पास ही रहते हैं।

गेरपासे उतरकर दूसरी जाति ङ्गापाका पास है। इस विभागमें सिद्ध लोग हैं। ये सिद्ध लामाओंकी सन्तान हैं। इन लोगोंने धर्मको तोड़कर विवाह किये और घर बसा लिये। इन लामाओं-ने विशेष चमत्कारों या मायाके कार्यों को औरोंसे ऐसा छिपाया कि वे सब भेद केवल उसी जातिके लोगोंमें सीमित हो गये। इस वर्गका तिब्बतमें बड़ा मुख्य भाग है। ये गर्मीकी ऋतुमें पालटैक्स इकट्ठा किया करते हैं। इस प्रकारसे शासनका कार्य भी करते हैं। नगर और प्रान्तके अधिकारी लोग भी इनसे बहुत भय करते हैं क्योंकि वे शक्तिके मायावी होते हैं। साधा-रण लोगोंका विश्वास है कि यदि इनमेंसे कोई ङ्गापामें अपनेसे रुष्ट हो जाय तो वह बहुत आपत्तिमें डाल सकता है। वे इस प्रकार भय दिखाकर सबसे पड़ा पड़नेका कर इकट्ठा करके द्रव्य संग्रह कर लेते हैं। इतने नफेमें रहकर भी ये लोग बहुत ही गरीब होते हैं। वे साक्षात् दरिद्रताकी मूर्त्ति होते हैं। तो भी उनको इस बातसे बड़ा सन्तोष होता है कि सभी प्रजामें उनके पास सबसे अधिक शक्ति है और प्रजापर उनका इतना दबदबा है। सर्दार लोग भी मार्गमें आते ङ्गापाको देखकर अपने घोड़ेसे उतरकर उसको प्रणाम करते हैं।

तीसरी जाति बोन-बो है। बुद्धधर्मके प्रचारके पहले बोन-बो धर्म ही तिब्बत धर्ममें माना जाता था। इस धर्मके पुरो-

हितोंको विवाह करनेकी आज्ञा थी। इसलिये उन लोगोंकी अब-तक भी बराबर सन्तानें चली आ रही हैं। सर्वसाधारणमें भी वे एक विशेष रूपसे रहते हैं। वे अपने ही देवताओंको पूजते हैं और उन्हींको प्रसन्न करनेके लिये वे विशेष क्रिया काण्ड किया करते हैं। जब कोई भी विवाह करता है तो वह बोन-बोके पास जाकर ही स्थानिक देवताओंकी पूजा करनेकी प्रार्थना किया करता है। वह कभी २ अभिचार और अभ्युदय दोनों प्रकारके साधनोंके लिये भिन्न २ पद्धतियां और पूजायें किया करता है।

इस जातिके लोग प्रायः देशभरमें मिलते हैं। परन्तु इनकी संख्या बहुत न्यून होती है। दूर २ के ग्रामोंमें हिमालयके पासके प्रदेशोंमें प्रायः यही लोग बसे हैं। साधारणतः एक गांव या बस्तीमें इस जातिके एक या दो घर ही होते हैं। इस कारण बोन-बो लोगोंका भी बड़ा मान रहता है। वे कभी स्थानिक शासक और मजिस्ट्रेटका भी काम किया करते हैं। यदि वे और पेशा भी करें तो भी उनको बड़े मानसे देखा जाता है।

यद्यपि बोन-बो लोग प्राचीन धर्मसम्प्रदायके वंशज नहीं हैं तो भी अब वे पुरोहित नहीं हैं क्योंकि वे अपना धर्म और मन्तव्य और लोगोंको नहीं सिखाते और न औरोंको अपने धर्ममें आनेके लिये प्रोत्साहित करते हैं। वे इसीसे सन्तुष्ट हैं कि वे अपने प्राचीन धर्मग्रन्थोंकी अपने वंश-परम्परासे रक्षा करते चले आ रहे हैं। इसीसे वे भी तिब्बती प्रजामें अपनी भिन्न स्थिति बनाये हुए हैं। वस्तुतः नव दीक्षित बोन-बोका बड़ा ही आदर

होता है। इस वर्गका आदर भी प्रायः वंशकी उच्चताके कारण होता है।

चौथी जाति शालङ्गो है। ये उन वंशोंमेंसे हैं जिन्होंने पूर्व कालमें अपने धन और मानके कारण अपने ग्रामों और नगरोंमें कभी पहले शक्ति और अधिकार अपने हाथमें कर लिया था। तिब्बती लोग स्वभावके बहुत ही मानी होते हैं इसलिये वे अपने वंश-परम्पराके स्वभावोंको कभी नहीं छोड़ते। उनकी बहुप्रतित्वकी रीतिका भी यही फल है। इससे उनके घरकी सम्पत्तिका बंटवारा न होकर कुटुम्ब भर एकत्र ही रहा करता है। प्रायः शालंगो लोगोंमेंसे सभीको कुछ न कुछ जायदाद है ही। गरीबसे गरीब शालङ्गों भी बराबर उसी प्रकार सम्मानित रहता है।

इन चार जातियोंके अतिरिक्त सर्वसाधारणके दो विभाग हैं। और उनके नाम टोंगवा और टोंगडू हैं। इनमें टोंगवा लोग खेतीका काम तथा और और छोटे काम भी करते हैं। परन्तु वे कभी कर्जेके फ़न्देमें पड़कर गुलामीमें नहीं फँसते। टोंगडू लोग उनसे भी छोटी जातिके हैं। वे बहुत ही नीच सेवाओंके कार्य करते हैं। तो भी वे गुलाम नहीं कहे जा सकते। उनको गरीब खेतिहर कहा जा सकता है। पहले इन लोगोंका जमीन्दारोंके साथ सीधा सम्बन्ध था। वे जमीन्दारोंके खेतिहर थे। परन्तु उनकी अब वह स्थिति नहीं रही। टोंगडू लोग टोंगवाकी अपेक्षा बहुत गरीब होते हैं। चाहे टोंगवा कितनी ही नीची-

स्थितिमें हो जाय और टोंगडू चाहे कितना ही ऊंचा चढ़ जाय तो भी दोनों जातिमें बड़ा भेद रहता है। सर्वसाधारणका दोनोंसे पूर्ववत् व्यवहार रहता है। मानों उनकी स्थितिमें कोई भेद ही नहीं आया। टोंगडू लोगोंके साथ बैठकर अन्य लोग भोजन नहीं कर सकते और न विवाह कर सकते हैं। यही छुआछूतका कठोर नियम नीच जातिके पूर्वोक्त चार विभाग—मछुए, मल्लाह, लुहार और बूचड़ लोगोंके साथ भी बरता जाता है। इनमें भी मछुए और मल्लाह, लुहार और बूचड़ लोगोंसे ऊंचे समझे जाते हैं। वे सर्वसाधारणके साथ एक घरमें बैठकर अपने ही बर्तनोंमें खा सकते हैं परन्तु लुहार और बूचड़ लोग एक घरमें बैठकर खानेके योग्य भो नहीं समझे जाते हैं। इन चारों छोटी जातोंको सर्वसाधारणसे बहुत नियमोंसे पृथक् किया गया है। वे आपसमें विवाह नहीं कर सकते।

यदि कोई उच्च जातिका पुरुष या स्त्री किसी नीच जातिवालेसे विवाह कर ले तो वह सदाके लिये अपनी जातिसे च्युत समझा जाता है। वह सम्बन्ध छूट जानेपर भी मृत्यु समयतक कदापि जातिमें नहीं आ सकता है। यदि इस दम्पतिसे औलाद होती है तो उसकी अपनी एक जाति बन जाती है। वह अपने मां बापसे भी नीची समझी जाती है। उसका नाम 'टाक-टारिल' यानी दोगली जाति है। तिब्बतमें नीचाति नीच जाति यही है।

एक और भी नई जाति है वह सभ्य लुहार है। वे अपनी

प्रवृत्तिके अनुसार चतुर कारीगर होते हैं और लुहारीका पेशा करते हैं। तो भी इस पेशाके कारण अपनी जातिके अधिकारोंसे वञ्चित नहीं समझे जाते।

उच्च जातिवाले सामाजिक रीति-रिवाज और कानून दोनों हीमें नीच जातिवालोंसे अधिक अधिकारवान हैं। ऊंची जातिका लड़का अपने खेलके साथी नीच जातिवालेसे आदर और सम्मान पानेका अधिकारी है। यदि खेलते हुए वह लड़का उच्च जातिवालेको कोई गाली दे तो चाहे वह निरपराध ही क्यों न हो उसको दण्ड अवश्य मिलेगा। यदि ऊंची जातिवाला मन्दिरके चूहेके बराबर गरीब क्यों न हो तब भी नीच जातिके धनीको उसका आदर करना ही पड़ेगा।

ऊंची जातिवाले अपने विशेष सभ्य चरित्रके कारण तुरन्त ही नीच जातिवालोंसे पहचाने जाते हैं। उन्हें अपनी इज्ज़तका बड़ा विचार रहता है। परन्तु मध्यम जातिवालोंमें सचाईका बड़ा गुण है कि उनके पास चाहे खानेको न हो और भूखों मर रहे हों परन्तु वे चोरी कभी नहीं करते। इसके विपरीत नीच जातिवाले चोरी, डाका मारने और हत्या करनेकी प्रवृत्तियोंके लिये प्रसिद्ध हैं। यह लोग चोरी और डाका भी मारते हैं और भीख भी मांगते हैं। वस्तुतः भीख माँगनेवाले फकीरोंकी अपनी अलग भी एक जाति है। उनका पीढ़ी दर पीढ़ीसे भीख मांगनेका पेशा रहता है। सर्वसाधारण इनको बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। वे शकल सूरतसे इस व्यवहारके योग्य प्रतीत

होते हैं। उनमें क्रूरता, नीचता, पापाचार कूट कूट कर भरा होता है।

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं ऊंची जातिके लड़के सरकारी स्कूलोंमें भर्ती हो सकते हैं परन्तु जो बातें वहां सिखलाई जाती हैं वह बिलकुल अधूरी हैं। पढ़ाईमें केवल तीन बातें हैं—पाठ कण्ठस्थ करना, लिखनेका अभ्यास करना और गणित करना, सबसे मुख्य पाठोंका कण्ठस्थ करना है। लेखकके अभ्यासमें बहुत देर लगा करती है। गिनती पत्थरके टुकड़ों, लकड़ीके टुकड़ों, घोंघों और कौड़ियोंसे सिखाई जाती है। वे पहले बौद्धधर्मका पुस्तकोंको कण्ठाग्र कराते हैं। फिर व्याकरण और इसके बाद व्याख्यान आदि। व्याख्यानको यह लोग बहुत चावसे याद करते हैं। यदि कोई निवेदनपत्र इत्यादि दलाईलामा अथवा और किसी उच्च पदाधिकारीको देना होता है तो वे खूब अलंकारिक मुहावरेदार पुरानी भाषामें लिखकर देते हैं कि जो तिब्बतके सर्वसाधारणकी समझमें भी नहीं आती। इसीमें वे अपना पाण्डित्य समझते हैं कि उनके लिखे हुएको कोई समझ न सके। वे लेख भी पण्डिताईके समझे जाते हैं जिनके अक्षर भी बहुत पुरानी चालके चित्र विचित्र बनाकर बड़े दुर्बोध बनाकर लिखे जायं।

यहांके गुरु पढ़ानेके समय एक बांसकी चपटी लकड़ी अपने पास रखते हैं और उसको शिक्षाके लिये बहुत उपयोगी समझते हैं। जो कविताएं सहजमें नहीं आती हैं उनको कण्ठाग्र करना

बहुत आवश्यक समझा जाता है। गुरु समझते हैं कि छड़ीसे पीटनेसे उनके शिष्यकी बुद्धि तीव्र हो जाती है। गुरु और शिष्यका सम्बन्ध वहां ऐसा है जैसा जेलके दारोगा और कैदीमें हुआ करता है। शिष्य बेचारे अपने गुरु और उनकी छड़ीको देखतेही कांप जाते हैं और कभी भी ऐसा नहीं होता है कि अपने पाठको याद न करके लावें। वे भयके मारे छुपते फिरते हैं, वे जानते हैं कि पाठमें यदि तनिक भी भूल हुई तो छड़ी पीठपर पड़ने लगेगी। साधारण रीतिसे तीस रूल शिष्यकी बाईं हथेलीपर लगाये जाते हैं। समझदार शिष्य आज्ञा पाते ही अपना हाथ दण्ड पानेके लिये तुरन्त ही बाहर निकाल देता है यदि हाथके निकालनेमें तनिक भी देर अथवा आनाकानी हुई तो दण्ड दुगुना हो जाता है। ऐसी अवस्थामें ३० के बदले ६० बेत लगाये जाते हैं। किसी बच्चेको ऐसी अवस्थामें हाथ बाहर किये और आंसू बहाते हुए देखना बड़े कठोर हृदयका काम है। वास्तवमें यह शिक्षा नहीं केवल क्रूरता है।

मैंने एक बार अपने मित्र अर्थसचिवसे शिकायत की थी कि इस भांति दण्ड देना बड़ा अनुचित है। वह भी अपने शिष्यों-पर अपने दण्डका बड़ी उदारतासे प्रयोग करता था यद्यपि वह तिब्बतके और गुरुओंकी भांति शिष्योंको रात भर रस्सीमें बांधने और रातको खाना न देने आदिका क्रूर दण्ड न देता था। पहले तो उसने मेरी बातको न माना और मेरे साथ सहमत भी नहीं हुआ परन्तु पीछे उसने मेरा भाव समझा और दण्ड

देना छोड़ दिया। तबसे वह शिष्योंको डांट ही दिया करता था। इसके बहुत दिन पीछे उसने मुझसे एक दिन कहा कि जबसे मैंने आपके कहनेके अनुसार लड़कोंको दण्ड देना छोड़ दिया है तबसे उनकी शिक्षामें बहुत कुछ वृद्धि हुई है। यहां मन्द-बुद्धि-विद्यार्थियोंको गालियां देना भी आवश्यक समझा जाता है। यथा—पशु, भिखमंगा, शैतान, गधा, मां बापका मांसखोर आदि अपशब्द बहुधा प्रयोग किये जाते हैं। शिष्य लोग भी इन्हीं अपशब्दोंको सीखकर बड़े होनेपर अपने शिष्यों-पर भी इनका प्रयोग किया करते हैं।

सर्वसाधारण गृहस्थोंके लड़के तो इस भांति पढ़ाये जाते हैं परन्तु लामाओंके शिष्योंका कुछ और ही हाल है। उनके गुरु उनको बहुत स्वतन्त्रता दे देते हैं कि वे स्वयं सब काम किया करते हैं। फल यह होता है कि उनकी विद्यामें कुछ भी उन्नति नहीं होती है। बहुतसे विद्यार्थियोंके आचार उनके अध्यापकोंकी विलासप्रियताके कारण बहुत ही बिगड़ जाते हैं। बहुतसे अपने शिक्षाके दोषोंको स्वीकार कर लेते हैं और वे अपने नवयुवकोंके आचार न बिगड़ने देनेके लिये बड़े सावधान रहते हैं। ऐसे सावधान गुरुओंके शिष्य ही योग्य पुरोहित और लामा बनते हैं।

कण्ठाग्र करानेका भार शिष्योंको बहुत हानि पहुंचाता है। एक वर्षकी पढ़ाईमें १६, १७ वर्षके विद्यार्थियोंको प्रायः ५०० पृष्ठ अपनी धर्मपुस्तकके याद करने पड़ते हैं। वर्ष पीछे उसमें

उनकी परीक्षा हुआ करती है। जिसकी स्मरणशक्ति निर्बल है उसको भी १०० से कम पृष्ठ याद नहीं करने पड़ते हैं। १८ से ३० वर्षके विद्यार्थियोंको ८०० से १००० पृष्ठोंतक याद करने पड़ते हैं। मुझे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि तिब्बतके लोग इतना अधिक कैसे कण्ठाग्र कर लेते हैं। मैं छः महीनोंमें कठिनतासे ५० पृष्ठ याद कर सकता हूं। इतना कार्य तो निर्बल-से निर्बल बुद्धि विद्यार्थियोंको दिया जाता है।

चौसठवां परिच्छेद

तिब्बतका व्यापार और कारीगरी

यहांपर मुझे नवम्बर १६०१ की एक बात याद आ गई है। जब मैं यहां आया था उस समय मैंने एक पत्र अपने घरको भेजा था। यह बात १८ नवम्बरकी है। दार्जिलिङ्गमें मुझसे एक तिब्बती व्यापारी त्सारोंगवासे भेंट हो गई थी उसीके हाथों यह पत्र भेजा था। यह मनुष्य सरकारकी ओरसे लोहा खरीदनेके लिये कलकत्ते जा रहा था। मुझे इसके ऊपर विश्वास था अतएव शरत्चन्द्र दासके नाम एक पत्र उसको दे दिया था। उसीमें जापानी मित्रोंके लिये भी कई एक पत्र रख दिये थे। यह लोहा छोटे २ हथियारोंके निमित्त लासाके दक्षिण किनारे बसे हीवके कारखानेके लिये मंगाया गया था।

यह कारीगरी यहां प्रायः आठ वर्षसे प्रचलित हुई थी। इसको एक तिब्बतवासी लात्सीरंग दार्जिलिङ्गमें बहुत समयतक रह कर सीख आया था और तिब्बत सरकारकी आज्ञा पाकर वह अपने साथ दस कारीगर और भी लाया था जो कि हिन्दू और काश्मीरी मुसलमान थे। जिस समय मैं लासा पहुंचा उस समय उनमेंसे केवल दो रह गये थे। शेषमेंसे कुछ मर गये और कुछ अपने देशको चले गये थे। परन्तु तिब्बतके बहुतसे लुहारोंने उनसे यह काम सीख लिया था अतएव उनके मर जाने और चले जानेसे भी कारखानेके कार्य्यमें कुछ हानि नहीं हुई थी। तिब्बतके लिये यह बड़ा भारी सुधार था। क्योंकि इससे पहले वहां चकमक पत्थरसे चलनेवाली बन्दूकें थीं। और ऐसी भी भारतवर्षसे वहां नहीं पहुंच सकती थीं। तिब्बत सरकारने यह कारीगरी अपने यहां जारी रक्खी अतएव उसके लिये लोहेकी आवश्यकता होनेपर मेरे मित्रको कलकत्ता भेजा गया था।

आजकल तिब्बतके व्यापारी प्रायः बाहर जाते और आते हैं। यह लोग भारतवर्षकी ओर बहुत जाते हैं। उससे कम चीन और उससे कम रूस जाते हैं। रूसमें जाते आते अवश्य हैं परन्तु वहांसे व्यापारिक सम्बन्ध वैसा नहीं जैसा कि राजनीतिक है।

तिब्बतसे भारतवर्षको ऊन बहुत जाती है। इसके अतिरिक्त कस्तूरी, याककी पूंछे, समूर और चमड़ा भी जाता है। बौद्ध-

धर्मकी मूर्त्तियों और पुस्तकोंकी भी भारतवर्षमें बड़ी मांग है परन्तु यह वस्तुयें प्रायः जब्त हो जाती हैं अतएव लोग उन्हें नहीं लाते हैं। इसके अतिरिक्त और भी वस्तुएं हैं परन्तु वे सब बहुत थोड़ी २ जाती हैं।

पहले चीनी चाय भी बहुत जाती थी पर अब उसका चलान बन्द हो गया है।

ऊन पांच छः हजार खच्चर भरकर दार्जिलिङ्ग जाती है। प्रायः १५०० खच्चर भूटानको जाती है। २५०० खच्चर नैपाल-को और प्रायः तीन हजार खच्चर लद्दाखको जाते हैं। यह संख्या ठीक नहीं है क्योंकि वह तो चुंगोके आफिसोंसे मिल सकती है। मैंने वही संख्या लिखी है जो व्यापारियोंसे पूछनेपर ज्ञात हुई है। इसके अतिरिक्त कुछ ऊन चोन और मानसरोवरको भी जातो है। परन्तु मैंने वे देश नहीं देखे अतः उनके विषयमें मैं कुछ भी नहीं कह सकता।

यहां वह मुश्क पाया जाता है जो कि हरिणके शरीरसे निकलता है। मुश्कबिलावका मुश्क यहां नहीं होता है। मुश्की हिरन यहां सब स्थानोंपर पाया जाता है। यह जीव साधारण बिल्लीसे २॥-३ गुना बड़ा हो ता है। और यद्यपि वह जापानी हरिणसे मिलता जुलता होता है परन्तु उतना बड़ा नहीं होता है। यह घास खाता है और गहरे भूरे रंगका होता है। यह चेहरेसे बहुत भोला मालूम होता है। इसके मुखमें दो छोटे दांत होते हैं जो हाथीके दांतोंके भांति मुखके ऊपरके भागसे बाहर निकले

रहते हैं। मुश्क केवल नर हरिणके ही निकलता है यह एक थैलीमें हिरनके पिछले भागमें हुआ करता है। कहते हैं कि यह थैली चन्द्रमाके महीनेके हिसाबसे घटती रहती है। महीनेके आरम्भमें वह बढ़ने लगती है और महीनेके अन्तमें बहुत छोटी रह जाती है। इस कारण शिकारी उसको मासके बीचके दिनोंमें मारते हैं।

कस्तूरी हरिण बन्दूकसे मारे जाते हैं परन्तु जिन जङ्गलोंमें शिकार करनेका निषेध है-जैसे लासा तथा अन्य पवित्र स्थानों-के आसपासके जङ्गलोंमें यदि कोई शिकार करे तो उसे कठोर दण्ड दिया जाता है—वहां शिकारी लोग चोरीसे उनको जालमें फंसाकर पकड़ते हैं। यद्यपि यह जीव तिब्बतमें प्रायः सब जगह होता है परन्तु अधिकतर'कोंमबोत्सारी'और लोमें मिलता है। यहांपर मुश्क बहुत सस्ता मिलता है। जापानकी अपेक्षा कस्तूरीका मूल्य यहां एक दशवां भाग है। यहां कुछ मिलावट भी नहीं होता परन्तु और जगह जाते ही लोग उसमें मिलावट कर देते हैं। लोकी कस्तूरी विशुद्ध और सस्ती हुआ करती है क्योंकि वहांके असभ्य लोग जो कि आधे नंगे रहा करते हैं उसमें मैल मिलाना जानते ही नहीं। यह लोग तिब्बती भी मालूम होते हैं और हिन्दू भी मालूम होते हैं। परन्तु अधिक उनकी प्रवृत्ति तिब्बतियोंके समान नहीं है।

जो कस्तूरी ये लोग हरिण मारकर निकालते हैं उसको शीशा, कांचके दाने, लोहेके बर्तन, दरोही, चाकू, आटा, मिठाई,

और मन लुभानेवाली वस्तुओंके बदले दे देते हैं। यद्यपि उन सूबोंमें कस्तूरी बहुत सस्ते दाममें मिल जाया करती है परन्तु राहकी कठिनाइयां और डाकुओंका भय इतना है कि बहुत ही साहसी व्यापारी वहां जाकर कस्तूरी ला सकता है साधारण व्यापारी वहांके वासियोंके पास जा भी नहीं सकता।

यद्यपि भारतवर्ष भेजनेका रास्ता चीनसे सहज है परन्तु फिर भी तिब्बतकी कस्तूरी, टाचेनलूके मार्गसे चीनको ही अधिक भेजी जाती है। वहांसे यूनान् होकर जापान चला जाता है। जापानमें यूनानी कस्तूरी अच्छे दामोंपर बिकती है क्योंकि यह शुद्ध तिब्बती होती है। एक विशेष हरिणका रुधिरमय सींग भी चीनमें बहुत बिकता है। इससे वहांके वैद्य एक वीर्य-वर्द्धक औषध बनाते हैं। इसके अतिरिक्त यह औषध जीवन-को बढ़ाती तथा बहुतसे रोगोंपर आशातीत काम करती है। चीनी व्यापारी एक जोड़ी अच्छी सींगोंकी ५०० येनतकमें ले लेता है। घटिया सींग दो दो तीन तीन येनको भी बिक जाते हैं परन्तु वह औषधके काममें नहीं आते, केवल गृह सजानेके काममें आते हैं। बढ़िया सींग पहचाननेके लिये बड़ी सधी आंखकी आवश्यकता है। ऐसी सधी आंखें बहुत कम होती हैं। बढ़िया सींगोंकी जोड़ी मैं भी जापान ले गया था। पहचान-नेवालेने मुझसे कहा कि वह वास्तवमें बहुत बढ़िया हैं।

वह विशेष हरिण तिब्बतके दक्षिणपूर्व और उत्तरपश्चिम जंगली इलाकोंमें बहुत मिलता है। यह एक अच्छा बड़ा जान-

वर है। यह ऊंचाईमें घोड़ेसे भी ऊंचा होता है। इसका आकार भी हरिणकासा होता है। इसपर भूरे बाल होते हैं। कइयोंके देहपर भिन्न २ रंगकी समूर भी होती है।

इनके सींग ही विशेषरूपसे मूल्यवान समझे जाते हैं। इनके सींग चैत्रमें चन्द्रमासके अनुसार निकलने शुरू होते हैं। नव उत्पन्न सींगोंपर रोयेंवाली चमड़ी भी रहती है। उसके सींगमें सिवाय घनीभूत रुधिरके और कुछ नहीं होता। आषाढ़ सावनके दिनोंमें वह सींग कठोर होने लगता है। सींगका मूलभाग कठोर हड्डीके समान हो जाता है। परन्तु अग्रभाग वैसाका वैसा ही रह जाता है। ज्यों २ समय गुजरता जाता है त्यों २ वह और कठोर होता जाता है। मार्गशीर्षमें वह सींग पूरा बढ़ चुकता है। इसके बाद सींगमें परिपक्वता आने लगती है और माघमें वह झड़कर गिर जाता है। यह १३ इञ्चतक लम्बा हो जाता है। ये सींग सारे रोयेंसे ढके रहते हैं।

बहुमूल्य औषध बनानेके लिये आषाढ़ मासके सींग ही बहुमूल्य और बहुत उत्तम समझे जाते हैं। उसी समय जंगली लोग उनका शिकार करते हैं। इसका शिकार इतनी चतुरतासे करना होता है कि पहली गोलीपर ही मर जावे। वे प्रायः उसके शिरपर ही गोली मारते हैं। यदि हरिणको पहली गोलीमें न गिरा दिया जाय तो वह घायल होकर मारे दुखके वृक्षोंके तनोंमें अपना माथा मार मारकर अपने सुन्दर सींगोंका सत्यानाश कर देता है। आषाढ़ सावनमें अपने सींगोंकी रक्षा

करनेके लिये वे हरिण ऐसे प्रदेशोंमें चले जाते हैं जहां घने जङ्गल और घने पहाड़ न हों। इसी स्वभावके कारण वे शिकारी लोगोंके हाथमें भी बहुत जल्दी आ जाते हैं।

नेपालको यहांसे ऊन, याककी दुमें, नमक, शोरा और कुछ और भी वस्तुएं आती हैं। चीन और मंगोलियाके उत्तरपश्चिमके प्रदेशोंमें भी ऊनी सामान और बौद्धधर्मकी पुस्तकें जाती हैं। तिब्बतकी बनी बौद्ध पुस्तकें और तसवीरें भी मंगोलियासे जाती हैं। यद्यपि यह तसवीरें बढ़िया गिनी जाती हैं परन्तु वास्तवमें वह किसी कामकी नहीं होतीं। पहले अवश्य ही उनमें बड़ी चित्रकला होती थी परन्तु पहलेकी कारीगरी और अबकीमें बड़ा अन्तर है। अबकी तसवीरें बहुत भद्दी, निरर्थक तथा भावोंसे भी अश्लील बनाई जाती हैं। जिनमें प्रायः एक ही शरीरमें नर मादाके चिह्न दर्शाये जाते हैं। एक बार मुझे ध्यान भी आया कि तिब्बतवालोंमें चार दोष हैं, मलीनता, अन्धविश्वास, अनैसर्गिक रीति-रिवाजें (एक स्त्रीके कई विवाह इत्यादि) और अनैसर्गिक कारीगरी।

तिब्बतमें बाहरसे जो सामान आता है वह बहुतसा भारतवर्षसे ही आता है। जिसमें ऊनी कपड़े मन्दिरोंके सजानेके लिये हैं, इनके अतिरिक्त रेशमी रूमाल, बनारसी कलाबत्तूका काम, रेशमी डोरा और सूत है। श्वेत सूती कपड़ोंकी यहां बहुत मांग है। नीले रङ्ग और सुर्खी माइल रंगके कपड़े भी खपते हैं। छींटें भी वहांके लोग लिया करते हैं।

चीनसे यहां रेशमी कपड़े, कलाबत्तूके कपड़े, टसरी रेशम और साटन आती है। चांदीकी ईंट और औषधियां भी चीनसे आती हैं परन्तु चाय बहुत आती है । मैंने मोटा हिसाब लगाया था कि सालभरमें लासामें चीनसे पचास हजार छः सौ येनकी चाय आती है। इससे कहीं अधिक चाय तिब्बतके और भागोंमें जाती होगी। जो निर्धन लोग चाय मोल नहीं ले सकते वे लोग अमीरोंके एक बारकी उबाली हुई चाय ही मोल ले लेते हैं और उसीको दुबारा उबालकर पीते हैं। चायके दाम यहां कुछ अधिक लगते हैं अर्थात् साधारण चायका एक बक्स अर्थात् एक फुटकी ६॥ इंच चौड़ा और ३ इंच मोटा चायके बण्डलका दाम दो येन (अर्थात् पांच सेन लासाके) होते हैं। बढ़िया चायका एक बण्डल पांच येनसे कममें नहीं आता है।

भूटान और शिकमसे टसरी रेशमके कपड़े, ऊन और सूती सामान आता है।

भारतवर्ष, काश्मीर और नेपालसे तांबेके बर्तन, अनाज, सूखे अंगूर, सूखे आड़ू, खजूर औषधियां, हीरा, लाल इत्यादि आते हैं। फीरोजा और मूंगा बहुतसे आते हैं। क्योंकि तिब्ब-तके लोग इनको बालोंमें गूंथा करते हैं। इस कामके लिये एक अच्छे फिरोजाका दाम हीरासे भी बढ़ जाता है। बढ़िया फिरोजा जो कि कानी उंगलीकी नोकके बराबर बड़ा हो उसके १२०० येनतक लग जाते हैं। मूंगा जिसमें दाग़ न हो कम मिलता है। ऐसे मूंगे तिब्बतकी स्त्रियां बहुत पहना करती हैं। यह

लोग लाल रंगके अथवा महँगे लाल बहुत पसन्द करते हैं। यह बढ़िया मूंगे चीनसे आते हैं। बढ़िया मूंगा १२० येनसे १३० येनतकमें आता है। भारतवर्षका मूंगा बढ़िया नहीं होता। मूंगोंकी मालायें भी चीनसे आती हैं। निर्धन मनुष्योंका काचकी मालाओंसे भी काम निकल जाता है और जापानसे झूठे मूंगे बनकर आते हैं वे भी खूब बिकते हैं। पहले पहल जब यह चले थे तो बेईमान व्यौपारियोंने खूब रुपया कमाया परन्तु अब उचित मूल्यपर बिका करते हैं। सस्ती मन लुभानेवाली वस्तुएं और जापानी दियासलाई भी यहां बहुत बिकती है।

कपड़ेके लेने बेचनेकी रीति भी निराली ही है। उसके नापके लिये गज काममें नहीं लाया जाता, केवल हाथसे नापा जाता है। दो माप ही अधिक चलते हैं। एक दोनों हाथोंको फैलाकर दूसरा कोहनीसे अंगुलीके पोरुओंतक। ऐसी अवस्थामें लम्बा खरीदार लाभमें रहता है और बेचनेवाला हानि उठाता है। यह रीति वहींके बने हुए कपड़ोंके लिये है। बाहरके आए हुए कपड़ोंको उनके अर्जसे नापा जाता है। जितना कपड़ेका अर्ज है उसीसे इसको नाप लिया जाता है। खरीदारको भी इसी हिसाबसे दाम चुकाने पड़ेंगे। इस लम्बाईको 'खा' कहते हैं।

यहांके व्यापारी नफा भी बेहिसाब लेते हैं बहुत विश्वासपात्र व्यापारी भी उचित दामोंसे २०, २५ सैकड़ा अधिक लेते हैं। बहुतसे कपटी व्यापारी तो एक रुपयेके वस्तुकी पांच अथवा छः रुपये मांगनेमें न हिचकेंगे।

जब कोई मनुष्य इन व्यापारियोंपरसे कुछ सामान ले चुकता है तो व्यापारी उसको आशीर्वाद देता है और कहता है—'ईश्वर करे तुमने जो सामान मोल लिया है यह तुम्हारी बीमारी और दुःखका हरण करे। इन वस्तुओंके ले लेनेसे तुम भाग्यशाली बनो। इससे भी अधिक धनवान होओ। भण्डार बनवाओ और हमसे बहुत बहुत माल खरीदो।' धर्मपुस्तकोंके बेचनेमें यह आशीर्वाद विशेषरूपसे दिया जाता है और विशेषकर तब जब बेचनेवाला कोई पुरोहित हो। पुस्तक खरीदनेवालेके शिरतक पुस्तकको उठाकर पुरोहित यह आशीर्वाद दिया करता है—'इस धर्मग्रन्थसे श्रीमान् सच्चा ज्ञान ग्रहण करें, इसके सत्य प्रकाशके अनुसार आप कार्य करें। जिससे आप सम्मति, सद्बुद्धि, सच्चरित्र बनें और निर्वाणके पदके योग्य और सबके हितैषी बनें।'

खरीदारको भी इस समय एक तमाशा करना पड़ता है। यह काम चाहे वह हृदयसे न करता हो परन्तु बाहरी भावसे भी इस काममें स्वार्थ दिखाई देता है अर्थात् जब वह व्यापारीको दाम चुकाने लगता है तो वह मैले रुपयेको अपनी जिह्वासे चाटता है और हाथमें लेकर अपनी गर्दनके कपड़ेसे पोंछता है। इतना कर चुकनेपर वह व्यापारीके हाथमें देता है और ऐसी दृष्टिसे रुपयेकी ओर देखता है मानों उसके छूटनेसे उसको बड़ा दुःख है। रुपयेके इस चाटने और पोंछनेसे यह आशय है कि मानों इसमें जो सौभाग्य था वह सब खरीदारने चाट और पोंछ

लिया अब व्यापारीके उसमें कुछ नहीं रह गया। अतएव जो रुपया व्यापारीके पास जा रहा है वह किसी कामका नहीं रहा है।

यद्यपि यह रीतियां बड़े व्यापारियोंने विशेष करके चायवालोंने छोड़ दी हैं परन्तु और २ लोग अभीतक भी वैसा ही किया करते हैं।

लोग समझेंगे कि जब तिब्बतसे इतना थोड़ा माल बाहर जाता है और इतना अधिक बाहरसे आता है तो देश निर्धन क्यों नहीं हो जाता परन्तु यह बात नहीं है। कारण यह है तिब्बतमें मंगोलियासे बहुतसा सोना आता है जिसमें बहुत बड़ा भाग तो वह है जो कि लामाओंके पास भेंटरूपसे आता है और थोड़ासा भाग तिब्बतकी वस्तुएं खरीदनेसे आता है। इस सोनेके कारण तिब्बतकी अवस्था ज्योंकी त्यों बनी रहती है। और इसको वह बन्द भी नहीं कर सकता है क्योंकि यदि ऐसा करे तो मंगोलियाके सोनेसे हाथ धोना पड़े।

जब चीन और जापानमें लड़ाई हुई थी और जब आन्दोलन शुरू हुआ था उस समय मंगोलियासे तिब्बतका सम्बन्ध टूट गया था। उस समय तिब्बतके ऊपर बड़ी आर्थिक आपत्ति आ पड़ी थी।

यहां तक कि जो मंगोलियन यहां विहारोंमें पढ़ते थे उनके घरसे भी खर्चका आना बन्द हो गया था। अतएव उन लोगोंको मजदूरी करके पेट पालनेकी आवश्यकता हुई थी।

एक और भी कारण है जिससे तिब्बत इस बातको नहीं

रोक सकता। वहांके लोग दिन पर दिन शौकीन होते जाते हैं। यदि बीस वर्ष पहलेके तिब्बतसे आजके तिब्बतसे तुलना करें तो बहुत अन्तर मालूम होगा। बाहरकी दिखावटी वस्तुओंके लेनेकी चाह उन लोगोंमें बहुत बढ़ रही है अतएव प्रतिवर्ष बहुतसे तिब्बती भारतवर्ष, नेपाल और चीन जाकर उन आवश्यक वस्तु-ओंको लाया करते हैं।

यदि किसी प्रकार तिब्बत अपने व्यापारियोंको बाहरके व्यापारमें न लगने दे तो जैसा कुछ कष्ट उनको उठाना पड़ेगा वह वर्णनातीत है। खैर वह भी सहा जा सकता है परन्तु एक कठिन समस्या और भी आ पड़ती है जो किसी भांति न रुक सकेगी। अर्थात् जब भारतवर्ष, चीन और नेपालसे माल रोक दिया जावेगा तब वहांका जा भी नहीं सकता है। ऐसी अवस्थामें जो ऊन तिब्बतमें तय्यार होती है उसका चलान बन्द हो जावे।

ऊनकी भारत देशमें बहुत अधिक खपत है। वह सब ऊन तिब्बतमें खर्च नहीं हो सकता। तिब्बतमें बहुत बड़ी जन-संख्या केवल ऊन तय्यार करनेकाही काम करती है। उनके ऊनका व्यापार बन्द हो जानेसे वे भूखों मर जावेंगे।

यदि मंगोलियासे उसका सम्बन्ध टूट भी जावे तब भी तिब्बत और देशोंसे सम्बन्धको नहीं तोड़ सकता है।

बूढ़ा और असमर्थ पुरुषोंको छोड़कर प्रायः सभी लोग किसी न किसी व्यापारमें लगे रहते हैं। किसान भी एक अंशमें व्या-पारी होते हैं। सर्दीके दिनोंमें खेतीका काम ढीला पड़ जाता है।

वे उत्तरी तिब्बतमें जाकर खारी झीलोंसे नमक ला २ कर अपना गोदाम भरा करते हैं। उसके बाद वे भूटान, नेपाल और सिक्कममें जाकर अपना माल बेचा करते हैं।

लामा पुरोहित लोग छोटा मोटा व्यापार न करके बड़े बड़े व्यापार करते हैं। इसी प्रकार प्रायः विहार स्वयं व्यापारमें लीन होता है। सरकार स्वयं व्यापारी है। वहां स्वयं सीधी व्यापार नहीं करती परन्तु उसका व्यापार दलालों और ठेकेदारोंसे चलता है। ऐसे दलालों और ठेकेदारोंको सरकार मार्गकी तथा चुंगी आदिकी बहुतसी रियायतें देती हैं। सर्दार लोग और अमीर उमराओंमें बहुत कम ऐसे हैं जो अपनी भूमिकी आयसे ही सन्तुष्ट रहते हैं। प्रायः बहुतसे तो व्यापार ही करते हैं। समय२ पर छोटा मोटा व्यापार तो प्रायः सभी करते हैं। यदि कोई किसी अमीर सर्दारके घरपर उसके पास भेंट करने जाता है और उसके घरपर कोई सामान बहुत बढ़िया देखता है तो प्रायः वह दर्शक उस सामानका मोल भाव कर लेता है और यह कोई वहां बुरा भी नहीं समझा जाता। बस बातोंमें सब सौदा तय हो जाता है।

विहारोंके विद्यार्थी भी अपने ढंगके व्यापारमें लगे रहते हैं। जब बाजारमें कोई वस्तु उनकी आंखमें चढ़ जाती है वे उसके लिये रुपया जुटाने लग जाते हैं। वे उसे खरीदकर गांवमें ले जाते हैं और अच्छे काफी मुनाफेपर बेच देते हैं या बदलेमें कुछ अन्य वस्तुएं लेकर दूसरेके हाथ सौंप देते हैं।

इस बनियेपनेकी प्रवृत्तिके साथ२ एक भयानक दोष भी पैदा हो जाता है वह यह कि उनमें छल कपटका व्यवहार बहुत होता है। हर एक दूसरेका अपने पेशेमें झटक लेना चाहता है।

पैंसठवां परिच्छेद

सिक्का और छापनेके ब्लाक।

तिब्बतमें या तो बदला चलता है या नगद दामसे वस्तुएं मोल ली जाती हैं। तिब्बतमें केवल एक ही सिक्का है और २४ सेनका चांदीका है। आवश्यकतानुसार इस सिक्केको दो टुकड़ोंमें काट डालते हैं और प्रत्येक टुकड़ा बारह२ सेनका समझा जाता है। कभी २ ऐसे दो टुकड़े करते हैं कि एक टुकड़ा दो तिहाई और एक टुकड़ा एक तिहाई होता है। इन दोनों टुकड़ोंको सोलह सेन और आठ सेनका समझते हैं। यद्यपि यह टुकड़े बिलकुल ठीक नहीं कटते और उनके कटे हुए सिरे बहुत खुरदुरे होते हैं। किसी२ में बीचमें छेद भी होता है परन्तु इसकी यहांवाले लोग कुछ चिन्ता नहीं करते। लासामें ४ सेन सबसे छोटी रकम समझी जाती है। परन्तु इसका कोई विशेष सिक्का नहीं होता। ४ सेनकी वस्तु खरीदनेवालेको अपने साथ १६ सेनका २।३ सिक्का देकर १२ सेन-वाला १।३ सिक्का ले लेना चाहिये। इसी प्रकार यदि बेचनेवाले-के पास १।२ सिक्का न हो तो खरीददारको चाहिए कि १।२ और २।३ दोनों देकर एक टंका वापिस ले ले। १ टंकाका मूल्य

२४ सेन होता है। ८ सेनकी खरीदपर १ टंका देनेपर २।३ सिक्का लौटा देता है।

यह चार सेन सबसे छोटी रकम मानी गयी है। चार सेनका नाम खाकंग, आठ सेनका नाम कर्मा, और बारह सेनका नाम चेका, सोलह सेनका शोकंग, बीस सेनका नाम कावची और चौबीस सेनका नाम टंका है।

लासा और शिगात्जेके अतिरिक्त और छोटे नगरोंमें एक टंकासे कमकी वस्तु नहीं मिल सकती क्योंकि उपरोक्त नगरोंके अतिरिक्त टंकाके कटे हुए टुकड़े और कहीं नहीं मिलते हैं। और भी कई एक सिक्के कहीं२ चलते हैं, जैसे भारतवर्ष और तिब्बत सरहदपर एक और छोटा चांदीका सिक्का चलता है जो अर्द्ध गोलाकार है परन्तु वह भीतर तिब्बतमें नहीं चलता है क्योंकि तिब्बत सरकार उसको स्वीकार नहीं करती।

यहांपर मैं ऐसी घटनाका उल्लेख करता हूं जिसमें कि मुझको इस लेन देनके झगड़ोंमें पड़ना पड़ा। पहले मैं कह चुका हूं कि मेरी पाराके एक फजूलखर्च लड़केसे जान पहचान हो गई थी। एक दिन उसने अपने एक नौकरके हाथों मेरे पास एक चिट्ठी भेजी। उसमें कुछ रुपया मुझसे तिब्बत जानेके लिये उधार मांगा था। जितना रुपया उसने मांगा था उस समय मैं उतना नहीं दे सकता था। यद्यपि उसकी इच्छा रुपयेको लेकर फिर लौटालेनेकी नहीं थी तथापि जितना उसने मांगा था मैंने उससे आधा उसके पास भेज दिया और एक पत्र भी साथ दिया।

मेरे इस कामसे उसको बड़ा क्रोध आया और मैंने सुना कि उसने इसमें अपनी बड़ी मानहानि समझी। उसने यहांतक कहा कि क्या मैं भिक्षा थोड़े ही मांगता था? इत्यादि। उसने रोषमें आकर जो रुपया मैंने भेजा था सब लौटा दिया। मैं समझता हूं कि उसने यह समझकर लौटाया होगा कि मैं उसकी अप्रसन्नताका ध्यान करके जितना उसने मांगा था वह सब भेज दूंगा। कुछ दिनों पीछे उसकी एक चिट्ठी मेरे पास फिर आई जिसमें फिर उतना ही रुपया माँगा था। मैं पहले केसे झगड़ेसे बचना चाहता था अतएव जितना रुपया उसने मांगा था उसके पास भेज दिया। जैसे मालिक होते हैं वैसे ही उनके नौकर भी हुआ करते हैं। नौकरने कहीं अपने मालिकसे सुना होगा कि मैं जापानी हूं अतएव वह भी मेरे पास आया और उसने भी पचास येन मुझसे माँगे। उसको भी मैंने पचास येन दे दिये और समझा कि अब बारम्बार ये लोग मुझे तंग न करेंगे।

इस समय मैं पढ़नेसे जो समय बचता था उसमें पुस्तकें इकट्ठा किया करता था क्योंकि मेरे पास इस समय रुपया बहुत हो गया था। यह पुस्तकें किसी पुस्तक बिक्रेताके पास नहीं मिलतीं। इन पुस्तकोंके ब्लाक किसी न किसी विहारमें रखे रहते हैं और जिसको उनके छापनेका अधिकार है उसको पुस्तकका मूल्य देनेपर उन्हीं ब्लाकोंसे वह छापकर दे दिया जाता है। इन पुस्तकोंकी छपाईमें कुछ तो भेंट दी जाती है जो कि बहुधा टसरी रेशम होता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकोंकी छपाई दी

जाती है जो कि सौ तख्तोंके लिये पच्चीस सेनसे एक येन और बीससेनतक हुआ करती है। छपवानेकी आज्ञा मिल जानेपर छपवानेवालेको ही छापनेवाले भी लाने पड़ते हैं। छापनेवालोंका प्रतिदिनका वेतन प्रायः पचास सेन हुआ करता है।

इन लोगोंका काम कुछ ऐसा बेढंगा हुआ करता है कि उसमें बहुत देर लगा करती है। कागज जो इन पुस्तकोंके छापनेके काममें लाया जाता है वह यहींके वृक्षसे बनाया जाता है जिसकी जड़ और पत्ते विषैले होते हैं। यह कागज़ बहुत मजबूत होता है परन्तु रंगका कुछ साफ नहीं होता।

पुस्तकें बेचनेवाले तिब्बतमें अपने घरपर नहीं बेचते हैं वे शाक्य मुनिके मन्दिरके पश्चिम द्वारके सामनेके मैदानमें रखकर बचते हैं। मैंने लासामें ऐसे पुस्तकें बेचनेके दस स्थान देखे। शिगात्ज़ेमें दो अथवा तीन हैं। और २ देशोंमें पुस्तकविक्रेता अपनी पुस्तकोंको खोलकर रखते हैं कि जिससे उनके ख़रीदार देखते ही पहचान लें परन्तु यहां उनको ढेर करके रक्खे रहते हैं।

जो पुस्तकें मैंने मोल ली थीं अथवा मूल्य देकर छपाई थीं वह पहले मेरे उस मकानमें रक्खी थीं जो कि मुझे सेरा विहारमें मिला था। परन्तु मेरे कमरेके पासवाले विद्यार्थी मेरी पुस्तकोंका ढेर देखकर विस्मित होकर कहते थे कि जितनी पुस्तकें तुम्हारे पास हैं इनकी तिहाई पुस्तकें भी तिब्बतके बड़ेसे बड़े आचार्य पदवी धारी पण्डितके पास भी नहीं देखीं। तुम इनको अपने घर कैसे ले जावोगे? मैं उन सबको अपने मित्र अर्थ-

सचिवके घरपर उठा लाया जिससे उन लोगोंको शंका करनेका कोई अवसर न मिले।



छियासठवां परिच्छेद।

दीपमालिकाका उत्सव

४ जनवरी १९०२ को यहां एक उत्सव था। यह दिन एक बड़े भारी लामा सुधारकका मृत्युदिवस था। उनका नाम जीत्सांग खापा था। इस उत्सवको दीपोत्सव कहा जा सकता है। इस उत्सवकी रातमें लासा और और नगरोंमें सब छतोंपर दीपक जलाये जाते हैं। विहारोंके ऊपर सहस्रों घीके दीपक उस रातको जलते दिखलाई देते हैं। यह सांगजोका दीपमाला उत्सव दो सप्ताहतक रहता है। इस उत्सवमें क्या लामा और क्या गृहस्थ सब ही आनन्द मनाते हैं। नाच रङ्ग होता है और भोज होते हैं। ऐसा कदाचित् ही किसी देशमें देखा जा सके।

इस उत्सवमें एक और भी नई रीति प्रचलित है वह यह है कि जो मनुष्य किसी दूसरेसे पदवीमें छोटा है वह अपने बड़ेसे भिक्षा मांग सकता है। बड़े बड़े पदाधिकारी भी इस समयपर भेंटकी भिक्षा मांगनेमें लज्जित नहीं होते। मेरे यहां भी बहुतसे लोग मिलनेको आये थे और मुझे भी प्रायः पांच येन खर्च करने पड़े थे। मेरे एक मित्रने मुझसे कहा कि पर साल इसी उत्सव

पर तुमको इससे तिगुना खर्च करना पड़ेगा क्योंकि तुम्हारी जान पहचान बहुत बढ़ती जाती है।

विहारमें रहनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको रातको बारह बजेसे सबेरे तक जागरण करके धर्मपुस्तक पढ़नी पड़ती है।

सेरा विहारमें इस उत्सवमें मुझपर वस्तुतः बड़ा प्रभाव पड़ा, लामा लोगोंकी गम्भीर मन्त्रपाठकी ध्वनिका मुझपर बड़ा ही प्रभाव हुआ। प्रायः सभी बातें गम्भीरता लिये होती हैं। ऊंचे विशाल भवनमें झिलमिल २ करते हुए सुन्दर २ पर्दे लटकते होते हैं। थम्भोंपर लाल ऊनकी पट्टियां लिपटी होती हैं। जिनपर सफ़ेद और लाल फूल कढ़े होते हैं। दिवारों और थम्भोंपरके ऊपरके भागोंपर तिब्बती ढंगके सुन्दर चित्र बने होते हैं। इन सबको सहस्रों घृत दीपकोंसे उज्ज्वल किया जाता है। दीपक शुद्ध उज्ज्वल किरणोंसे चमकते होते हैं। उनको देखकर गैस लैम्पोंकी याद आजाती है।

ऐसी शुभ पवित्र परिस्थितिमें बैठकर पवित्र धर्मग्रन्थका श्रवण करते हुए हृदयमें पवित्र भावोंका उदय होने लगता है। ऐसा प्रतीत होता था मानों मैं बुद्धलोकको चला गया।

यह सांगजोका उत्सव दान पुण्यका भी उत्तम अवसर है। छोटे २ पुरोहित और शिष्य सबेरे ही उठकर भिक्षाके लिये निकलते हैं। इस समय लोग श्रद्धापूर्वक खुले हाथों भिक्षा देते हैं। परन्तु पुरोहित इस अवसरका बड़ा दुरुपयोग करते हैं यह उनके लिये लज्जा-जनक बात है। कोई २ एक ही दिनमें

दो दो और तीन तीन बार भिक्षा मांगने निकलते हैं। एक और अचम्भेकी बात है कि जो लामा अनुचित कामोंका रोकके लिये नियत हैं वह ही उन अनुचित भिक्षाओंको ग्रहण करते हैं। यदि कोई शिष्य दूसरी बार इस प्रकारकी भिक्षाके लिये जानेसे इन्कार करे तो उसको दण्ड दिया जाता है और कोड़ेतक लगाये जाते हैं।

यह काम बहुधा योद्धा लामा ही किया करते हैं जिनका वर्णन पहले किया जा चुका है। इन लोगोंका फैशन और लामाओंसे विभिन्न होता है। कोई तो शिरको मुंडा हुआ रखते हैं और कोई कनपट्टियोंपर दोनों ओर पट्टे रखवाते हैं। विहारके लामा गुरु इन पट्टोंको बहुत बुरी दृष्टिसे देखते हैं और यदि उनकी दृष्टि पड़ जावे तो तुरन्त ही पकड़ २ कर उन बालोंको खींच लेते हैं जिसके कारण उस योद्धा लामाकी कनपट्टियोंसे रक्त बहने लगता है और कनपट्टी सूज जाती है। परन्तु इस दण्डको भी वे लोग गर्वकी दृष्टिसे देखते हैं और बाजारमें सूजी हुई कनपट्टियां दिखलाकर अपनी दृढ़ताका परिचय देते हैं। तथापि वे लोग उन बालोंको अपने गुरु इत्यादिकी दृष्टिसे बचाये रखते हैं। इन लम्बे २ बालोंको वे कानोंके पीछे कर लेते हैं अथवा काजलको घीमें मिलाकर मुखपर पोत लेते हैं। पहले तो मैं यह तमाशा देखकर बड़ा विस्मित हुआ था परन्तु पीछे मेरी समझमें आ गया।

मुझे यह कहते बड़ा शोक है कि योद्धा लामाका रूप ही

गुण्डोंका सा नहीं होता बल्कि वे बड़े अपराध भी किया करते हैं। पवित्र उत्सवोंकी रातोंमें ही ये भयङ्कर पाप किया करते हैं। शायद भूत प्रेत पिशाचोंकी येही सन्तानें हैं।

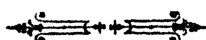
ये छोटी २ बातोंमें बड़े सचेत रहते हैं। वे छोटेसे छोटे कीड़ेकी हत्यासे भय खाते हैं। वे विहारकी टूटी हुई ईंटपर भी पैर धरते हुए कांपते हैं। मार्गमें यदि उनको विहारकी टूटी खपरैल या ठीकरा भी मिल जाय तो उसकी प्रदक्षिणा करते हैं और उसको बायें करके कभी नहीं निकलते। इतनेपर भी वे और उनके गुरु भी बड़े पाप कमाया करते हैं जिनका उनको तिलभर भी पश्चात्ताप नहीं होता। सचमुच वे मच्छरोंपर दया करते और हाथी तकको पचा सकते हैं।

एक डुकनायन नामका बड़ा ही विनोदी लामा था। यह एक बार मार्गमें एक नये सम्प्रदायके पुरोहितसे मिला। डुकनायन एक ईंटका टुकड़ा चुनकर उसकी प्रदक्षिणा करने लगा।

उसके बाद वे एक बड़े पत्थरके पास आये जिसके ऊपर गुजर कर जाना कठिन था। डुकनायन कुछ पीछेको झुका अ तुरत उसके ऊपरसे कूद गया। डुकनायनके इस व्यवहारको देखकर उसका साथी हैरान हो गया। वह सोचने लगा कि डुकनायनने छोटेसे पत्थरकी तो प्रदक्षिणा की, बड़े पत्थरसे कूद गया। इसका उसने कारण पूछा। डुकनायनने उत्तर दिया कि "मैं नये सम्प्रदायवालोंको एक पाठ पढ़ा रहा हूं। वे छोटी छोटी बातोंपर तो बड़ा ध्यान रखते हैं और महा पातकोंके करनेमें

तिलभर नहीं हिचकते।" यह सुनकर उसका साथी बड़ा शर्माया। यह कथा प्रायः सर्वत्र सत्य मानी जाती है। ठीक इसी प्रकार सांगजोका उत्सव भी ऊपरसे तो बड़ा शानदार होता है परन्तु इसकी आड़में बड़े घोर कर्म होते हैं। इस उत्सवमें योद्धा लामा और अन्य नीची जातिके लोग अपनी घोर इच्छाएं पूरी किया करते हैं।

सरसठवां परिच्छेद



तिब्बतकी स्त्रियां

देशकी उन्नति और समृद्धिका स्त्रियोंकी स्थितिके साथ बड़ा भारी सम्बन्ध है। मैं इसपर भी एक परिच्छेद लिखना चाहता हूं। लासाकी स्त्रियोंको तिब्बत देशकी आदर्श महिला माना जाता है। यहांकी स्त्रियोंकी पोशाकमें एक अद्भुत बात है कि उनके पहननेके कपड़ों और पुरुषोंके कपड़ोंमें कुछ भेद नहीं है। जैसे कपड़े पुरुष पहनते हैं वैसे स्त्रियां भी पहनती हैं। केवल भेद है तो इतना कि स्त्रियां पुरुषोंसे कुछ अच्छे चटकदार कपड़े पहनती हैं। दूसरा भेद यह है कि स्त्रियां अपनी कमरमें एक पट्टी बांधती हैं जो कि प्रायः १॥ इंच चौड़ी होती है। कोई कोई एक रेशमी पट्टीको तीन चक्कर देकर लपेट लेती हैं।

लासाकी स्त्रियां अपने केश पाशको मंगोलियन स्त्रियोंकी भांति रखती हैं।

परन्तु शिगात्ज़े और तिब्बतके और नगरोंमें वैसी चाल नहीं है। स्त्रियोंके शिरपर बाल थोड़े होते हैं अतः वे चीनसे आये हुए कृत्रिम बालोंको शिरपर लगा लेती हैं। शिरके बालोंको आगेसे दो भाग करके उनको गूंथ पट्टियां सवांर लेती हैं और पीछे चोटीसी बनाकर छोड़ देती हैं। गुथीं लट्टोंके शिरोंमें लाल अथवा हरा फीता बांधती हैं जिनमें गांठोंकी झालर लगी रहती है। इन फीतोंमें हीरे, मोती अथवा और कोई घटिया दानोंकी माला भी डाल लेती हैं।

मूंगे या लाल मणिका शिरोभूषण भी पहनती हैं जिनमें एक दाना सबसे बड़ा होता है। शिरके बीचमें वे मोतियोंकी एक चन्दुआ पहनती हैं। कानोंमें सोनेकी बालियां और छातीपर मणिहा पहनती हैं जोकि प्रायः तीन चार हजार येनका होता है। हाथोंमें चुड़ियां पहनती हैं। दायें हाथमें सुन्दर शंखकी बनी चुड़ियां और बायेंमें चांदीकी नकाशीदार चुड़ियां होती हैं। यहांकी सब स्त्रियां ऊपरसे एक कपड़ा ओढ़ लेती हैं। वह बढ़िया ऊनका बना होता है। उंगलियोंमें चांदीकी अंगूठी पहनती हैं। यदि अमीर हैं तो सोनेकी भी पहनती हैं। जूते भी बहुत सुन्दर लाल अथवा हरे ऊनसे मढ़े हुए पहने जाते हैं।

जैसीकी संसारके और देशोंमें चाल है कि स्त्रियां अपने मुख-पर श्वेत पाउडर मला करती हैं यहांकी चाल उससे विपरीत

है। यहांकी स्त्रियां भूरे काले रंगकी पाउडर लगाती हैं। उनका विचार है कि उसके नीचेसे असली रंगका झलकना ही बड़ी सुन्दरता है।

तिब्बतकी स्त्रियोंके मुखका रंग बहुत अधिक नहीं होता। उनका रंग प्रायः जापानी स्त्रियोंके समान होता है। भेद केवल इतना ही है कि तिब्बतकी स्त्रियां कुछ लम्बी और दृढ़ होती हैं। जापानी स्त्रियां साधारण कद्की होती हैं। छोटे कद्की स्त्रियां तिब्बतमें बहुत कम मिलेंगी। तिब्बती स्त्रियां अपनी लम्बी चौड़ी खुली पोशाक पहन कर बड़ी प्रभावशाली मालूम होती हैं। अमीर तथा उच्च वंशकी स्त्रियोंके वर्ण जापानी स्त्रियोंके समान ही गोर होते हैं।

खामकी स्त्रियोंका रंग अवश्य कुछ गोरा होता है परन्तु उनके मुखपर मनोहरता नहीं होती है। वे बातचीत बहुत उदासीनतासे करती हैं। इसके विपरीत लासाकी स्त्रियोंका सौन्दर्य और उनकी बातचीतका ढंग मनोमोहक और चित्ताकर्षक होता है। यह सब होनेपर भी उनमें कोई गौरव और आदरणीय शिष्टता नहीं होती। वे सड़कपर चलते हुए खाते जानेमें कोई असभ्यता नहीं समझतीं। तनिकसी बातपर कुपित होजाना, कोपकी माया करना उनका स्वभाव है। यदि कोई मनुष्य उनकी कड़ी समालोचना करे तो यही कह सकता है कि वे भले घरकी न मालूम होकर चकला घरकी लड़कियां मालूम होती हैं। अतएव उनको आदर तथा मानकी दृष्टिसे देखनेकी अपेक्षा उनपर दया आती

है। इसके अतिरिक्त वे चरित्रमें भी निर्बल होती हैं इसका कारण सम्भव है वहांकी बहुपतित्व होनेकी प्रथाही हो। यद्यपि तिब्बत-की स्त्रियोंमें बहुत दोष हैं परन्तु यहांपर मैं दोहीका वर्णन करता हूं। एक मदिरापान और दूसरा मैला रहना। मैला रहनेकी आदत प्रायः तिब्बत भरमें सर्वत्र है। बहुतसी तो केवल मुंह हाथ धोकर ही सन्तुष्ट रहती हैं, शेष शरीरपर तो कभी पानी छूना ही नहीं। उच्च अमीर घरानेकी औरतोंमें यह दोष कम होता है। उनको दिनभरमें अपने शृंगारका समय भी बहुत मिलता है।

यहांकी स्त्रियोंमें एक विशेष गुण है कि वे घरके काम तथा व्यापार करनेमें बड़ी चुस्त होती हैं। मध्यम और निम्न श्रेणीकी स्त्रियां व्यापारको अपना पेशा समझती हैं। यदि वे, विवाह करती है तो स्वामी भी वैसा ही खोजती हैं जो उनके कामध-न्धोंमें सहायता दे सके।

बड़े घरानेकी स्त्रियोंको हाथसे काम काज नहीं करना पड़ता। वह अपने स्वामियोंको सलाह देनेमें बड़ी चतुर होती हैं और चाहे उनसे सलाह ली जावे या नहीं ली जावे वह सदैव उसे देनेको तत्पर रहती हैं। इन स्त्रियोंका अपने स्वामियोंपर बड़ा प्रभाव होता है केवल इसी कारणसे नहीं कि उनको सम्मति प्रकाश करनेकी छुट्टी है वरं वह बड़े बड़े मामलोंमें उचित सम्मति दे सकती हैं।

मेरी समझमें संसारमें और कोई देश ऐसा न होगा जहां-की स्त्रियोंको इतना कम काम करना पड़ता हो। उनके लिये निय-

मित रूपसे कोई काम नहीं है। वह कभी कपड़ा भी नहीं सीतीं। सीना वहां पुरुषोंका काम समझा जाता है। कपड़ेकी थोड़ी सीभी मरम्मतके लिये दर्जीकी आवश्यकता होती है। बड़े घरकी स्त्रियां कातती और बुनती भी नहीं हैं।

हां छोटी २ जातियोंमें स्त्रियां प्रायः दोनोंही काम करती हैं। कातनेकी रीति यहांकी बड़ीही भद्दी है। यहां कातनेके लट्टू महीन सूत तय्यार नहीं कर सकते।

स्त्री पुरुषके पद-सम्बन्धी विषयमें यहांकी स्त्रियां यूरोपकी स्त्रियोंसे भी बढ़ी हुई हैं। बाहरका मनुष्य जिस आदरकी दृष्टिसे पुरुषोंको देखेगा उसी आदरकी दृष्टिसे स्त्रीको भी देखेगा। जितनी मजदूरी पुरुष पाता है उतनी स्त्रीको भी मिलेगी। इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं है क्योंकि यहांकी स्त्रियां बहुत दृढ़ होती हैं। जितना परिश्रम पुरुष कर सकता है उतना वह भी कर सकती हैं अतएव उनको उतनीही मजदूरी मिलनी कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। यद्यपि स्त्रियां लज्जाशील और सुन्दरी होती हैं परन्तु ऐसी साहसी होती हैं कि यदि क्रोध आजावे तो उनका स्वामी भी उन्हें बसमें नहीं रख सकता है। क्रोध आजानेपर वे साक्षात चण्डी हो जाती हैं। उस समय कितनीही कोई क्षमा-प्रार्थना करे परन्तु चण्डीका कोप शान्त होना बड़ा कठिन है। मैंने ऐसे भी उदाहरण देखे हैं कि स्वामी घुटने टेककर पैरोंमें पड़कर स्त्रीके सामने क्षमा मांगता होता है। प्रसन्न दशामें वह बिल्लीसे भी गरीब हैं और आवेश आनेपर शेरनीसे भी बढ़कर भयानक हो

जाती हैं। यह बड़ीही स्वार्थी होती हैं और घरकी वास्तविक मालिकिनी यही होती हैं। उनमें सबसे बड़ा दोष यह है कि वे कभी पतिव्रता नहीं होतीं। वे बहुधा अपने पतियोंपर यह दोषारोपण किया करती हैं कि उनके स्वामी उनका भरणपोषण नहीं कर सकते हैं।

तिब्बती स्त्रियोंका ध्यान सदैव अपने स्वार्थकी ओर लगा रहता है। स्वामीके दुःख सुखका तबतक वे तृणभर भी विचार नहीं करतीं जबतक उनका अपना स्वार्थ पूरा न हो जाय। क्या बड़े घरकी और क्या छोटे घरकी सब अपना रुपया अपनेही पास रखती हैं और स्वामीको छोड़ देनेमें उनको कुछ भी संकोच नहीं होता। वे वैमनस्य होनेपर तुरत सब अपना सामान बांधकर स्वामीका द्वार छोड़ देती हैं।

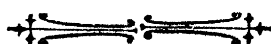
इसके विपरीत जिस स्वामीको वह चाहती हैं उसके साथ प्रेमकी भी कोई सीमा नहीं। अपने प्यारे स्वामीके ऊपर वह अपना तनमन धन सबही न्योछावर कर देती हैं। उसको प्रसन्न रखनेमें कोई कसर नहीं छोड़तीं। अतएव यह कहना चाहिए कि तिब्बतकी स्त्रियोंमें जो विरोध गुण अथवा अवगुण हैं वे पराकाष्ठा तक पहुंचे हुए हैं।

सम्भव है कि यह अवगुण तिब्बतकी स्त्रियोंमें कई स्वामी करनेके कारण उत्पन्न हो गये हों। यद्यपि वह अपना मतलब साधनेमें बड़ी चतुर होती हैं परन्तु फिर भी किसी न किसी पुरुषकी सहायताकी आवश्यकता उनको सदैव रहा करती हैं चाहे उनके

पास कितनाही धन क्यों न हो। यदि किसी स्त्रीका पति मर जाय और पीछे बच्चे भी छोड़ जाय तो भी वह स्त्री बिना विवाह किये नहीं रह सकती है। यदि कुरूपा और बूढ़ी हो तो चाहे विधवा बनी रहे नहीं तो एक पति मरतेही वह विवाह कर लेती है। मरे हुए पतिके लिये प्रेम करनेका विचार भी उनके हृदयमें नहीं आता है। पातिव्रतकी कहानियां जो प्रायः समस्त संसारमें सुनी जाती हैं वहां उनका कहीं पता भी नहीं है।

मध्यम और निम्न श्रेणीकी स्त्रियां खेती करती हैं और भेंड़ बकरी पालती हैं। वे साधारणतः दूधको दूहना, उसको जमाना और दही बनाकर उसमेंसे बिलोकर मक्खन निकालने आदि काम बहुत करती हैं। मक्खन निकालनेकी रीति वहां सर्वथा भारतवासियोंकी रीतिसे मिलती है। मक्खन निकालनेके बाद वे शेष लस्सीमेंसे पनीर निकालकर सुखा लेती हैं और शेष पानी पीनेके काममें ले आती हैं।

अरसठवां परिच्छेद।



लड़के और लड़कियां।

लड़कोंको जन्मसे लड़कियोंसे कुछ अधिक अधिकार प्राप्त हैं। जैसे नामकरणकी विधि लड़कोंकी की जाती है लड़कियोंकी नहीं। कहीं २ पर कुछ परिवर्त्तन भी हैं परन्तु बहुधा जन्म

दिनके तीसरे दिन नामकरण किया जाता है। एक और भी अद्भुत रीति है कि बच्चोंको कभी नहलाया नहीं जाता और न यहां विशेष धायी रखते हैं। नहलानेके बदले बच्चेके शरीरमें विशेष करके शिरमें घी दिनमें दो २ बार लगाया जाता है। इसको हम बालक-घृत-स्नान कह सकते हैं।

नामकरणके दिन पुरोहित इस कामको करनेके लिये बुलाया जाता है। यह रीति ऐसे आरम्भ होती है कि पहले थोड़ा सा आमन्त्रित जल बच्चेके शिरके ऊपर छिड़का जाता है। आमन्त्रित करनेके समय जलमें केशर घोल दिया जाता है।

नाम बहुधा जन्मदिनका जो नाम होता है उसके अनुसार रख दिया जाता है। यदि लड़का या लड़की आदित्यवारको उत्पन्न हुआ है तो उसका नाम 'नीमा' रखा जावेगा। नीमा तिब्बतकी भाषामें सूर्यको कहते हैं। सोमवारको उत्पन्न होनेवालेका नाम 'डावा' होगा। शनैश्चरको पेनवा, शुक्रवारको पसंग इत्यादि। परन्तु यही नाम नगरभरमें बहुतोंका होनेसे गड़बड़ उत्पन्न हो सकती है अतएव उस नामके साथमें एक उपनाम भी रख दिया जाता है। यह उपनाम साधारण नामके आगे या पीछे रख दिया जाता है। सप्ताहके दिनोंके अतिरिक्त जानवरोंके नाम भी रखे जाते हैं। ऐसे व्यक्तिके नाम पुरोहित या भविष्यवाणीके कथनानुसार रख दिये जाते हैं।

नामकरणके दिन बड़ा भोज दिया जाता है। उसमें कुटुम्बी और मित्रवर्ग बुलाये जाते हैं। मित्रवर्ग और कुटुम्बी अपने

साथ मदिराके पीपे, कपड़े और रुपये इत्यादि भेंटके लिये लाते हैं।

नामकरणके समय पुरोहित उस कुटुम्बके देवताको इस बातकी सूचना देता है कि इस नामका बच्चा इस घरमें उत्पन्न हुआ है इसकी भी रक्षाका भार अपने हाथोंमें ले लो।

जब लड़का प्रायः आठ नौ वर्षका होता है उस समय वह पढ़नेके लिये पाठशालामें डाल दिया जाता है। उस समय भी ऐसा ही भोज आदि उत्सव मनाया जाता है। इसके आत्मीय-कुटुम्बी उसको काता भेंटमें देते हैं जिसे वह अपनी गलेमें डाल कर उसके दोनों सिरे छातीपर लगा लेता है। यदि गुरुका घर लड़केके घरसे कुछ दूर हुआ तो लड़का दिन रात गुरुके घर ही रहकर पढ़ता है। यदि पास हुआ तो वह सन्ध्याको अपने घर लौट आता है।

शिक्षाकी समाप्तिपर भी एक बड़ा उत्सव मनाया जाता है; जब लड़का पढ़ चुकता है और सरकारी नौकरीमें जाता है।

लड़कीके लिये ऐसे कोई उत्सव नहीं किये जाते। सबसे पहले जब उसके बाल गूंधे जाते हैं उनके लिये वही एक उत्सव होता है। बालोंका साधारण रूपसे जूड़ा बांधकर उसमें मूंगे इत्यादि लगा दिये जाते हैं। इस अवसरपर भी आत्मीय कुटुम्बी आते हैं और भोज दिया जाता है। वह लोग लड़कीके लिये भेंट लाते हैं।

लड़कोंके खेल यहां प्रायः वैसेही हैं जैसे जापानमें होते हैं।

जाड़ेमें बरफ़की गेंदसे खेलना, गर्मीमें कुस्ती लड़ना, पत्थर फेंकना, किसी वस्तुपर पत्थरोंसे निशान लगाना, रस्सीसे कूदना, इत्यादि बहुतसे खेल हैं। कभी २ लड़के और लड़कियां साथ खेलते हैं। घोड़ेपर चढ़नेका भी यहांके अमीर लड़कोंका खेल है।

लड़कियां यहां गुड़ियां भी खेलती हैं। इस खेलमें वह गाना भी गाती हैं। इसके अतिरिक्त वह ऐसे गीत भी गाती हैं जिनमें बुद्धदेव और बड़े २ वीरोंके चरित्रोंका वर्णन होता है।

उनहत्तरवां परिच्छेद

रोगी चर्चा

रोगीकी शुश्रूषा करना तिब्बतमें स्त्रियोंका काम है। परन्तु वैद्योंके विचित्र विश्वासोंके कारण यह शुश्रूषाका काम बहुत बढ़ जाता है। तिब्बतके वैद्य रोगीको दिनमें नहीं सोने देते हैं अतएव शुश्रूषाकारीके लिये और कामोंके अतिरिक्त रोगीको जगाये रखना भी एक काम है। रोगीको लेटने नहीं दिया जाता है। किसी वस्तुके आधारपर बैठा रहना पड़ता है। कई नर्सें रोगीके पास उसको सहायता देनेके लिये बैठी रहती हैं जिसमें सबसे आवश्यक काम उसको जगाये रखनेका है। यह नर्सें लगातार देखरेख करती रहती हैं अतएव उनको शीघ्र २ बदलना पड़ता

है। यह स्त्रियां रोगीको प्रसन्न रखने, उसको सन्तुष्ट करने और उसके कमरेको स्वच्छ रखनेमें बड़ी प्रवीण होती हैं। स्वच्छताके विषयमें केवल इतना ही कहा जा सकता है कि जैसी रीति वहां है उसीके अनुसार स्वच्छताका पर्याप्त ध्यान रखा जाता है। विदेशीके लिये वहां भी रहना बड़ा ग्लानिकर है।

सबसे कठिन और आवश्यक काम रोगीके जगानेका है। इसके लिये नर्स अपने पास ठंढा पानी और उसके छिड़कनेकी एक लकड़ी रख लेती है। ज्योंही रोगीको नींद आई त्योंही पानी छिड़क देती है जिससे नींद खुल जाती है। यदि पानीसे नींद नहीं खुलती है तो वह रोगीको हिलाती और नाम ले लेकर पुकार कर जगाती है। रोगी नर्सके इस कामसे दुःखी न होकर बहुत प्रसन्न होता है और कृतज्ञता प्रकाश करता है क्योंकि वह जानता है कि नर्स वैद्यके आदेशसे और उसके भलेके लिये ऐसा कर रही है।

तिब्बतवालेका यह दृढ़ विश्वास है कि दिनमें कदापि सोने न देना चाहिये। जो मिलनेवाले भी आते हैं वे भी सबसे पहले यही कहते हैं कि 'दिनमें सोना नहीं चाहिये।' जब कोई रोगी मर जाता है तो पड़ोसी अथवा और लोगोंका यही विश्वास होता है कि नर्सने पूरी २ दृष्टि न रखी होगी और रोगी दिनमें सो गया होगा इसीसे इसकी मृत्यु हुई है।

मैंने इसकी खोज भी की कि यह अद्भुत रीति न सोने देनेकी कहांसे चली। परन्तु ठीक पता नहीं है कि क्या बात है। कोई

बीमारी तिब्बतमें ऐसी है कि यदि रोगी सो जावे तो उसका ज्वर बढ़ जाता है। परन्तु प्रत्येक बीमारीके लिये यह अद्भुत चिकित्सा ठीक नहीं हो सकती। सम्भव है कि ऐसे ही कारणोंसे यही रीति प्रचलित हो गई होगी। मैं जब कभी पीड़ित हुआ हूं भरपेट सोया हूं परन्तु मुझे कभी कोई हानि नहीं पहुंची। कारण यह है कि तिब्बतमें चिकित्सा-शास्त्रके ऊपर उतना विश्वास नहीं है जितनाकी मूढ़ विश्वासपर है। उन लोगोंका विश्वास है कि रोग किसी राक्षस अथवा दुष्टात्माके द्वारा मनुष्य-शरीरमें आता है। अतएव पहले शरीरसे उस दुष्टात्माको निकाल देना चाहिये तब किसी वैद्यकी शरण जानेसे लाभ होगा। रोगीको पहले पहल एक लामा आकर देखता है और अपनी पुस्तकसे देखकर बतलाता है कि कौनसा राक्षस अथवा दुष्टात्मा इसके शरीरमें प्रवेश कर गया है। पहले उसीके निकालनेका उद्योग किया जाता है।

जो लामा राक्षसको रोगीके शरीरसे निकाल देता है वही चिकित्सकका भी निर्णय करता है। इस भांति चिकित्सा आरम्भ होती है। जो बात लामा कहते हैं उसको रोगीके घर-वाले अक्षर अक्षर माननेके लिये तय्यार रहते हैं। यदि लामा कह दे कि पांच दिनतक रोगीको कोई औषध न देनी चाहिये तो रोगीको कदापि औषध न मिलेगी। यदि रोगीको उचित समयपर औषध मिल जाती तो बच भी सकता था परन्तु ऐसी अवस्थामें यदि मर भी जावे तो लामा महाशयपर कोई दोषा-

रोपण नहीं कर सकता है। इसके विपरीत उसका और भी मान बढ़ता है क्योंकि उसने पहलेहीसे समझ लिया था कि रोगी नहीं बचेगा तबही तो औषधका निषेध कर दिया था।

वास्तवमें तिब्बतके वैद्य इस पदवीके योग्य नहीं है। वे लोग दस बीस औषधियोंके नाम मात्र जाननेके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं जानते। बाप दादों परदादोंसे केवल मात्र नाम याद करते चले आते हैं। बहुधा वहांके वैद्य एक विषैले वृक्षकी जड़ अपने पास रखते हैं। यह विषाक्त वृक्ष है। इसको वहां 'टसटक' कहते हैं। इसमें एक गुण यह है कि वह शरीरमें गर्मी उत्पन्न करता है। यदि अधिक दे दिया जाय तो विषका काम करता है। इसकी जड़की अधिक मात्रा देनेसे कभी२ पतले दस्त होने लगते हैं। यहांके वैद्य उस औषधकोही ठीक समझते हैं जिसके देनेसे रोगीके शरीरमें कुछ परिवर्त्तन होता है। इस औषधको वे लोग प्रायः सबही रोगोंमें दिया करते हैं। जैसे कि पहले जापानके वैद्य प्रत्येक रोगमें मुलैठी दिया करते थे।

यदि कोई मुझसे पूछे तो मैं तो यही कहूंगा कि रोगीको तिब्बतके वैद्यके हवाले न करके उसको ईश्वरके भरोसे छोड़े तो अवश्यही अच्छा हो जावे।

सत्तरवां परिच्छेद



मैदानके खेल

यों तो तिब्बतमें कई भांतिकी ज्योनारें हुआ करती हैं परन्तु जो मुझको सबसे अच्छी ज्ञात हुई है उसका नाम लिंका है। यह एक प्रकारकी गार्डनपार्टीकी भांति होती है जो कि नगरके बाहर जंगलोंमें हुआ करती है।

तिब्बतवालोंमें झगड़ा करना एक साधारण गुण है। यदि चार मनुष्य भी इकट्ठे हो जावें तो बिना झगड़ा किये कभी अलग न होंगे। परन्तु इस लिंका पार्टीमें यह बात नहीं है। बड़े-से बड़े झगड़ालू भी इस समय चुप रहते हैं। जो लिंका पार्टी योद्धा लामाओंकी ओरसे हुआ करती है वह बड़ी जोशीली हुआ करती है, परन्तु उसमें भी लड़ाई झगड़ा नहीं हुआ करता।

यह पार्टी लासाके दक्षिणको छोड़कर, क्योंकि उधर नदी है, शेष तीनों ओर किसी हरे भरे मैदानमें हुआ करती है। बहुधा जाड़ा निकल जानेपर गर्मियोंमें होती है। इसमें खानेको रोटी, भूनी हुई तरकारी, मांस, पनीर, अंगूर, सूखे आड़ू, सूखा मांस, मदिरा और चाय हुआ करती है। यहां देशी दो प्रकारकी मदिरा बनती है—एक जौ अथवा गेहूंसे और दूसरी चावलसे।

लोग वहां अपनी २ चटाइयां बिछा लेते हैं और सवेरे नौ बजेसे प्रायः छः बजेतक रहा करते हैं। यहां नाच रंग भी होता

है। वहांके नाचमें मैंने तो प्रशंसा योग्य कोई बात नहीं पाई परन्तु वह लोग बड़े चावसे उसको देखते हैं। यह लिंका पार्टी ऊंचे दर्जेके तिब्बतवासियोंकी है। इसके अतिरिक्त मध्यम अथवा निम्न श्रेणीके लोग भी इसको करते हैं। उसमें भी मदिरा पी जाती है और जुआ अथवा कुस्ती, जैसी रुचि हो, काम होता है। इनके यहां भी नाच हुआ करता है। लड़ाई झगड़ा इन लोगोंमें भी इस समयपर नहीं होता।

एकहत्तरवां परिच्छेद

रूसकी तिब्बती नीति

जहांतक मैंने देखा है तिब्बतवासियोंमें स्वार्थपरता बहुत है। देशभक्ति उनमें तनिक भी नहीं है। यह बात नहीं है कि वह 'देशभक्त' का अर्थ न समझते हों परन्तु उनकी स्वार्थपरता उनको उस देशके काम करनेसे रोकती है।

यह लोग अपने धर्मकी ओरसे भी ऐसे उदासीन हैं कि बहुत ही थोड़े ऐसे होंगे जो अपने रुपयेसे धर्मकी रक्षा करना चाहते हैं और उसकी वृद्धिका उद्योग करते हैं। अधिकतर ऐसेही हैं जो कि अपने निजके लाभके आगे धर्मको कुछ नहीं समझते हैं। साधारण मनुष्य अपने धर्मको ही सब कुछ मानते

हैं और यदि कोई मनुष्य धर्मविरुद्ध चले और धर्मको व्याघात पहुंचावे तो उसको मृत्युदण्डका भागी समझते हैं।

मैं पहले लिख चुका हूं कि यहांकी स्त्रियां बड़ी ही स्वार्थी हुआ करती हैं। जब यह ऐसी हैं तो इनके बच्चे कहांतक निः-स्वार्थी होंगे। पहले मैंने समझा था कि स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुष कम स्वार्थी हैं परन्तु यह मेरी भूल थी। यदि कोई दूसरा राज्य इस बातको जान ले तो फिर वह भी ऐसे मूर्खों की मूर्खता-से लाभ क्यों न उठावे। इसके लिये केवल इतना ही दरकार है कि वहांके राजाका हृदय अपनी ओर खींच ले और मन्त्रीवर्ग-को अपने वशमें कर ले फिर आगे तो सब काम सहज है। सो भी मन्त्रीवर्ग जो काम चाहिये सोनेके लोभमें करनेको प्रस्तुत हैं। यदि उनका पेट भर गया है तो उनके देश और उसकी प्रजाके दुःख सुखकी उनको कुछ चिन्ता नहीं है विदेशी राजनीतिज्ञोंको तिब्बतपर अपना प्रभुत्व करना सुगम न समझना चाहिये। यद्यपि तिब्बतके मन्त्रीलोग रुपयेके लोभी हैं तो भी तिब्बतकी कोई राजनीति नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय कार्य प्रायः अपने हृदयके भावोंके अनुसार किये जाते हैं। वे थोड़ेसे भी कारणसे बदल सकते हैं। बहुतसी रिश्वत पचाकर भी थोड़ेसे कारणसे तिब्बत-वासियोंका हृदय बदल जाता है।

तिब्बतके उत्तरपूर्वमें बुरियाट्स नामक जाति मंगोलियाकी रहती है। पहले वह चीनके मातहत थी परन्तु कुछ दिनोंसे वह रूसके अधिकारमें आ गई है। रूसवालोंने इन लोगोंके साथ बड़ा

अच्छा व्यवहार किया और उनके धर्मकी वृद्धिमें भी बहुत आर्थिक सहायता की। उनके विहार भी बनवा दिये। यद्यपि रूसके लिये यह बात बिलकुल ही नई थी परन्तु उसको तो उन लोगोंके हृदय वशमें करना था इसलिये वह ऐसे ढोंग बना रहा था। इन्हीं लोगोंमेंसे बहुतसे लड़के लासाको पढ़नेको जाया करते हैं। यही लोग मेंण्डन, रेवन, सेरा और तृशीलुनयों-के विहारोंमें पढ़ने जाते हैं। इस जातिके प्रायः दो सौ लामा सदैव लासामें पढ़ा करते हैं। इनमेंसे कोई २ बहुत अच्छे पुरोहित निकल जाते हैं। उन्हींमें एक दोरजे नामक लामा था जो बहुत ही कम उमरमें तत्कालीन दलाईलामाका गुरु हो गया था।

प्रायः बीस वर्ष हुए इसको सरकारसे माननीय पदवी त्सानीकेनवोको मिली थी। इसके अतिरिक्त दलाईलामाके और भी तीन गुरु थे परन्तु दलाईलामाके ऊपर इसका ही बहुत प्रभाव था।

जब वह दलाईलामाको पढ़ा चुका तो अपने घर चला आया। उसने घर आकर रूसी गवर्नमेण्टसे अपनी नौकरीका सब हाल कह सुनाया। शीघ्र ही त्सानीकेनवो फिर लासा आया परन्तु अबकी बार वह निर्धन विद्यार्थी होकर नहीं गया था पर धनी पुरोहित बनकर गया था। वह अपने साथ बहुतसा सोना और रूसकी बनी हुई भांति भांतिकी वस्तुओंके सन्दूक लाया। यह सोना और बहुमूल्य वस्तुयें रूस गवर्मेण्टने उसको दी थी।

दलाईलामा और उसके मन्त्रीवर्ग ही इस सोने और उन वस्तुओं के लेनेवाले थे। मन्त्रियोंमें शाता नामक एक मन्त्री था उसको ही सबसे अधिक भाग मिला। यह त्सानी केनवो जबसे लासासे गया था तबसे ही आदरकी दृष्टिसे देखा जाता था। अब इतनी भेंट बांटने आया है, अब तो उसकी प्रशंसाका ठिकाना ही क्या था।

दलाईलामा अपने गुरुकी बातोंको मन लगाकर सुननेके लिये प्रस्तुत हो गया और शातासे त्सानी केनवोकी ऐसी मित्रता हो गई मानों वे सगे भाई थे। त्सानी केनवोने उन लोगोंको ही धन नहीं दिया वरं सब ही विहारोंके पुरोहितोंको दिया जिसके कारण सब ही मुक्तकण्ठसे उसकी प्रशंसा करने लगे। उनको इससे क्या मतलब था कि वह यह धन कहांसे लाया है। किसीने यदि सरकारी अफसरोंमेंसे किसीसे पूछा भी तो वह कब बुराई कर सकता था। उसने कह दिया कि मङ्गोलियामें उसके पाण्डित्यकी बहुत धूम है अतएव वहांके अमीरोंसे उसने यह धन पाया है।

तिब्बतमें किसी समयमें किसी लामाने भविष्यवाणी कही थी। उसने उसमें लिखा था कि कश्मीरके उत्तरमें कई शताब्दी पीछे बुद्धदेवका अवतार होगा जिसके अधीन समस्त संसार होगा। मुसलमानोंसे पहले भी वहां बौद्ध धर्म प्रचलित था। अतएव फिर भी किसी दिन वहां अवश्य ही बौद्ध धर्मका प्रचार होगा। जिस देशमें वह अवतार होगा उसका नाम कंगशम्भाला होगा। भारत

वर्षके बुद्ध गयाके मन्दिरसे प्राय: तीन हजार मील उत्तरमें वह देश होगा। तिब्बतमें जब यह धर्म लुप्तप्राय हो जावेगा तब अवतार होगा।

दसानीकेनवोको यह हाल मालूम था। अतएव उसने इसी भविष्यवाणीसे अपना काम निकालना चाहा। उसने एक लेख लिखा जिसमें प्रगट किया कि चंगशम्भाला देश ही रूस है। ज़ार ही ज़ीत्सांग खापाके अवतार हैं ज़ारमें उस अवतारके सब गुण पाये जाते हैं। सब बौद्ध धर्मके अनुयाइयोंको चाहिये कि उसके आगे सिर भुकाया करें। इसको उसने तिब्बतकी मंगोलियन और रूसीभाषामें निकाला। मैंने इस लेखको अपनी आंखोंसे नहीं देखा परन्तु मैंने विश्वसनीय मनुष्य द्वारा सुना कि जिस किसी-के पास हैं उसने बहुत सावधानीसे उनको रख छोड़ा है। मैंने उसके विषयमें बहुत कुछ पूछताछ भी इस भावसे नहीं की कि किसीको मेरे ऊपर सन्देह न हो जाय। एक मनुष्य जिसने मुझे उसकी नकल दिखलाई थी (वह ठीक नकल नहीं थी) उसने कहा कि कोई २ अक्षर उसमें ऐसे थे जो पढ़े नहीं जाते थे। मैं समझ गया कि वह अक्षर रूसी भाषाके होंगे।

इस लेखका तिब्बतवालोंपर ऐसा विश्वास जम गया कि वह समझने लगे कि किसी न किसी दिन ज़ार समस्त संसारका राजा होगा और वही बुद्धदेवका अवतार है।

एक और भी कारण हुआ जिससे रूस तिब्बतवालोंकी दृष्टिमें बहुत ऊंचा हो गया। वह यह था कि रूससे जो फेन्सी

वस्तुयें आई थीं वह बहुत अच्छी थीं और जिस कामके लिये वह बनाई गई थीं वह काम देनेमें भी मजबूत थीं। भारतवर्षसे जो फेन्सी वस्तुयें आया करती थीं वह इतनी उपयोगी नहीं थीं। यद्यपि इनका दाम अधिक न था तो भी रूसकी वस्तुयें बेचनेके लिये नहीं आई थीं अतएव उनके दाम भी कुछ न थे। इन बातोंका ध्यान करके तिब्बतवालोंने यही निश्चय किया कि इन वस्तुओंको तैयार करनेवाली जाति अवश्य ही सब जातियोंसे निकम्मी तथा अविश्वस्य है।

जिस समय मैं लासामें था उस समय मैंने बिलकुल सत्य एक और बात सुनी थी। उस समय उसको दो वर्ष हुए थे। यह बात बहुतही गोपनीय रखी गई थी। बात यह थी कि रूसके ज़ारने एक बहुत बढ़िया विशपके भेंट योग्य लबादा दलाईलामाके पास भेजा था। अब यहांपर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि यदि वह लबादा केवल बहुमूल्य होनेके कारण ही दिया गया था और धार्मिक दृष्टिसे भेंट नहीं किया गया था तो उस लबादेकी मान हानि थी क्योंकि जिसको वह दिया जाता है वह मनुष्य विशप समझा जाता है और यह साधारण पदवी नहीं है और यदि वह लबादा धार्मिक दृष्टिसे ही दिया गया था तो लामाधर्म ईसाई मतसे बिलकुल ही भिन्न है। ज़ारको इस लबादाके भेंट करनेका अधिकार ही क्या था। परन्तु वास्तवमें बात यह थी कि न तो ज़ारने ही इसका कुछ विचार किया और न दलाईलामाने ही कुछ ध्यान दिया।

दलाईलामाने वह भेंट स्वीकार कर ली। दलाईलामा उसको स्वीकार न करता यदि कोई आक्षेप खड़ा करता तो बहुत ही गड़बड़ हो जानेका भय था। परन्तु यह बात ऐसे ही रह गई। यदि दलाईलामाने कुछ पूछा भी होगा तो त्सानीकेवोने कुछ समझा दिया होगा। और शाताने जो कि त्सानीका मित्र था उसमें उसका भी हाथ था।

शाता, जो कि दलाईलामाका सबसे बड़ा प्रधान मन्त्री है घरेलू झगड़ोंके कारण उस समय बहुत खराब अवस्थामें थीं। उस समय वह तिब्बतमें स्वाधीन भावसे रह भी नहीं सकता था वह कभी दार्जिलिंग और कभी शिकममें ही रहता था। जब कि वह इस भांति घूम रहा था उसने भारतवर्षपर इङ्गलैण्डकी शासनकी रीति देखी और भातरवष किस भांति इङ्गलैण्डके हाथमें आया इत्यादि सब सुना,अतएव शातासे बढ़-कर जानकार उस समय तिब्बतमें कोई नहीं था। उसको इङ्गलैण्डकी शक्तिका बड़ा भय हो गया और वह समझने लगा कि यदि इङ्गलैण्ड चाहेगा तो तुरन्तही तिब्बतको अधिकारमें कर सकेगा। उसकी शक्तिको कोई नहीं रोक सकता। उस समय दलाईलामाके नीचे प्रधान मन्त्री टेमोरिपनचोचे शाताका परम शत्रु था। जब वह अपने पदसे अलग हुआ और शाताको अव-सर मिला तो वह शीघ्र ही तिब्बतमें आया और शीघ्र ही दलाई-लामाने उसको प्रधान मन्त्री बना लिया। शाताको तिब्बतके लिये इङ्गलैण्डका भय सदैव ही सताता रहता था उसने सोचा।

कि यदि रूस अथवा चीनसे तिब्बतको सहायता मिले तो वह इङ्गलैण्डके हमलेसे बच सकती है। वह इसी उधेड़बुनमें था कि उसको मंगोलियन मित्र त्सानीकेनवोकी सहायता मिली और उसने दलाईलामाको वह अनुपम भेंट देना चाहा।

जबसे जापान और चीनमें लड़ाई हुई थी और चीनकी हार हुई थी तबसे चीनका तिब्बतपरसे प्रभाव उठ गया था। यह भी एक कारण हुआ कि तिब्बतने रूससे मित्रता कर ली। क्योंकि बलवान होनेके अतिरिक्त वह इङ्गलैण्डका प्रबल बैरी भी था।

दलाईलामाने रूसके ज़ारकी भेंट स्वीकार कर ली। इससे यह भी ज्ञात होता है कि वह भी ज्ञाताके विचारोंसे सहमत था। नहीं तो वह ऐसी साधारण अक्लका आदमी नहीं कि किसी विदेशीकी भेंट अनायास ही स्वीकार कर ले।

सन् १९०० में दलाईलामाने अपने एक प्रधान मन्त्रीको कई और दरबारियोंके साथ रूसके ज़ारके पास भेजा जोकि पहले तो त्सानीकेनवोके घरपर मंगोलिया गये और वहांसे रूसकी रेलपर सवार होकर सेण्टपीटर्सवर्ग (पिट्रोग्रेड) ज़ारके पास पहुंचे। ज़ारने उन लोगोंको बड़े आदरसे लिया और जो भेंट दलाई-लामाने भेजी थी उसको सहर्ष स्वीकार किया। इस अवसरपर दोनों सरकारोंमें परस्पर कुछ गुप्त बातें भी हुईं।

सन् १९०१ के दिसम्बरमें यह लोग तिब्बतको लौटे। इस समय मैं लासामें ही था। उन लोगोंको तिब्बतमें आये प्रायः दो

महीने हो चुके थे। एक दिन मैं घोड़ेपर सवार होकर लासासे प्राय: पचास मील दूर एक स्थानको जा रहा था कि मैंने देखा कि प्राय: दो सौ ऊंट उत्तरपूर्वकी ओरसे आ रहे हैं। प्रत्येक ऊंटके ऊपर दो दो सन्दूक लदे हुए थे। यह सन्दूक चमड़ोंसे ढके हुये थे अतएव मैं कुछ न समझ सका कि इन ऊंटोंपर क्या लदा हुआ है। सन्दूक बहुत छोटे २ थे इसलिये मैंने समझा कि दलाईलामाके भेंटके लिये मंगोलियनोंने चांदी भेजी होगी। मैंने ऊंटवालोंसे पूछा भी परन्तु वह कुछ न बतला सके। वह कहीं राहमें ही किरायेपर लिये गये थे अतएव उनको कुछ नहीं मालूम था। यद्यपि वे लोग समझते थे कि इनमें जो चांदी है वह भी चीनसे नहीं किसी और अज्ञात स्थानसे आई है जिसका हाल उनको मालूम नहीं था।

जब मैं अपने मित्र अर्थसचिवके यहां पहुंचा और ऊंटोंका हाल कहा तो उसने कहा कि ऊंट रूससे आये हैं परन्तु उनमें क्या भरा हुआ है इसको उसने गुप्त कहकर टाल दिया। यह सुनकर मैं घरके बाहर निकला और इस बातका निर्णय करनेकी चेष्टा करने लगा।

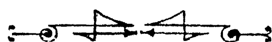
मेरी भेंट एक और सरकारी आदमीसे थी वह इतना बातूनी था कि कोई भेद उसके पेटमें ठहर नहीं सकता था। उससे बातों ही बातों मैंने ऊंटोंके विषयमें पूछा तो उसने कहा कि यह बड़ी गोपनीय बात है। इसी भांति तीन सौ ऊंट और भी पहले आ चुके हैं इनमें बन्दूकें, गोलियां, और कारतूस इत्यादि हैं। अब

हमलोग बेखटके हो गये। यदि इङ्गलैण्ड तिब्बतके ऊपर आक्रमण करे तो इतने हथियारोंसे तिब्बत अपनेको बचा सकता है।

मैंने उनमेंसे एक बन्दूक देखी भी थी। वह दूरकी मारकी बन्दूकें नहीं थीं और अमेरिकाकी बनी हुई थीं। परन्तु तिब्बतवाले अंग्रेजी अक्षरोंसे नितान्त अनभिज्ञ हैं अतएव उन्होंने समझ लिया कि यह रूसकी बनी हुई हैं।

चीनने जब देखा कि तिब्बत उसके अधीन रहकर रूसके नीचे जाना चाहती है तो पहले तो उसने त्सानीकेनवोके कामोंपर आक्षेप किया परन्तु जब उसकी किसीने कुछ नहीं सुनी तो वह उदासीन होकर बैठ रही। त्सानीकेनवो गुप्त भावसे दार्जिलिंग और नैपालको भेजा गया। उसके इन कामोंको ब्रिटिश सरकार और नैपालने भी देखा और उसे संदेहकी दृष्टिसे देखा।

बहत्तरवां परिच्छेद



तिब्बत और ब्रिटिश इण्डिया

तिब्बतके निवासी अतिथिका बड़ा आदर करते हैं। परन्तु ब्रिटिश गवर्मेण्टसे उनका मेल नहीं हुआ। उसका यह कारण था कि दोनों ही ओरसे कुछका कुछ समझ लिया गया। यदि ब्रिटिश सरकार शरत्‌चन्द्र दासको न भेजती जिसके कारण वहांके कई बड़े २ मनुष्य मारे गये और रूसकी भांति मिलकर काम

करती तो तिब्बतमें रूसका जैसा प्रभाव हो गया है ब्रिटिश सरकारका उससे कहीं बढ़कर हो जाता। शरत् बाबूके जानेसे तिब्बतको इस ओरसे बड़ा खटका हो गया जिसका फल यह हुआ कि केवल अंग्रेज ही नहीं वरं रूस और फारिसवालोंकी राह भी बन्द हो गई।

भारत-सरकार तिब्बतवालोंका हृदय अपने वशमें करनेको भूल नहीं गई है क्योंकि वह दार्जिलिंगमें आये हुए तिब्बतके लोगोंके लड़कोंको बिना फीस स्कूलोंमें पढ़ाती है। उनमें जो लड़के प्रखर बुद्धिके हैं उनको ऊंचे दर्जेकी शिक्षा देती है। सर्वमें, पोस्ट विभागमें और शिक्षा विभाग इत्यादिमें उनको नौकरी भी देती है। दार्जिलिंगमें पालकी उठाने वालोंकी आय बहुत है अतएव इस काममें वहांके लोगोंको न रखकर भारत सरकारने तिब्बतवालोंको ही यह काम दे रखा है। भारतवर्षकी पुलिस भी उन लोगोंके साथ उतना कड़ा व्यवहार नहीं करती है जितना कि भारतवासियोंके साथ करती हैं।

ऐसे व्यवहारोंसे उन लोगोंके हृदयोंमें भी ब्रिटिश सरकारकी भक्ति बढ़ जाती है और अपने यहांकी गवर्मेण्टको बुरी दृष्टिसे देखने लगे हैं। तिब्बतमें छोटे २ अपराधोंपर भी बड़े २ कठोर दण्ड जैसे हाथ काट डालना, आंखोंको निकाल लेना इत्यादि दिये जाते हैं वैसे दण्ड यहां कहीं देखने और सुननेमें भी नहीं आते। जो तिब्बतवासी यहांके सड़कें, रेल तार और टेलीफोन

इत्यादि देखता है वह भौंचक रह जाता है और उसकी यही इच्छा होती है कि लौटकर तिब्बतको न जावें।

इन सब बातोंसे वे समझते हैं कि ब्रिटिश सरकार बहुत धनी है। उसका प्रभाव भी बहुत है। यह सब होने पर भी हमारी सरकारने कोई प्रभाव अभीतक तिब्बतके सरकारी चक्र-पर नहीं जमाया।

वहांके पदाधिकारियोंपर घूसकी बड़ी कड़ी जकड़ है। जहांतक मैं समझता हूं रूसका प्रभाव भी इसी कारण है कि तिब्बतके उच्च पदाधिकारी रूससे धन प्राप्त करते रहते हैं। वैसा सम्बन्ध हमारी सरकारसे उनका नहीं है। जैसा उन लोगोंने रूसके ज़ारको अवतार समझ लिया है वैसा हमारी सरकारको वह नहीं समझ रहे हैं।

वहांके लामाओंका अंग्रेज़ी सरकारके विषयमें विचित्र भाव है। वे निर्णय नहीं कर सके कि अंग्रेजी सरकारको राक्षसोंका अवतार समझें या सन्तोंका, सरकारके उपकारक विभाग, शिक्ष-णालय, तथा रेल तार, पोस्ट आफिस आदि देखते हैं तो लामा समझते हैं कि वे बौद्ध धर्मको बहुत अच्छी तरह समझते हैं और सरकार अवश्य देववंशकी है। परन्तु जब देखते हैं कि दूसरेके राज्यको हरण करके वे तुरन्त अपने राज्यमें मिला लेते हैं तब उनका वह भाव बदल जाता है। दोनों विरोधी विचार उनके मस्तिष्कोंमें उठते हैं और समस्या नहीं सुलझती। वे समझ लेते हैं दो प्रकारके अंग्रेज भारतमें हैं—एक देव समान उपकारी

दूसरे दुष्ट राक्षस-स्वभावके हैं। अन्यथा ऐसे दो विरुद्ध दृश्य जैसा भारतमें दीख रहा है कभी न दीखता।

रानी विक्टोरियाको वे लोग अपनी देवी लामो पेन्डनका अवतार समझते थे जिससे वह इतने बड़े साम्राज्यकी रानी बनी, इससे तिब्बतवासियोंका इस रानीके प्रति बड़ा प्रेम,आदर-भाव रहा। परन्तु वे समझते थे कि रानीके दर्बारियोंमेंसे कुछ एक बहुत दुष्ट हैं। जैसे बुद्धके शिष्योंमेंसे कई एक ऐसे भी थे। वे रानीको उन दुष्टोंसे पृथक् किया चाहते हैं। रानीकी मृत्युका समाचार पहुंचनेपर तिब्बती बड़े प्रसन्न हुए, क्योंकि उन्होंने समझा कि हमारी वही देवी फिर तिब्बतमें आ गई है।

वहांके पढ़े लिखे प्रायः मुझे बुद्धगया आदिके विषयमें बहुत पूछते थे परन्तु मैं प्रायः सन्देहजनक स्थलोंपर मौन रहता था।

यदि रूस तिब्बतमें लासातक अपनी सेना भी भेजना चाहे तो इस कार्यके लिये साईबेरियन रेलवे कोई प्रयोजनकी नहीं। समीपतम स्टेशनसे लासा इतनी दूर है कि दूरता ही सेनाके आक्रमणके लिये पर्याप्त बाधक है। यदि मार्गमें कोई बाधा न हो तो भी रेगिस्तान और टीलोंसे भरे प्रदेशोंसे भरा बीचका मार्ग पार करनेके लिये ५—६ मास लग जाय। मार्गमें आमदो और खामकी लुटेरी जङ्गली जातियां भी तिब्बतके लिये एक अच्छी रक्षा है। वे कभी किसीके काबूमें नहीं आ सकतीं। चाहे कितने ही सुसज्जित तथा प्रबल उन्नत शस्त्रास्त्र सम्पन्न सेनाएं क्यों न हों तो भी ये भयानक जंगली जातियां निसर्गतः

उन अरण्य प्रदेशोंमें अधिक लाभमें रहती हैं। टसानवीकेनवो इस बातको खूब समझता था। इसीलिये उसने ज़ारको अवतार बनाकर शस्त्रास्त्रोंसे असाध्य आतङ्कको साम उपायसे सहजमें ही जमानेका प्रयत्न किया। टसानवीका प्रयत्न उसकी आशाके अनुसार पूरा सफल न हुआ। कदाचित् उसके विरुद्ध भी कोई विशेष प्रतिक्रिया होनेका भय है।

तिब्बतियोंके हृदयोंमें चीनका प्राचीन कालसे आतङ्क पैदा हुआ है। वे वहांके राजाको भी बौद्ध देवता चांगचुबका अवतार मानते हैं। टसानवीके लिये चीनके विषयमें जमे भावोंका भेद देना भी कठिन है।

कई एक शासक भी टसानवीके आन्दोलनपर विश्वास नहीं करते। वे रूसके सब कामोंको संदेहसे देखते हैं। तिब्बतमें समाचारपत्र नहीं हैं। तो भी वहांकी जनताके आगे पीछे मुख्य २ घटनाओंका पता लग जाता है। इसी प्रकार परिमित व्यक्तियोंकी विपरीत गुप्त मन्त्रणायें भी सर्वसाधारणमें कुछ न कुछ खुल जाती हैं। इससे कई एक लामा लोग मिलकर शाताके विरुद्ध भी जुट गये। विहारके लामा और योद्धा लामा भी इस प्रत्यान्दोलनमें भाग लेने लगे।

अवस्थाओंके अनुसार टसानवीके रूस सम्बन्धी आन्दोलनका भी विरोध होने लग गया। अब आगे देखें रूस तिब्बतको वश करनेका क्या उपाय करता है।

ब्रिटिश सरकारका तिब्बतसे बहुत दिनोंसे सम्बन्ध चला

आता है और कभी लड़ाई झगड़ा भी नहीं हुआ। अठारहवीं शताब्दीमें जब वारेन हेस्टिंग्ज वाइसराय थे, उन्होंने जार्ज बोगलको तिब्बत भेजा था और वह कई वर्ष शिगात्जेमें रहे थे। उनके पीछे कप्तान टरनर भी वहीं रहे। तबसे कोई नहीं गया परन्तु इधर चौबीस वर्ष पहले किसी भी भारतवर्षके मनुष्यको वहां जानेकी मनाई नहीं थी। बहुधा इन जानेवालोंमें तीर्थयात्री ही हुआ करते थे जो कि तीर्थस्थानोंके दर्शनोंके लिये जाया करते थे। शरत्चन्द्र दाससे पहले यह साधारण बात थी। लोग कहते हैं कि बहुतसे नंगे साधु पानीका तुम्बा और चिमटा हाथमें लिये हुए और मुखभर भस्म लगाए तिब्बतको जाते दिखाई देते थे। और यद्यपि शरत्चन्द्र बाबूके कारण दोनों सरकारोंका हृदय फीका पड़ गया परन्तु सर्वसाधारणके हृदयोंमें वही प्रेम बने रहे।

शरत्चन्द्र दासका शिकमके पुरोहित बनकर जाना और उसके पीछेके झगड़ेने दोनों ओर मनमुटाव कर दिया। इस शरत् बाबूकी यात्राका हाल सुनकर ब्रिटिश सरकारकी इच्छा हुई कि शिकम (जो कि सरकारके मातहत है) की सरहद ठीक हो जानी चाहिये क्योंकि तिब्बत सरकार एक मूर्ख नेचंग लामाके कहनेमें आकर एक दुर्ग शिकमकी भूमिमें बनाकर वहीं पर अपनी हद बनाना चाहती थी। सुना जाता है कि पहले तो तिब्बत सरकार ऐसा करनेपर सहमत न थी परन्तु जब नेचंग महाशयने कहा कि,इस दुर्गमें रहकर ब्रिटिश सरकारकी कितनी

ही फौजें क्यों न आवें सब निःशस्त्र की जा सकती हैं तब तिब्बत सरकारने दुर्ग बनाना आरम्भ किया था। उसने समझा दिया कि इस दुर्गके बननेसे सदैवका झगड़ा मिट जावेगा और यह दुर्ग सदाके लिए हमारी सीमा हो जायगा।

नेचंगके कथनानुसार शिकमकी भूमिमें दुर्ग बन गया। दुर्गके बननेका सम्वाद पहुंचते ही भारतवर्षकी फौजने जाकर उस दुर्गको विध्वंस कर दिया। यह दुर्ग नयातोंगसे प्रायः २० मील इधर है। यदि इसीपर निपटारा हो जाता तो ठीक था परन्तु तिब्बतने अपनेको सच्चा प्रमाणित करनेके लिये कहा कि शिकम पहले हमसे भारत सरकारने अनुचित रीतिसे लिया है। इसका फल यह निकला कि ब्रिटिश सरकार और तिब्बतमें युद्ध ठन गया। भारतवर्षसे भी फौजें जा पहुंचीं और तिब्बतसे भी आईं। यद्यपि तिब्बतवालोंको स्थान बहुत अच्छा मिला था परन्तु न तो उनकी फौज रणमें चतुर थी और न अच्छे अफसर ही थे। तिसपर भी तुर्रा यह कि अफसर लड़ाईकी आज्ञा देकर आप कैम्पोंमें विश्राम करते थे। अतएव वह अफसर घायल भी न हुए और भाग गये। वह लोग लड़ाईके मैदानमें न आकर अपने डेरोंमें बैठे जुआ खेलते रहते थे। फल यह हुआ कि तिब्बतकी बहुत सी सेना मारी गई। इधर बहुत थोड़ी हानि हुई। यदि ब्रिटिश सरकार चाहती तो अपनी हद चुम्बीसम्बापर रखती परन्तु उसने ऐसा न करके नयातोंगतक ही रखी।

यद्यपि उस समयके वाइसरायका यह काम उचित ही था परन्तु मेरी समझमें यदि वह तनिक दब जानेकी पालिसीपर चलते तो आगेके लिये बहुत फलदायक होता। कौन कह सकता है कि यदि उस समय सरकार कुछ भूमि देकर थोड़ी सी हानि उठा लेती तो इस समय अंगरेजी झण्डा लासापर फहराता और वहांकी स्वच्छ रोगविहीन हवाको अंगरेज भोगते।

तिहत्तरवां परिच्छेद

चीन, नैपाल और तिब्बत

तिब्बत चीनके नाममात्र मातहत था। कुछ दिन पहले तिब्बत चीनको कुछ राजकर दिया करता था और चीन भी कुछ रुपया तिब्बतको राजाकी महाप्रार्थनाके निमित्त भेजता था। और लामा लोग उसकी शुभ कामनाके लिये पाठ करते थे। इस रुपयेके उलट फेरके कष्टको मिटानेके लिये यह बात तय हो गई कि न तिब्बत राजकर देवे और न चीन पाठ करानेको रुपया देवे।

जबसे जापानसे चीनकी युद्धमें पराजय हुई तबसे उसकी यह नाममात्रकी मातहती भी जाती रही। इससे पहले तिब्बत यद्यपि खिराज नहीं देता था तथापि चीनको बड़ा मानता था

परन्तु इस लड़ाईके पीछे न उसको चीनका भय रहा और न आदरकी दृष्टि रही। चीनने अपना मान बनाये रखनेकी बहुत चेष्टायें कीं परन्तु सबही निष्फल हुईं। यदि चीनकी कोई आज्ञा उसको रुचिकर होती तो मान लेता था नहीं तो इन्कार कर देता था।

जिस समय मैं लासामें था उस समय एक पीले कागज़पर चीनके राजाकी एक आज्ञा निकली थी जो कि लासाके बाजारमें लटका दी गई थी कि 'बाहरके आनेवाले मनुष्यको, चीनके अठारह सूबोंमें और उसकी मातहत रियासतोंमें, कोई भी रोक टोक न करे। यदि रोक टोक करेगा तो उसको कठिन दण्ड मिलेगा। क्योंकि परदेशी आदमी या तो व्यापार करनेको आते हैं या धर्म प्रचार आदिको आते हैं अतएव कोई रोक टोक न होना चाहिये।' दो आज्ञापत्र इसी भांतिके और भी निकले थे जिससे मालूम हुआ कि जापानवालोंने इसी तरहकी सुलह की होगी।

परन्तु इस आज्ञापत्रका तिब्बतके ऊपर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। मैंने तिब्बतके एक उच्च पदाधिकारीसे पूछा कि क्या ऐसी अवस्थामें भी तिब्बत अङ्गरेजोंको न आने देगा। उस अफ़सरने बड़ी घृणा दर्शाते हुए कहा कि 'तिब्बत चीनकी आज्ञा-माननेके लिये मजबूर नहीं है। वरं हम लोगोंको तो इसमें भी सन्देह है कि यह आज्ञा चीनके महाराजने प्रकाशित की है अथवा किसी औरने। क्योंकि चीनके महाराज एक बड़े भारी लामाके

अवतार हैं वह ऐसी आज्ञा नहीं निकाल सकते। सम्भव है उनके पासके किसी अमीरने परदेशियोंसे घूस खाकर यह आज्ञा पत्र निकाल दिया हो। हमलोग इसको नहीं मान सकते।'

चाहे बहुविवाह कारण हो चाहे इसका और कोई कारण हो परंतु नैपालकी जनसंख्या बहुत बढ़ रही है। नैपालकी सरकारका भी ध्यान इसी ओर है कि जन संख्या बढ़ाई जावे। नैपालमें मैंने देखा कि जिस मनुष्यके पास खानेतकको नहीं है उसके भी दो तीन स्त्रियां हैं। जो खाते पीते हैं उनका तो कहना ही क्या है। वहां मैंने एक २ कुटुम्बमें लड़के लड़कियोंकी संख्या भी बहुत अधिक देखी है।

इस जनसंख्याके बढ़नेके कारण चप्पा चप्पा धरती जोती जाती है। कहीं भी भूमि खाली नहीं है। जो जङ्गल हैं उनकी लकड़ी भी काट २ कर भारतवर्ष भेजी जाती है। फिर भी उस जनसंख्याके लिये पूरा नहीं पड़ता है अतएव लोग बाहर भी जाने लगे हैं। बहुतसे नैपाली भारत सरकारकी फ़ौजमें नौकर हैं। बहुतसे सिकममें आकर रहने लगे हैं और बहुतसे दार्जिलिङ्गमें आ गये हैं। इसके अतिरिक्त नैपाली अब तिब्बतकी ओर दृष्टि लगाये हुए हैं क्योंकि उसका क्षेत्रफल नैपालसे बारह गुना बड़ा है और नैपाल भी बढ़ती हुई जनसंख्याके लिये बहुत लाभदायक है। यदि आवश्यकता पड़ेगी तो वह युद्ध करनेके लिये भी तय्यार हैं। इसी कारण नैपालमें बहुत फौज तय्यार रहती है यद्यपि इतनी फौजकी वहां आवश्यकता नही है।

यहांके सिपाही गोरखोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। ये बड़े बहादुर होते हैं। भारत सरकार भी उनका बड़ा मान करती है। मैदानकी लड़ाईमें तो उनका नाम है ही परन्तु पहाड़परकी लड़ाईमें तो उनके बराबर कोई नहीं है। इन गोरखोंकी सूरत बिलकुल जापानी सिपाहियोंसे मिलती जुलती है। बहुत सम्भव है कि नैपाल अपनी इस फौजको अपनी रक्षाके कार्यमें लावे। रूससे तो इसे इतना भय नहीं पर तिब्बत सदा साथ रहनेवाला शत्रु है।

जब नैपालने सुना कि रूस और तिब्बतमें गुप्त भावसे सुलह हो गई है और ज़ारने विशारका लबादा दलाईलामाको भेजा है और बहुतसे हथियार भी भेजे हैं तो उसको बड़ा भय उत्पन्न हुआ। उसका यह भय भी उचित था क्योंकि उसका शत्रु इतना प्रबल हुआ जा रहा था।

नैपालने तिब्बतसे इसके विषयमें पूछा कि कहांतक यह बात सही अथवा मिथ्या है। यदि वास्तवमें सत्य है तो नैपालको अपने बचावके लिये युद्ध करना पड़ेगा।

यदि नैपाल तिब्बतसे युद्धमें जुट जाय, और तिब्बत रूसवालोंको अपने देशमें आकर बसने दे तो अंग्रेज सरकार नैपाल-तिब्बतको लड़ते देख बड़ी प्रसन्न हो। अंग्रेज सरकार ऐसी दशामें नैपालकी सहायता करे और युद्धकी सामग्रीका व्यय दे क्योंकि इससे अंग्रेज़ी सरकारको नैपाल-तिब्बत संग्रामसे हानिके स्थानपर लाभ ही है। नैपालको अपनी विजयसे इतना नफा न हो पर ब्रिटिशराजको अनन्त लाभ हो। इस प्रकार

नैपालके किये शिकारका मजा सब ब्रिटिशसिंह ही बांट जाय। नैपालका बुद्धिमान राजा भी कदाचित् इस बातको विचारता है। वह भी युद्धपर अपना व्यय करने और विजय पानेकी अपेक्षा अपना वास्तविक लाभ पाकर ही सन्तुष्ट है। वह ऐसा प्रबन्ध करना चाहता है जिससे नैपालियोंको तिब्बतमें प्रवेश मिल जाय और वे वहां निःशङ्क होकर बस जायं और व्यापार करें। यदि नैपाली लोगोंने देशमें एक बार भी व्यापारिक बल पकड़ लिया तब वे रुसके बढ़ते प्रभावको रोक सकते हैं और शान्तिके उपायोंसे ही तिब्बतपर अपना हाथ जमाये रख सकते हैं

यह ध्यान रखना चाहिये कि अभीतक नैपाल और तिब्बतके हृदयोंमें कुछ मलिनता नहीं आयी थी। इसके अतिरिक्त तिब्बत गोरखा सेनासे भय खाता और चाहता है कि नैपालसे मेल बना रहे तो अच्छा है। इसका एक उदाहरण यह है कि एक बार नैपालके महाराजने तिब्बतसे सूत्रोंकी पुस्तकें मंगाई थीं। दलाईलामाने जब यह सुना तो उन्होंने खोजकर अपनी ओरसे नैपाल महाराजके भेंटमें भेजी। यह पुस्तकें अब नैपालकी सरकारी लाईब्रेरीमें रखी हैं।

नैपाल महाराज भी यद्यपि बुद्धधर्मावलम्बी नहीं हैं वह ब्राह्मण हैं परन्तु वह किसी धर्मसे द्वेष नहीं रखते हैं और विशेष करके तिब्बतके बौद्ध धर्मावलम्बियोंके ऊपर बहुत दया रखते हैं। जो तिब्बतवासी नैपालमें जाते हैं उनकी रक्षाके ऊपर बहुत ध्यान देते हैं। अपने राज्यमें बौद्ध मन्दिरोंके बननेमें भी

रुपया और लकड़ी इत्यादिसे सहायता करते हैं। ऐसा करनेसे तिब्बतके हृदयमें भी नैपालका बहुत आदर है और कुछ दिनोंमें यदि ऐसा ही काम चलता रहा तो नैपाल अपनी अभिलषित कामना पूरी कर लेगा।

चौहत्तरवां परिच्छेद

तिब्बतपर क्रूर दृष्टि

तिब्बतपर अंग्रेज नैपाल और रूस इन तीनकी घोर दृष्टि लगी हुई है। देखें यह हिमालयका शिरोभाग किसकी बांटका है। चीनकी तो अब कोई पूछ न रही? इङ्गलैण्ड और नैपाल भले ही दोनों तिब्बतपर चढ़ाई करते समय मिल जायँ पर रूस दोनोंमेंसे किसीसे नहीं मिल सकता। रूस तो तिब्बतके रास्तोंसे हिमालय पारकर भारतवर्षके मैदानोंमें उतर आना चाहता है। नेपाल शान्तिपूर्वक तिब्बतमें अपनी सन्तति फैलाना चाहता है। उसका यह स्वार्थ पूरा हो जानेपर चाहे तिब्बत अंग्रेजोंके हाथमें रहे या रूसके उसे कोई घाटा नहीं। इसलिये अब तिब्बतका सब भविष्य रूस और अंग्रेज दोनोंके हाथ है।

तिब्बतके शासनवर्गोंकी चोटी रूसके हाथोंमें है और प्रजाका दिल अंग्रेजोंके हाथमें है। रूस की शैली और रूसका दान या घूंसखोरीकी शैली तो तिब्बतमें थोड़ा भी परिवर्त्तन होनेपर

निष्फल हो जायगी। अंग्रेजोंकी कूटनीति चिरकालतक अपना असर बनाये रखेगी। कौन बाजी मारेगा नहीं कह सकते।

यदि रूसी सेना लासातक पहुंच जावे तो तिब्बत भर अनायास सिर झुका देगा। तिब्बत भाग्यवादी है। वह निष्कर्मण्य होकर रूसका शासन स्वीकार करेगा। तिब्बतवासियोंके दिलमें कुछ भी देशभक्तिका भाव न जगेगा। इससे भारत सरकारको बड़ा भय हो जायगा। भारतमें रूस अपनी सेना उतार सकेगा। तिब्बत रूसका कढ़ा दुर्ग हो जायगा। भारतपर हाथ जमानेमें फिर अंग्रेजोंका समुद्राधिपतित्व कुछ लाभका न होगा। रूस यह काम कभी न कभी अवश्य करेगा।

क्या तिब्बत स्वतन्त्र इलाका न रहेगा? यह ठीक नहीं कहा जा सकता। कई हजारों वर्षोंसे तिब्बत सदा किसी न किसी बलवान हाथके आश्रय और रक्षामें रहा है। पहले उसपर भारतका हाथ था अब चीनका, यद्यपि दलाईलामा वर्तमानमें वहांके सुधार करने तथा स्वतन्त्रताके लिये उत्साह उत्पन्न करनेके लिये बड़े प्रयत्न कर रहा है, वह वहां सामाजिक सुधार और आचार-सुधारका बड़ा प्रयत्न कर रहा है, पर तिसपर भी आशा नहीं होती कि तिब्बत्त अपना भविष्य सुधार ले।

अंग्रेजोंके प्रति दलाई सरकारके भाव अब बदल गये हैं। पहले दलाईलामा अंग्रेजोंकी धमकीसे घबरा जाता था। वह ऐसे अवसरोंपर खाना पीना तक त्यागकर कोठरीमें बन्द हो जाया करता था। अब वही दलाईलामा अंग्रेजोंकी धमकीको कुछ भी

नहीं समझता। उसके उत्साहको देखकर उसकी प्रजा भी अब उसे अपना वीर नेता समझती है। दलाईलामाके इसी उत्साहको देखकर मुझे तिब्बतकी भविष्यपर दया आती है। दलाईलामाके इस प्रकार शेर बन जानेका कारण केवल रूससे सन्धि ही है। रूसने दलाईलामाको निश्चय करा दिया है कि जब अंग्रेज तिब्बतपर आक्रमण करेंगे रूस तिब्बतके साथ रहेगा। अब वह समझता है कि रूससे सहायता आनेपर तिब्बत अकेला अंग्रेजोंको पछाड़ गिरायेगा। दलाईलामाको भी विश्वास है कि रूस ही एक मात्र देश है जो अंग्रेजोंको लोहेके चने चबवा दे। ऐसी दशामें तिब्बतका स्वतन्त्र रहना सन्देहजनक है। कोई बड़ी शक्ति तिब्बतपर काबू कर लेगी।

पचहत्तरवां परिच्छेद

—:o:—

मोनलाभका त्यौहार

वास्तवमें मोनलाभके अर्थ प्रार्थना करना है, परन्तु तिब्बतमें यह एक त्यौहारका नाम है जोकि चीनके महाराजके नामसे किया जाता है। इसमें देवताओंसे राजाके चिरजीवनके लिये प्रार्थना की जाती है। यह त्यौहार ३·४ जनवरीको आरम्भ होकर २५ तारीखको समाप्त होता है।

इस त्यौहारकी तय्यारी करनेके लिये पुरोहितोंको बीस दिस

म्बरसे छुट्टी मिल जाती है। यह छुट्टियां बड़ी बुरी रीतिसे काटी जाती हैं। मन्दिर इस समयमें मन्दिर नहीं रहते हैं वरं पुरोहितोंकी रङ्गभूमि हो जाती हैं। बुरेसे बुरे कुकर्म इन मन्दिरोंमें देखे जाते हैं। मैंने अपने पास एक लड़का नौकर रख लिया था। वह मेरे छोटे बड़े सभी काम किया करता था। यह सोचकर कि इस त्यौहारका आनन्द इस लड़केको भी उठाना चाहिये मैंने एक और लड़का नौकर रख लिया परन्तु मुझे इससे भी कुछ लाभ न हुआ क्योंकि रातको दोनोंमेंसे एक भी न रहता था।

छुट्टीके बारह दिन समाप्त होनेपर त्यौहार आरम्भ होता है। तिब्बतके दूर २ नगरोंसे पुरोहित लोग लासामें आने लगते हैं। कभी २ पचीस हजारसे भी अधिक पुरोहित इकट्ठे हो जाते हैं। यह लोग सर्वसाधारणके मकानोंमें ठहर जाते हैं। इनके अतिरिक्त बहुतसे गृहस्थ भी बाहरसे आ जाते हैं। इस समय लासाकी जनसंख्या प्रायः दुगुनी हो जाती है। इस त्यौहारसे पहलेकी जनसंख्या प्रायः पचास हजार है। अब जो दलाईलामा हैं इनसे पहले केवल यही नहीं होता था कि बाहरसे लोग आकर ठहरें हीं वरं नगरके लोग बाहर चले जाते थे और त्यौहारमें विशेष धूमधाम नहीं हुआ करती थी। इसका कारण वहांके त्यौहारके बन्दोबस्त करनेवाले बड़े अफसर हुआ करते थे।

यह बन्दोबस्त रेवन विहारके दो बड़े लामाओंको दिया जाता था और उनको शालंगो कहा करते थे। यद्यपि शालंगोको

पद्वी प्रायः पांच हजार येन उपहार देकर मिला करती थी परंतु उसके पानेवालेको फिर भी कोई हानि नहीं होती थी। ज्योंही उसको यह पद मिला कि वह मय व्याजके अपनी रकमके वसूल करनेमें लग जाते थे। यह दोनों अफसर इस समयपर इतना रुपया इकट्ठा कर लेते थे कि शेष जीवन आराम‌से कट जावे। इन दिनोंमें वे बहुत ही कठोर हो जाते थे। छोटे २ अपराधोंपर भी बड़े जुर्माने होते थे। नगरके एक २ मनुष्यपर दो दो सौ येन दण्डके ले लेते थे। फिर भी अपराध क्या था कि अपने द्वारके सामने सफाई नहीं की है। यदि दो मनुष्योंमें झगड़ा हो तब भी यही दण्ड भुगतना पड़ता था। ऐसे समयमें यदि किसीसे किसीका रुपया पावना होता तो वह अनायास हा शालंगो महाशयकी दयासे पा सकता था जब कि आधा शालंगो महाशयको भी अर्पण कर दे। रुपयेवालेकी अर्जी पाते ही जिसने रुपया लिया है उस बेचारेकी धन सम्पत्ति जब्त कर लेनेकी धमकी देते थे। नागरिक बेचारे त्यौहारके आते ही अपनी धन सम्पत्तिको धरतीमें गाड़कर १-२ आदमीको घरमें छोड़कर मकानको बाहरवालोंके लिये खाली करके भाग जाते थे। त्यौहारके समयमें दसवां भाग जनसंख्या भी नगरमें न रहती थी।

यह शालङ्गो महाशय केवल नगरवासियोंको ही नहीं लूटते थे वर लामाओंपर भी हाथ साफ करते थे। वह भेड़ियेकी भांति भेंड़का चमड़ा ओढ़े हुये भेड़ोंके गल्लेमें रहते थे।

जबसे यह दलाईलामा गद्दीपर बैठे तबसे यह अन्धेर लासामें तो बन्द हो गया परन्तु और स्थानोंमें अब भी वैसा ही चल रहा है। इस सम्बन्धमें एक बड़ी रोचक दन्तकथा प्रसिद्ध है। एक लामा अपनी दिव्य दृष्टिसे इस लोक परलोकतक, स्वर्ग-लोक और नरक-लोकतकके देख लेनेके लिये प्रसिद्ध हो गया था। लासाके एक व्यापारीने उससे पूछा कि तुमने नरकमें सबसे अधिक चित्ताकर्षक अद्भुत क्या बात देखी? उसने कहा कि मैंने नरकके अधिकारियोंके हाथ बहुतसे लामाओंको बड़े कष्ट पाते और तड़पते देखा, साधारण पुरोहितोंको तो बहुत कष्ट नहीं दिया जाता था पर केवल विहारके शालङ्गो लोगोंपर बड़ा २ भयानक दण्ड होता था जिसे देखते रोमांच होता है।

इस समयमें लासा नगरमें खूब सफाई रखी जाती है। यह त्यौहार एक बड़े भारी तीन तल्लेके मकानमें होता है। इस मकानका नाम चोखङ्ग है। पुरोहितोंके मारे इसमें तिल धरने-को भी स्थान नहीं रहता है। इस कारण मौतें भी हो जाया करती है।

दिनभरमें तीन बार पूजा होती है। सवेरे पाँच बजेसे सात बजेतक, दस बजेसे एक बजेके कुछ पहलेतक और ३ बजे-से ४॥ बजेतक यह तीन पूजाएं होती हैं। सबसे मुख्य दोपह-रकी पूजा समझी जाती है। इसके लिये भेंटें भी दी जाती हैं जो कि भक्त लोगोंके पाससे भी आती हैं और सरकारकी ओरसे भी आती हैं। यह भेंटें चौबीस सेनसे बहत्तर सेनतक हुआ

करती हैं। त्यौहारभरकी एक पुरोहितकी दक्षिणा प्रायः दस येन हुआ करती है। यही दक्षिणा जब दलाईलामा मर जावे अथवा गद्दीपर बैठे तो प्रायः बीस येन होती है। बड़े लामाओं-को बहुत मिला करता है अर्थात् एक हजारसे लेकर पांच हजार येनतक मिलते हैं।

इसके विपरीत जो लामा बाहरसे आकर लासामें ठहरते हैं उनको मकानका किराया पंचीससे पचास येनतक नित्यका देना पड़ता है। एक अच्छे सजे हुए मकानका किराया तीनसे पाँच येनतक होता है। लामाओंको ऐसे मकानोंमें रहनेकी आज्ञा नहीं है जहां मदिरा बिकती हो अथवा बहुतसी स्त्रियां रहती हों।

इस समयमें शालङ्गोंके अतिरिक्त पुरोहितोंके ऊपर एक और अफसर रखा जाता है जिसका काम है कि पुरोहितोंके चाल चलनकी देखरेख करे। लड़ाई झगड़ा इस समय बहुत कम हुआ करता है। परन्तु प्रत्येक पुरोहितको सिवाय उस अवस्था-के कि बीमार हो तीनों समयोंकी पूजा नित्य प्रति करनी पड़ती है। और उसके लिये कुछ विशेष प्रयत्नकी भी आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि प्रायः प्रत्येक पूजाके पीछे ही भेंट मिला करती है।

तारीख १५ जनवरीकी रातको सबसे बड़ी पूजा होती है। इस समयपर प्रायः १२० भांति ५ की मक्खनकी बनी हुई मूर्तियां एक बड़े मकानमें रक्खी जाती हैं और सहस्रों घीके दीपक रखे जाते हैं।

इस पूजाके समय प्रायः तीन सौ लामा रखे जाते हैं। जो कोई इस पूजाको देख सकता है वह बड़ा माननीय समझा जाता है। इस अवसरपर थोड़े आदमी इस कारण रखे जाते हैं कि यदि रुकावट न हो तो उस थोड़े ही स्थानमें इतने आदमी टूट पड़ते हैं, कि लोगोंके मर जानेका भय रहता है।

यह पूजा रातके आठ बजेसे आरम्भ होकर सवेरेके चार बजे समाप्त होती है। इस समय कभी कभी दलाईलामा-भी आ जाते हैं। मुझको अपने मित्र अर्थसचिवके साथ होने-से देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। परन्तु चीनी अम्बान सदैव ही यहां रहता है वह बहुत भड़कीले कपड़े पहने हुए एक गाड़ीमें बैठा रहता है जिसमें दसरी रेशमकी चौबीस लालटेनें टंगी रहती हैं और उनमें विदेशी मोमबत्तियां जलती रहती हैं। वह शिरपर अपनी पदवीकी टोपी पहने रहता है। जिस समय चीनी अम्बान अपनी सजी हुई गाड़ीमें बैठकर नगरमें निकलता है उस समयकी शोभा वर्णनातीत है। सहस्रों दीपक चारों ओर दिखलाई देते हैं। अम्बानके पीछे बड़े लामाओंका झुण्ड उसके पीछे बड़े अफसर इत्यादि चलते। मक्खनकी मूर्तियों इत्यादिकी सजावटमें तीन सौसे दो हजार येनतक खर्च होते हैं। मक्खनकी सजावट ऐसी मैंने और कहीं नहीं देखी।

इसी समयपर वार्षिक परीक्षायें भी होती हैं और उपाधियां भी दी जाती हैं। यह काम एक दूसरे हालमें होता है। परीक्षा लिखित न होकर मौखिक हुआ करती है।

इसके पीछे तलवारका त्यौहार होता है। यह एक भांतिका फौजका मुआइना होता है। भांति २ की पोशाकें पहन २ कर अश्वारोही सवार मैदानमें आते हैं।

छिहत्तरवां परिच्छेद

तिब्बतकी सेना

तिब्बतकी फौज़में पांच हजार मनुष्य सुने जाते हैं परन्तु जहांतक मैं समझता हूं यह संख्या बढ़ाकर कही गयी है। साठ लाखकी जनसंख्याकी रक्षाके लिये भी इतने सिपाही पर्याप्त नहीं हैं। न वे बाहरके आक्रमणकारोको ही रोक सकते हैं और न घरकी फूटको ही दबा सकते हैं। देशके भीतर कोई शक्ति नहीं है जो शान्तिको स्थापन करे। केवल धर्म ही है जो शान्ति बनाये हुये है। दलाईलामा जिसको कि वहांकी प्रजा बुद्धदेवका अवतार समझती है उसके विपरीत कभी भी हथियार नहीं उठा सकती। यह विश्वास ऐसा दृढ़ है कि वहां कभी बग़ावत सुननेमें नहीं आई। अतएव वहां बहुत कम सिपाही रहा करते हैं। इतिहाससे ज्ञात होता है कि घरू फूट वहां तब ही फैलती है जब कि दलाईलामा मर जाता है और नया जो गद्दीपर बैठता है वह उमरमें बहुत छोटा होता है और उसका काम उसके नीचेके कर्मचारियोंको करना पड़ता है। वे उस अधिकारका दुरुपयोग

करते हैं और सर्वसाधारणमें असन्तोष फैला देते हैं। परन्तु जब दलाईलामा अपना काम सम्हालने योग्य होता है तो उसका मान बुद्धदेवके बराबर ही होता है। उसकी आज्ञाको उल्लंघन करनेकी शक्ति किसीको नहीं है। छोटे मोटे झगड़े जो हो भी जाते हैं उनके लिये सेनाकी कोई आवश्यकता नहीं होती। वास्तवमें तिब्बतको सेनाकी आवश्यकता इस कारण हुई कि दो बार नैपालसे और एक बार भारतवर्षसे उसका झगड़ा हो गया। तबसे वहां कुछ सेना रहा करती है। लासामें १००० आदमी शिगातज़ेमें २०००, टिंगरीमें नेपालकी सीमापर एक दुर्ग है वहां कहते तो हैं कि ५०० सिपाही रहते हैं परन्तु वास्तवमें ३०० रहते हैं वहां चीनके भी कई सौ सिपाही रहते हैं। पांच सौ ग्यातज़ेमें, पांच सौ टोपोमें और पांच सौ मेनखममें रहते हैं। चीनी सिपाही सब मिलाकर दो हज़ार हैं जो चारों स्थानोंपर बराबर २ बँटे हुए हैं।

लासा, शिगातज़े, टिंगरी और टोमो ही मुख्य स्थान हैं। प्रत्येक पांच सौ सिपाहीपर एक अफसर रहता है जिसका नाम डीबोन है। एक छोटा अफसर २५० सिपाहियोंपर, एक पचीस सिपाहियोंपर और एक पांच सिपाहियोंपर रहता है।

तिब्बतके सिपाहियोंको एक महीनेमें एक बुशल जौ मिला करते हैं। उनके रहनेके लिये कोई विशेष बरकें नहीं बनी हैं वरं साधारण मकानोंमें रहते हैं जोकि प्रजाके खर्चसे बनवाये गये हैं। मकान भी किसी एक स्थानपर नहीं वरं नगरमें

जहां तहां बने हैं जिनमें वे लोग साधारण प्रजाकी भांति रहते सहते और अपना हाल रोजगार किया करते हैं। ये लोग अपना रोजगार करनेके लिये मजबूर हैं क्योंकि एक बुशल जौमें वे अपने स्त्री बच्चोंका भरणपोषण नहीं कर सकते। ये लोग चौकीदारी टैक्स नहीं देते। प्रजा प्राय: शिकायत किया करती है कि सिपाहियोंके लिये मकान बनानेका व्यय भी उसे सहना पड़ता है। चीनी सिपाही भी तिब्बतवालोंकी भांति ही मकानोंमें रहते हैं और टैक्स नहीं देते।

इस टैक्ससे बचे रहनेके बदलेमें इन लोगोंको महीनेमें चार पांच बार क़वायद करनी पड़ती है। वर्षमें एक बार लासासे दो मील दूर एक गांव देवची है वहां सबको इकट्ठा होना पड़ता है। इस गांवमें युद्धके देवता कान्तीकी मूर्त्ति है। लोगोंका विचार है कि यह देवता दुष्ट आत्माओंसे रक्षा करता है। पास ही एक और मन्दिर है। इस मन्दिरमें बहुत सी वस्तुऐं ध्यान देने योग्य हैं जिनमें नीले राक्षस, लाल राक्षस और बहुतसे नरकवासियोंकी मूर्त्तियां हैं। इस मन्दिरसे लगा हुआ परेडका मैदान है। यहींपर सब सिपाही आकर जमा होते हैं। यह परेड सितम्बरके अन्तमें अथवा अक्टूबरके आरम्भमें जब कि जौकी फ़सल कट चुकती है उस समय होती है। पहले दो दिनोंमें चीनी सिपाहियोंकी क़वायद होती है और पिछले दो दिनोंमें तिब्बतके सिपाहियोंकी होती है। यह परेड चीनी अम्बान और तिब्बतके उच्चपदाधिकारियोंके सामने हुआ करती है और

जो सिपाही अच्छा काम दिखलाता है उसको पचास सेण्टसे पांच डालरतक पारितोषिक अथवा चांदीका तमगा दिया जाता है। यहां अब भी तीर कमान बहुत आवश्यक समझा जाता है। तिब्बती इधर तोप और बन्दूकसे भी काम लेने लगे हैं। यह काम चीनी अफ़सरों अथवा तिब्बतके अफसरोंने भारतसे सीख-कर अपने देशमें चलाया।

मुझको चीनी और तिब्बतके सिपाहियोंमें साधारण प्रजासे कुछ भी विशेषता नहीं मालूम होती। चीनी सिपाहियोंके तो पीले चेहरे होते ही हैं तिब्बतवाले कुछ बलवान मालूम होते हैं परन्तु साहसमें विशेष कोई भेद नहीं मालूम होता। मैं समझता हूं कि यह दोष उनकी तनख्वाहोंकी कमीके कारण है। इनसे तो योद्धा लामा ही बहुत साहसी और बलवान दिखलाई पड़ते हैं क्योंकि इनके पास स्त्री बच्चे नहीं होते जिनके भरण पोषणकी चिन्ता उन्हें करनी पड़े। इसीलिये वह सरकारी सिपाहियोंसे कहीं अच्छे होते हैं।

हां खामके सिपाही अवश्य सिपाही हैं। यहांके पुरुष ही नहीं स्त्रियां भी सिपाही हैं। खेती करनेके अतिरिक्त वे डाके मारते हैं। वे इस कामके करनेका गर्व करते हैं और दूसरी जातियोंको नीचा दिखानेमें वे बड़े प्रसन्न होते हैं। इन लोगोंमें डाका मारनेके विषयमें गीतें हैं जिनको कि उनके बच्चे समय समयपर गाया करते हैं।

सतहत्तरवां परिच्छेद

तिब्बतकी आर्थिक दशा

तिब्बतकी आर्थिक दशाके विषयमें कोई भी ठीक २ नहीं जानता केवल अर्थसचिव और उनके उच्चपदाधिकारी ही जान सकते हैं अतएव इसका ठीक २ वर्णन करना मेरे लिये असम्भव है। परन्तु जैसा मैंने अपने मित्र अर्थसचिवसे जान पाया है उसीका संक्षेपसे उल्लेख करता हूं। तिब्बतमें रुपयाके स्थानपर अनाज इत्यादि पदार्थ सरकारी मालगुजारीमें वसूल किये जाते हैं और इन वस्तुओंके दाम भी कभी एक जैसे वसूल नहीं होते हैं। इससे इसका पता लगना बहुत कठिन है कि वास्तवमें तिब्बतकी वार्षिक आय क्या है। अतएव केवल इतना ही लिखता हूं कि मालगुजारी किस भांति वसूल की जाती है।

कोश विभागको यहां लेवरङ्ग चेनवो कहते हैं जिसका अर्थ है लामाका रसोई घर। इस नामका कारण यह है कि देशकी बहुतसी उपज यहांपर जमा की जाती है। यहां मनिआर्डर अथवा हुण्डी इत्यादि प्रचलित नहीं है अतएव जो अनाज वसूल किया जाता है वह सीधा सदर खजानेको आता है। परन्तु टैक्स देनेवालेके लिये एक बात आश्वासनकी है कि उसको सरकारकी ओरसे डाकके घोड़े मिल जाया करते हैं। इस भांति सरकारी कोशमें जौ, गेहूं, मटर, आटा, घी इत्यादि जमा

होते हैं। जहां चुङ्गीघर बने हुये हैं वहांसे मूंगा, रुई, ऊन, रेशमी माल, अंगूर और आडू इत्यादि भी ले लिये जाते हैं। कहीं कहींसे पशुओंके चमड़े भी आते हैं। यह मालगुजारीके वसूल करनेकी अद्भुत रीति है।

यहां एक और अद्भुत रीति है कि तौलें बहुतसी हैं। आटा तौलनेके बीस प्रकारके बाट हैं। अनाज तौलनेके बत्तीस नापके सन्दूक हैं। साधारण नापके सन्दूकको वोचिक कहते हैं। इसका नाम प्रायः आधे बुशलके बराबर है। परन्तु वसूल करनेवाले आवश्यकतानुसार इस नापको घटा बढ़ाकर सवाया या पौना भी कर लेते हैं। दलाईलामाकी जन्मभूमिसे छोटे नापसे वस्तुएं नापकर ली जाती हैं। इसके अतिरिक्त उच्चपदाधिकारियोंकी जन्मभूमिके लिये भी इस बातका ध्यान रखा जाता है। इससे यह लाभ होता है उन नगरोंसे भी गिनतीमें उतने ही बुशल मिलते हैं परन्तु वास्तवमें आधी वस्तु भी हाथ नहीं लगती है। किसी सूबेके लिये कोई तौल नियमित नहीं है वह भी प्रति वर्ष बदल सकती है। मान लीजिये कि जिस सूबेके ऊपर बड़ी कृपा हो रही है उसमें कोई बदमाश अथवा कोई बागी उत्पन्न हो गया तो उस सूबे भरके मालगुजारोंसे बड़े नापसे ही अनाज वसूल किया जावेगा। गत वर्षसे दुगुनातक वसूल कर लेते हैं। इसका अर्थ मेरी समझमें यह आया है कि भांति २ के अपराधोंके लिये भांति २ के नाप बने। इस प्रकार बत्तीस प्रकारके नाप और २० तौलें हो गई हैं। यदि सरकारको वह

वस्तुयें बेचनेकी आवश्यकता पड़ती है तो वह सबसे छोटे नापसे तौल देनेकी इच्छा होते हुए भी साधारण ही नापसे तौल दी जाती है जिससे प्रजाको उलहना देनेका अवसर न मिले। सब विभागोंकी तनख्वाहें भी मध्यम नापसे दी जाती हैं।

सरकारका अधिकांश खर्च मन्दिरोंकी मरम्मत और उनके लिये भांति २ की सामग्रीमें खर्च होता है। परन्तु सबसे अधिक घीके मोल लेनेमें होता है। क्योंकि दिन रात मन्दिरोंमें घृत दीपक जलते रहते हैं। एक लासाके बुद्धदेवके मन्दिरमें जो दीपक लगे हुए हैं उनकी संख्या २५०० से ऊपर हैं। कभी २ दस हजार या एक लाखतक दीपक जलाये जाते हैं। मन्दिरोंमें घीके अतिरिक्त और कोई वस्तु जलाना पाप समझा जाता है। कोई २ लामा भी मरते समय कह जाते हैं कि उनके क्रिया कर्ममें सरसोंका तेल न जलाया जावे। लासामें बुद्धदेवकी मूर्त्तिके सामने बड़े २ चौबीस सोनेके पात्र रखे रहते हैं जिनमें घी जलाया जाता है। इन चौबीसके अतिरिक्त और भी दीपक हैं जिनमें पचीस २ सेर घी आता है। यह सब सरकारकी ओरसे खर्च होता है। कुछ बाहरसे भी भक्त लोग दे जाते हैं।

प्रत्येक सूबेमें दो स्थानोंपर यह टैक्स वसूल किया जाता है। एक स्थान तो मन्दिर है दूसरा स्थानीय सरकारी दफ्तर है। क्योंकि यहां दो तरहकी प्रजा हैं एक वह जो मन्दिरोंके अधीन है और दूसरी वह जो सरकारके अधीन है। यहींसे मालगु-

जारी वसूल होकर केन्द्रस्थ सरकारमें पहुंच जाती है। प्रत्येक सूबेमें एक दुर्ग बना हुआ है जिसको ज़ोंग कहते हैं। लड़ाईके समयमें यह दुर्ग लड़ाईके काममें आता है परन्तु शान्तिके दिनोंमें स्थानीय सरकारका दफ्तर यहां रहा करता है। सब टैक्स यहीं आकर जमा हुआ करते हैं। किलेमें किलेदार रहता है जो ज़ोगपोन कहाता है। यह अपनी तनख्वाह सरकारसे नहीं पाता है वरं जितना अनाज उसके लिये नियमित है उतना अपनी जमा की हुई मालगुजारीमेंसे ले लिया करता है। केन्द्र-स्थ सरकार यदि कोई विशेष आवश्यकता न पड़े तो कोई वस्तु स्थानीय सरकारके पास नहीं भेजती। जो प्रजा सदरकी समझी जाती है उससे कभी २ शिरकर भी लिया जाता है।

सरकारी अफसर और पुरोहित सरकारसे १५०० डालरतक ५ डालर फी सैकड़ा सूदके हिसाबसे ले सकते हैं। और वह उस रुपयेको १५ फी सदीके हिसाबसे और लोगोंको दे सकते हैं। तिब्बतमें व्याजकी यही दर है कोई २ तो ३० फी सदीतक देते हैं। यदि एक वर्षमें वह इस रुपयेको चुका न सके तो वह दूसरे वर्षके क़र्जमें नहीं काटा जाता। व्याजपर व्याज वहां कोई नहीं जानता और इसकी कानूनसे मनाई है।

दलाईलामाके कोशको चेलाब्रंग कहते हैं क्योंकि उनका महल पहाड़ीके ऊपर बना हुआ है। इस महलको पोटाला कहते हैं। यह महल भी है और मन्दिर भी है। यह बड़ाही सुन्दर और दृढ़ मकान है। परन्तु इसमें एक बड़ा भारी दोष है कि

इसमें न कोई कुंआं है न सोता है। यदि पानीकी आवश्यकता पड़े तो १५० फीट नीचे सीढ़ियोंपरसे उतरकर १५० फीट और चलना पड़ता है। पानीके लाने और ले जानेमें प्रायः पौन मील चलना पड़ता है। इसके लिये वहां लोग रहते हैं और एक महीनेके एक मनुष्यके पानी पहुंचानेके लिये १२ सेण्ट लिया करते हैं। यहां दलाईलामाके पास १६५ लामा रहते हैं। यह चुने हुए पुरोहित हैं और दलाईलामाके यहांसे इनका भरण पोषण होता है।

दलाईलामा जब मर जाता है तो उसकी धन सम्पत्तिका आधा भाग उसकी जन्मभूमिके कुटुम्बियोंको मिलता है। शेष भाग लामाओंमें बांट दिया जाता है। साधारण लामा मरते समय यदि ५ हजारकी सम्पत्ति छोड़ गया है तो ४ हजार तो दानमें बांट दिया जाता है और शेष उसके क्रिया कर्ममें व्यय कर दिया जाता है। लगभग ३०० उसके शिष्योंमें बांट दिया जाता है। यदि कोई लामा पर्याप्त धन न छोड़े तो उसके शिष्य उधार करके उसकी क्रिया करते उसके नामपर दान करते और दीपक जलाते हैं।

अठहत्तरवां परिच्छेद



तिब्बतका भावी धर्म।

तिब्बतके लोग अपने धर्मके पक्के हैं। परन्तु विदेशी लोगोंका कहना और मेरा भी विश्वास है कि इनके धर्ममें अन्धविश्वास अधिक है। फिर भी यह नहीं कह सकते हैं कि इनके धर्ममें सत्यता नहीं है। एक छोटासा परन्तु बढ़िया रत्न कूड़ेमें भी मिल सकता है अतएव विद्वानोंको उसके ढूंढ़नेके कष्टसे भय-भीत होकर छोड़ न देना चाहिये। मैंने तिब्बतवासियोंमें दो गुण पाये हैं। एक तो यह कि वह उस दैवीशक्तिको पहचानते हैं जो उनकी रक्षा करती है। उनका विश्वास है कि श्रद्धा-भक्तिके द्वारा उसे पा सकते हैं। यह सत्य है कि इस विश्वा-समें वह बहुतसे ऐसे काम भी करते हैं जो कि नितान्त ही निर-र्थक हैं। वह देवताओं और बुद्धदेवके भेदको भी पहचानते हैं कि देवताओंका भय करना चाहिये और बुद्धदेवकी अभ्यर्थना।

दूसरी बात यह है कि वह कर्म और कर्मफलमें विश्वास करते हैं। इस सिद्धान्तके अनुसार प्रत्येक कर्मका फल मिलता है। हर एक पापकर्मका फल दुःख है। हरएक भले कर्मका फल सुख मिलेगा। कर्म और कर्मफलका सिद्धान्त अनादि अनन्त कालतक है। बीजसे फल और फलसे बीज उत्पन्न होता है। इसी प्रकार वे आत्माको नित्य मानते हैं वही बार २

जन्म लेती है। यहांतक तो उनका मन्तव्य ठीक है इसके आगे पुनर्जन्मके सिद्धान्त भी उनकी बड़ी श्रद्धा है और इसीमें उनको बड़े अन्धविश्वास भी हैं। बौद्ध कर्मवाद आत्मवादकी शिक्षा तिब्बतमें इतनी अधिक दी जाती है कि बच्चे माताकी गोदसे ही ऐसी पौराणिक कथाएं सुना करते हैं जिनमें बुद्धका अवश्य सम्बन्ध रहता है। वस्तुतः बुद्ध तिब्बतवासियोंके हृदयोंमें इतनी गहराई तक गया हुआ है कि कोई और धर्म वहां ठहर नहीं सकता यदि उसकी व्याख्या बौद्धधर्मकी दृष्टिसे न की जा सके। इसी कारण पुराना बोनधर्म भी बौद्धधर्ममें उसी प्रकार बदल गया जिस प्रकार शिन्तोधर्म जापानमें बदला जिसमें सूर्य्य देवता बुद्धका अवतार समझा जाने लगा। एक अद्भुत बात मैंने देखी कि वहां मुसलमानी धर्म भी दिखलाई देता है। इस मतके लोग बहुधा चीन और काश्मीरसे आये हुए हैं। लासा और शिगात्ज़ेमें इनकी संख्या प्रायः ३०० होगी। लासाके बाहर इन लोगोंकी दो मसजिदें हैं। एक काश्मीरवालोंकी और दूसरी चीनवालोंकी। यह भी आश्चर्यकी बात है कि जहां बौद्धधर्मका ऐसा बल है वहां भी वह लोग अमन चैनसे रहते हैं। इनका विश्वास है कि मनुष्य दूसरी किसी योनिमें नहीं जाता है और अन्तमें उसके लिये दो ही स्थान हैं अर्थात् स्वर्ग और नरक। मैंने उन लोगोंसे एक बार बातचीतमें कहा कि तुम्हारी कुरानमें यह बात तो लिखी है कि मनुष्यको स्वर्ग अथवा नरक मिलेगा परन्तु यह नहीं लिखा है कि मनुष्य और

और योनियोंमें होकर आया है अथवा उसके कई जन्म हो सकते हैं। इसके उत्तरमें उन्होंने कहा कि 'नहीं साहब हमारे यहां यह बात लिखी हुई है। मैंने इसके ऊपर बहुत विवाद करना चाहा परन्तु वास्तवमें वैसा कुरानमें नहीं है। मुझे ज्ञात होता है कि ऐसे विचार उनके तिब्बतमें रहनेसे हो गये हैं।

ईसाई लोग अपना धर्म तिब्बतमें फैलाना चाहते हैं। यह सत्य है कि तिब्बतमें वह लोग नहीं जाने पाते परन्तु दार्जिलिङ्ग और शिकममें जो तिब्बतवासी रहते हैं उनके लिये उन्होंने तिब्बतकी भाषामें बाइबिलका अनुवाद कर डाला है। और भी बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं जिनमें बौद्ध धर्मकी निन्दा है।

बहुतसे तिब्बती द्रव्यलोभसे या आजीविकाके कारण ईसाई हो गये हैं। वे भी अपने घरोंमें बुद्धकी मूर्ति तथा उसके आगे घृतदीपक रखते हैं। ईसाइयोंका यहां विचार कि वे बौद्धोंको जल्दीसे ईसाई बना लेंगे ग़लत है। ईसाई और बौद्ध दोनों धर्मोंमें बड़ा भेद है। बौद्ध धर्ममें आत्माको बड़ी स्वतन्त्रता प्राप्त होती ईसाई धर्ममें मनुष्यकी आत्मा सर्वशक्तिमान् ईश्वरके सामने निर्बल होकर बंध सी जाती है। ईसाई धर्ममें कर्मफलवाद नहीं है। कहीं कहीं उसके इशारे आये हैं पर बहुत कम। उसकी मुख्यता नहीं है। यदि ईसाइयोंकी बाइबल संकुचितता छोड़कर भावी और भूतकालमें भी लगे तो कदाचित् तिब्बतमें ईसाई मत फैल सके। सिद्धान्तोंके संकीर्णताके कारण ही ईसाई मत इतना अधिक व्यय करनेपर भी फैलनेमें असमर्थ है।

उनासीवां परिच्छेद



भेद खुलनेका आरम्भ

त्सारोंगवा जो कि पिछले वर्ष भारतवर्षको गया था तारीख ३० अप्रेल १६०१ को लौट आया। यह तिब्बतका एक व्यापारी था जिसका विश्वास करके मैंने अपने गुरु शरत्चन्द्र और शब्द-गंलामाको उसके हाथ चिट्ठी भेजी थी। ज्योंही वह आया उसने मुझको बुला भेजा। उसका नौकर मुझे न मिला। उस समय मैं सेरामें नहीं था। मैं अर्थसचिवके यहां चला गया था। उसके आनेका सम्वाद मुझको देरसे मालूम हुआ। दूसरे दिन सवेरे मैं उसके यहां चल दिया। वहां पहुंचनेपर कुछ इधर उधरकी बातें होनेके पश्चात् उसने मुझसे कहा कि 'जिस समय मैं दार्जिलिंगमें पहुंचा उस समय तुम्हारे गुरु और लामा दोनों ही वहां न थे। अतएव मैं चिट्ठियां कलकत्ते ले गया। जब दार्जिलिंगको लौटा तब चिट्ठियां दोनोंको दीं। शरत् बाबूने कहा कि दो दिन पीछे इस चिट्ठीका उत्तर मुझसे ले जाना। परन्तु फिर मैं उनसे नहीं मिल सका क्योंकि तिब्बत सरकारके लिये बहुतसा लोहा मैंने मोल ले लिया था। यदि भारत सरकारको मालूम हो जाता तो मैं पकड़ा जाता अतएव मैं वहां अधिक ठहरना उचित न समझकर दूसरे ही दिन चल दिया और उत्तर न ले सका। परन्तु शब्दगंलामाने उसी दिन उत्तर दे दिया था वह यह है।

यह कह कर उसने एक पत्र मेरे हाथ में दिया। शब्दृगंने लिखा था कि शरत् बाबूका पत्र उनको दे दिया गया और तुम्हारे घरका पत्र भेज दिया गया है। उसने मेरी भेजी हुई भेंटके लिये कृतज्ञता प्रकाश की थी। तिब्बतमें यह रीति है कि जब किसीको पत्र लिखा जाता है तो उसके साथ कुछ भेंट भी भेजी जाती है। यदि और कोई वस्तु न हो तो रेशमका एक टुकड़ा जिसको 'काता कहते हैं वही भेज देते हैं। मैंने भी उसी रीतिके अनुसार शब्दृगंको एक काता भेजा था। उसके बदलेमें उसने मुझको विलायती शक्कर और कुछ और वस्तुएं भेजी थीं। बातों ही बातोंमें मैंने सुना कि ट्रान्सवासमें लड़ाई हो रही है। और भी दार्जिलिंगकी बहुतसी बातें मालूम हुईं।

तारीख १३ मईको लासामें बड़ी धूमधाम हो रही थी क्योंकि शिगात्ज़ेसे तासीलामा लासाको आ रहे थे। उनको बीसवाँ वर्ष समाप्त हो चुका था और अब उनके अधिकार उनको मिलने वाले थे। मैं भी उस भीड़में था। जब तासीलामाकी सवारी निकल गई तो मुझे त्सारोंगवा मिला जिसने मुझको चाय पीनेको अपने घर बुलाया। मैं उसके घरमें बैठा हुआ था, कि एक तिब्बतका मनुष्य भीतर आया। मुझे मालूम हुआ कि यह मनुष्य दलाईलामाके क़ाफ़िलेका अफसर है और उसने भी सरकारके लिये लोहा लानेका काम किया है। उसने घरमें घुसते ही मुझको बड़े ध्यानसे देखा। मुझे वह बड़े बुरे हृदयका और चतुर चालाक मनुष्य लगा।

वह शीघ्र ही मेरे पास आया। उस कमरेमें 'त्सारोंगवा और उसकी स्त्री भी थीं। त्सारोंगवा मुझे बड़े आदरकी दृष्टिसे देखता था। वह मुझको बड़ा भारी डाक्टर समझता था। उसको यह भी मालूम था कि मैं अर्थसचिवके घर रहता हूं। बड़े बड़े अफसरोंसे मेरी जान पहचान है। जब वह कलकत्तामें था तो उसने जापानियोंकी वीरताके बहुतसे किस्से सुने थे। विशेष करके चीन जापानकी लड़ाईके विषयमें भी उसने सुना था कि जापानी स्वार्थी नहीं हैं। उन्होंने चीनके लाभके बहुत काम किये थे। अतएव मेरे ऊपर उसको बहुत विश्वास था।

यह मनुष्य जो इस समय आया था एक सौदागरके यहां नौकर था और उसके कामके लिये कई बार पेकिंग हो आया था बक्सरकी लड़ाईमें वह चीनमें था। दुर्भाग्यवश उसके सब सामान जापानी सिपाहियोंने जब्त कर लिये थे। उसने कहा भी कि यह सामान चीन सरकारका नहीं है उसे यह सामान लौटा दिया जाय, परन्तु किसीने उसकी न सुनी। शेषमें वह जापानी जनरलके खेमेके पास गया और बोला कि मैं तिब्बतका रहनेवाला हूं और यह वस्तुयें चीनी सरकारकी नहीं हैं अतएव मुझे मिल जानी चाहिये। जनरलने जब देखा कि यह तिब्बतका रहनेवाला है तो तुरन्त ही एक पत्र लिखकर उसपर अपने हस्ताक्षर करके उसको दे दिया कि जाकर सिपाहियोंको देवे। ज्योंही उसने यह पत्र सिपाहियोंको दिया त्योंही उसका सब सामान उसको ज्यों का त्यों मिल गया। इस कामसे और जापानियोंकी

और बातोंसे उसको विश्वास था कि जापानी न्यायप्रिय हैं। जिस समय उसने यह बातें त्सारोंगवासे कहीं मुझे मालूम हुआ कि वह भी जापानियोंको अच्छा समझता है। जब त्सारोंगवाने देखा कि यह मनुष्य जापानियोंका हिताकांक्षी है जैसा कि वह भी था तो उसने मेरा भेद भी उसके सामने कह देनेमें कुछ हानि न समझी।

चोनजोने (क्योंकि यही उसका नाम था) मेरी ओर घूमकर कहा, तुम एक अद्भुत मनुष्य हो। परन्तु मैंने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया। उसने फिर कहा, मैंने पहले समझा था कि तुम मंगोलियन हो परन्तु मेरी जांच ठीक न उतरी। तुम चीनके भी नहीं मालूम होते। इसमें भी शक नहीं है कि तुम यूरोपियन भी नहीं हो। फिर तुम कौन हो? मैं कुछ कहना ही चाहता था कि त्सारोंगवा बोल उठा, यह जापानी है। यह लासामें पहला ही अवसर था कि मेरा यह भेद खुला। पर मैं उनके विपरीत कुछ भी न कह सकता था। अब मैं यह सोच रहा था कि देखूं इसके मुखसे क्या निकलता है। थोड़ी देरतक चुप रहनेके पीछे उसने कहा, अच्छा अच्छा, मैंने पहले ही समझा था कि यह जापानी है। परन्तु जब मैंने सोचा कि जापानीका लासामें घुस आना असम्भव है तब मैं कुछ न कह सका। अब मुझे विश्वास हो गया। मैंने पेकिंगमें भी बहुतसे जापानी देखे हैं।

चोनजो मेरी ओर मुख फेरकर बोला, मेरे लिये यह बड़ा अच्छा सम्वाद है। पहले मैंने सोचा था कि यदि मैं जापान

जाकर नई नई वस्तुयें लासाको लाऊं तो मुझे बड़ा लाभ हो परन्तु केवल चीनी भाषा बोल सकता हूं और जापानमें कोई चीनी भाषा नहीं समझता। जो व्यापारी उस देशकी भाषा नहीं बोल सकते खूब ठगे जाते हैं। जापानमें भी बेईमानोंकी कमी नहीं अतएव मैंने अपना विचार त्याग दिया था। परन्तु अब मुझे बहुत अच्छा जापानी मिल गया। मैंने सेराके डाकृरका नाम सुना था आज भेंट हो गई। क्या तुम मुझे जापान ले चलोगे?

मैंने कहा कि हां मैं जापान जाना चाहता हूं तुम्हे ले चलूंगा इत्यादि वहांकी बहुतसी बातें कहीं। उसने भी जापानवालोंकी बहुत प्रशंसा की परन्तु उसकी बातोंसे मैं यह नहीं समझ सका कि वह मेरी झूठी प्रशंसा अथवा खुशामद कर रहा है। मैंने कहा तुम और त्सारोंगवा दोही मनुष्य हैं जो मेरा जापानी होना जानते हैं परन्तु यदि तुमने किसीसे यह बात कही तो सम्भव है कि मुझको और तुम दोनोंको भी कष्ट उठाना पड़े इसलिये सतर्क रहना चाहिये।

चोनजोने कहा कि मैं कदापि किसीसे यह बात न कहूंगा और यदि कहूंगा भी तो ऐसे समयपर कि जब तुमको उससे कुछ लाभ होता हो। जब मैं कहूंगा तो समझ लेना कि तिब्बतमें तुम्हारा बड़ा भारी नाम होगा। इतनी बातोंके पीछे वार्तालाप समाप्त हुआ। रातको मैं त्सारोंगवाके घरसे चलकर मित्र अत्तारके यहां ठहरा।

सवेरेको तारीख १४ मईको चीनके मन्त्रीका सेक्रेटरी भीतर

आया और उसने कहा, तुम कहते हो कि तुम चीनमें फूचौसे आये हो मैं तुम्हारी बातपर अविश्वास नहीं करता। परन्तु मैं वहांके आदमियोंमें और तुममें बहुत भेद पाता हूं। क्या तुम्हारे पूर्वपुरुष कहीं बाहरसे आकर चीनमें रहे थे?

मैंने उत्तर दिया कि मुझको अपने पूर्वपुरुषोंका हाल नहीं मालूम। तुम मुझमें और चीनी लोगोंमें क्या भेद देखते हो?

उसने कहा, 'कि जापानी बड़ी प्रखरबुद्धिवाले होते हैं, चीनी ऐसे नहीं होते हैं। हां तुम्हारे जैसे कोई २ चीनी प्रखरबुद्धि होते हैं। चीनी मनुष्यमें एक विशेष प्रकारकी सुस्ती हुआ करती है जैसी कि तुम मुझमें देख सकते हो और वह तुममें नहीं है। यह ऐसी बात है जो मुखसे वर्णन नहीं हो सकती परन्तु इस बातको मैं निश्चित रूपसे कहता हूं कि तुममें वह बात है जो चीनी मनुष्यमें नहीं होती।

उसकी इन बातोंको सुनकर मैं समझा कि वह मुझको बड़े ध्यानसे देख रहा है। सम्भव है कि उसको किसी रीतिसे मालूम हो गया हो कि मैं जापानी हूं।

कुछ दिन पीछे अत्तारकी स्त्रीने भी एक नयी कहानी सुनाई। उसने कहा, 'देखिये हुजूर पागलसे बढ़कर भयङ्कर वस्तु संसारमें दूसरी नहीं है।

जब मैंने पूछा तो उसने कहा कि, "पाराका वह पागल लड़का एक कहानी कहता था। यद्यपि पागलकी बात विश्वसनीय नहीं हो सकती परन्तु फिर भी उसने जो बात कही है वह

बड़ी भयानक है। जब मैंने उससे पूछा तो उसने धीरे २ कहा कि इस नगरमें जापानका एक पुरोहित है। वह अपनेको पुरोहित कहता है परन्तु वह कोई बड़ा आदमी है। यह जापानी सरकार-की ओरसे आया है। मैं दार्जिलिङ्गमें उससे मिला था। वह अवश्यही बड़ा आदमी है। वह नहीं जो सेरामें डाकृर है। यह बात उसने मुझसे कही थी। क्या यह आश्चर्य्यकी बात नहीं है? तुम क्या समझते हो?"

मैंने उत्तर दिया कि पागलोंकी तो ऐसी ही बातें हुआ करती हैं। अत्तारकी स्त्रीने कहा, कुछ भी हो मेरे स्वामी और बहुतसे मनुष्योंने उसकी बातका विश्वास किया हैं।

उसी रातको मैं अर्थसचिवके घर आ गया। दूसरे दिन अपने विहार आया। जब सब लोग सो रहे थे तो मैंने उठकर दलाईलामाको एक चिट्ठी लिखनी आरम्भ की। मैंने स्वयं यह कार्य अपने भेद खुल जानेके दिन अपने बचावके निमित्त करना शुरू किया।

अस्सीवां परिच्छेद



भेद खुल गया।

पाठक पूछेंगे कि मैंने यह निवेदनपत्र दलाईलामाको क्यों लिखा? उस समय मैं यह नहीं कह सकता था कि मेरे भेद

खुलनेका फल क्या होगा। परन्तु जो बुरा फल होना हो यदि पहलेसे ही उसका कुछ प्रतिकार किया जावे तो होकर रहता। अतएव यह आवश्यक था कि मैं अपने यहां आनेका प्रयोजन स्पष्ट कर दूं कि मैं केवल बौद्ध धर्मका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये आया हूं और कोई विशेष कार्य नहीं है। इस पत्रके लिखनेमें मुझको तीन दिन लगे। मैंने लिखा कि, 'मेरा विचार यहां आनेका केवल यही है कि बौद्ध धर्मके ज्ञानकी वृद्धि करूं और संसारके मनुष्योंको आत्मिक दुःखसे बचाऊं। बौद्ध धर्म बहुतसे देशोंमें है परन्तु साक्षात् धर्मकी मूर्त्ति या तो जापानमें या तिब्बतमें ही दिखलाई देती है। अब समय आ गया है कि विशुद्ध धर्मका बीज संसारमें सब स्थानोंपर बोया जावे। क्योंकि अब संसारके जीव दैहिक आनन्दसे थक गये हैं और अब आत्मिक आनन्दकी खोजमें हैं। यह केवल विशुद्ध बौद्ध धर्मके सोतेसे ही मिल सकता है। इस कामको पूरा करना ही हमारा धर्म है। और इसीमें हमारी कीर्त्ति है। इसी विचारको हृदयमें धारण-कर मैं जापानके धर्मसे यहांके धर्मकी तुलना करनेके लिये आया हूं। बुद्ध भगवानकी कृपासे यहांका नया बौद्ध धर्म जापानके शींगन धर्मसे बिलकुल ही मिलता जुलता है। दोनोंके ही प्रवर्तक बोधिसत्व नागार्जुन हैं। अतएव दोनों ही देशोंको मिलकर शुद्ध बौद्ध धर्मको फैलना चाहिये। इसी प्रयोजनसे मैं इतने दूर देशमें नदी और पहाड़ पार करके भी आया हूं। मेरी श्रद्धालु आत्माने बुद्ध भगवानके हृदयको अनुकम्पित कर दिया, और मैं इस

दुनियाभरसे अलग सुरक्षित प्रदेशमें भी सत्यके स्रोतसे सत्य ज्ञान पान करनेके लिये प्रवेश पा सका। देवताओंने मेरी अभिलाषाको स्वीकार किया। यदि यह बात सत्य है तो फिर आप सत्यावतार मेरी रक्षा क्यों नहीं करेंगे जब कि देवगण और बुद्ध भगवानने मेरी रक्षा की है और बुद्धदेवके सत्यधर्मकी विजय-पताका संसारभरमें उड़ानेमें भी आप मेरी सहायता क्यों न करेंगे? इसीके साथ मैंने यह भी लिख दिया कि सीलोनके धर्म-पालने बुद्धदेवका स्मृतिचिह्न मुझे श्रीमानोंको भेंट करनेके निमित्त कहा है और उसकी स्वीकृति भी ले ली है। पत्र पूरा होते ही मैंने अच्छे कागज़पर उसकी नकल करनेमें बहुत शीघ्रता की। मैंने यह भी नहीं सोचा कि इसको दलाईलामाके पास भेज देनेसे इसका क्या फल होगा। पत्र मेरा भेद खोल देगा और मैं अवश्य ही प्राणदण्डका भागी होऊंगा।

तारीख २० मईको मैं लासासे अर्थसचिवके घर लौट आया। उस दिन अर्थसचिवके यहां लिंकापार्टी थी। वहां बहुतसे मेरे जान पहचानवाले मित्र भी थे और दिनभर मेरी उनसे बातचीत होती रही। इधर मैं आनन्दसागरमें डूब रहा था उधर लासाके दूसरे भागमें मेरे लिये कुछ और ही घटित हो रहा था।

इसी दिन काप्लेका चीफ चोनजोको दलाईलामाके पिताके घरसे बुलावा आया था। दलाईलामाके माता पिता मर चुके थे। उसके बड़े भाई पावसीसरवाने चोनजोको अपना दामाद बनानेकी इच्छा की थी। चीनके महाराजने उसको प्रिन्सकी

पदवी दी थी। यह प्रिन्स लासाके दक्षिणी भागमें रहता था। जिस समय यह दोनों मदिरा पी रहे थे चोनजोने यही अवसर मेरा भेद खोलनेका सबसे उत्तम समझा। पीछेसे त्सारोंगवाके द्वारा मुझको ज्ञात हुआ कि उन दोनोंमें निम्नलिखित बातें हुईं।

'क्या श्रीमानोंने सुना है कि यहां एक परदेशी है जो न चीनी है और न मंगोलियन है?'

दलाईलामाके भाईने कहा,—'बतलाओ कौन है?"

'वह जापानका एक सच्चा लामा है। जापानी लामा बिलकुल चीनी होसंग मालूम होता है। परन्तु उससे कहीं बढ़कर है। वह दिनभरमें केवल दो बार भोजन करता है और दोपहर पीछे कोई वस्तु मुखमें नहीं लेता है। न वह मदिरा पीता है और न मांस।'

'वह कहां रहता है?'

'यदि मैं उसका नाम बताऊंगा तो आप समझ जावेंगे कि कहां रहता है। उसका नाम सेराईआमची (सेराका वैद्य) है। वही प्रसिद्ध सेराका वैद्य जापानी है।'

थोड़ी देर सोचते रहनेके पीछे उसने कहा,—'मैंने सेराईआमचीका नाम सुना है। वह तो दलाईलामाके पास रहने योग्य है। वैद्यकमें ऐसा ज्ञान रखनेवाला कभी चीनी नहीं हो सकता। मैंने पहले समझा था कि वह यूरोपियन होगा परन्तु तुम्हारे कहनेसे मेरी शंका जाती रही। हां जापानी यूरोपियन्सके बराबर ही काम कर सकते हैं। परन्तु इससे मुझको बड़ा दुःख है।'

'आपको किस बातका दुःख है?'

'यदि मैं भूलता नहीं हूं तो जापान इङ्गलेंडका मित्र है। यह ध्यानमें आते ही मुझे शंका होती है। क्योंकि जापान बड़ा प्रबल देश है। वह चीनको हरा सकता है। फिर हमारा देश उसके आगे क्या वस्तु है। उसका हमारा धर्म भी एक है। इस कारणसे यही समझा जा सकता है कि वह जापानका गुप्तचर होगा। क्या वे लोग जो सेराईआमचीसे सम्बन्ध रखते हैं उसी दुःखके भागी नहीं होंगे जो कि शरत्चन्द्रसे संबद्ध व्यक्तियोंने भोगा। क्या सेरा विहारका द्वार फिर बन्द नहीं कर दिया जायेगा? यह मामला ऐसे ही नहीं छोड़ दिया जावेगा। इस सम्बन्धमें कुछ न कुछ अवश्य करना होगा।'

चोनजोने यह बात और ही आशयसे कही थी पर फल उल्टा निकला। उसने भयभीत होकर मेरे बचानेके लिये कहा, 'वह गुप्तचर नहीं है। वह लासामें रहता है जहां मांस आवश्यक भोजनोंमें समझा जाता है। वह सेरा विहारमें पढ़ता है जहां मांस मुफ्तमें ही मिलता है परन्तु वह उसको कभी नहीं छूता। वह केवल भुने हुये जौ खाता है। ऐसा मनुष्य अवश्य जापानका लामा है।'

दलाईलामाके भाईने इस युक्तिके विरोधमें कहा,—'तुम ऐसा समझते हो क्योंकि तुम्हारी बुद्धि कम है। संसारमें ऐसे २ पापी हैं जो साक्षात् बुद्ध भगवान मालूम होते हैं। सबसे बड़ा पापी वही है जिसमें बुद्ध भगवानसे कुछ भी भेद मालूम भी न हो। सन्त उपगुप्त शाक्य बुद्धके बाद ५वें महात्मा हुए थे। उन्होंने भग

वान बुद्धके दर्शन करनेका संकल्प किया था। उसने सुना कि छठे आस्मानके दैत्यराजने बुद्ध भगवानको देखा था, शायद वह अपनी मायासे बुद्ध भगवानका दर्शन करा दे। उपगुप्तकी प्रार्थना स्वीकृत हो गयी। धूर्त दैत्य स्वयं स्फटिक शिलापर आसन जमाकर बुद्धके रूपमें प्रगट हुआ। उसे देखकर उपगुप्ताचार्य दण्डवत् प्रणाम करने लगे। इसी भांति सेराईआमची गुप्तचर है, उसने हमें धोखा देनेके लिये लामाका वेष बनाया है। उसका कभी विश्वास न करना चाहिये। इस देशमें जहां कि ऐसी कड़ी रोक टोक और निषेध है वहां भी वह घुस आया है इससे ज्ञात होता है कि वह साधारण मनुष्य नहीं है। क्या वह स्वर्गसे आया है? अवश्य उसके पास कोई दैवी शक्ति है। अतएव उसको लापरवाहीसे न छोड़ देना चाहिये। फिर भी वह बड़ी कठिन समस्या है।' इन बातोंके सुननेसे चोनजोको बहुत दुःख हुआ उसके मुखपर हवाइयां उड़ने लगीं।

तारीख २० मईकी सन्ध्याको चोनजो त्सारोंगवाके मकानपर गया। उसने अपने मनमें प्रण कर लिया था कि त्सारोंगवासे इस विषयमें कुछ न कहूंगा। खानेका समय हो गया था अतएव उसने चोनजोको जैसी कि तिब्बतमें रीति है कुछ मदिरा पीनेके लिये मजबूर किया। वह दुःखित चित्तसे जल्दीसे मदिरा पीकर चुप बैठ गया।

यह देखकर त्सारोंगवाने कहा कि,—'मैं समझता हूं तुमको कोई चिन्ता लग रही है, कहो तो क्या मामला है?'

उसने उत्तर दिया 'नहीं, कोई बात नहीं है।' परन्तु इतनी देरमें मदिरा अपना प्रभाव जमा चुकी थी अतएव सब बातें ज्यों-की त्यों कह डालीं। जब कहानी पूरी हुई आधीरात हो चुकी थी। चोनजो उनके घरसे विदा हुआ परन्तु त्सारोंगवा और उसकी स्त्री दोनोंहीको चिन्ताके कारण नींद न आई। दूसरे दिन प्रातःकाल त्सारोंगवाने मेरे पास आदमी भेजा और साथ ही एक घोड़ा भी भेज दिया। मैं उस समय विहारमें नहीं था और अर्थसचिवके यहां भी नहीं था। मैं जब न मिला तो त्सारोंगवाकी घबराहट और भी बढ़ गई। अधिक घबराहटका एक और भी कारण था कि मेरे पास दार्जिलिंगका वह पत्र था जो कि त्सारोंगवाके हाथों ही आया था। यदि मैं पकड़ा जाता तो उस पत्र द्वारा त्सारोंगवा भी अवश्य पकड़ा जाता। उसने दिनभर मुझको लासामें खोजा परन्तु मेरा पता कहीं न लगा। शेषमें सन्ध्याको मैं उसके घर पहुंचा। मुझे देखकर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वह समझता था कि मैं बन्दीगृहमें डाल दिया गया होऊंगा। वह कांपता हुआ आंखोंमें आंसू भरे मेरे पास आया और बोला,—'हमारा बड़ा भाग्य है कि तुमको यहां देख रहे हैं। यह सब बुद्ध भगवानकी कृपा है।'

मैं समझ गया कि कोई अनहोनी बात हुई है। मैंने उन्हें धैर्य दिया और बैठ गया। उसने सब हाल कह सुनाया। जब सब हाल सुन चुका तो त्सारोंगवाने कहा—'अब क्या विचार है। कमसे कम उस पत्रको तो जला ही डालो परन्तु अब करोगे क्या?'

मैंने कहा, मैं तो जो करना था कर चुका। मैंने दलाई-लामाको प्रार्थनापत्र लिखा है। अब उसका चाहे जो फल निकले।

'क्या तुम्हें यह हाल मालूम था?'

'हां, मैं जानता था। मैं ऐसी बातें पहले जान लेता हूं।'

'यही तो कारण है कि मैं तुम्हें आदरकी दृष्टिसे देखता हूं। दलाईलामाके भाईने भी कहा है कि तुममें कोई दैवी शक्ति है। मैं समझता हूं कि उसने सत्य ही कहा है।'

'नहीं, मुझमें कोई दैवी शक्ति नहीं है। मैं केवल अनुमान कर चुका हूं कि ऐसा हो सकता है। अतएव मैंने उसका उचित प्रबन्ध कर लिया है।'

ट्सारोंगवाने कहा,—'नहीं ऐसा न कहो। तुमने अवश्य ही दलाईलामाके भाई और चोनजोकी बातचीत किसी और ही शक्ति द्वारा सुन ली है। नहीं तो तुम ऐसे अवसरपर मेरे यहां कैसे आ सकते थे? परन्तु फिर भी यहां तुम जल्दी ही क्यों आये? रातभर हम दोनोंको नींद नहीं आई। क्या तुम सत्य ही वह प्रार्थनापत्र दलाईलामाको दोगे? इसके करनेमें तुमने यह नहीं सोचा है कि हमारा क्या होगा? इसमें कोई सन्देह नहीं है कि तुम बड़े पूज्य लामा हो और दलाईलामाका भाई बड़ा ही नीच प्रकृतिका मनुष्य है। न जाने वह पोपसे क्या कहेगा और उसका क्या फल निकले? परन्तु कुछ न कुछ आपत्ति हमारे ऊपर भी आवेगी, इसमें सन्देह नहीं है।'

मैंने कहा कि जबतक समाधि न लगाऊं तबतक कुछ नहीं कह सकता। परन्तु मैं समझता हूं कि समाधिमें चार बातें स्पष्ट हो जावेंगी।

(१) यदि इस प्रार्थनापत्रको देनेसे तुम्हें, सेरा विहारको और अर्थसचिवको कोई हानि न पहुंचे तो वह दलाईलामाको दूंगा। चाहे मुझे भले ही दुःख उठाना पड़े। क्योंकि मैं ही पहला जापानी हूं जो यहां आया और यह बात बड़े दुःखकी होगी कि मैं यहांसे चला जाऊं और यहांके लोग मुझे कुछ भी न जानें कि मैं कौन था और क्यों यहां आया था।

(२) यदि पत्रका देना तुम्हें कुछ हानि पहुंचावे तो भी मैं उसे न दूँगा। चाहे मुझे उसमें कुछ भी भय नहीं।

(३) यदि मैं पोपको इत्तिला दिये बिना ही भारतवर्षको जा सकूं और किसीको कुछ हानि न पहुँचे तो मैं यहांसे सीधे भारतवर्षको चला जाऊंगा।

(४) यदि मेरा प्रार्थनापत्र यहांके लोगोंको मेरे चले जाने-पर हानि पहुंचावेगा तो मैं नहीं जाऊंगा और जो विपद उन लोगोंके ऊपर पड़ेगी उसमें मैं भी भाग लूंगा क्योंकि मैं नहीं चाहता हूं कि मैं अकेला ही बच जाऊं। यदि उन लोगोंके ऊपर कोई विपद न पड़े तो मैं जा सकता हूं। परन्तु मैं अकेला इन बातोंका निर्णय नहीं कर सकता अतएव मैं अपने गुरु गेंदुन टीरिनपोचेके पास जाता हूं। मैं उनसे यह नहीं कहूंगा कि मैं जापानी हूं और न मैं यह कहूंगा कि मैं भारतवर्षको जाता

हूं। मैं यही कहूंगा कि मैं तीर्थपर्यटनको जाता हूं। क्या इस तीर्थयात्रासे उन लोगोंको कुछ लाभ होगा जो कि दुःखमें हैं? यदि उनकी ऐसी ही राय होगी तो मैं मान लूंगा। यदि नहीं होगी तो लामा त्सोमोलिङ्गके पास जाऊंगा। यदि दोनोंकी एक ही राय होगी तो वैसा ही करूंगा।

दोनों दम्पतिने मुझे रोककर कहा कि और किसीसे मत पूछो तुम्हारी समझमें आवे वैसा ही करो।

मैंने कहा,—'नहीं, यह अकेले मेरे समझनेकी बात नहीं है। क्योंकि यह बहुत बड़ा मामला है और इसमें और लोगोंका भी सम्बन्ध है।

मेरी इस बातपर वे सहमत हो गये और मैं वहांसे बिदा हुआ। उस रातभर मैं अर्थसचिवके मकानमें अकेला ध्यानस्थ बैठा रहा। बहुत देर पीछे मुझे यह उत्तर मिला,—'चाहे मैं प्रार्थनापत्र भेंट करूं या न करूं यदि यहां रहूंगा तो यहांवालों-को अधिक हानि पहुंचेगी यदि चला जाऊंगा तो कम हानि होगी।' यह तो निश्चय हो गया कि मुझे चला जाना चाहिये परन्तु यह निश्चय नहीं हुआ कि प्रार्थनापत्र दलाईलामाको भेंट करूं या नहीं।

दूसरे दिन सवेरे तारीख २७ मईको मैं गेटुन टीरिनपोचेके यहां गया और तीर्थपर्यटनके विषयमें पूछा। उन्होंने मुझसे हंसकर कहा कि,—'यह सत्य है कि तुम्हारे जानेसे रोगी अच्छे होंगे परन्तु क्या तुम दैहिक रोगके विषयमें कह रहे हो? यदि

यह कह रहे हो तो क्या तुम्हारा यह आशय है कि तुम्हारे चले जानेपर लासाके वैद्योंको आराम मिलेगा ?

यद्यपि गुरु महाशयने हंसी २ मेंही अपने विचार प्रगट कर दिये परन्तु वह समझ गये कि मैं यहाँसे सदैवके लिये जा रहा हूं। यहां और भी बहुतसे लामा हैं परन्तु मैंने जितने देखे उनमें कोई भी इस दर्जेका योग्य मनुष्य नहीं देखा। इस मान्य गुरुके ये अन्तिम दर्शन थे।

इकासीवां परिच्छेद



दयालु मित्रकी अद्भुत भेंट

उस दिन मैं अर्थसचिवके घर अपना भेद प्रगट कर देनेके निमित्त गया। परन्तु उस दिन तारीख २२ मईको पोप अपने ग्राम भवनोंसे लासामें आनेवाले थे इससे अर्थसचिव स्वागतमें गये हुये थे और मैं भी अपना काम छोड़ वहीं चला गया था। उस समय सब मन्त्रिवर्ग और बड़े २ अफसर अपनी २ बढ़िया पोशाकें पहनकर आये थे। दैवयोगसे पानी बड़े जोरसे गिरने लगा। केवल नौकर और गाड़ीके कोचवानको ही पानीसे बचनेके लिये ऊपरसे ओढ़नेकी आज्ञा थी। अच्छे २ कपड़े पहने हुये सभ्य पुरुषोंको पानीमें भीगते देखकर बड़ी दया आती थी। जब लामा अपने महलोंमें पहुंच गये तो वर्षा

बन्द हो गयी और आकाश स्वच्छ हो गया। जब घरपर आये तो मैंने अर्थसचिवसे कहा कि मुझे एकान्तमें एक बात कहनी है। क्योंकि जब मैं लासासे जा रहा हूं तो बिना भेद प्रगट किये किस भांति जा सकता था। इस दम्पतिने वर्षभरमें जैसा कुछ मेरा उपकार किया था वह वर्णानातीत था।

सन्ध्याको जब यह मेरे पास आये उस समय उनके अतिरिक्त और कोई नहीं था। मैंने कहा कि मैं चीनी नहीं जापानी हूं। मैंने देखा कि उन्होंने मेरा विश्वास नहीं किया है, मैंने उनको अपना पासपोर्ट भी दिखलाया जो मैं अपने साथ लाया था। अर्थसचिव चीनी अक्षरोंको बहुत थोड़ा पहचानता था। परन्तु फिर भी कुछ कुछ पढ़ लेता था। पासपोर्ट देखकर उसको विश्वास हो गया कि मैं ठीक कहता हूं। उसने कहा,—'पहले तो मैं तुम्हारे कहनेके अनुसार तुमको चीनी ही समझता था परन्तु पीछेसे मुझे मालूम हुआ कि चीनी बौद्ध धर्मके ऐसे भक्त कभी नहीं होते हैं। मैंने देखा है कि चीनी पुरोहित बौद्ध धर्मको बिलकुल ही नहीं जानते हैं। मैंने यह भी समझा था कि सम्भव है कि फूचौके लोग प्रखर बुद्धिवाले होते होंगे जिनमेंसे एक तुम भी हो। फिर भी मुझको शङ्का बनी ही रही, अब तुम्हारी बातोंसे मुझको विश्वास हुआ। उसने यह भी कहा कि,—'मैंने सुना है कि जापानी यूरोपियन जातिके हैं। क्या यह बात सत्य है?'

मैंने उसको समझाया कि अङ्गरेजोंसे जापानियोंका कोई

सम्बन्ध नहीं है बरं वह तिब्बतके ही हैं। कुछ २ मंगोलियनोंसे मिलते हैं। जापानियोंका धर्म भी वही है जो कि तिब्बत-वालोंका है।

यह सुनकर उसने कहा,—'क्या तुम्हारा सब भेद इतना ही था या कुछ और भी कहा चाहते हो?'

मैंने कहा,—'एक और भी बात है कि मैं पोपको भी बतला देना चाहता हूं कि मैं जापानी हूं।'

यह सुनकर वह मेरे कुछ और पास आ गया और बोला कि, 'ऐसा तुम क्यों करते हो? क्या इसकी कोई आवश्यकता है?'

इसके उत्तरमें नौत्सारोंगवा और उसके मित्र द्वारा भेद खुलनेका सब हाल कह सुनाया। केवल यही नहीं बतलाया कि मैं भारतवर्ष जाना चाहता हूं।

कुछ देर सोचकर उसने कहा, 'अब तुम्हारा क्या विचार है?'

मैंने कहा—'जब मैं इस देशमें इतना कष्ट उठाकर आया हूं तो मैं दलाईलामाको यह बतला देना चाहता हूं कि मैं जापानी हूं। इसी प्रयोजनसे मैंने यह पत्र भी लिख रखा है।'

यह कहकर मैंने जो पत्र पोपके लिये लिखा था वह भी दिखला दिया और कहा कि—'इसको पोपके हाथमें दे देना कोई कठिन बात नहीं है, कठिनता केवल इतनी ही है कि आप लोग जिन्होंने सदैव मेरे ऊपर अपनी कृपा रखी है, किसी विपद्-में न पड़ जायं। इसलिये यदि आप रस्सीसे मेरे हाथ बांध-

कर पोपके सामने ले जावें तो मैं तो अपनी सब बातें कह दूंगा और इस भांति आप भी विपद्से बच जायंगे।

उसने उत्तर दिया,—'मित्र इससे काम नहीं चलेगा, तुम अवश्य ही बन्दीगृह भेज दिये जाओगे। वहां ठण्ड और भूखसे मर जाओगे। यदि ऐसे नहीं मरोगे तो मार डाले जाओगे। परदेशीको यहां फांसी नहीं दी जाती। ऐसी अवस्थामें गुप्तरूपसे विष दे दिया जावेगा। जल्दी करनेसे कुछ लाभ न होगा। निरर्थक मरनेसे क्या लाभ है?'

मुझको बन्दीगृहका यह हाल सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा—'दूसरोंके ऊपर आफत डालकर मैं बचना नहीं चाहता। जो कुछ हो, दूसरेको बिना हानि पहुंचाये मेरा मरना भी अच्छा है। जिसने सदैव मेरे ऊपर मां बापके समान कृपा रखी है उसको मेरे कारण दुःख उठाना पड़े, यह बात मैं कदापि न चाहूंगा। उसकी स्त्री मेरी बातोंको सुन फूट २ कर रोने लगी।'

अर्थसचिव कहने लगे—'यह नहीं हो सकता कि हम जो अभी संसारसे जाना ही चाहते हैं अपने बचानेके लिये ऐसे भले पुरुषको मौतके हाथ दे दें। मुझे बुद्धपर बड़ी श्रद्धा है तो भी अपने बचानेके लिये ऐसा काम कभी नहीं कर सकता। मैं समझता हूं कि तुम्हें विदेशका गुप्तचर समझकर या जातीय धर्मका चोर समझकर पकड़ लिया जाय, मेरा भी इसमें प्राण जायगा, मैं भी एक विद्वान पुरुषको जो यहां केवल बौद्ध धर्मके ज्ञानोपार्जनके लिये आया हो सरकारके हाथों सौंपकर विपत्तिसे बच

नहीं सकता। वर्त्तमानमें तिब्बतमें अपना रहस्य खोलनेका अभी अवसर नहीं आया। अभी अपने घर लौट जाओ और अवसरकी प्रतीक्षा करो। मैं गेंटुनटीरिनपोचेका भाई और शिष्य हूं। मैंने उससे महा उपकारका पाठ सीखा है। मैं आप विपत्तिसे बचनेके लिये तुम्हें कभी विपत्तिमें न डालूंगा। यदि तुम्हारे जानेके बाद मुझपर विपत्ति आयी तो मैं उसे पूर्वजन्मका फल मानूंगा और अपने जीवनसे मुक्त हो जाऊंगा।

यह कहकर उसने अपनी स्त्रीसे कहा—'क्या तुम नहीं समझती हो, मेरा कहना ठीक नहीं है? उसने उत्तर दिया कि तुम बिलकुल सत्य कह रहे हो।' यह कहकर वह मेरे पास आई और बोली—'तुम विपत्तिमें हो तुम इसी समय इस देशसे शीघ्र निकल जाओ और हमारी कुछ भी चिन्ता मत करो, हम अपना बन्दोबस्त कर लेंगे। यहांसे निकल भागनेका यह अवसर सबसे अच्छा है। इस समय पोप यहीं आये हुये हैं। इस महीनेमें लोग दोचित्त रहेंगे और तुमको जाते हुये कोई न पकड़ सकेगा। परन्तु देर करनेसे तुम नहीं जा सकते क्योंकि मैंने सुना है कि तुमको दलाईलामा अपना वैद्य बनाना चाहते हैं और उनकी इच्छा है कि तुमको बहुत दिनोंतक यहां रखें। अब तुम देर मत करो और मेरी इस बातको मानो'।

मैंने देखा कि वह यह सब आंखों आंसू भरे कह रही थी।

बयासीवां परिच्छेद



जानेकी तय्यारी

उनकी प्रेम भरी बातें सुनकर मेरी आंखोंमें भी आंसू आ गये। यद्यपि उनका उपदेश सर्वोचित था परन्तु मैं उसके न माननेके लिये हठ करता ही रहा। परन्तु उन्होंने एक न मानी।

शेषमें पुरोहितानीने कहा कि यहां हठ करनेसे कुछ लाभ नहीं है। टीरिनपोचेसे सलाह ले लो यदि वह इस प्रार्थनापत्रका दे देना ठीक समझें तो दे देना। परंतु जब मैंने कहा कि मैं उनसे पूछ चुका हूं तो वह दोनों हंसे और कहा, 'जब यह बात निर्णय हो चुकी है तो अब तर्क वितर्क करनेकी आवश्यकता नहीं है। रस्सीमें बांधकर ले जानेकी बात भी तुमने हमारा लाभ विचार करके कही होगी। परन्तु नहीं अब तुम्हें शीघ्र ही तिब्बतसे चले जाना चाहिये। यदि टीरिनपोचेकी अनुमति है तो बुद्ध भगवान भी ऐसा ही चाहते हैं। इसके न करनेसे हानिकी सम्भावना है। यदि कोई तुम्हारा पीछा करेगा तो उससे हम तुम्हारी रक्षाका प्रयत्न कर सकते हैं।'

उन दोनोंकी ये बातें सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ और आंखोंमें आंसू भरे हुए अपने कमरेमें आकर अपना सामान बांधने लगा। मेरे पास जो पुस्तकें थीं उनको मैं अपने मित्र भत्तारके पास ले गया और कहा कि मैं एक विशेष कामके लिये

कलकत्ते जा रहा हूं। वहां मुझको कुछ वस्तुएं मोल लेनी हैं। जिन पुस्तकोंको मैं मोल लेना चाहता हूं, यदि घरसे रुपया मिल गया तो मैं शीघ्रही लौट आऊंगा और पुस्तकें मोल ले लूंगा। यदि रुपये मिलनेमें देर हुई तो आनेमें भी देर होगी। परन्तु सबसे बड़ी कठिनता मेरे सामानकी है। मैं चाहता हूं कि जो पुस्तक मेरे पास हैं वह घरवालोंको दिखला आऊं। क्या तुम ऐसा कोई बन्दोबस्त घोड़े इत्यादिका कर सकते हो ?

इस अत्तारको मेरे ऊपर बड़ा विश्वास था। मैं समझता हूं कि वह यह भी समझता था कि मैं जापानी हूं क्योंकि एक बार वह मेरे घरमें आया था. उस समय उसने मेरी पुस्तकोंमें कई एक जापानी पुस्तकें देखी थीं। उस दिनसे कमसे कम वह इतना तो अवश्यही समझने लगा था कि मैं चीनी नहीं हूं। उसने कहा कि चीनका एक और भी व्यापारी कलकत्ते जा रहा है। वह मेरा परम मित्र है। तुम उसके साथ चले जाओ। वह तीन चार दिनमें कलकत्ते जावेगा। उसके पास कई घोड़े खाली हैं अतएव वह तुम्हारा सामान कम कियायेपर ही ले जावेगा।

हम लोग यह बातें कर ही रहे थे कि वहां एक मनुष्य आता दिखाई दिया। अत्तार उसको देखते ही उसके पास गया और बोला—हम लोग अभी तुम्हारी ही बातें कर रहे थे। क्या तुम ऐसा नहीं कर सकते हो कि इस मेरे मित्रका दो घोड़ोंका बोझ दार्जिलिङ्गतक लिये जाओ ?

जब मैंने देखा तो ज्ञात हुआ कि मैं इसको पहचानता हूं। मैंने कई बार इससे कस्तूरी मोल ली थी और कई बार दवाइयां बना २ कर उसे बेचनेके लिये दी हैं। वह जानता था कि देन लेनके मामलेमें मैं बहुत सच्चा हूं और वह मेरी विनयको मान भी लेता परन्तु उसने कहा कि मेरे पास कोई खाली घोड़े नहीं हैं अतएव मैं तुम्हारा सामान नहीं ले जा सकता। हां एक और आदमी जाता है उससे मैं कह दूंगा वह तुम्हारा सामान दार्जिलिङ्ग पहुंचा देगा। परन्तु उसको किराया कुछ अधिक देना पड़ेगा। मैंने कहा कि इसकी कोई चिन्ता नहीं।

वहांसे मैं सेरा विहार पहुंचा और रातभर अपना सामान बांधकर तय्यार करके दूसरे दिन लासामें अत्तारके यहां भेज दिया। इस समय भाग्यवश सेरामें बहुत थोड़े पुरोहित थे। इससे मेरी तय्यारीकी ओर किसीने ध्यान नहीं दिया। मेरे पास एक लड़का नौकर था। जिस समय मैं बाहर चला जाता था तो उसको एक पुरोहितके पास पढ़नेको भेज दिया करता था। जब मैं सेरामें आता था तो वह मेरा सब काम किया करता था। और लोगोंकी दृष्टिसे तो मैं बच सकता था परन्तु इससे कैसे छुप सकता था। पहले उसको नौकरीसे अलग कर दूं तब ठीक हो अतएव मैंने उससे और कई एक औरोंसे कहा कि मैं ल्सारी तीर्थयात्राके लिये जा रहा हूं। वहाँ अर्थ-सचिव मेरे मित्रके भाईने मुझे बुलाया है। मैंने उससे कहा कि मुझको वहां चार महीने लगेंगे अतएव मैंने उसे चार

महीनेका भोजन और पढ़नेकी फीस दे दी। परंतु फिर मैंने सोचा कि कहीं इतने रुपयेको वह खराब न कर दे अतएव वह सब रुपये लेकर मैंने उसके गुरुके हवाले कर दिये।

मेरे जानेमें अभी चार दिन शेष थे अतएव जो पुस्तकें मुझको मोल मिल सकीं वह भी ले लीं। अत्तारने कृपा करके मुझे कई सन्दूक सामान रखनेके लिये बनवा दिये। उनके अतिरिक्त पुस्तकोंके लपेटनेके लिये ३।४ याकके हाल होके उतरे हुए चमड़े भी मंगा दिये। तिब्बतमें चमड़ा उतरते ही काममें ले लिया जाता हैं जिसमें रक्त लगा रहता है। सूखनेपर वह बहुत मजबूत हो जाता है।

तारीख २७ मईको जब मैं अपनी सब तय्यारी कर चुका तो अर्थसचिवसे मिलने गया क्योंकि २८ तारीखको मेरे जानेकी ठहर गई थी। अर्थसचिवने राहके लिये मुझे बहुतसे उपदेश दिये और सौ रुपये मार्ग व्ययके लिये दिये। जो जो उपकार उन्होंने मेरे साथ किये थे उनके देखते तो मुझको ही कुछ भेंट करना चाहिये था। वहाँसे बिदा होकर मैं अत्तारके यहां आया।

जब मैं अत्तारके यहां पहुंचा तो मालूम हुआ कि वह व्यापारी जो मेरे साथ जानेवाला था अब नहीं जावेगा। कारण कि जो व्यापारी मेरे साथ जानेवाला था वह चीनी अम्बानका बड़ा मित्र था। चीनी अम्बानने उससे कह दिया कि जिसको तुम साथ लिये जा रहे हो वह चीनी नहीं वरं जापानी है। और

यद्यपि उसको यह नहीं मालूम है कि मैं तिब्बतके भीतर कैसे आ गया परन्तु बहुत सम्भव है कि वह ब्रिटिश सरकारका गुप्तचर हो क्योंकि आजकल कोई भी धर्माचारी ऐसा नहीं है कि इतने क्लेश केवल धर्मके लिये उठावे। अतएव यदि यह गुप्तचर हुआ तो तुम्हारा शिर काटा जावेगा। इस बातके सुननेसे वह व्यापारी मेरा सामान ले जानेको राज़ी न हुआ।

बादमें कुछ चीनी कुली जा रहे थे। अत्तारने उनमेंसे एकके हवाले मेरा सामान कर दिया और अत्तारकी स्त्रीने मेरे निजी सामानके लिये एक और कुली कर दिया।

तिरासीवां परिच्छेद

—०*०—

रोते हुए बिदाई

लासा नगरके मनुष्य इस समय त्यौहारोंमें लवलीन हो रहे थे। सरकारी पुलीसके सिपाही भी त्यौहारोंके बन्दोबस्तमें रहा करते थे। परन्तु फिर भी मुझे होशियारीसे जाना आवश्यक था। क्योंकि सेराके बहुतसे पुरोहित लासामें आ गये थे। अतएव मैंने एक लबादा जो कि अर्थसचिवसे कुछ दिन पहले मांग लिया था पहन लिया।

बिदा होनेके दिन ग्यारह बजे मेरे मित्र अत्तार और उसकी स्त्रीने मेरे लिये भोजन बना दिया। उनके बच्चे जिनसे मेरा बड़ा

प्रेम हो गया था किसी भांति घरसे जाने देनेको राजी न थे। बच्चोंके प्रेमका प्रभाव मुझपर पहले कभी ऐसा न हुआ था।

उस घरके कई लोग थोड़ी दूरतक मुझको पहुंचानेको जाना चाहते थे परन्तु इस भयसे कि इकट्ठा देखकर कोई सन्देह न करे हमलोग एक एक करके घरसे निकले। मैं अपने कुलीपर सामान रखे जिस समय बड़े मन्दिरके सामनेसे निकला तो एक पुलीसके सिपाहीने मेरी ओर देखा। उसके मेरी ओर देखते ही मैंने समझा कि उसने मेरे ऊपर सन्देह किया है। परन्तु बात यह थी कि नगरमें यह बात चारों ओर फैल रही थी कि मैं पोपका वैद्य होनेवाला हूं। इस समय पुलीसके सिपाहीने मुझे उच्चपदाधिकारियोंका लबादा पहने देखा तो उसने समझा होगा कि मैं उस पदपर नियुक्त हो गया हूं। जब मैं उसके पास पहुंचा तो उसने सम्मानसूचक प्रणाम किया और मुझे बधाई दी। बधाईका अर्थ यह था कि मैं उसे कुछ रुपया इनाम दूं। अतएव मैंने उसके प्रणामका उत्तर देकर एक टंका जेबसे निकालकर दे दिया और आगे बढ़ा। मन्दिरके सामने और घरसे निकलते ही बधाई पाकर मैंने अपने लिये शुभ शकुन समझा।

यहांकी पुलिसके सिपाहियोंको तनख्वाह नहीं मिला करती वरं प्रजामें धनी पुरुषोंसे ही भिक्षाकी भांति कुछ पाते हैं। नियमित समयपर वे लोग तीन तीन इकट्ठे होकर प्रजाके मकानोंके द्वारपर खड़े होकर कहते हैं—'हम धनी पुरुषोंसे भिक्षा

मांगने आये हैं। आप इतने धनी हैं कि आप हमारे कष्टोंको दूर कर सकते हैं। आप गरीबोंके मालिक और निर्धनोंके मित्र हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप ३० मोहरें उन गरीब घरानोंको दें जो गरीब झोंपड़ियोंमें रहते हैं। आप लोगोंकी दी हुई आजकी भिक्षा हम अपने घरवालियोंको देंगे। वे देखकर बड़ी प्रसन्न होंगी। आज हम अपने टूटे फूटे प्याले सुगन्धित मद्यसे भरकर रखेंगे वे हमें कल्याणकारी होंगे'।

इन शब्दोंको वह द्वारपर खड़े हुये बारम्बार कहते रहते हैं जबतक कि भीतरसे कोई नहीं निकलता है। भीतरसे घरका कोई मनुष्य चांदीके कुछ सिक्के और भुना हुआ आटा एक टीनके बर्तनमें रखकर कातासे ढांककर लाता है। इस रकमकी कोई हद्द बंधी हुई नहीं है परन्तु एक धनी पुरुषसे जितनी उन्हें आशा होती है उतना यदि नहीं मिलता तो वे सिपाही कहते हैं कि हमने इतनेकी आशाकी थी। इसी भांति मन्दिरोंसे भी कुछ भेंट मिलती है।

इस भांति जितना रुपया आता है एक अफ़सरके पास जमा होता है और मासिक वेतनके रूपमें सब सिपाहियोंको दिया जाता है। लासाको पुलीस इससे भी अधिक पाती है। अर्थात् जब कोई यात्री बाहरसे लासामें आता है तो उससे यह दान मांगते हैं। यदि उसने कमसे कम एक टंका दे दिया तो ठीक है नहीं तो पुलीस उनके पीछे बदमाशोंको लगा देती है और जिस समय वे लोग यात्रीको लूटते हैं तो बचाना तो दूर

रहा वे उंगलीतक नहीं हिलाते। मैंने भी इस भांति कई बार टंका दिया था परन्तु इस समय मैं लबादा पहने पुरोहित था। वे पुरोहितोंसे नहीं मांग सकते हैं अतएव और कोई सूरत न देखकर उसने बधाई दी थी।

यदि पुलीसमैन बाहर कहीं चोरको पकड़नेको जावे तो मार्गव्ययके लिये कुछ भी साथ नहीं ले जावेगा। राहमें किसी घरपर जाकर खानेको मांगेगा और जो कुछ मिलेगा खा लेगा। जब वह ऐसे स्थानपर जाता है जहां कुछ मिलनेकी आशा नहीं तो किसी घरसे वह खानेको भी मांग लेगा। कोचाकया पुलिस सरकारसे वेतन पाती है भिक्षा नहीं लेती है।

सिपाहीसे छुटकारा पाकर मैं मन्दिरके भीतर गया वहां कई मित्र मुझसे मिलने आये हुए थे। वहां मुझे और कुछ विशेष काम न था केवल लबादा उतारकर अपनी पोशाक पहननी थी। मैंने अपने कपड़े पहन लिये और लबादा अर्थसचिवको लौटाल देनेके लिये दे दिया। मेरे मित्रोंने चलते समय मुझसे थोड़ीसी मदिरा पीनेका हठ किया परन्तु मैंने न पी। वे लोग मुझको भारतवर्ष जाते देखकर बड़े दुःखित हो रहे थे। मुझको यद्यपि लासा छोड़नेका दुःख न था तथापि उन मित्रोंके दुःखित चेहरे देखकर अवश्य ही दुःख होता था। वहांसे चलकर मैं रातभर शिंगजोंकामें ठहरा।

तारीख ३० मईको मैंने वहांसे घोड़े किराये किये। मेरा कुली टेनवा बड़ा झूठ बोलता था। बहुधा तिब्बतवाले छोटीसी

बातको बहुत बढ़ा देते हैं, यह भी वैसा किया करता था। मैंने इसको बहुत समझा दिया परन्तु फिर भी इसने अपनी आदत न छोड़ी। इसने शिंगजोंकाके सरायवालेसे कह दिया कि मैं एक विशेष लामाका अवतार हूं। सरायवालेने यह सुनकर मुझे एक अच्छा कमरा दिया और सब तरहसे आराम दिया। यद्यपि मुझे उसके इस मिथ्या भाषणसे आराम मिला तथापि मुझे विपत्तिमें फंस जानेका भय था। उसकी इस दुष्टताके लिये मैंने समझाया जिसके ऊपर उसने यह उत्तर दिया कि,—'ऐसा करनेसे आपका बहुत मान होगा और आप रुपया भी उपार्जन कर सकते हैं। इस भांति जानेसे कुछ धन नहीं मिल सकता।'

मैंने क्रोधित होकर कहा,—'परन्तु खबरदार! मैं यहां धनोपार्जनके लिये नहीं आया हूं। इस भांति धोखा देकर रुपया कमाना बड़ा पाप है।'

उसने उत्तर दिया,—'परन्तु प्रत्येक मनुष्य धनोपार्जनकी चेष्टा करता है। आगेसे मैं अपनेको सम्हाले रहूंगा।'

दूसरे दिन मैं नामनगरमें पहुंचा। प्रायः बीस वर्ष हुये जब मेरे गुरु शरत्चन्द्र दास यहां आये थे इस गांवमें तीस घर थे परन्तु अब वहां केवल एक ही घर था। कारण कि चू नदी इस गांवको बहा ले गई थी। अब वहां एक मकान केवल यात्रियोंके आरामके लिये रहने दिया था और बस्ती वहांसे हट चुकी थी।

नामसे चलकर मैं जांगतो पहुंचा। यहां सेराका एक पुरोहित रहता था। उसने मुझको चाय पिलायी। चाय पीते समय

उसने पूछा कि कहां जा रहे हो ? मैंने उत्तर दिया कि मैं भारत-वर्ष जा रहा हूं। यह सुनकर लामाको बड़ी प्रसन्नता हुई और मुझे सहायता देनेके लिये तय्यार हो गया। सवेरे उसने अपना घोड़ा मुझे दे दिया जिससे मैं शीघ्र ही धकसम पहुंच गया। वहां कई नावें थीं मैं नदी पार करके पाशे पहुंचा। वहां घोड़ा किराया करके गेनपाला पर्वतपर चढ़ा। मार्गमें एक चीनी मिला जो ल्हासा एक दिन पहले चला था। मैं पर्वतके शिखरपर पहुंच गया। वहांसे ल्हासाके सभी दृश्य दीखते थे। वहांसे ल्हासा पक्षीकी उड़ानसे ३५ मील होगा। गेनपालासे उतरते हुए हम तामालंग स्थानपर होकर पाल्ते पहुंचे। तामालंगमें घोड़ा बदलने और भोजनादि सामग्री प्राप्त करनेके लिये उचित स्थान है। वहांसे पाल्ते पहुंचे।

पाल्ते नगर बड़ा सुन्दर है और या मटो नदीके ऊपर बसा हुआ है। मुझे मालूम हुआ कि मेरे कुली टेनवाने यहां भी नगरमें कुछ बात उड़ा दी क्योंकि मेरे वहां पहुंचते ही वहांका मुखिया मेरे पास एक रोगीको लाया। पहले तो मैंने चिकित्सा करनेको इन्कार किया परन्तु जैसे २ मैं इन्कार करता था वैसे ही वैसे मुखिया हठ पकड़ता जाता था। नगरभरके लोग मुझे सेराका वैद्य कहकर पुकारते थे। सेराका वैद्य क्या मानो साक्षात् धन्वन्तरि उतर आये थे।

६ जूनको सवेरे दो बजे मैं वहांसे चल दिया और आठ बजे यासेमें पहुंच गया। वहां न ठहरकर मैं और आगे बढ़ा

और चलते चलते भूटानके सरहद्दी पहाड़के पास जा पहुंचा। यहीं एक नदीके किनारे ठहर गया।

हमलोग प्रायः आधी रातमें सोये थे, सवेरे मैं उठा और नौकरको जगाया। परन्तु उसने उठनेसे इन्कार किया और कहा, कि अभी रात है। मैं इसलिये शीघ्रता कर रहा था कि यदि कोई पीछा करनेवाले आवें तो उनसे पहले ही निकल चलें। कुछ अंधेरा था। मेरा नौकर भूतों प्रेतोंसे बहुत ही डर रहा था।

फिर भी उसको साहस दिलाता हुआ मैं निरन्तर पहाड़पर चढ़ता चला जाता था। दिन निकलते२ मैं एक जारा गांवमें पहुंच गया। यहां मैंने भोजन किया और घोड़े किराये किये। यहां डाकके घोड़े नहीं मिलते। बोझा लादनेके लिये भी कभी २ कठिनतासे मिलते हैं।

वहांसे चलकर दूसरे दिन हम ज्यांगत्जे पहुंचे। यहां डाकखाना है। यहां एक बौद्ध मन्दिर भी है जिसमें १'५०० पुरोहित रहते हैं। यहांपर एक अफसर अर्थविभागका भी तिब्बतकी ओरसे रहता है। इसका विवाह उसी ननकी भतीजीसे हुआ था जिससे मेरी भेंट अर्थसचिवके यहां हुई थी। उसने मुझे बड़े आदरसे ठहराया और वहां १०-१५ दिन ठहरनेका आग्रह किया परन्तु मैं सहमत नहीं हुआ। फिर भी मन्दिरके दर्शन करने और पहाड़पर चढ़ाई करनेकी तय्यारीमें वहां दो दिन लग ही गये।

यह मन्दिर बहुत बड़ा है। सेरा विहारसे प्रायः आधा है।

ग्यांलेमें व्यापार बहुत अधिक है। नित्य सवेरे बाजार लग जाया करता है। तरकारी, मांस, फल, फूल, दूध, मक्खन, रुई इत्यादि यहां खूब बिकती है। ऊन और याकके चमड़े भी यहांसे भारतवर्षको जाते हैं।

१ जून सन् १९०२ को मैं पांच बजे सवेरे वहांसे चल दिया। यहां मेरे मेज़बानकी कृपासे पांच दिनके लिये एक घोड़ा भी किरायेपर मिल गया। मार्गमें नेरिंगका संघाराम था जहां सुनते हैं कि एक जीवित जागृत देवी ७ वर्ष आयुकी रहती थी। मैंने उसके दर्शन किये। यहांसे पचीस मील चलनेपर मुझे मेरे कुली टेनवाकी जन्मभूमि मिली। रातको एक मन्दिरमें ठहरा। यहां इसका भाई भी रहता था। उसके भाईने टेनवासे कहा, कि तुम्हारे स्वामीका रंग बहुत गोरा है, मंगोलियन मालूम होते हैं। क्या वह अंग्रेज़ तो नहीं है?'

मेरे नौकरने कहा नहीं नहीं, वह सेराके माननीय वैद्य हैं? भाईने कहा—'मैं सेराके वैद्यको जानता हूं। परन्तु वह बड़ा अद्भुत मनुष्य है। वह मृत जीवको जिला देता है। ऐसा काम सिवाय यूरोपियनके और कोई नहीं कर सकता है। तुम सतर्क रहना कि कोई हानि न पहुंच जावे।' उसको यह नहीं मालूम था कि दूसरे कमरेमें मैं लेटा हूं।

टेनवा—नहीं यह बात नहीं है। अत्तारने मुझे इनके साथ कर दिया है। अत्तारसे इनकी बड़ी मित्रता है, वह कहता था कि यह चीनी हैं।

सवेरे जब मैं चलने लगा तो टेनवाके भाईने फिर उसके कानमें कुछ कहा, परन्तु मैंने यह प्रकाश नहीं किया कि रातकी बात मैंने सुनी है। सात मील चलनेपर मुझे उस चीनीके घोड़े मिले जिनमें दोपर मेरा सामान था। वह बड़ी तीव्र गतिसे जा रहा था परन्तु उसको यह नहीं मालूम था कि वह सामान मेरा ही है। मैंने देखा कि वे घोड़े दार्जिलिंगको जा रहे हैं। मेरे सामानको देखकर टेनवाके हृदयमें सन्देह हुआ क्योंकि उसने वह सामान बांधा था। पहले तो वह मुंह फुलाये कुछ सोचता रहा पीछे बोला,—'फारीके फाटकतक पहुंचनेमें अभी ५-६ दिन लगेंगे। क्या और रास्तेसे चलना ठीक न होगा? वहांके सिपाही असबाबकी जांच करनेमें बड़े कठोर हैं। वहां तबतक पासपोर्ट मिलना कठिन है जबतक आप यह बात सिद्ध न कर देंगे कि आप थोड़े ही दिनोंके लिये भारतवर्ष जा रहे हैं और शीघ्र ही लौट आवेंगे। ऐसे पासपोर्टके लिये वहींके गांवसे कोई साक्षी देनी पड़ेगी और कुछ रुपया भी देना पड़ेगा। मुझे इसमें भी सन्देह है कि तुम्हारे पास इतना रुपया है कि नहीं है। यदि मेरे ऊपर विश्वास करो तो मैं एक ऐसी गुप्त राहसे ले चलूं कि आधा रुपया खर्च हो। परन्तु उस राहमें जङ्गली पशुओंका भय है। यदि उधर न जाना चाहो तो भूटान होकर भी एक मार्ग है। उससे शीघ्र ही भारतवर्ष पहुंच सकते हो परन्तु वहां भी डाकुओंका भय है। परन्तु यदि अपना सामान छुपा लो और फटे कपड़े पहन लो तो कोई न बोलेगा।'

मैंने कहा कि 'क्या तुम्हारा यह आशय है कि रुपयेके लोभसे मैं फारी न जाकर दूसरी राहसे जाऊं ?

"जी हां, निरर्थक रुपया फेकनेमें क्या लाभ है ?"

मैंने कहा, मुझे नहीं मालूम है कि कितना रुपया खर्च होगा परन्तु बेमतलब जानको संकटमें डालना मूर्खता है। मेरे पास बहुत रुपया है। मैंने तुमको जिस वेतनपर रखा है यदि अच्छा काम करोगे तो उसके अतिरिक्त इनाम भी दूंगा। यदि तुम वादा पूरा न करोगे तो मैं तुम्हें कुछ न दूंगा।

मैं समझता हूं कि यह बातें उसने अपने भाईकी गुप्त मन्त्रणासे की होंगी, यदि मैं गुप्त राहसे जानेको कहता तो उसका सन्देह और भी बढ़ जाता और वह समझ लेता कि मैं अनुचित रीतिसे तिब्बतके बाहर जा रहा हूं। तिब्बतके मनुष्यका विश्वास करना बड़ी भूल है। यदि यह लोग यात्रीको सोता पावें तो उसका सब सामान उठाकर ले जावें।

पांचमील चलकर मैं सालू गांवमें पहुंच गया। वहांसे चल कर लामत्सू झीलपर पहुंचे। झीलके किनारे चलकर चोमो लहरी पर्वतमालाके समीप पहुंचे। सभी उच्चपर्वत इसी नामसे पुकारे जाते हैं। यह पर्वत बुद्ध देवता वैरोचके समान गम्भीर कहा जाता है। इसके इधर उधरकी गम्भीर पर्वत मालाएं भी बोधिसत्व मञ्जुश्री तथा बोधिसत्व अवलोकितेश्वरकी प्रतिनिधि स्वरूप मानी जाती हैं। इसमें मछलियां बहुत मिलती हैं। यहां लोग गर्मियोंमें मछलियां जमा कर लेते हैं। जाड़ोंमें वह भिक्षा

भी करते हैं और रखी हुई मछलियोंसे भरणपोषण करते हैं। ये लोग आधे मछुवे और आधे भिखारी होते हैं।

चौरासीवां परिच्छेद



पांच महाद्वार

६ जूनको नित्यके अनुसार हमलोग चलने लगे। टेनवाका सन्देह ज्यों का त्यों बना हुआ था। उसको भय था कि यदि किसी भांति भेद खुल गया तो वह जेलमें जावेगा। उसने फिर आक्षेपसे कहना शुरू किया—

'उस दिन आपने कहा था कि गुप्त राहसे जानेकी आवश्यकता नहीं है परन्तु यह आपकी भूल है। जेसा भयानक उस मार्गको आप समझ रहे थे वैसा वह भयानक नहीं है। जंगली जन्तुओंको अग्निसे डराकर भगा सकते हैं। मैं दो बार इस मार्गसे गया हूं। फ़ारीके सिपाही बड़े कठोर हैं। १४-१५ येन देने पड़ते हैं परन्तु आपको पचास येनतक देने पड़ें तो आश्चर्य नहीं है। वहां आप कमसे कम ४-५ दिनतक रोक लिये जावेंगे। यदि आप शीघ्र ही जाना चाहते हैं तो गुप्त राहसे चलिये इसमें रुपया और समय दोनों ही बचेंगे।

मैंने उत्तर दिया कि 'यदि वह लोग मुझको तंग करेंगे तो

करें मुझको कुछ इन्कार नहीं है। जो कुछ लगेगा वह भी मैं समझ लूंगा कि दलाईलामाकी भेंट कर दिया।'

मेरी बातें सुनकर उसका सन्देह जाता रहा। प्रायः ५ मील आगे बढ़े होंगे कि मुझको राहमें चार मनुष्य खड़े हुये मिले। इन लोगोंकी बड़ी भयानक सूरतें थीं। इन्होंने मुझे बहुत झुककर प्रणाम किया और कुछ भिक्षा चाही।

उन्होंने कहा कि 'हमलोग उत्तरसे आये हैं। हम फारीमें नमक बेचने जा रहे थे। पिछली रात हमारा चौकसी करनेवाला सो गया और हमारे नमक लदे ४५ याक डाकू लोग ले गये। हम नहीं जानते कि वे तिब्बती थे या भूटानी परन्तु हम उनका पीछा करेंगे। आप कृपाकर बतला दीजिये वे किस ओर गये होंगे।'

इन्होंने मुझे तिब्बती भविष्यवक्ता पुरोहित समझा। मैं भी वैसा ही बन गया। मैंने कहा कि शीघ्र ही तुम लोग उत्तरको चले जाओ। सन्ध्यातक उनको पकड़ लोगे। यह लोग मेरी बात सुनते ही उत्तरको चल दिये। मैं इस गांवमें ठहर गया, यहां खानेको कुछ भी मिलना कठिन है।

भूटान एक स्वाधीन देश है। यहां नाममात्रका एक राजा रहता है। यहांकी प्रत्येक जाति तिब्बतको स्वतः कर देती है, अपने राजाके द्वारा नहीं देती है। उसके बदलेमें तिब्बतसे भेंट मिलती है। यह एक प्रकारका बदला है कर नहीं है।

मैं आगे बढ़ रहा था कि वही लोग मेरे पास आये जिनके

याक चोरी गये थे। उन्होंने बड़ी भक्तिपूर्वक मुझको दो टंका और एक काता भेंट किया और कहा कि आपकी कृपासे हमारे सब याक मिल गये। मेरी इस दैवी शक्तिका टेनवाके ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने समझ लिया कि मैं साधारण मनुष्य नहीं हूं। रातको मैंने अपनी धर्मपुस्तक पढ़कर ध्यान किया तो राजमार्गसे जाना ही उचित ज्ञात हुआ।

जो यात्री इस राहसे आते हैं उनकी फारी द्वारपर बहुत कड़ी जांच होती है। एक मनुष्य शपथ खाकर साक्षी देता है कि यह यात्री थोड़े दिनोंके लिये भारतवर्ष जाता है और शीघ्र ही लौट आवेगा, फिर थोड़ासा नारियलका तेल देनेसे पासपोर्ट मिल जाता है जिसकी सहायतासे यात्री दूसरे फाटक चुम्बी-सम्बासे निकलते हैं। यहांपर यह पासपोर्ट दिखलाकर तीसरे फाटक पिम्बीथांगमें जाता है। यहांपर चीनी अफसर उसकी जांच करते हैं। चौथे फाटक टोमोरिनचेनगेंगमें लिखा हुआ सार्टीफ़िकट मिलता है। इसको नयातोंग दुर्गके बड़े फाटकपर दिखलाना पड़ता है। यहांपर घूंस देनी पड़ती है और प्रश्नोत्तर भी होते हैं। यहांपर कुछ ऐसे भी कागज मिलते हैं जिनको यात्री इधरसे उधर कई अफ़सरोंके पास ले जाता है तब कहीं छुटकारा होता है।

फारी और नयातोंगके बीच मुझे बहुतसे मित्र मिले। बहुत ऐसे थे जिनसे चलते२ भेंट हो गई थी और बहुत ऐसे थे जिनसे मैं दार्जिलिंगमें मिल चुका था। नयातोंगके फाटकके पास एक

मिश्नरी लेडी मिस ऐन-आर टेलर रहती थीं। यहींपर तिब्बतके कुछ बदमाश भी रहते थे। यह सब मुझे पहचानते थे अतएव उनके भयसे मैं रातभर नहीं सोया। इस फारीके फाटकमें जाना तो सहज था परन्तु सम्भव था कि वहां मेरे कोई मित्र मिल जावें। यदि मैं वहां रोक लिया जाता तो पकड़ जानेका भय था क्योंकि लासासे चले मुझको दस दिन हो चुके थे। ऐसा कभी सम्भव नहीं था कि लासामें इतने दिनोंतक किसीने मेरी खोज न की हो। और जब मैं. न मिला होऊंगा;तो अवश्य ही मेरे पीछे सरकारी पुलीस भेजी गई होगी। ऐसी अवस्थामें यदि फारीके फाटकपर मुझको देर हो जाती तो अवश्य ही भयानक विपद्‌की सम्भावना होती।

तारीख ११ जूनको मैं फारीके समीप पहुंच गया।

पचासीवां परिच्छेद

पहला द्वार

लासामें जैसा दलाईलामाका महल है ठीक वैसा ही दुर्ग फारीका है। वह भी एक पहाड़ीपर बना हुआ है। उसके नीचे जो मकान बने हुए हैं वे काले रङ्गके हैं। यहां कलकत्ता बम्बई और दार्जिलिङ्गसे सामान आया करता है और बिक्री भी बहुत होती है अतएव यहां एक चुंगीघर भी है। यहांपर चुङ्गी असली

मूल्यपर .१, .२ और कभी कभी .४ तक लग जाती है। बहुधा तो जो वस्तु बिकने आती है चुंगीमें वही ली जाती है परन्तु जहां इस बातकी कठिनता है वहां रुपया ही लिया जाता है।

नगरके किनारेपर एक तालाब है। तालाब और दुर्गके बीचकी सड़कपर मुझे चौकीदार मिले। उन्होंने मेरे ठहरनेका स्थान पूछा परन्तु मैंने अभीतक कहीं ठहरनेका कोई बन्दोबस्त नहीं किया था अतएव मैंने उनसे ही कहा कि मेरे लिये कोई अच्छा मकान खोज दें। उन्होंने मेरी अच्छी पोशाक देखकर समझा कि मैं कोई ऊंचे दर्जेका पुरोहित हूं अतएव उन्होंने एक अच्छा मकान मुझे दिखा दिया।

तिब्बतमें होटल अथवा सराय नहीं है। मुझको जाते हुए देखकर एक सरायवालेने पूछा, 'श्रीमन् कहां जा रहे हैं?' उसने मुझे उच्चकोटिका लामा समझा।

'मैं कलकत्ते जा रहा हूं। यदि अवसर मिला तो बुद्ध गयाको भी जाऊंगा। परन्तु इस समय मुझे एक आवश्यक काम है इससे आशा नहीं है कि वहांतक पहुंच सकूं।'

'आपका क्या काम है साहब?' सरायवालेने कहा।

'इसके बतलानेकी आवश्यकता नहीं है कि क्या काम है।'

'महाशय, आप कहांसे आ रहे हैं?'

'लासासे।'

'लासाके किस भागसे?'

'सेरा विहारसे?'

'अच्छा तो ज्ञात है आप किसी लामाके अवतार हैं ?'

इतनेमें बीचमें मेरा नौकर बोल उठा,—'नहीं साहब दलाई-लामाके...........' वह इतना ही कह पाया था कि मैंने क्रोध-पूर्वक कहा,—'निरर्थक मत बको इससे कुछ लाभ नहीं है।'

सरायवालेको यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मैं अपने उच्चपदको क्यों छुपाता हूं। उसने कहा, 'क्या आप दलाई-लामाके प्रतिनिधि हैं।'

'नहीं, मैं और कुछ नहीं हूं केवल सेरा विहारमें रहता हूं।'

ज्यों ज्यों वह मेरा पता लगाना चाहता था त्यों त्यों मैं भेद-को छुपाता था। शेषमें मैंने कह दिया कि मैं कुछ नहीं बतला सकता हूं।

सरायवालेने कहा,—'नहीं यह ठीक नहीं है। आपको कोई बात ऐसी न कहनी चाहिए जिसमें सन्देह उत्पन्न हो। सन्देह-को दूर करनेके लिये सब बातें खोलकर कह देनी चाहिये। आपको यहां एक साक्षी देनी होगी कि यद्यपि आप भारतवर्ष जा रहे हैं परन्तु शीघ्र ही लौट आवेंगे। साक्षीका मिलना यहां सहल बात नहीं है। इसके लिये यह बात आवश्यक है कि मैं आपके विषयमें सब हाल जान लूं।'

मैंने कहा कि यदि यही बात है तो मैं एक साधारण पुरोहित हूं सेरा विहारमें तर्कशास्त्रका स्वाध्याय कर रहा हूं।

आपकी दृष्टिसे मालूम होता है कि आप ठीक नहीं कह रहे हैं। आपकी अवस्था, तथा आपके कपड़े देखनेसे ज्ञात होता है

कि या तो आप कोई उच्चकोटिके लामा हैं अथवा किसी लामाके अवतार हैं।

तुम ऐसाही समझ लो, परन्तु जैसा तुम समझ रहे हो मैं वैसा नहीं हूं। मेरी सत्यता सेरा विहारमें पूछनेसे ज्ञात हो सकती है।

यह सुनकर वह मेरे नौकरके साथ दूसरे कमरेमें चला गया। वहां बैठे हुए मैं उसकी बातें सुन सकता था।

सरायवालोंने कहा,—'तुम्हारे स्वामीने मुझे इधर उधरकी बातें बतला दीं। परन्तु जबतक यथार्थ बात न मालूम होगी उनका १०-१५ दिनतक यहांसे निकलना असम्भव है।'

नौकर—मैं कुछ भी कहकर उनको रुष्ट नहीं कर सकता।

सरायवाला—ऐसी अवस्थामें मैं एक महीनेतक कुछ नहीं कर सकता हूं।

नौकर--वह बहुत जल्दीमें हैं। कोई आवश्यक काम मालूम होता है। आज रातभर चले हैं।

सरायवाला—क्या रातभर चलना आश्चर्यजनक नहीं है? मैं नहीं समझ सकता हूं कि ऐसा आवश्यक क्या काम हो सकता है परन्तु मैं यह कह सकता हूं कि वह साधारण पुरोहित नहीं हैं।

नौकर—अच्छा तो मैं तुमको बतलाता हूं परन्तु मेरा नाम गुप्त रखना। वास्तवमें वे सेराके वैद्य हैं।

सरायवाला—क्या सत्य कहते हो? क्या यह वही वैद्य हैं जिन्होंने मृतकको जिला दिया था?

नौकर— हां यह वही हैं। मैं ठीक २ तो नहीं कह सकता हूं क्योंकि मैं पुराना नौकर नहीं हूं। मुझे हालहीमें अखाग्ने इनके पास रख दिया था। मैंने सुना है कि वह दलाईलामाके पास थे और लासामें इनका बहुत प्रभाव है।

सरायवाला—अच्छा तो मैं इनको ४-५ दिनमें पासपोर्ट बनवा दूंगा।

नौकर—यदि तुम नहीं बनवा सकोगे तो बड़ा दुःख होगा।

सरायवाला—मेरा एक कुटुम्बी बहुत बीमार है क्या यह उसको देखेंगे ?

नौकरने हताश भावसे कहा 'वह कभी रोगीको नहीं देखते हैं। वह बड़े हठीले हैं। यदि राहमें उन्होंने किसी रोगीको देखा होता तो न जाने उन्होंने कितना रुपया कमा लिया होता परन्तु मेरे प्रार्थना करने पर भी उन्होंने चिकित्सा नहीं की।

सरायवाला—क्या तुम इतनी कृपा नहीं करोगे कि मेरी ओरसे सिफारिश कर दो ?

नौकरने मेरे पास आकर घबराते हुए कहा कि सरायवालेने मुझे भांति २ के प्रश्न किए। इसमें मेरे मुखसे निकल गया कि आप वैद्य हैं। अतएव वह प्रार्थना करता है कि आप उसके रोगीको देख लीजिए और चार पांच दिनतक जबतक आप ठहरे हैं और रोगियोंको भी देखनेकी कृपा कीजिए।

मैंने कुछ कुपित स्वरमें कहा—"यदि मैं वैसा ही करूं तो रोगि-

योंका कोई अन्त ही नहीं होगा। मैं रोगियोंको नहीं देख सकता हूं क्योंकि मुझको इतना समय नहीं है।"

नौकर—इस कामके लिए मैं इस कारणसे कह रहा हूं कि आप इसके करनेसे दीर्घजीवी होंगे।

मैंने बड़ी कठिनतासे इस बातको स्वीकार किया। सरायवाला प्रसन्न होता हुआ घर गया। थोड़ी देर पीछे वह एक और मनुष्यको अपने साथ लाया जो कि एक कालेसे मकानमें मुझको ले गया। यहां सब मकान काले दिखलाई पड़ते हैं क्योंकि काली मिट्टी और घासकी १४ इञ्च लम्बी, ७ इंच चौड़ी और ३ इंच मोटी ईंटें काट ली जाती हैं। उसीसे यह मकान बनाये जाते हैं। यह मकान यद्यपि ईंटोंकी बराबरी नहीं कर सकते हैं तथापि बहुत ही दृढ़ हुआ करते हैं। यह मकान केवल हवाके झोंकेसे गिर सकते हैं और कोई वस्तु उनको हानि नहीं पहुंचा सकती है। हवासे रोकनेके लिये जहां तहां लकड़ीके खम्भे लगा दिये जाते हैं। पहाड़ यहांसे बहुत दूर पड़ते हैं। यदि वहांसे पत्थर लाया जावे तो खर्च अधिक पड़ता है। अतएव इसी घास और मिट्टीसे मकान बना लेते हैं। दो चार मकानोंको छोड़कर सभी एक तल्लेके बनाए जाते हैं। जो दो तल्ले हैं उनकी नीचेकी इमारत पत्थरकी होती है। ऐसे दो तल्ले मकानमें जाकर मैंने रोगीको देखा। वह सरायवालेकी कन्या थी। उसको क्षयरोग अभी आरम्भ ही हुआ था जिसके कारण वह सदा उदास रहा करती थी और अपने कमरेमें पड़ी रहती थी। मैंने

उसको थोड़ीसी औषधि दी और कहा कि सवेरे और सन्ध्याको बोधिसत्व अवलोकितेश्वरके दर्शनोंको जाया करे। जब मैं सरायमें आ गया उसके थोड़ी देर पीछे सरायवालेने आकर हर्षित होकर कहा कि आपने मेरे लिए बड़ा कष्ट उठाया। अब रोगीकी अवस्था बहुत अच्छी है। उसने कहा कि यहां पासपोर्ट मिलनेके लिए साक्षीकी आवश्यकता है और साक्षी मिलना बड़ा कठिन है। आपने इसके लिए क्या प्रबन्ध किया है?

मैंने कहा कि मुझे इसकी बड़ी चिन्ता है जैसे बनेगा वैसे कोई साक्षी उपस्थित करूंगा। इसके लिये मैं कुछ रुपया भी खर्च कर सकूंगा।

सरायवाला—हमलोगोंको सरकारकी ओरसे साक्षी देनेका निषेध है परन्तु मैं आपको एक मनुष्यके पास ले चलूंगा और उसको सब हाल बतला दूंगा। यदि वह राजी हो गया तो फिर आपको अनुचित रुपया देनेकी आवश्यकता न होगी।

सरायवाला मुझको एक मनुष्यके पास ले गया जो कि मेरी गवाही देनेको तय्यार हो गया। वह बुरा आदमी नहीं था परन्तु तिब्बतवालोंकी रीति है कि जो अच्छे कपड़े पहने हो उससे रुपया कमानेकी चेष्टा किया करते हैं। मेरे मना करने पर भी सरायवालेने उसके सामने मेरी प्रशंसा करनी आरम्भ कर दी और कहा कि मैं सेराका वैद्य हूं और दलाईलामाकी सेवामें हूं। ज्योंही उसने सरायवालेके मुखसे यह शब्द सुने त्योंही गवाही देनेको तय्यार हो गया।

उसने कहा कि और कुछ नहीं लगेगा। केवल लिखापढ़ीके खर्चमें डेढ़ रुपया लगेगा। पासपोर्टके मिलनेमें ४-५ दिनकी देर लगेगी। मैं कह दूंगा और जितना शीघ्र होगा आपको पासपोर्ट दिलवा दूंगा। परन्तु निवेदनपत्र आजही लिखकर दे देना चाहिये नहीं तो पासपोर्टके मिलनेमें भी देर होगी। मैं आपको अध्यक्षके पास ले चलूंगा।

यहां कोई आफ़िस नहीं है। दुर्गके पास सर्वसाधारणके मकानोंहीमें एक मकान है जिसमें आफ़िस है। १४-१५ मुंशी नौकर हैं परन्तु काममें देर अवश्य ही होती है। कारण यह है कि जितनी देर होगी उतनाही घूंस पानेका अधिक अवसर मिलेगा। मैंने अपना निवेदनपत्र एक मुंशीको जाकर दे दिया जो कि देखनेमें उच्च कोटिका मालूम होता था।

उसने मुझसे कहा कि आज तो नहीं परन्तु परसों हमारी बैठक होगी। उसमें आपको उत्तर दिया जावेगा। आपको यहां आनेकी आवश्यकता नहीं है सरायवालेसे हम कह देंगे। इसका अर्थ यह था कि वह सरायवालेसे कह देगा कि यदि इतनी घूंस मिल जावेगी तो पांच दिनमें पासपोर्ट मिल जावेगा अन्यथा नहीं। इतनी देर होनेपर भी इतनी घूंस देनी पड़ेगी नहीं तो १०-१२ और १५ दिनतक लग सकते हैं।

मैंने कहा कि मुझको बहुत आवश्यक काम है। क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि आजही पासपोर्ट मिल जावे ?

उसने उत्तर दिया कि 'मैं नहीं समझता हूं, कि ऐसा आव-

श्यक काम क्या हो सकता है। यहां ऐसी रीति नहीं है कि उसी दिन पासपोर्ट मिल जावे। यदि आप नहीं ठहर सकते हैं तो वापिस लौट जाइये।

सरायवाला और उस लड़कीका पिता मेरे साथ थे जिसको मैंने अच्छा किया था। इन दोनोंने मुंशीको एकान्तमें बुलाकर कहा कि यह दलाईलामाके वैद्य हैं।

मुंशीने लौटकर मुझसे पूछा 'आप किस कामके लिये भारतवर्ष जा रहे हैं?'

एक आवश्यक काम है क्या कल आपकी बैठक नहीं हो सकती है? मैंने सोचा कि यदि मैं परसोंतक ठहरा भी रहूं तब भी पासपोर्ट नहीं मिलेगा अतएव कोई युक्ति निकालनी चाहिये।

मैंने कहा कि आप मुझे यह लिखकर दे दीजिये कि मैं आज यहां आया हूं परन्तु बैठक नहीं हो सकती है। अतएव मुझको यहां तीन दिनतक रुकना पड़ेगा।

मुंशी—ऐसा कायदा नहीं है।

मैंने कहा इससे मुझे कोई सरोकार नहीं है। कैसे ही हो मुझको अपने यहां रोके जानेका कारण अवश्य ही लिखा लेना होगा। यदि मेरे पद और मेरे कामको जानना चाहते हो तो सरकारी तौरपर लासासे विदेशी मन्त्रीके आफिससे लिखकर मंगालो।

मुन्शी—अच्छा तो कहिये तो सही काम क्या है?

लासामें एक उच्च पदाधिकारी बीमार है। उसीके लिये मैं औषध लेने जा रहा हूं। बुद्धगया जानेका तो बहाना कर

दिया है वास्तवमें मैं कलकत्ते जा रहा हूं। इसी लिये मुझे जल्दी है। यदि इस काममें देर होगी तो उससे जो कुछ हानि होगी उसका उत्तरदाता मैं नहीं हूं। इसी लिये मैं आपसे रोके जानेका लिखित कारण लेना चाहता हूं।

मुन्शी—तो आपका पेशा क्या है?

इस समयमें कुछ नहीं बतला सकता। मैं जिस कामको भारतवर्ष जा रहा हूं उससे ही विदित हो रहा है। मैं यहां एक दिन भी कठिनतासे ठहर सकता हूं। कृपा करके आप मुझको यह लिखकर दे दीजिये कि अमुक तारीख पर यहां पहुंचा। मैंने निवेदनपत्र दिया और इतने दिनोंके लिये यहां रोका गया।

मुन्शीने घबराकर कह,-'मैं ऐसे झगड़ेमें कभी नहीं पड़ा था, और भयके कारण उसके मुखपर हवाइयां उड़ने लगीं। उसने कहा,-'कृपा करके आप थोड़ी देर ठहर जाइये। आप राजवैद्य हैं, यहां एक रोगी है उसको कृपाकरके देख लीजिये। परन्तु आपका यहां ठहरनेसे हर्ज होगा अतएव मैं आपको नहीं रोकूंगा। पास-पोर्टके लिये अभी मैं कुछ नहीं कर सकता हूं और मुन्शियोंसे सलाह करके आपसे कहूंगा।'

तीन बजे जब मैं उसके रोगीकी चिकित्सा कर रहा था फिर बुलाया गया।

मेरे पहुंचनेपर मुन्शीने कहा कि आपको जानेकी बहुत जल्दी थी, अतएव हम लोगोंने एक विशेष सभा करके निश्चय कर लिया है कि आपको चार बजेतक पासपोर्ट मिल जावेगा।

थोड़ीही देर बाद चार बजे पासपोर्ट मिल गया। सरकारी व्यापारियोंको भी ३-४ दिन ठहरनेपर पासपोर्ट मिला करता था परन्तु सौभाग्यवश मुझे जिस दिन मैं पहुंचा उसी दिन मिल गया। मैं उसी समय चल देता परन्तु रातको ठहरनेके लिये राहमें कोई स्थान नहीं था अतएव रात भर वहां ठहरकर सवेरे वहांसे चल दिया।

छियासीवां परिच्छेद



दूसरा और तीसरा द्वार

सन्ध्याको मैं डकारपो गांवमें ठहरा था। यह पड़ाव फारी दुर्ग और चोटनकार्पोके दुर्गके बीचमें चिट्ठी भेजने और मंगानेके लिये रखा गया है। तिब्बतमें चिट्ठियोंको भेजनेके लिये इससे अच्छी और कोई रीति नहीं है। परन्तु यह रीति सरकारी है, यदि कोई अपनी चिट्ठी भेजना चाहे तो उसको अपना ही आदमी भेजना पड़ता है।

उस रातको मुझे सोनेके लिये बहुत अच्छा विस्तर मिला। जबसे मैं भारतवर्षसे विदा हुआ था यह पहला ही अवसर था कि विलायती विस्तरेपर सोया था। दूसरे दिन प्रातःकाल यद्यपि वर्षा हो रही थी, नौकरकी इच्छा नहीं थी तो भी मैं वहां न रुका। सवेरे पांच बजे उठकर चल दिया। मार्ग बहुत घने

जङ्गलमें होकर जा रहा था। यह जङ्गल इतना घना था कि सूर्यकी किरणें भीतर न पहुंचती थीं। यह जङ्गल भी तिब्बतके ही राज्यमें है परन्तु यहांकी लकड़ी लासातक न पहुंचनेका कारण यह है कि लकड़ी ढोकर ले जानेका कोई उचित प्रबन्ध नहीं है। छः मील चलनेपर हम चोटनकार्पोके दुर्गतक पहुंचे।

इस दुर्गके विषयमें यूरोपियन यात्रियोंकी किसी पुस्तकमें कुछ भी कहीं नहीं लिखा है। कारण यह है कि वह अभी थोड़े ही दिन हुए बना है। इसमें २००-३०० चीनी सिपाही रहा करते हैं। मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि दार्जिलिङ्गके चीफ़ आफ़िसरको भी इस दुर्गका हाल ज्ञात नहीं है क्योंकि जब मैं वहां पहुंचा तो उसने मुझसे इस दुर्गका सब हाल पूछा था।

मैंने उससे कहा कि,—'यह बातें तो आपको मालूम होनी चाहिये थीं आप ऐसे प्रश्न मुझसे क्यों करते हैं?

उसने उत्तर दिया कि—'गुप्तचर वहांतक नहीं पहुंच सकते हैं। अतएव हमको वहांका कुछ हाल मालूम नहीं है।'

मुझको इस बातका विश्वास नहीं हुआ कि चीफ़ आफ़िसरने यह बात ठीक ही कही परन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि तिब्बतवालोंतकको जो कि दार्जिलिङ्गमें रहते हैं इस दुर्गका हाल नहीं मालूम है। तिब्बतवासी रुपयेके कमानेमें बड़े प्रवीण हैं परन्तु इससे उनको कुछ मतलब नहीं है कि यदि वह दुर्गके पास होकर निकलते हैं तो किसीसे पूछें कि इसमें कितने सिपाही हैं और उनके यहां रहनेका क्या मतलब है।

दुर्गके पास ही एक स्थान है जहां चीनी सिपाही रहा करते हैं। इनकी संख्या ३०० है। यद्यपि यह नगर पहाड़पर बसा हुआ है परन्तु बहुत ही समृद्ध अवस्थामें है। इनकी बारकोंका ही गांव बसा हुआ है। एक वर्ष पीछे अथवा छः महीने पीछे ये लोग शिगात्ज़े अथवा ग्यांगत्ज़ेके सिपाहियोंसे बदले जाते हैं। यह लोग चीन सरकारसे ही वेतन नहीं पाते हैं वरं तिब्बत सरकारसे भी कुछ पाते हैं। अतएव इन लोगोंकी बड़े चैनसे गुज़र होती है।

बारकोंमें आकर भोजन मांगनेपर मुझे बहुतसे उबले चावल और कई भांतिके भोजन जोकि चीनी रीतिसे पकाये गये थे मिले। इन भोजनोंमें सुअर और याकका मांस भी था अतएव मेरे नौकरने खूब पेट भरकर खाया। मैंने मांस नहीं खाया और तरकारी चाही। यहां मुझको भांति २ के अचार खानेको मिले। दुर्गका द्वार बड़ा दृढ़ था। द्वारपर एक नोटिस टंगा हुआ था कि द्वार सवेरेके छः बजेसे सन्ध्याके छः बजेतक खुला रहता है। पूछनेपर मालूम हुआ कि यदि किसी सिपाहीको कोई विशेष आवश्यकता आ पड़े तब तो भले ही इस समयके आगे पीछे भी द्वार खुल सकता है। रातको जङ्गली पशुओंसे लोगोंको बड़ा भय रहा करता है। उसके बाद हम एक पुलपरसे गुज़रे। आधामील चढ़ाई चढ़कर और फिर उतना ही एक नदीके साथ साथ उतरकर एक सुन्दर कुसुमाकृत मैदानमेंसे गुज़रे। वहांसे और आधा मील निकलकर चम्बी नदीके पुलपर पहुंचे। इसके

पूर्व तटपर एक छोटेसे घरमें कुछ सिपाही रहते हैं। उन सिपाहियोंको पासपोर्ट दे दिया जाता है। यदि किसीके ऊपर सन्देह हो तो वह वापिस लौटा दिया जाता है। लोगोंका कथन है कि घूंस दिये बिना कोई निर्विघ्न नहीं जा सकता।

ज्योंही मैं फाटकपर पहुंचा त्योंही सिपाहियोंने पूछा कि कहांको जा रहे हो? मेरे नौकरने बड़े अफ़सरको मेरा पासपोर्ट दिखला दिया। उसने अपने मातहतसे कह दिया कि कोई रोक टोक न करे। क्योंकि मेरे पासपोर्टमें लिखा हुआ था कि मेरे साथ कोई सभ्यताका व्यवहार न होने पावे। अतएव दो फाटकोंमें मुझसे किसीने कुछ नहीं पूछा।

दो मील चलनेपर पिम्बीथेंगके बारकोंके पास पहुंचा। यह तीसरा फाटक था। आगे वर्षा खूब थी और हम लोग थक गये थे अतः बारकोंसे लगे हुए एक मकानमें ठहर गये। मुझे मालूम हुआ कि यहां पासपोर्टकी पूछताछ नहीं होती है अतएव मुझे तोमोरिनचन गांगको चला जाना चाहिये क्योंकि वहांसे बड़े अफ़सरसे एक चिट्ठी लेनी पड़ेगी। जब उसका पत्र मैं नयातोंगवाले अफ़सरको दूंगा तब वह आगे बढ़ने देगा।

जब वहांसे पत्र मिलेगा तो उसको फिर पिम्बीथांग लाना पड़ेगा। मैंने पीम्बीथांगमें सुना था कि चिट्ठी ११ और ११॥ के बीच मिलती है अतएव मुझको तोमोरिनचन गांगमें सवेरे ही पहुंच जाना चाहिये। परन्तु एक दिनमें यह काम निपट जाना कठिन था कमसे कम ३-४ दिन लगते।

ऐसी अवस्थामें यदि मुझको देर हो जाती और पकड़नेवाले पहुंच जाते तो मेरा चोरीसे रातको निकल जाना भी कठिन था। दैव संयोगसे पिम्बीथांगके बड़े अफ़सरकी स्त्री इसी समय रोगपीड़ित होकर मेरे पास चिकित्साके लिये आई। यह तिब्बती महिला थी और बहुत दिनोंसे हिस्टीरिया रोगसे पीड़ित थी। वह अनुपम सुन्दरी थी और उसका अपने पतिके ऊपर बड़ा प्रभाव था। फौज़में अफ़सर लोग अवश्य ही सिपाहियों-पर वश रखते हैं परन्तु बहुधा वे ही अफ़सर अपने घरमें अपनी स्त्रीके सामने साधारण सिपाहीकी भांति आज्ञापालन करते हैं। एक सिपाहीने अपने अफ़सरके विषयमें उसे स्त्रीभक्त ही कहा था।

मैंने उसकी स्त्रीको देखकर जो औषध दी उससे उसे बहुत लाभ पहुंचा। इस सेवाके लिये मुझसे वह इतनी प्रसन्न हुई कि मुझसे कुछ वस्तु पारितोषिक स्वरूप मांगनेको कहा। जब मैंने इसके प्रत्युपकारमें कुछ नहीं चाहा तो वह घरमें गई और कागजमें लपेटकर कोई वस्तु मुझे देने लगी परन्तु मैंने उसके लेनेसे इन्कार कर दिया। मैंने कहा कि मुझे यहांसे एक पास-पोर्ट मिलेगा जिसको मैं नयातोंग ले जाऊंगा और फिर वहांसे लौटूंगा। क्या आप कृपा करके वह पासपोर्ट मुझे शीघ्र दिलवा सकती हैं?

उसने उत्तर दिया कि हां, यह काम बहुत जल्दी हो जावेगा। यद्यपि मेरा स्वामी इस मामलेमें बहुत सख्त है और

११-११॥ के इधर उधर नहीं देता है परन्तु मैं तुमको दिलवा दूंगी।

मैंने कहा कि यही मैं भी चाहता हूं और उसके हठ करने-पर भी उसकी भेंट उसको लौटाल दी।

वह स्त्री कृतज्ञता प्रकाश करती हुई प्रसन्नचित्त फिर घर चली गई। यदि सवेरेतक कोई गड़बड़ न हुआ तो नयातोंगमें भी कुछ नहीं हो सकता। जब मैंने उस स्त्रीसे पूछा तो मालूम हुआ कि उसका स्वामी पासपोर्ट देनेको कदापि राजी न होता था परन्तु केवल उसके दबावमें आकर उसने दे दिया।

तारीख १४ जूनको सवेरेसे वर्षाके होते ही होते मैं तीन बजे उठकर चल दिया और दो मील चलनेपर तोमोरिनचन गांवमें पहुंच गया। अभीतक सवेरा नहीं हुआ था और सब घरोंके द्वार बन्द थे। मैं सवेरा होनेतक ठहर गया। जब लोग सोकर उठे तो मैंने पूछा कि सिपाहियोंकी चौकी कहां है तो मालूम हुआ कि गांवके परले किनारेपर है।

यह बहुत ही छोटा सा मकान था। कोई फाटक इत्यादि वहां नहीं था। जिस समय मैं वहां पहुंचा ठीक उसी समय वहांका मुंशी सोकर उठा था।

मैंने उससे अपना सब हाल कहा और उससे पत्र मांगा जिसकी सहायतासे मैं पासपोर्ट पा सकता। उसने उत्तर दिया कि ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ है। शीघ्र ही मेरे नौकरने कहा कि यह सेराके वैद्य हैं। उसने पूछा कि क्या यह दलाई-

लामाके प्रसिद्ध वैद्य हैं। उसकी इस बातको ज्योंही मैंने उसे चक्करदार उत्तर दिया उसने मेरा विश्वास कर लिया और आशासे भी जल्दी पत्र दे दिया।

सतासीवां परिच्छेद

चौथा और पांचवां द्वार

गांवसे दो मील चलनेपर मुझको बड़ा भारी दुर्ग मिला। इस दुर्गमें दो सौ सिपाही रहते हैं। पिम्बीथांगमें १०० और चोटनकार्पोमें २०० रहते हैं। गांवसे निकलनेपर बड़ा भारी फाटक है। यहींपर दो सिपाही पहरेपर रहते हैं। मैंने उनको पत्र दिखलाया। उन्होंने उसके ऊपर मुहर की और मुझको विदा किया। थोड़ी दूर आगे बढ़कर मुझको पांचवां फाटक दिखलाई पड़ा। यही सबसे भयानक फाटक था।

भयानक इसलिये था कि यहांपर बहुतसे मेरे परिचित थे। यद्यपि इनमें कोई मेरा बैरी नहीं था परन्तु तिब्बतवाले रुपयेके बड़े लोभी होते हैं क्या आश्चर्य्य है कि लोभवश वह मेरा रहस्य खोल दें। यहांपर दो अंग्रेज भी थे जिनमें एक मिसटेलर थीं। जबसे मिसटेलर तिब्बतसे लौटीं वे यही रहती हैं।

यहांपर तिब्बत और चीनकी सीमा मिली हुई है अतएव यहां पर बहुत अंग्रेज और तिब्बतके अफ़सर रहा करते हैं। यदि

यहांपर मेरा भेद खुल जाता तो मैं कदाचित् नहीं बच सकता था। इस समय बुद्ध देवका स्मरण कर मैं आगे बढ़ा। यहां पर दस मकान थे जिसमें सरकारी आदमी, पादरी और चीनी रहते थे।

यहींपर एक मनुष्य सरदार दरगे रहता था। वह डांडा वाले कहारोंका जमादार था। यह बड़ा ही शैतान था। लोगों-को डर धमका कर कुछ न कुछ वसूल कर लिया करता था। मुझको इससे भी मिलना था। दलाईलामाने इसको बड़ी ऊंची पदवी दे रखी थी। वह टोपीमें मूंगे लगाया करता था और इस पदवीके कारण उसको गर्व भी थोड़ा न था। इसके मकानमें बहुतसे मुंशी और अंग्रेज भी काम करते थे। इसके कई एक नौकर मुझे जानते थे।

ज्योंही मैं उसके घरमें घुसा तो मेरे नौकरसे उसके एक आदमीने पूछा, ये कौन हैं?

उसके मुखसे यह शब्द निकले ही थे कि मेरे नौकरने कहा कि यह सेराके वैद्य हैं। यह सुनते ही उस मनुष्यने कहा ओ हो यह वही सेराके प्रसिद्ध वैद्य हैं। लोगोंके मुखसे सुना है कि वह यहां आनेवाले हैं।

मेरे नौकरने कहा,—'इन्हें बड़ा आवश्यक काम है। एक दिनकी भी देर कहीं नहीं लगाई है। फारी दुर्गपर उसी दिन पासपोर्ट ले लिया। हमको शीघ्र ही पत्र दे दो।

मैं मन ही मन सोच रहा था कि इस समय तो इसने ठीक ही काम किया है वह मनुष्य बोला, अच्छा इधर चलिये।

कहारोंके जमादारकी, जो अब दारोगा भी हो गया था, दो स्त्रियां थीं। एक जमादारीके समयकी विवाहिता थी और दूसरी दारोगा होनेके बाद। मैंने अपनी यात्राका सब हाल कहकर उससे पत्र मांगा कि जिसकी सहायतासे मैं चौकीसे निकल जाऊं।

दारोगा साहबने बहुत गम्भीर भाव धारण करके कहा कि, अपना सब हाल सत्य २ कहिये।

'मैं कलकत्ते एक आवश्यक कामके लिये जा रहा हूं। दलाई-लामाके घरका निजी काम है। यह काम ऐसा आवश्यक है कि मैं बीस दिनके भीतर ही लौट जाना चाहता हूं। यदि तुम अधिक दिनके लिये रोकना चाहो तो मुझे रोकनेका कारण लिख कर एक सार्टीफिकट दो।'

दारोगा-यह तो मेरी ड्यूटी ही है पहले बतलाइये तो सही कैसा गुप्त काम है।

मैंने गम्भीर भाव धारण करके कहा,—'क्या आपको उसके सुननेका अधिकार है? क्या महामन्त्रीके भेदको आप सुन सकते हैं। जिस भेदको दलाईलामाके अतिरिक्त कोई नहीं जानता उसके जाननेका आपको अधिकार है? यदि आप बहुत दबाव डालेंगे तो मैं आपसे उसका हाल कह दूंगा परन्तु आपको सा-र्टीफिकेट लिखना होगा और उस भेदके खुलनेके उत्तरदाता भी आप ही होंगे। यदि आप ऐसा कर सकें तो और लोगोंको दूर-कर दीजिये और सुन लीजिये।"

'जब कि आप ऐसे आवश्यक कामपर जा रहे हैं तो मैं आप-

को रोकना नहीं चाहता और रहस्य भी नहीं पूछता। मैं पत्र लिखे देता हूं जिसको आप अपने नौकरके हाथ तोमोरिनचन गांगको भेज दीजिये। आपको उसकी दो कापियां लेनी होंगी। एक पिम्बीथांगकी चीनी अफसरके पास भेजनी होगी। वहांसे जो लौटेगी उसकी सहायतासे आप यहांकी चौकीसे निकल सकेंगे।

मैंने सुना था कि यह सरदार दारोगा बड़ा घूंस लेनेवाला है और अपने अधीनके लोगोंको बड़ा दुःख देता है। जो मनुष्य अपने नीचेवालोंको दुःख देता है वह ऊपरवालोंसे बड़ा भयभीत रहता है। मेरे मुखसे दलाईलामाका शब्द सुनते वह दण्डवत् प्रणाम करने लगा। एकाएक उसका गर्व जाता रहा। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

अट्ठासीवां परिच्छेद

अन्तिम द्वार

मैंने दारोगासे पत्र लेकर अपने नौकरको दे दिया। नौकरसे मैंने चोरीसे कह दिया कि इसको तोमोरिनचन गांगको ले जाओ, तुमको वहां दो पत्र मिलेंगे। पिम्बीथांगमें यदि तुमको पत्र मिलनेमें देर हो तो तुम चीनी अफसरकी स्त्रीके पास ले जाना वह तुम्हारा काम ठीक कर देगी।

नौकरने कहा कि आपने इतनी जल्दी यह पत्र पा लिया। यह तो बड़े आश्चर्यकी बात है। यदि आप वहां मेरे साथ न चलेंगे तो काम नहीं होगा।

मैंने कहा कि हां मैंने भी यही सोचा था परन्तु दारोगाने मुझसे कह दिया है कि इस पत्रमें सब हाल उसने लिख दिया है। अब मेरे वहां जानेकी आवश्यकता नहीं है।

नौकर उन पत्रोंको लेकर शीघ्र ही तोमोरिनखन गांवको चल दिया। वहां पहुंचते ही अफसरने दूसरे पत्र उसको लिख दिये और उनको लेकर वह पिम्बीथांग चला आया। जिस समय मेरा नौकर पिम्बीथांगमें पहुंचा उस समय डेढ़ बजा था। अफसरने पत्र देनेसे इन्कार किया। अतएव मेरे समझानेके अनुसार वह चीनी अफसरकी स्त्रीके पास गया। वह तुरन्तही अपने स्वामीके पास दौड़ी गयी और पत्र उसी समय दे देनेको कहा। परन्तु स्वामीने कहा, अब पत्र देनेका समय नहीं रहा है कल मिलेगा। इतना सुनना था कि स्त्रीने अपनी तिब्बती प्रचण्ड आदत प्रकाशित करनी आरम्भ की। बेचारा स्वामी क्या करता शीघ्र ही पत्र लिखकर मेरे नौकरके हवाले किया। वह चार बजे ही मेरे पास आ गया।

पानी बरस रहा था और मैंने रातभर वहां ठहरनेका विचार कर लिया था। यदि मैं उसी समय चला जाता तो अच्छा था क्योंकि मैं ५-६ घन्टेमें ही ब्रिटिश राज्यमें पहुंच जाता।

दारोगाने कहा कि,—'आज वर्षा है ऐसे समयमें चलना

कठिन है। इसके अतिरिक्त नकथेंग यहांसे दूर भी है। राहमें कोई सराय भी नहीं है। परन्तु यदि आप आठ मील चलेंगे तो वहाँपर एक मकान है उसमें रातको ठहर सकते हैं। यदि आप ऐसा नहीं कर सके तो सवेरे आप ३ बजे भी चलेंगे तो भी नकथेंग न पहुंच सकेंगे। अतएव आपको आवश्यक काम है, आप अभी ही चले जाइये।'

मैंने कहा—'आज मैं बहुत थक गया हूं क्या कल सवेरे चलनेसे नकथेंग नहीं पहुंच सकूंगा ?'

दारोगाने गम्भीर भावसे कहा—'कदापि नहीं।'

मैंने नौकरसे पूछा,—'चलनेका क्या विचार है ?'

नौकर बहुत थक गया था बोला—'मुझसे एक पग भी न चला जावेगा।'

दारोगाने कुछ अप्रसन्नता प्रकाश करते हुए कहा—'जिस मालिकको आवश्यक काम है उसके नौकरके लिये यह बात कहनी बड़ी असभ्यता है कि वह नहीं चल सकता है।'

नौकरने कांपते हुए कहा—'क्षमा कीजिये आप सत्य कहते हैं।'

मैंने दारोगासे प्रणाम किया और आगे चल दिया क्योंकि सम्भव था कि रातहीको कोई विपद आ पड़ती।

नयातोंगका दुर्ग बहुत दृढ़ बना हुआ है। देखनेमें भी बहुत शानदार था। नयातोंगके नगरसे चलकर एक नदीका पुल मिलता है, उसको पार करके एक मकान मिलता है जिसमें

चीनी सिपाही रहते हैं। वहां मैंने चीनी भाषामें लिखा हुआ पासपोर्ट दिया जो कि पिम्बीथांगमें मुझे मिला था। एक सिपाहीने उसकी जांच की और हमको चले जानेकी आज्ञा दे दी।

ज्योंही हम पहाड़से नीचे उतरने लगे त्योंही पानी बरसने लगा। यहींपर तिब्बतकी सीमा है। यहां अंगरेज लोग तिब्बतसे भूमिकर लेकर रहा करते हैं। दो मील नीचे उतरते २ अन्धेरा हो गया और मेरा नौकर बड़बड़ाने लगा। उसने कहा, 'क्या यहां कोई ठहरनेका स्थान नहीं है, मेरे पास बोझा बहुत है अब मुझसे चला नहीं जाता है।'

मैंने कहा कि आधा बोझा मैं तुमसे लेता हूं। मैंने उससे बोझा ले लिया। आठ बजे ठहरनेका स्थान दो मील रह गया था। नौकरने कहा कि अब मुझसे बिलकुल नहीं चला जाता है। यहींपर एक खेमा लगा हुआ था उसके सामने आग जलती हुई दिखाई पड़ी। उसके बाहर बहुतसे खच्चर चर रहे थे। टोमो-रिनचन गांगके लोग इन खच्चरोंपर केलनयोंगको ऊन ले जाया करते हैं। मैं खेमेके भीतर गया और रातभर ठहरनेकी इच्छा प्रगट की। उस खेमेके मालिकने कहा कि हम पांच आदमी हैं, इतनोंके लिये ही स्थान नहीं है, तुम लोगोंको कैसे ठहरा सकते हैं परन्तु मेरा नौकर बैठ गया। वह अपने स्थानसे हिलना न चाहता था इससे हमारी ही जीत हुई।

वास्तवमें यह खेमा बहुत छोटा था। मैं रातभर बैठा रहा।

बैठे मैं सोचने लगा, कि पांच फाटक तीन दिनमें पार कर जाना एक जादू ही है। व्यापारी नित्य आया करते हैं परन्तु इन फाटकोंमें ८-१० से कम दिन किसीको भी नहीं लगते। भाग्यवश मेरे ऊपर किसीने सन्देह भी नहीं किया। ऐसा बदमाश दारोगा भी सीधा हो गया और दण्डवत् प्रणामोंकी झड़ी लगा दी। यह सब बुद्ध भगवानकी कृपा थी और क्या हो सकता है।

नवासीवां परिच्छेद

तिब्बतको अन्तिम प्रणाम

प्रातःकाल उठकर कुछ चाय बनायी और कुछ रोटी चायके साथ खाकर, हम चल दिये। मार्गमें भोजन मिलनेकी आशा न थी। अतः हमने वहीं खूब भोजनकर लिया और पर्वतपर चढ़ना शुरू किया। वर्षा रुक गयी ऋतु खिल गयी थी। आधा मील चलकर एक मकान मिला। यहां दार्जिलिंगसे आनेवालेको संदेह होनेपर रख लिया जाता है और नयातोंगके किलेमें खबर भेज दी जाती है। वहां एक पुरुष और एक बूढ़ी औरत रहती थी। यहां भी मैंने चाय पी और कुछ नाश्ता करके फिर चढ़ना शुरू किया। एक मीलतक झाड़ियोंसे ढके मार्गसे गुजरकर जेलपला नामक हिमावृत पर्वतपर आ गये। ऊपर चढ़कर उत्तर पूर्वमें दृष्टि डाली तो मेघ खण्डोंमें छिपा मैदान दीखने

लगा। उसी गहरे मैदानमें लासा नगर बसा है। बस उसी समय मैंने तिब्बतको अपना अन्तिम प्रणाम किया। वहां जमे हुये जलका सरोवर है। उच्च शिखरोंसे नीचेकी ओर दृष्टिपात करते ही नीहारिकामय धवल मेघ दल ऊपरकी ओर उमड़ २ जंगलोंके शिखरोंपर आक्रमण करते हुए आगे बढ़ रहे थे। उनका दृश्य अत्यन्त मनोहर था। पर्वत शिखरपर लालकासनी फूलोंकी बहार खिल रही थी।

मील भर हिमावृत मार्गपर और चलनेके बाद मैं पर्वतके शिखरपर पहुंच गया। तिब्बतकी यही चरम सीमा थी। इस शिखरके दूसरी ओर लामा सरकारका शासन नहीं है। तिब्बतकी सीमापर पहुंचनेतक मेरे तिब्बतमें तीनवर्ष पूरे होते हैं। अब मैं ऐसे देशमें पहुंच गया। वहां पत्र-व्यवहारमें पूर्ण स्वतन्त्रता है। मैं सकुशल इस प्रकार लौट आया—यह सब बुद्ध भगवानका अनुग्रह है। उन्हींके रक्षामय हस्तकी छायामें मैं सुरक्षित रहा। शिखरपर अत्यन्त अधिक शीत था। भक्तके आवेशमें मैं उस शीतको भी भूल गया था। दिन खुला हुआ था। धूप पड़ रही थी। १ मील उत्तर आनेपर सड़क बड़ी उत्तम आ गयी। ऐसी सड़क तिब्बतमें कहीं भी न थी।

सुना था कि उस वर्ष वहां बड़े जोरके ओले बरसे। एक एक ओला मुर्गीके अण्डेके बराबर था। दो मील उतरकर हमें फिर ३ मील चढ़ना पड़ा और नकथांग पहुंचे।

यहांपर प्रायः बीस मकानोंकी बस्ती है। पहले यह मकान

सिपाहियोंकी बारकें थीं परन्तु अब उनमें ऊन इत्यादि व्यापारकी वस्तुयें भरी जाती हैं। वर्षाके कारण मार्ग बहुत खराब था अतः उस रात वहां ही रहे।

यद्यपि फिर बहुत बरस रहा था परन्तु फिर भी तारीख १६ जूनको पांच बजे चल दिये और १३मील चलकर लिंगतांग पहुंचे। अब हमें कोई जल्दी न थी क्योंकि तिब्बतकी सीमा निकल ही चुकी थी। दूसरे दिन मैं बोतांग पहुंचा। यहांकी धरती बहुत उपजाऊ है। बहुतसे नेपाली यहां खेती करते हैं। प्रधान खेती चावलोंकी है। इन खेतोंका लगान ब्रिटिश सरकार ही लेती है। यहांका चावल भी बढ़िया जापानके चावलोंकी भांति ही होता है।

यहां बहुतसे अंगरेज भी रहते हैं। उनमेंसे बहुतसे खेतीका काम करते हैं। यहां एक गिर्जा और एक स्कूल भी है। जैसे कि मैं आगे जा रहा था पोष्ट आफिसके मकानके पास एक तिब्बती मनुष्य एक बरामदेमें खड़ा हुआ मेरी ओर देख रहा था। वह बड़ा विस्मित होकर बोला, 'आइये साहब भीतर आइये।'

'नहीं साहब मुझे आवश्यक काम है। मैं रातभर कहीं ठहरना चाहता हूं क्या आप ठहरा सकते हैं?'

'सब हो जावेगा आप भीतर तो आइये।'

'मैं आता तो हूं परन्तु यदि रहनेको स्थान न मिला तो बड़ी कठिनता होगी।'

उसने हंसकर कहा, 'आप आइये तो सही।'

मुझे उसके इस मित्र-भावसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भीतर ले जाकर मुझसे कहा, 'क्या आप मुझे भूल गये ?'

जब मैं दार्जिलिंगमें था तो यह मनुष्य सरकारी हाई स्कूलमें तिब्बती भाषाका मास्टर था। परन्तु उसने मुझे नहीं पढ़ाया था। यद्यपि बहुत विद्वान न था परन्तु बाहरी ज्ञान बहुत था और समझदार आदमी था। मुझको यह नहीं मालूम था कि उसने पोष्टमास्टरकी नौकरी कर ली है। उसने मुझसे कहा कि तुम इन फाटकोंसे बचकर कैसे निकल आये। मेरा नौकर मेरे पासही बैठा हुआ था वह हम दोनोंको अंगरेज़ीमें बातें करते सुनकर स्तम्भित हो गया। मैंने सोचा कि ये बातें सुनकर उसको सन्देह हो जायगा। अतएव मैं लासाकी भाषा बोलने लगा। परन्तु पोष्टमास्टर लासाकी भाषा नहीं बोल सकता था। तब हम दोनों कुछ अंग्रेज़ी और कुछ तिब्बती भाषा बोलने लगे। इससे मेरे नौकरको और भी सन्देह बढ़ा और वहांसे उठकर पोष्टमास्टरकी स्त्रीके पास गया और उससे पूछा कि,—'सत्य सत्य बतलाइये कि मेरा स्वामी किस देशका है ?'

स्त्री—वह जापानी लामा है।

नौकरने शीघ्रतासे पूछा—'जापान कहां है। क्या वह अंग्रेज़ नहीं है ?'

स्त्रीने कहा—'नहीं अंग्रेज़ नहीं वह जापानी है। जापान इस समय ऐसा बलवान है कि अंग्रेज़ोंको भी आश्चर्य होता है।'

नौकरने कहा—'यह तो बड़ी भयानक बात है, मैं मारा

जाऊंगा।' यह कहते कहते उसका मुख भयके मारे पीला पड़ गया।

मुझे बादमें पता लगा कि पोष्टमास्टरकी स्त्रीसे मेरे नौकरकी यह बातें हुई थीं। यदि पहले मुझे मालूम हो जाता तो मैं उसको समझा देता। उस रातको मैं बड़े आनन्दसे सोया।

नव्वेवां परिच्छेद



लावची जाति।

दूसरे दिन मैं १५ मील चलकर केलनयोंग नगरमें पहुंचा। यह नगर दार्जिलिङ्गसे पूर्व ३० मील दूरपर बसा हुआ है। यद्यपि यहांपर सस्ती चीजोंकी बिक्री अधिक है परन्तु फिर भी दार्जिलिंगकी अपेक्षा यहांका व्यापार चढ़ा बढ़ा है। क्योंकि तिब्बत, शिकम और भूटानके व्यापारी बहुधा यहीं उतर पड़ते हैं। यहां बहुतसे परदेशी भी रहा करते हैं। एक गिर्जा, स्कूल और शफाखाना भी है। यहां एक तिब्बतवासी पूचंग नामक रहता है। वह पहले शिगात्ज़ेमें पुरोहित था। यहां आकर उसने व्यापार आरम्भ किया और बड़ा धनी हो गया। इसी मनुष्यके पास मेरा सामान पहुंचना था जो कि मेरे मित्र अस्तारने एक चीनीको सौंप दिया था। मैं पूचंगके पास सामान लेने गया कि उसको लेकर चला जाऊंगा परन्तु वहां पहुंचने-

पर मालूम हुआ कि अभी सामान नहीं आया। मुझे वहां प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

जब मैं उसके पास पहुंचा तो उसने मुझे तिब्बती समझा। परन्तु पीछे मेरे नौकरसे पूछनेपर उसको मालूम हुआ कि मैं जापानी लामा हूं। पूचंग मेरे पास आया और नौकरसे जो कुछ सुना था मुझसे कहा और यह भी कहा कि अब छुपानेकी कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब आप अंग्रेजी राज्यमें हैं। मैंने कहा कि मेरा भेद तो बोतानके पोस्ट आफिसमें खुल चुका है, अब मैं नहीं डरता हूं। पूचंगने मेरे नौकरके भयके विषयमें कहा और कहा कि वह बहुत घबरा गया है। उसे घर वापिस जाकर जो दण्ड होना सम्भव है उससे बड़ा भय है। उसके दो बच्चे हैं और उसकी स्त्री गर्भवती थी। मैंने कहा कि यदि वह इतना भयभीत है तो वह यहीं रहे पीछे उसके स्त्री बच्चे भी यहीं बुला दिये जावेंगे।

थोड़ी देर पीछे मेरा नौकर पूचंगके साथ आया और बोला कि आप कृपा करके यह बतला दीजिये कि यदि मैं लौट जाऊं तो कोई विपद् तो नहीं आ पड़ेगी। परन्तु यह बात मैंने उसको नहीं बतलाई। मैंने कहा कि तुम यहां किसी और लामाके पास जाकर सलाह लो। पहले तो उसने नहीं माना परन्तु थोड़ी देर पीछे लौटकर मेरे पास आया और कहा कि मैं एक लामासे पूछ आया हूं उसने मुझे लौट जानेको कहा है। मैंने उसको पैंतीस रुपये, कुछ पुराने कपड़े और इतना खानेको दे

दिया जो उसके लिये बहुत था। वह गुप्तमार्गसे चला गया और जहांतक मुझे मालूम है वह दण्डसे भी बच गया क्योंकि जबतक नैपालमें रहा तबतक मैंने उसके विषयमें कुछ नहीं सुना।

चार पांच दिन हो गये परन्तु अभीतक मेरा सामान नहीं आया। आठवें दिन एक व्यापारीने आकर कहा कि चीनी कई व्यापारी थे जिनके पास बहुतसे घोड़े थे। वह वर्षाके कारण नहीं आ सके, उनके तीन घोड़े नदीमें डूबकर मर गये जिनके ऊपर मुश्क और रुपया लदा हुआ था। मुझको और भी सन्देह हुआ कि कहीं वह डूबे हुए घोड़े मेरे ही सामानके तो नहीं थे। दो दिन और भी कट गये फिर भी कोई सम्वाद नहीं मिला। ग्यारहवें दिन मैं हताश होकर बैठ गया। मैंने सुना कि दोनों चीनी आ गये और मेरा सामान आ गया। मैंने उनको १३ रुपये किरायेके दिये। १ जुलाईको मेरा सामान मुझे मिला। उसे अगले दिन मैं वहांसे चल दिया। यहांसे दस मील चलनेपर मुझको तिस्ता नदी मिली।

तिस्ता नदीपर अंग्रेजी फैशनका १५० फीट लम्बा लोहेका पुल बंधा हुआ है। बीचमें उसके कोई थम्भा नहीं लगा है। नदी इतने वेगसे बहती है कि थम्भा ठहर नहीं सकता। नदीके एक किनारेपर शैलगिरी (सिलिगुड़ी) पड़ाव है। उसके पास-से बैलगाड़ीकी सड़क केलनयंगसे बोतानतक जाती है। प्रायः सामान इसी रास्तेसे जाते हैं।

तिस्ता नदीके विषयमें एक दन्तकथा है। हिमालयके पर्वतोंमें

लावची जाति अभीतक बहुत ही जंगली दशामें है। इस जातिके दो भाग हैं एक, दूसरे भागसे बहुत ही नीच दशामें है। उत्तम वर्गका आदि पुरुष टीकमसेराङ्गा था। वह हिमालयकी भूमिसे पैदा हुआ था। उनकी स्त्री डोमी तिस्ता नदीसे पैदा हुई थी। तिस्ता नदी दार्जिलिंगके उत्तरपूर्वसे होकर बहती हुई गङ्गामें मिल जाती है।

दूसरी जातिकी उत्पत्ति एक विशाल शिलासे हुई कही जाती है। वह शिला अब भी दलमथांग ग्राममें विद्यमान है। वह वर्ग अब भी सिलिमके आस पास फैला हुआ है। चाहे दोनों वर्गोंके आदि पुरुष भिन्न २ हों तो भी दोनों एक ही जाति हैं।

ये लोग कमरमें वहींके घासका बुना हुआ कपड़ा लपेटे रहते हैं। सीना पिरोना वे लोग नहीं जानते। उनकी स्त्रियां अपनी चिबुकके ऊपर नीला गुदवाती हैं।

ये लोग जंगली घासें, उनके बीज और नाना पौधे खाते हैं। यह लोग मांस मछली नहीं खाते। जंगली घासोंसे वह खूब ही परिचित हैं। बहुत सी घासें इन लोगोंको मालूम हैं जिनसे बहुतसे रोग दूर हो जाते हैं। इस विषयमें वे भारतवर्षके वैद्योंसे भी बढ़े हुए हैं। बांस इनके बड़े कामकी वस्तु है। बांसके एक टुकड़ेमें घास अथवा फल रखकर बन्द कर देते हैं। कभी अनाज भी नमक अथवा शहदसे मिलाकर भर देते हैं। इसका मुख बन्द करके बांसकी ही अग्निमें रख देते हैं। जब बांस ऊपरसे काला हो जाता है तो भोजन निकाल लेते हैं। खोलनेपर मालूम

होता है कि वह वस्तु बिलकुल पक गई है। इनके यहां मिट्टी पत्थर अथवा धातुके बर्तन नहीं होते। पानी भरने, दूध रखने और खाने पीनेके बर्तन भी बांसके ही होते हैं। तीर कमान भी उनके इसी बांसके होते हैं। इनके तीर विषाक्त होते हैं।

इनमें कहीं २ बहुभार्याकी रीति भी बहुत न्यून है परन्तु बहु पतित्वकी रीतिका तो सर्वथा निषेध है।

उनमें बहुविवाहका न होना भी उनकी कुशलताके लिये है। नहीं कहा जा सकता कि वे हिमालयके ही वासी हैं। उनकी भाषाका न संस्कृतसे और न तिब्बती भाषासे ही कोई सम्बन्ध है। वे कदाचित् बहुत पहले कालमें वहां आकर बसे हैं। उनका रूप रंग बहुत सुन्दर श्वेत है। वे प्रायः सुरूप होते हैं। उनमें साहस और धैर्य्य नहीं होता। वे चोर होते हैं परन्तु हत्या और क्रूरता उनमें नहीं है। ऊंच वर्गके लापची प्रायः दार्जिलिंगमें आते है। नीच वर्गके भी आते हैं परन्तु यदि उनका अच्छा खयाल न रखें तो वे प्रायः फिर घर भाग जाते हैं। दोनों वर्गों में लापची सुरूप होते हैं। खेद है कि उन लोगोंकी बहुत सी स्त्रियां प्रायः वहांके सिपाहियोंकी दासियां बन गयी हैं। इस पेशेमें बहुतसी स्त्रियां लगी हैं। वे धर्ममें बौद्ध हैं परन्तु उनका धर्म बहुत सरल है। उनकी वंशीय गवेषणा बहुत ही विनोदजनक प्रतीत होती है।

इकानवेवां परिच्छेद



पहले गुरुसे भेंट

तिस्ता नदीका पुल पार करके मैं अपने किरायेके घोड़ेपर सवार होकर चला। मेरा सामान और दो घोड़ोंपर था इससे मैं तीव्र गतिसे न जा सकता था। चलते चलते दूसरे दिन मैं लासाबिला अर्थात् अपने गुरु शरतचन्द्र दासके दार्जिलिङ्ग-वाले देहाती बाड़ीपर पहुंचा। इन्होंने ही मुझे तिब्बती भाषा पढ़ाई थी। जब मैंने उनका द्वार खटखटाया तो एक बच्चेने द्वार खोला। वह मुझे भूल गया था, वह मेरा नाम पूछने लगा, इतनेमें ही श्रीमती शरत आई और पूछा कि मैं किस कामसे आया हूं।

मैंने हंसकर उत्तर दिया—'क्या आपने मुझे नहीं पहचाना?'

मेरा शब्द सुनकर शरत् बाबूने पहचान लिया। वह बाहर आये और कहा—'ओहो, मिस्टर कावागुची आइये!'

मेरा सामान नौकर भीतर ले गये। मैं भी भीतर गया। शरत् बाबूको मेरे लौट आनेसे बड़ा हर्ष हुआ। उन्होंने कहा कि तुम्हारे दो पत्रोंसे मुझे तुम्हारा सब हाल मालूम हो गया था। उसने त्सारोंगवाका हाल भी कहा कि वह मुझसे बिना मिले ही चला गया। वह पत्रमें लिखना चाहते थे कि मुझे शीघ्र ही लौट

आना चाहिये क्योंकि अब और पढ़नेकी आवश्यकता नहीं है। हम दोनों आधी राततक बातें करते रहे और फिर सो गये।

दूसरे दिन मुझे जोरसे ज्वर हो गया। ज्वरके उतरनेपर मेरे शरीरकी शक्ति बिलकुल ही जाती रही, हाथ पैर हिलानेकी भी शक्ति नहीं रही। शरत् बाबू रातभर मेरे पास रहे। डाक्टर-को बुलाया तो उसने कहा कि यह तिस्ता ज्वर है। यह ज्वर बड़ा ही भयङ्कर होता है। मुझे मालूम हुआ कि मैं नहीं बचूंगा। मैंने चाहा कि एक वसीयत लिख दूं कि जो पुस्तकें मैं तिब्बतसे लाया हूं वह जापान भेज दी जावें और इम्पीरियल लाइब्रेरीमें अथवा और किसी बड़ी लाइब्रेरीमें रखी जावें जहां मेरे देशके लोग उनको पढ़ सकें। यह इच्छा मैंने टूटे फूटे शब्दोंमें शरत् बाबूपर प्रकाश की। उन्होंने उत्तर दिया कि इसकी आवश्य-कता नहीं है तुम अच्छे हो। परन्तु डाक्टरने कहा है कि तुम बिलकुल चुपचाप पड़े रहो।

बुद्ध भगवानकी कृपासे तीन दिनमें मेरी अवस्था कुछ ठीक हुई और आठ दिनमें इतनी शक्ति हुई कि मैं अपने हाथ पैर हिला सका। इस समय मेरी इच्छा हुई कि मैं अपने घर जापान तार दे दूँ कि मैं यहां आ गया हूं। परन्तु जापान तीन शब्द भेजनेके लिये भी ३७ रुपये लगते और मेरे पास केवल दो रुपये शेष थे। मैंने शरत् बाबूसे रुपया उधार लेना भी उचित न समझा, चिट्ठी भेजना ही निश्चय किया। चिट्ठी लिखकर भेज दी परन्तु मुझे याद नहीं कि मैंने क्या लिखा था। एक महीनेमें मैं चारपाईसे

उठने योग्य हुआ। लासामें ठहरकर मैं बहुत स्वस्थ हो गया था परन्तु अब मैं बहुतही क्षीण हो गया। डाक्टरने कहा कि अभी दार्जिलिङ्गमें ही तीन महीने रहना चाहिये क्योंकि अभी भारतवर्ष-की गर्मी सहन न कर सकोगे। मैं भी ठहर गया परन्तु अक्टू-बरतक लासासे मैंने अपने मित्रोंके विषयमें कुछ न सुना। एक और भी कारण था कि इन दिनों फारीसे दार्जिलिङ्गतककी राह बन्द हो जाती है क्योंकि इन दिनों ज्वर बहुत फैल जाता है। मैं भी उसके फन्देमें आ गया था परन्तु ईश्वरने बचा लिया। अक्टूबरमें मुझे लासाके एक काफ़िलेने आकर भयानक सम्वाद दिया।

बानवेवां परिच्छेद

तिब्बतके मित्रोंपर विपद्

मैंने सुना कि मेरे चले आनेपर एक महीना भी न बीता होगा कि मेरे जान पहचानके बहुतसे लोग पकड़े गये। मेरे मित्र अर्थसचिव, उनकी पत्नी और उनका एक नौकर भी पकड़ा गया। नये अर्थसचिव छोड़ दिये गये क्योंकि उनसे मुझसे कुछ घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं था। सेरा विहार बन्द हो गया। त्सारोंगवा और चोनजो भी बन्दी किये गये। जिन मकानोंमें मैं आया गया था वह सब तीव्र दृष्टिके शिकार बने। इससे

बचनेके लिये लासामें घूंसें भी खूब चलीं। वास्तवमें तिब्बतवाले झूठ बोलकर लोगोंको विस्मित करनेमें बड़े प्रसन्न होते हैं। इससे मैंने समझा कि इस कहानीमें बहुत सा झूठ मिला हुआ है परन्तु फिर भी मुझको सन्देह रहा।

इसी भांतिके कुछ सम्वाद दार्जिलिङ्गके मजिस्ट्रेटके पास भी पहुंचे। उन्होंने मुझे बुलाया और वहांके लामाओंकी संख्या, शिक्षाकी रीति, सेरा विहारके नियम, इत्यादि बातें पूछते रहे। और पूछा कि क्या वहांके समाचारोंपर तुम्हें विश्वास है। मैंने उनसे भी यही कहा कि तिब्बती और वहांके चीनी दोनों बातको बढ़ा लिया करते हैं। वे लोग यह भी कहते हैं कि रूसी सिपाही लासामें स्वतन्त्र रूपसे घूमते फिरा करते हैं परन्तु मैंने ऐसा कभी नहीं देखा। जो मंगोलियन रूसी सरकारमें नौकर हैं वह अवश्य दिखलाई देते हैं।

यहांके अंग्रेज अफसर तिब्बतका हाल जाननेके लिये सदैव ही सचेष्ट रहते हैं। जो बात उनको किसी कामकी मालूम होती है उसको तुरन्त ही नोट कर लेते हैं। घूम नगरमें एक अफसर इसी कामके लिये रखा गया है। जो कोई तिब्बतसे आता है उससे वह बातें करता है यदि कोई आवश्यक बात मालूम होती है तो उसको वहांके गवर्नरके पास ले जाता है और वहां सब हाल पूछा जाता है।

दार्जिलिङ्गका गवर्नर टूटी फूटी तिब्बती भाषा बोल सकता है अतएव कभी २ दुभाषिया भी रखना पड़ता है। सरकार

अफसरोंको तिब्बतकी भाषा पढ़नेके लिये बड़ी उत्साहित कर रही है। उच्च परीक्षा पास करनेवालेको सरकार १००० रुपया पारितोषिक देती है। इससे मालूम होता है कि ब्रिटिश सरकारको तिब्बतका हाल जाननेकी कितनी प्रबल इच्छा रहती है।

पहले काफ़िलेकी बातपर मैंने विश्वास नहीं किया परन्तु दो सप्ताह पीछे एक और काफ़िलेने आकर वही सम्बाद दिया तब मुझे बड़ी चिन्ता हुई। थोड़ी देर पीछे मेरी जान पहचानका एक व्यापारी दार्जिलिङ्गमें आया, मैं उससे मिलने गया। उसने कहा कि,—'जैसा आपने सुना है वैसा नहीं है पर यह सत्य है कि पुराने अर्थसचिव पकड़ लिये गये थे परन्तु छोड़ दिये गये। सुनते हैं कि फिरसे वह कैद किये जायेंगे। मैं चला था तबतक वह अपने घर थे परन्तु क्या हुआ सो मुझे ज्ञात नहीं। सबसे बड़े अपराधी आपके गुरु त्सारोंगवा, उसकी स्त्री और चोनजो हैं। उनके नित्य प्रति ३०० कोड़े झाऊकी हरी शाखासे मारे जाते हैं। उन्होंने आपके जापानी नहीं वरं अंग्रेजी जासूस समझा था।

मैंने कहा—'क्या यह बात किसीने कही थी?'

उसने उत्तर दिया,—'हां, किसीने कही थी। एक सरकारी रिपोर्टमें नयातोंगके बड़े अफसरने दलाईलामाको लिखा है कि जिसको लोग जापानी बतलाते थे वह अंग्रेज था। वह भारत सरकारके एक उच्चपदाधिकारीका भाई था। अपने भाईके कहनेसे वह जापानी और चीनी बनकर तिब्बतमें आया। उसने यह

भी लिखा है कि इसका पत्र-व्यवहार दार्जिलिङ्गसे होता था जिसको कि त्सारोंगवा और चोनजो लाया और ले जाया करते थे। उस रिपोर्टमें यह भी लिखा है कि तुम साधारण मनुष्य नहीं हो, तुम जादूके काम कर सकते हो। तुम पहरेवाले फाटकोंसे भीतर नहीं गये;बल्कि आकाशसे उड़कर तिब्बतमें पहुंचे।

इतना कहकर व्यापारीने मुझसे कहा कि तुम नयातोंगसे कैसे आये? क्या तुम उड़ नहीं सकते हो?

मैंने उत्तर दिया कि'मैं पक्षी नहीं मैं कैसे उड़ सकता हूं?

उसने कहा—'परन्तु नहीं यहां लोग कहते हैं कि तुम उड़ सकते हो। क्योंकि जो मुर्देको जिला सकता है वह उड़ भी सकता है। तिब्बतमें लोगोंका विश्वास है कि नयातोंगके अफसरने यह रिपोर्ट की है।

मैंने कहा कि मैं तुम्हें इस बातका प्रमाण दे सकता हूं कि इसी अफसरने मुझे पासपोर्ट दिया था।

व्यापारीको मेरी इस बातका विश्वास नहीं हुआ क्योंकि दार्जिलिंगमें भी मेरी दैवी शक्तिकी कथायें प्रसिद्ध हो गई थीं जो इस व्यापारीने भी सुनी थीं। मेरी समझमें ये बातें उसी अफसरने अपने बचनेके लिये उड़ाई थीं क्योंकि यदि सत्य २ कह देता तो वह भी पकड़ा जाता। कुछ दिन बाद वह फिर मेरे पास आया तब मैंने उसको पासपोर्ट भी दिखलाया तो व्यापारीने कहा कि तुमने उसको अपनी शक्तिसे मोहित करके उससे पासपोर्ट ले लिया होगा।

तिब्बतमें ऐसे घोर अत्याचारोंको होते हुए सुनकर मैं शान्त न रह सका। अर्थसचिवका कष्ट सुनकर मैं बड़ा अधीर हो गया था। उसके घोर तथा गम्भीर स्वभावने उसके विरुद्ध बहुतसे शत्रु पैदा कर दिये। रोंगवा और उसकी स्त्री, मेरा गुरु, और मेरा विहार तथा अन्य सभी मेरे स्नेही व्यक्ति इस अवसरमें बड़े सङ्कटमें थे। इस अवसरपर कैसे मैं सुखकी नींद सो सकता था। मैंने चाहा कि मैं उड़कर तिब्बतमें पहुंचकर उनकी सहायता करूं। उनको विपत्तिसे मुक्त करनेके बहुतसे सङ्कल्प विकल्प मेरे हृदयमें उठने लगे। दो ही उपाय केवल मेरे सामर्थ्यमें थे। एक तो मैं चीन नरेशके पास जाता, और इस अत्याचारको उनके द्वारा रुकवाता।

यदि मैं स्वयं या जापान सरकारके द्वारा चीन सरकारमें प्रार्थनापत्र भेजता तो उसके स्वीकार होनेमें भी सन्देह था। चीन सरकारका स्वयं तिब्बतसे आतङ्क और विश्वास उठ चुका था। तिब्बतके अधिकारियोंतकको विश्वास था कि चीन नरेशने अंग्रेजी गोरी स्त्रीसे विवाह कर लिया है। चीनकी अंग्रेजों-से सन्धि है। इसीलिये अंग्रेज तिब्बतके पीछे पड़े हैं। इस-के अतिरिक्त वे यह भी जानते हैं कि चीन स्वयं निस्सहाय है इसलिये तिब्बतके अफसर चीन नरेशकी आज्ञाकी उपेक्षा कर सकते हैं। बड़ी बात तो यह है कि तिब्बतवाले अपने राज-नीतिक मामलोंमें चीनका हस्तक्षेप नहीं चाहते क्योंकि चीन प्रायः सभी अन्य देशोंको अपना मित्र कहता है।

दूसरी तरफ नेपालसे तिब्बतके लोग बहुत भय खाते हैं। नेपालके लोग भी अधिक बलवान हैं। नैपाली गुर्खा पलटनें अंग्रेजी शैलीसे शिक्षित होकर खूब शूरवीर सिद्ध हुई हैं। इस कारण तिब्बती लोग नैपालके प्रति कोई उद्धतता नहीं करते और चीनकी अपेक्षा उसे अधिक आदर और आतंकसे देखते हैं नैपालके बहुतसे विद्यार्थी जापान पढ़ने जाते हैं इस कारण मुझे और भी आशा थी कि नैपाल सरकार इस कार्यमें अवश्य मेरी सहायता करेगी।

परन्तु इस कामके लिये रुपयेकी आवश्यकता थी और मेरे पास रुपया न था। इसके अतिरिक्त कुछ कर्जा भी था। भाग्यसे इसी समय मुझे सहायता मिली अर्थात् जापानसे मेरे मित्रने मेरे लिये तीन सौ येन इकट्ठे करके मेरे पास भेज दिये। मैं जानेको तय्यार तो हो गया परन्तु मेरे लिये एक रुकावट थी। मैं तिब्बती भाषाका एक व्याकरण बना रहा था। इसके लिये कमसे कम एक वर्ष अपेक्षित था और लासाका काम बहुत आवश्यक था अतएव मैंने शरत् बाबूसे कहा और नवम्बरके अन्तमें दार्जिलिङ्गसे कलकत्ते आया।

तिरानवेवां परिच्छेद



मित्र मण्डलमें

कलकत्तेमें मैं महाबोधि सोसाइटीके मकानमें ठहरा। एक दो दिन वहां ठहरकर मैं अपने जापानी सहपाठी मि० कोजन ओमियाके पास गया। वह यहां संस्कृत पढ़ते थे। उसको विचार भी नहीं था कि मैं इसी नगरमें उससे मिलूंगा। और तिब्बतकी पोशाकमें मिलूंगा। नौकरने कहा कि वह अपने कमरेमें हैं यह सुनकर मैं बिना कहे ही उसके पास चला गया। मैंने बहुत दिनोंसे अपनी भाषा भी नहीं बोली थी अतएव एकाएकी कोई शब्द मुखसे न निकला; मैंने झुककर प्रणाम किया और उसकी ओर देखने लगा। वह भी मुझे देखने लगा और एक अनजान मनुष्यको भीतर आते जान अप्रसन्न होकर हिन्दुस्तानी भाषामें बोला, कहांसे आये हो?

मुझे उसकी यह बात सुनकर हंसी आयी और मैंने जापानी भाषामें कहा, क्या तुम ओमिया नहीं हो?

उसने फिर भी नहीं पहचाना और कहा, 'तुम जापानी हो और मुझे पहचानते हो परन्तु तुम कौन हो?'

मैंने कहा—'मैं कावागुची हूं।'

यह सुनते ही वह भौंचक रह गया। वह अपने मकानके

भीतर मुझको ले गया। बहुत देरतक बातें होती रहीं। मैं वहीं रहने लगा।

तारीख १४ दिसम्बरकी सन्ध्याको मेरे जापानी गुरु डा० ई० इनोई आये और अपने शिष्यको तिब्बतसे जीवित लौटा हुआ देखकर बड़े प्रसन्न हुए। दूसरे दिनमें गुरु महाशयके घरपर गया और उनको ले जाकर दार्जिलिङ्ग इत्यादिकी सैर कराई। पीछे उनके साथ बुद्धगयाके दर्शन करने गया। मैं बुद्धगया नहीं वरं देहली जाना चाहता था जहां कि जापानके लेफ्टिनेण्ट जनरल ओक् थे। वह पञ्चमजार्जके राज्यारोहणके समय देहली दरबारमें गये हुए थे। मैं ओक् महाशयके द्वारा नैपाल महाराजके प्रति परिचय-पत्र प्राप्त करना चाहता था जिसके बलपर मैं तिब्बत सरकारपर दबाव डालता। बुद्धगयासे मैं बनारस गया। डाक्टर इनोई बम्बई जारहे थे, मैं उन्हें बनारसमें छोड़कर स्वयं देहली चल दिया। बांकीपुरमें मुझे पांच घण्टे ठहरना पड़ा। यहां मुझे एक हिन्दू मिला उसने मुझसे अंग्रेजीमें पूछा कि 'क्या आप तिब्बती हैं?'

मैं—नहीं।

हिन्दू—क्या आप नैपाली हैं?

मैं—नैपाली भी नहीं।

हिन्दू—क्या आप तिब्बतसे नहीं आ रहे हैं?

मैं—हां मैं वहींसे आ रहा हूं।

हिन्दू—आप तिब्बतसे आ रहे हैं परन्तु तिब्बतके नहीं हैं?

मैं—यह कोई आवश्यक नहीं है जो तिब्बतसे आता हो वह तिब्बती ही हो।

जिस समय मैं यह बातें कर रहा था एक मनुष्य दौड़ता हुआ मेरे पास आया और जल्दीसे हाथ बढ़ाकर मुझसे मिला और मेरे तिब्बतसे लौट आनेपर बड़ा हर्ष प्रगट किया। यह मेरा पुराना परिचित पादरी, फूजी सेन्सो था।

वह बोले—यहां आप किधर जानेकी प्रतीक्षामें हैं।

मैं—डा० इनोईके साथ बुद्धगया जा रहा हूं।

फूजी—हम तुम दोनोंका एकही भाग्य है। मैं भी गयामें मान्य पादरी ओतानीकोजुइके पास जा रहा हूं।

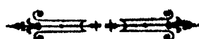
हमने ओतानीको अपने आनेकी सूचना तारसे भेज दी। और हम तीनों गयाको रवाना हुये। स्टेशनपर ओतानीने गाड़ी भेज दी थी। डाक बंगलामें ओतानी महोदयसे खूब बातें हुईं। ओतानीने पूंछा आप कहां जा रहे हैं।

मैंने कहा, मैं नैपाल जानेको हूं। फूजी यह बात सुनकर बड़ा विस्मित हुआ। वह भी यही जानना चाहता था। मैंने कहा 'मुझे वहां दो काम हैं। एक तो मुझे अपनी पुस्तकें और सामान लाना है? मैं एक व्यक्तिके पास छोड़ आया हूं। और दूसरा काम बड़ा गम्भीर है। तिब्बतमें मेरे बहुतसे मित्र हैं वे बन्दीगृह-में डाल दिये गये हैं। यद्यपि मुझे अपनी सफलतामें सन्देह है परन्तु मैं चाहता हूं नैपालकी सहायतासे उनको सङ्कटसे मुक्त करूं।

मि०फूजीने मुझे बुरा भला कहकर कहा—'तुम अब कालिज-के लड़के नहीं हो। तुम्हारे देशके लोग तुम्हें देखनेके लिये व्यग्र हैं और तिब्बतके सब हाल तुमसे सुनना चाहते हैं। तुम यह सब विचार छोड़ दो क्योंकि वहां सिवाय ज्वर, जङ्गली पशु और डाकुओंके हाथोंमें पड़नेके और कुछ फल नहीं है, यह सब तुम बहुत कुछ भोग चुके हो। तुम्हारे लिये यही अच्छा है कि घर चले जाओ।

पादरी मि० ओतानी भी वहीं उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि 'कावागुची मैं तुम्हारी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता हूं। परन्तु तुम अपने कामको आपही समझ सकते हो व्यर्थके झगड़ेसे जहांतक हो सके बचे रहो।' मैंने कहा आप जो कुछ कहते हैं सब ठीक है। यदि मैं आप लोगोंका कथन ही मान लूं तो जापानी धर्म कहां रहेगा। मैं बुद्ध भगवानका सेवक हूं। हरएकको संकटसे बचाना मेरा धर्म है। ऐसे भी बहुतसे हैं जिन्होंने मुझपर बड़ी कृपाएं की हैं, जिनकी सहायतासे मैं तिब्बतमें सुरक्षित रहा। वे अब कड़ी जेलयातना भुगत रहे हैं। मैं इधर इतने सुखमें हूं और कितने ही कष्ट भोग रहे हैं। वे अब भी मुझे लासाकी कालकोठरियोंमें सख्त सर्दीकी यातना भोगते दिखाई पड़ रहे हैं। दिनमें वे कोड़ोंसे पिटते हैं। दिन भरमें थोड़से भूने जौ उन्हें खानेको मिलते हैं। ऐसी दशामें मैं उनको त्यागकर घर कैसे जाऊं।

चौरानवेवां परिच्छेद



नैपालके दो महाराज

यहांसे मैं कलकत्ते गया और वहांसे नेपालको चल दिया। कलकत्तेमें मैं एक बंगाली प्रोफेसर केदारनाथ चटर्जीसे मिला। यह महाशय नैपालके काठमण्डू नगरमें म्यूनिसिपेलिटीके स्कूलके प्रिन्सिपल थे। नैपालके महाराज इनको बहुत चाहते थे। उन्होंने मुझे एक चिट्ठी नेपालके महाराजके नाम लिख दी। नैपालमें तिब्बत, भूटान और शिकमके लोग वीलगज्ज़ीके कमाण्डरिन चीफ़-के पासपोर्टसे जा सकते हैं। परन्तु विदेशी मनुष्य महाराजके पासके बिना नहीं जा सकते हैं। अतएव मैंने चटर्जी महाशयसे यही कहा कि मैं नेपालके बौद्ध तीर्थस्थानोंके दर्शनोंका इच्छुक हूं।

तारीख १० जनवरी १९०२ को मैं कलकत्तासे चला और दूसरे दिन सन्ध्याको नेपालकी सीमा रक्सौलपर पहुंच गया। जब मैं स्टेशनपर पहुंचा तो छः बज चुके थे। अपने असबाबको कुलियोंपर उठवाकर सिमन नदी पार की। भारतवर्ष और नैपालकी यही सीमा है। यहांपर मैं रोक दिया गया क्योंकि नेपालके महाराज घरको लौटे आ रहे थे। सीमाके बाहरके लोग पूरी २ जांचके बिना भीतर नहीं आ सकते। मैंने देखा कि वहांके रहनेवाले भी रोके गये थे परन्तु बारम्बार प्रार्थना करनेपर उन-को जाने दिया गया। मैंने देखा घूंस यहां भी एक अच्छी युक्ति

है। मैं विदेशी था। शेषमें मैंने चटर्जीका एक पत्र जो नैपाल महाराजके नाम था दिखलाया। यह पत्र देखकर पुलीसवालेने मुझको वीलगञ्जीके कमाण्डरिन चीफके पास भेजना चाहा जो कि इस समय महाराजके स्थानापन्न होकर काम कर रहा था।

सिमनकी चौकीसे वीलगञ्जी एक मील दूर है। मैं रातके ग्यारह बजेतक राह देखता रहा परन्तु जब अधिक देर होती मालूम हुई तो अपने लिये चाय बनाने लगा। इतनेहीमें महलके पुलीसके सिपाहीने मुझे विलगञ्जी चलनेको कहा। वीलगञ्जी-में मैं एक अस्पतालके सामने एक झोपड़ीमें रातभर रखा गया। दूसरे दिन सवेरे मैं रीजेण्टके दरबारमें लाया गया। वहां सन्ध्या-के पांच बजेतक ठहरा। सन्ध्ययाको रीजेण्ट महाशयसे भेंट हुई जिन्होंने कहा कि तारीख १४ को महाराज आरहे हैं तब वह मुझे उनसे मिला देंगे।

यहां दो महाराज हैं। एक को पांच सरकार और दूसरेको तीन सरकार कहते हैं। तीन सरकार तो वास्तविक महाराज हैं और पांच सरकार नाममात्रके महाराज हैं। वास्तविक महाराज की तरफसे इनको पेन्शन मिलती है। तीन सरकार वहांके प्रधान मन्त्री हैं और उनको ही वहांकी प्रजा महाराज जानती और मानती है। और पांच सरकारका नाम तो सरकारी अफसर ही जानते हैं प्रजाका उनसे कोई विशेष लाभ नहीं है। जिन महा-राजके आनेको मैंने सुना था वह तीन सरकार अथवा प्रधान मन्त्री थे।

तारीख १४ की सन्ध्याको प्रधान मन्त्री वोलगञ्जीमें पहुंचे। इनका स्वागत बड़ी धूमधामसे हुआ। सैकड़ों हाथी साथमें थे और उनपर बहुतसे कुंवर इत्यादि महाराजके कुटुम्बी सवार थे। यहां बहुभार्याकी प्रथा है अतएव कुंवरोंकी भी बहुत संख्या है। नगरमें आ जानेपर १३ तोपोंकी सलामी हुई। रीजेण्टने मुझसे दूसरे दिन पांच बजेतक प्रतीक्षा करनेको कहा और कहा कि १० बजेसे पांच बजेतकके बीचमें मैं मिलनेका प्रबन्ध कर दूंगा।

महाराज पहली बार पहले किसीसे भेंट नहीं करते परन्तु मेरे ऊपर पहली बार ही मिलनेकी विशेष कृपा की और पांच बजे जब वह हवा खाने निकले उस समय भेंट हुई। मैंने कुछ वस्तुयें जापानी कारीगरीकी भेंट कीं जोकि स्वीकृत हो गईं। महाराज मुझसे बहुत प्रसन्न मालूम होते थे। उन्होंने उन वस्तुओंके दाम भी देने चाहे। मैं भीतर बुलाया गया। मेरे साथ ऐसे व्यवहार किया गया मानों मैं उनका बड़ा पुराना मित्र था।

पचानवेवां परिच्छेद



दो महाराजाओंसे भेंट

महाराज अपने कमरेमें जाकर पहले आप बैठ गये। पीछे एक दूसरे महाशय भी उनके पास बैठ गये। मैंने उन्हें मन्त्री समझा था। पीछे मुझे ज्ञात हुआ कि वह भी असली महाराजसे

कम नहीं थे। हमारी बातचीत एक प्रकारकी प्रश्नोत्तरी सी थी जो संक्षेपतः नीचे लिखता हूं।

'मैंने सुना है कि आप तिब्बत हो आये हैं। किस लिये गये थे?'

"महाराज, मैं बौद्ध धर्मका ज्ञान प्राप्त करने गया था?"

प्रधान मन्त्रीने कहा कि "मैंने सुना है कि आपके वहां बहुतसे उच्च पदाधिकारियों, पुरोहितों और तिब्बतके प्रभावशाली पुरुषों-से मित्रता हो गयी।"

"महाराज, मैंने जितने दिनों वहां रहा विद्या प्राप्त करनेमें ही बिताया है। राजनीतिक अवस्थाका परिचय प्राप्त करनेका मुझे अवसर नहीं मिला।"

"आपको कोई बात छुपानेकी आवश्यकता नहीं। हमसे तिब्बतकी बड़ी मित्रता है। हमसे उनको कोई हानि नहीं पहुंच सकती। मैं केवल अपने ज्ञानके लिये ही वह बातें पूछता हूं। इसके अतिरिक्त मैं समझता हूं कि आपको बहुत अच्छी जानकारी है।"

'श्रीमहाराज, आपसे जैसा सम्बन्ध है उसको मैं भली भांति जानता हूं। मैं केवल वही बात नहीं कहना चाहता जिसका मुझे भली भांति ज्ञान नहीं है।'

प्रधान मन्त्रीने कहा, "मैं समझ गया मैं आपकी भूल नहीं निकालना चाहता हूं। मैं केवल आपके विचार सुनना चाहता हूं।"

'जैसी श्रीमान्की आज्ञा, सबसे प्रधान शक्ति इस समय तिब्बतमें दलाईलामा हैं। उनके दरबारमें सबसे शक्तिशाली व्यक्ति शाता है।'

'चीनके राजदूतकी क्या शक्ति है?'

'श्रीमान्, उसकी शक्ति अब घट रही है।'

'मि० कावागुची आपने यह बात कैसे जानी?'

'इसके दो कारण हैं महाराज, एक तो चीनराज्यकी अशक्तता और दूसरे दलाईलामाकी विद्वत्ता और राजनीतिज्ञता।'

'आप रूसके टसानकेनवोको जानते हैं?'

'नहीं महाराज, जिस समय मैं लासामें था वह न थे।'

'परन्तु आपने उसके विषयमें कुछ सुना तो होगा?'

'हां: महाराज।'

'तिब्बतके सरकारमें सबसे अधिक मित्रता उसकी किससे है? क्या आप समझते हैं कि दलाईलामा और उनके प्रधान सहायकोंसे उसकी गुप्त मन्त्रणा होती रहती है?'

'दलाईलामाके साथ शाताका रूसपर बड़ा विश्वास है। पर रूसपर अन्य सरकारी अधिकारी लोगोंका बड़ा अविश्वास तथा घृणा है।'

यहांपर प्रधान मन्त्रीके पास बैठे हुए महाराजने नैपाली भाषामें पूछा कि जो बातें आप लोगोंको मालूम हैं उनसे ये मेल खाती हैं या नहीं। इसका उत्तर भी हांमें मिला। प्रश्नोत्तर फिर आरम्भ हुआ।

मन्त्रीने पूछा, 'यदि तिब्बत और रूसमें सुलह हो जावे तो आपकी सम्मतिमें क्या उसका हमारे देशपर भी विशेष प्रभाव पड़ेगा ?'

'श्रीमन्, मेरी अल्प बुद्धिमें दोनों देशकी सन्धिमें कोई रोक नहीं है। यदि दोनों देशोंमें सुलह हो और सर्वसाधारणको मालूम हो तो या तो दलाईलामाको विष दे दिया जावेगा अथवा तिब्बतभरमें असन्तोष फैल जावेगा।'.

'आपने यह परिणाम कैसे निकाला ?'

'श्रीमन्, क्योंकि थोड़ेसे उच्चपदाधिकारियोंके अतिरिक्त सब ही सरकारी लोग और प्रायः सबही सर्वसाधारण इस सन्धिके विरोधमें है।'

"तीन सरकार महाराजने और भी बातें पूछीं जिनका यहांपर उल्लेख करना व्यर्थ है। एक बात उन्होंने बड़ी व्यग्रतासे पूछी कि आप किस गुप्त राहसे तिब्बत गये थे।"

मेरे सहायक और मित्र बहुत थे यदि मैं बतलाता तो सम्भव था कि किसी न किसीपर विपद् आपड़ती अतएव मैंने बड़े नम्र भावसे यह कह दिया कि मैं अंग्रेजी इतना नहीं जानता हूं कि ऐसे कठिन वर्णनको उस भाषामें बतला सकूं। यदि श्रीमान् का कोई विश्वसनीय व्यक्ति तिब्बती भाषा समझता हो तो उस से मैं विस्तारसे कह सकता हूं।

अन्तमें उन्होंने पूछा कि जापानने इतनी शक्ति बढ़ा ली इसका क्या कारण है ? इसके उत्तरमें मैने कहा कि शिक्षा और देश

भक्तिका यह फल है। अब मुझे छुट्टी मिली और दूसरे दिन दो बजे फिर आनेकी आज्ञा मिली।

छियानवेवां परिच्छेद



दूसरी भेंट

दूसरे दिन निर्दिष्ट समयपर मैं राजद्वार पहुंच गया परन्तु सिपाहीने पांच बजेतक भीतर न जाने दिया। जब वहां पहुंचा तो केवल इतना ही उत्तर मिला कि आज महाराजको आवश्यक काम है। कल आपको उचित कागज पत्र मिल जावेगा।

जब मैं अपने स्थानपर पहुंचा तो मेरे नौकरने कहा कि आपको धोखा दिया गया है। कल लम्बानतक आप नहीं पहुंच सकेंगे। मैं नाहक ही २॥ मील गया और आया।

ता: १७ को मैंने एक इक्का किराया किया। इक्केपर मैं बिनविती पहाड़पर पहुंचा। राहमें सरकारी लम्बानमें भी गया। यहां दलाई जंगलके किनारे नैपाल महाराजके बहुत खेमें लगे हुए थे। यहां सरकारी चार हजार सिपाही थे। इनकी वर्दी अंग्रेज़ी सिपाहियोंकी भांति थी।

मुझको भीतर नहीं घुसने दिया गया। प्राय: चार घंटे वहां ठहरना पड़ा। बादमें महाराजके दर्शन हुए। वह हाथीपर सवार होकर शिकारको जा रहे थे। उन्होंने मुझको पहचान लिया परन्तु

अवकाश न होनेके कारण दूसरे दिन सवेरे आनेको कहा। इतना कहकर चले गये। मेरे नौकरने फिर मुझसे वही बात कही परन्तु मैंने उसको चुप करा दिया।

दूसरे दिन सवेरे मैं फिर वहां पहुंचा परन्तु महाराजके खेमें-का कुछ पता न चला। इसी समय एक सिपाहीने मुझको रोका जब मैंने अपना हाल कहा तो उसने उत्तर दिया कि अभी समयमें देर है। यह कहकर उसने एक भृत्यसे कहा कि इनको अहातेके बाहर कर दो। मैंने सोचा कि यदि मैं अहातेके बाहर हो गया तो फिर महाराजके दर्शन दुर्लभ हो जावेंगे। अतएव वहीं जमे रहनेके लिये हठ करने लगा। मैंने कहा कि मैं महाराजकी आज्ञासे आया हूं। परन्तु उसने एक न मानी और मेरी गरदन पकड़कर अहा-तेके बाहर कर दिया। बाहर निकल जानेपर सिपाही और और लोग मेरा परिहास करने लगे। यद्यपि मैं बहुत ही दृढ़चित्त था फिर भी मुझे क्लेश हुआ। मैं बहुत देरतक बाहर घास पर बैठा रहा और तिब्बतके मित्रोंके दुःखपर आंसू बहाता रहा।

ग्यारह बजे प्रधान मन्त्री मेरे पाससे निकले जिनसे मैंने अपना दुःख कहा। उन्होंने शीघ्र ही मुझको महाराजके खेमेमें भेज दिया जहां दो घण्टे ठहरनेके पीछे महाराज पधारे।

महाराजने मुझसे पूछा कि क्या चाहते हो। मैंने कहा, पासपोर्ट। उन्होंने कहा कि पासपोर्ट तुमको मिल जावेगा। राहके खर्चके लिये तुम्हारे पास रुपया है। मैंने कहा कि हां मेरे पास ३०० रुपये हैं। महाराजने इतना रुपया यथेष्ट न समझकर नौकरको

बुलाकर २०० रुपये और दिलवाये। मैंने नम्रभावसे यह कहकर रुपये लौटा दिये कि मैं यह रुपये कमाने नहीं आया हूं। यह सुनकर महाराजने कहा:तो फिर क्यों आये हो? मैंने कहा कि बौद्ध धर्मकी संस्कृतकी पुस्तकें लेनेको आया हूं इनके बदलेमें मैं जापानी भाषाकी पुस्तकें जापान जाकर भेज दूंगा। यह सुनकर महाराजने कहा कि जो पुस्तकें आपको चाहिये वह काठमण्डूके रिजेण्टको लिखकर दे दो। मैं वहां २५ रोज़में आऊंगा। यहांसे मेरी रक्षाके लिये एक सरकारी सिपाही काठमण्डूतकके लिये मिल गया।

सत्तानवेवां परिच्छेद

फिर काठमाण्डू

मेरा पासपोर्ट एक पुलीसके सिपाहीके द्वारा मुझे मिला। यहांसे मैं एक गांव सिमलामें पहुंचा। वहीं मैं अपना सामान और अपनी गाड़ी छोड़ गया था। यहां आकर मैंने देखा कि मेरा इक्का और हांकनेवाला गायब थे। मैंने उसकी मजदूरी पहले ही दे दी थी। पुलीसमैनने चाहा कि मेरे नौकरको मारे कि उसने इक्केवालेको क्यों चला जाने दिया परन्तु मैंने ऐसा नहीं करने दिया। इस समय दिनके तीन बज चुके थे। काठमांडू यहांसे आठ मील था और मार्ग जङ्गलका था। मुझसे कहा

गया कि यहां सिंहका भय है परंतु एक बार मैं यहां आ चुका था अतएव वहांसे आगे बढ़ा ।

दो दो मीलपर पानीके हौज बने हुये थे और सब हौज नलों द्वारा एक दूसरेसे मिले हुए थे । इन हौजोंके अतिरिक्त वहां कहीं पानी नहीं था । यह हौज नैपालकी महारानीने मरते समय बनवाये थे । इन हौजोंका इतिहास सड़कपर पत्थरपर खुदा लगा था । यह कई भाषाओंमें अर्थात् नैपाली, तिब्बती, अंग्रेजी- हिन्दी, और फारसीमें लिखा गया था ।

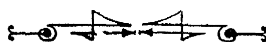
रातसे पहले मैं विचागोरी पहुंच गया । यहां पहले पहल मैंने सिंहकी गर्जन सुनी । सिमलासे तिसपातीतक तीन बार मेरे पासपोर्टकी जांच हुई । यहां एक चुङ्गीघर भी है । मैं यहां केवल आधे घण्टेके लिये ठहरा । यहांसे मेरा सिपाही बदलकर दूसरा आ गया । तिसगढ़ीमें पहुंचकर मैंने फिर हिमालय-की विशाल शोभाका दर्शन किया । सहस्रों वर्ष पहले भगवान शाक्य मुनि बुद्ध भी जङ्गलों और पर्वतोंमें छः मासतक विचरते रहे । मैंने भी यही अनुभव किया कि उनके चरण चिन्होंपर ही मैं भी चल रहा हूं । मैंने भी लगभग उतने ही वर्ष हिमालयकी गिरि वन भूमियोंमें विचरण किया पर मैंने न निर्वाण पाया और न बोधिसत्व ही बना । मैं केरिकनेकी लोहेकी पुल पार करके रातको मारकूमें ठहरा । २१ तारीखको दोपहरके तीन बजे काठ-माण्डू पहुंचा ।

काठमाण्डू पहुंचकर मैं प्रधान मन्त्रीके मकानपर गया ।

सन्ध्याको उस दिन वह खाली नहीं थे अतएव दूसरे दिन आनेको कहा। यहां एक सिपाहीके बदलेमें मुझे दो बाडीगार्ड मिले। मेरा आनेका समाचार मेरे चार वर्षके पुराने मित्र बुद्धवज्रको भी मिल गया। उन्होंने अपने लड़के और कुछ नौकरोंके साथ एक घोड़ा मेरे लिये भेजा। ज्यों ही मैं मन्त्रीके घरसे निकला कि वह दिखलाई पड़े। घोड़ेपर सवार होकर मैं बुद्धवज्रके घर पहुंचा जहां उन्होंने मेरा बड़े आदरसे स्वागत किया। यहांकी रीतियां तिब्बतसे बिलकुल ही उल्टी हैं। यहां पुरुष अपने सामर्थ्यानुसार ३,५,१ जितनी चाहें स्त्रियां रख सकते हैं।

बुद्धवज्रके भी दो स्त्रियां और १३ लड़के थे। दूसरे दिन मैं नैपालके कमाण्डरिनचीफ भीम शमशेरके पास पहुंचा। हमारा स्वागत दूसरे तल्लेपर हुआ। वहां विलायती १४-१५ कुर्सियां रखी हुई थीं। कमरेमें नैपाली दरी और उसके ऊपर चद्दर बिछी हुई थी। दीवारपर वहींकी बनी हुई तसवीरें लगी थीं।

अठानवेवां परिच्छेद



प्रधान मन्त्रीसे बातचीत

मन्त्री भीम शमशेर बड़े ही सत्पुरुष हैं। उन्होंने पूछा,—'आपने हमारे देशको कैसा पाया ?'

'मैं यहां आकर बहुत ही प्रसन्न हुआ।'

'यह कैसे हो सकता है ?'

'केवल इसीसे नहीं कि यहांके वृक्ष पौधों इत्यादिका प्राकृतिक दृश्य बहुत मनोहर है बल्कि यह देश बिल्कुल अपने देशसा ज्ञात होता है। मुझे मालूम होता है कि मैं घरपर ही हूं। यहां आकर मुझे यात्राके सब कष्ट भूल गये।

मन्त्री महाशयने हंसकर कहा,—'यह हो सकता है। क्योंकि हम दोनों एक ही जातिके हैं परन्तु क्या वृक्ष पौधे भी वे ही हैं ?'

'श्रीमन्, केवल पहाड़ और झील इत्यादि ही नहीं प्रायः सब ही वृक्ष यहां जापान कैसे हैं। यहांकी चिड़ियां और फूल भी मैंने वैसे ही पाये। यहांकी एक और भी बात मेरे मन भाई है वह यह कि यहांके लोग बहादुर और विदेशीके लिये बड़े दयालु हैं।'

मन्त्री महाशय बहुत प्रसन्न हुए और वार्तालापका रुख बदल कर बोले,—'मैंने सुना है कि तिब्बतने रूससे सन्धि कर ली है। क्या आप इसके विषयमें कोई पक्का प्रमाण भी दे सकते हैं ?'

'मुझे पूरा २ प्रमाण तो नहीं मिला परन्तु यह देखकर कि त्सानीकेनवोंका लाया हुआ लवादा दलाईलामाने स्वीकार कर लिया। इससे विदित होता है कि अवश्य ही ऐसी कोई बात हुई होगी। दूसरी बात और भी है कि जबसे तिब्बतका राजदूत सेण्ट पिटर्सवर्ग (पिट्रो ग्रेड) से लौटा है, ऐसा मालूम होती है कि यदि कोई देश उससे लड़ना चाहे तिब्बत सरकार युद्धके लिये तय्यार है इन्हीं बातोंसे सन्धि हो गई मालूम होती है।

महामन्त्री—मुझे इसका विश्वास है परन्तु क्या आप बतला सकते हैं कि तिब्बतने किस बूतेपर यह काम किया ?'

'मैं तो एक लामामात्र हूं, राजनैतिक विषयोंसे मेरा जानकारी नहीं है परन्तु जहांतक मैं समझता हूं चीनके अशक्त होने और भारत सरकारके व्यवहारसे शंकित होकर ल्सानीकेनवोके राजनैतिक प्रयत्नोंसे यह हो रहा है।

'तिब्बत, भारत सरकारसे क्यों उद्विग्न है ?'

'इसका कारण यह है कि तिब्बत सरकार समझती है कि अंग्रेजी प्रायः सरकार ईसाई है और भारत सरकारके वहां जानेसे ईसाई धर्म फैलेगा और बौद्ध धर्मका नाश होगा। रूसको वह बौद्ध धर्मका पक्षपाती समझती है। जापान तिब्बतके लिये कोई देश ही नहीं है। इसके बाद मैंने स्वयं वार्तालापका रुख बदला और अपने उपकारी तिब्बती मित्रोंकी विपत्तिको कथाको विस्तारपूर्वक सुनाया और मैंने महाराजके दयाभावको जागृत किया और प्रार्थना की कि वे मेरा प्रार्थनापत्र तिब्बतमें दलाईलामातक भिजवा देनेकी कृपा करें। दूसरी बात मैंने संस्कृतकी पुस्तकोंकी कही जिनके देनेका प्रधान मन्त्रीने मुझे वचन दिया था। मन्त्री महाशयने मेरी दोनों प्रार्थनायें स्वीकार कर ली। उन्होंने तिब्बतके उच्चपदाधिकारियोंकी मूर्खतापर बड़ा खेद प्रगट किया और कहा कि जहांतक हो सकेगा मैं आपके इन कामोंमें सहायता करूंगा। परन्तु प्रधान मन्त्रीके बिना कुछ नहीं हो सकता है। जब वह यहां आवेंगे तो

मैं यथासाध्य आपकी सिफारिश कर दूंगा। पुस्तकोंके लिये उन्होंने कहा कि जितने दिन नैपालमें आप रहना चाहते हैं उतने दिनोंमें सब पुस्तकें नहीं मिल सकतीं। मैंने कहा कि जितनी अभी मिल जावें वह अब ले लूंगा शेषको मैं दो वर्षके भीतर फिर आऊंगा तब ले लूंगा। यह बात उन्होंने स्वीकार कर ली। चलते समय उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और कहा कि मैं ऐसे माननीय जापानीसे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ।



निन्नानवेवां परिच्छेद

लासाके दुःखदायी सम्वाद

जिस समय मैं नैपालमें था तिब्बतसे कई एक लामा नैपालके तीर्थोंमें आये थे। उनसे पूछनेपर ज्ञात हुआ कि पुराने अर्द्ध-सचिव कैद हो गये। वे बड़ा कष्ट भोग रहे हैं। मैंने उन लोगोंकी बातोंपर विश्वास न किया। सेराके एक लामा कुशूलोकलासे जो कि टेमोरिनपोचेकी ओरसे ही तीर्थपर्यटनको आये थे।

उन्होंने कहा, प्रायः १॥ महीना मुझे लासा छोड़े हुआ है। उस समय अर्थसचिव घर हीपर थे। राहमें मैंने सुना कि वह पकड़े गये हैं। परन्तु मैं विश्वासनीय रूपमें नहीं कह सकता हूं। हां, टसारोंगवा बड़े दुःखमें पड़ा है। मैंने उसको बन्दीगृहमें देखकर पूछा था तो उसने आंखोंमें आंसू भरकर कहा कि न

मैंने चोरी की है और न किसीसे लड़ाई झगड़ा किया है, केवल सेराबिहारके एक वैद्यसे औषध ली थी। वह तुम्हारे विषयमें बहुत नहीं जानता। अब वह इतना दुबला हो गया है कि शरीरमें हड्डी और चमड़ेके सिवाय कुछ नहीं रहा है।

कुशोलोकेला, बड़ा सहृदय पुरुष था, उसके मुखसे सुनकर मुझे पूरा विश्वास हो गया। ये समाचार सुनकर मैं सहसा शोक-सागरमें डूब गया। इन तिब्बती मित्रोंके कारावासके कष्टोंको याद करते रातभर नींद न आई। मेरे हृदयमें उद्गार उठे जिन्हें मैंने पद्यबद्ध किया जिनको गद्यरूपसे इस प्रकार लिखा जा सकता है :—

"मित्रोंकी विपत्तियों और असह्य कष्टोंको सुनकर मेरे ऊपर वज्राघात सा हुआ। उनका मुखसे कहना और भी असह्य है। उनका उल्लेख करना उससे भी अधिकतर असह्य है। स्मृतियोंको चिरस्थायी करनेके लिये मैं उनका उल्लेख कर रहा हूं।

छः वर्ष पहले पवित्र बुद्ध धर्मकी शिक्षा पानेका दृढ़ संकल्प किया था। मातृभूमिको छोड़ा हिमालयकी हिमावृत गिरि मालाओंको पार किया, तिब्बतमें प्रवेश किया और फिर लौट भी आया। उस सुदूर एकान्त देशमें अपने उपकारी मित्रोंको पापके लिये नहीं प्रत्युत उपकारके लिये कारावासकी काल कोठरियोंमें पड़ा देखकर हृदय फटा जाता है।

जब देखता हूं कि मेरे लिये मेरे वयस्य इतना कष्ट भोग रहे हैं, उनके देह शिलामय काल कोठरियोंमें, हिमाचलकी हिम

शीतलतासे ठण्डे हुए जा रहे हैं। वे काल कोठरीमें हताश, हतभाग्य होकर बैठे होंगे। उनको कौन भोजन देगा, सरकारी नियमके शिकंजेमें कारावासी, एक समय मुट्ठी भर जौ पाते हैं। यदि सचमुच मेरे मित्र भी इस संकटमें है तो वे भी भूखों मर जायेंगे, शीतसे जकड़ जायेंगे। वे उससे भी अधिक दुःख भोग रहे हैं। वहांके जेलर कठोर, पत्थरदिल, क्रूर, अल्प भोजन दे देकर भूखा ही न मारेंगे पर निर्दय हाथोंसे कोड़े भी तानेंगे। और और भी कठोर यम यातनाएं भुगवायेंगे। मेरे प्रियमित्र हा! अपने कष्टोंसे मुक्त होनेके लिये आत्मघातके लिये उद्यत होंगे, ये सब कष्ट मुझे स्वयं प्राण छोड़ देनेकी प्रेरणा करते हैं।

मेरे मित्रोंकी दीन दशा कितनी शोचनीय और दयनीय है। मैं जब लासामें था मुझे स्वप्न भी न था कि मेरे कारण ये यम यातनाएं भोगेंगे। मित्रो, तुम्हारा अपराध केवल इतना ही है कि तुमने प्रवासमें मेरी सहायता की थी। मैं तुम्हें निस्सहाय दशामें कैसे बिना बचाये रहूं।

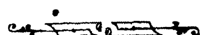
वयस्यो, अब तुम मुझे बड़ी घृणा भरी दृष्टिसे देख रहे होगे। परन्तु मुझे पता लगा है कि तुम्हारे ये वचन हैं।

न चोरी की है, न जारी, न द्रोह किया और न कोह, पर जजका कहना है कि कानून तोड़ा। एक जापानी लामासे मेरा परिचयमात्र था। ये सब यम यातनाएं मेरे पूर्व जन्मोंके कर्मोंके फल हैं। उनसे छुटनेके यह भोगने ही होंग।"

मित्रो! तुम ऐसा दिलासा देकर अपना सन्तोष कर लोगे

और अपना दिल हलका कर लोगे। पर मैं अपने उमड़ते और कराहते दिलको कैसे धीरज दूं। हा प्रियमित्र, मेरे कारण असह्य यातना भोग रहे हैं!

सौवां परिच्छेद



महाराजका सन्देह प्रगट करना

६ फरवरीको बुद्धवज्रको साथ लेकर मैं महाराज चन्द्रशमशेर प्रधान मन्त्रीके महलोंपर पहुंचा। महाराजका मिलनेका कमरा खूब सजा हुआ था। कमरेमें तीन कुर्सियां रखी हुई थीं। इस कमरेमें बहुतसे अफसर भी बैठे हुये थे। मुझसे पूछा गया कि, 'मैं समझता हूं कि आपको यहाँ आये बीस दिनसे अधिक हुये होंगे, इतने दिनोंमें आपने क्या क्या देखा और क्या २ किया?'

मैं—धार्मिक विचार और कविता।

मन्त्री—जापानमें आप किस पदपर हैं और क्या काम करते हैं?

मैं—कुछ नहीं।

मन्त्री—मुझसे कुछ मत छुपाइये क्या आप समझते हैं कि मैं आपके विषयमें कुछ नहीं सोच सकता? यदि आप सब हाल बतला देंगे तो अच्छा होगा।

मैं—श्रीमन्, मैं बौद्धधर्मका पुरोहित हूं। मैं किसी पदपर

नहीं, न जपानकी और न किसी और सरकारकी नौकरी करता हूं।

मन्त्री—अच्छा मि० काबागुची। यह तो बतलाइये कि आप तिब्बत और नेपाल कैसे पहुंचे जिसमें बहुत व्यय अपेक्षित है।

मैं—मुझको किसी पदसे कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं केवल विद्याभ्यासके लिये गया था।

मन्त्री—किस मार्गसे गये थे?

मैं—मानसरोवर होकर।

मन्त्री यह सुनते ही चौंक पड़ा और कहा कि—'मानसरोवर पहुंचनेके लिये कौनसा मार्ग पकड़ा?'

मैं—श्रीमन्, इसका उत्तर मैं केवल महाराजके सामने दे सकता हूं।

'क्यों?'

क्योंकि मैं नहीं चाहता कि किसी निरपराधीपर दण्डका वज्र गिरे।'

इसके बाद बहुतसे अफसर मुझसे तिब्बत और जापानकी रीति रिवाजों और फौजोंके हाल इत्यादि पूछने लगे। किसी किसीने नेपाली भाषामें यह भी कहा कि यह जापानका राजदूत मालूम होता है।

यहांसे हम शीघ्र ही दरबारमें उपस्थित हुए। जहां बहुतसे अफसर उपस्थित थे और और भी आ रहे थे। वे लोग आ आ कर लम्बी लम्बी सलामें कर रहे थे। यहां मैंने एक मनुष्य देखा

जो मुझे देखकर बड़ा विस्मित हुआ। यह मनुष्य टुकजेका प्रधान था। मैं जब तिब्बत जा रहा था तो इसके मकानमें ही ठहरा था। उस समय मैं इसके यहां एक भिखारी चीनी लामाके वेषमें गया था।

कर्ता महाराज अभीतक घोड़ोंकी जांच कर रहे थे। जांच कर चुकनेपर एक चारपाईपर आकर बैठ गये। मैं उनके सामने उपस्थित हुआ, उन्होंने मुझसे पूछा,—'अब मैं आपके लिये क्या करूं'?

'पहला निवेदन तो श्रीमनसे मेरा यह है कि एक पत्र दलाई-लामाको लिख दिया जावे और दूसरा बौद्ध संस्कृत पुस्तकोंके विषयमें है जिसका श्रीमनने वचन दिया है।'

'इसका निर्णय मैं पीछे करूंगा, पहले यह बतलाइये कि चार वर्ष पहले आप यहां आये थे ?'

'जी हां, श्रीमन्, मैं यहां आया था।'

'अच्छा तो यह बात जब आप मुझको बिलगञ्जीमें मिले थे तब क्यों नहीं कही। क्या इसके कहनेकी आवश्यकता नहीं थी ?'

'श्रीमन् मैं इस बातको मानता हूं परन्तु एक विशेष भयके कारण उसको मैंने प्रकाश नहीं किया।'

'क्या मैं जान सकता हूं कि वह भय क्या था ?'

'अवश्य महाराज, यदि वह बात मेरे मुखसे निकल जाती तो सम्भव था कि आपके फाटकोंपरके पहरेवालों और और लोगोंको दण्ड भोगना पड़ता। यदि वही यमयातना यहां भी आ पड़ती जैसा कि तिब्बतमें घट रही है तो मेरे दुःखका कहीं ठिकाना न

रहता। मैं हाथ जोड़कर श्रीमानोंसे सविनय निवेदन करता हूं कि उन लोगोंके ऊपर कृपा करें।'

'मैं आपकी प्रार्थना स्वीकार करता हूं और आपके कारण किसीको दण्ड न दूंगा।'

श्रीमानोंने मुझे बड़े भारी संकटसे बचा दिया। मैं इसके लिये श्रीमानोंको बड़ा धन्यवाद देता हूं।

सत्यबात सदा दिलमें घर कर जाती है। मुझे यह देखकर बड़ा हर्ष हुआ कि महाराजने मेरे वचनोंपर विश्वासकर लिया। परन्तु तिब्बत और नैपालकी यात्राके विषयमें उनके प्रश्नोंसे कुछ और ही भाव टपकता था। उन्होंने पूछा,—'आप सत्य सत्य कहें कि आपको यहां और तिब्बतमें किसने भेजा था। आपके यहांके विदेशी विभागके सचिवने या चीफ मारशलने?'

यह सुनते ही मेरे ऊपर बज्रसा गिर पड़ा। मैंने समझा कि महाराजतक मुझे जापानी राजदूत समझते हैं। मै तिब्बतवालों-से नैपालियोंको कहीं बढ़कर समझता था। मैं थोड़ी देरतक इसी उधेड़बुनमें रहा जिससे महाराजका सन्देह और भी बढ़ा और बोले,—'क्या आप अपना भेद प्रगट नहीं कर सकते?'

'मैं श्रीमानोंके सामने कुछ नहीं छुपा सकता। मैं आपको जो कहूंगा सो सत्य कहूंगा मैं तो अपने ही कामके लिये आया था।'

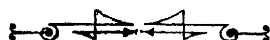
महाराजने हंसकर कहा,—'अच्छा आप जानते ही हैं कि कोई मनुष्य जबतक उसके पास यथेष्ट रुपया न हो छः वर्षतक नहीं

घूम सकता। इसके अतिरिक्त आपने मुझे और मेरे कमाण्डरिन चीफको जो भेंटे दी हैं वह बहुमूल्य हैं। इतना रुपया साधारण बौद्ध पुरोहितके पास नहीं हो सकता। आप बहुत विद्वान मनुष्य मालूम होते हैं, और संसारिक ज्ञान भी आपका बहुत अच्छा है। आपको मुझसे भेद कदापि न छुपाना चाहिये। मैं आपको परसोंतकका अवसर देता हूं। परसों आप मुझसे अकेलेमें सब बातें कह जाइये यदि नहीं कहेंगे तो मुझसे किसी बातकी आशा मत कीजिये और न मैं आपकी रक्षाका उत्तरदाता हूं।

मैंने उत्तर दिया कि,—'महाराज, मैंने बुद्ध भगवानके आगे शपथ ली है कि मैं झूठ कदापि न बोलूंगा। यदि आप मेरा विश्वास न करें तो यह मेरा दुर्भाग्य है परन्तु मैंने कोई भी भेद श्रीमानोंके आगे नहीं छिपाया है। इन शब्दोंके अतिरिक्त मेरे पास कुछ नहीं है। परन्तु मैं आशा करता हूं कि किसी न किसी दिन मेरे सत्यव्रती होनेका हाल आपको विदित हो जावेगा।

'अच्छा यदि आप सत्य कहते हैं तो कोई आपपर सन्देह न करेगा। परसों १०॥ बजे मैं आपको बुलाऊंगा उस समय सब हाल कहियेगा। अब मैं प्रणाम करता हूं।

एकसौएकवां परिच्छेद



तीसरी भेंट

९ फरवरीको मैं दरबारमें गया था। १० को बुद्ध वज्रके साथ रहा। ११ को फिर दरबारमें बुलाया गया। इस समय दोनों महाराज दरबारमें उपस्थित थे।

बुद्ध वज्र तो मुझे कोरा बौद्धलामा ही समझते थे। उन्होंने मुझे महाराजके सन्देहके अनुसार अपनेको मान लेनेकी प्रेरणा करने लगे। क्या मैंने समयपर असत्यमार्गका अवलम्बन नहीं किया। क्या तिब्बतमें घुसनेके लिये मैंने अपनेको चीनी लामा नहीं बतलाया। क्या मेरा सबसे मुख्य उद्देश्य अपने तिब्बती मित्रोंकी संकटसे रक्षा करना नहीं था। इस कार्यमें अपनेको जापानी पदाधिकारी बताकर नैपाल महाराजकी सहायता लेनेका विचार नहीं किया था। यह सब था तो भी मैं नैपालको तिब्बतसे मित्र मानता हूं।

चालाकियां,समयोपयोगी युक्ति,युद्धमें तथा युद्धके समान अन्य अवसरोंपर या बदमाशोंसे काम पड़नेपर वर्ते जाते हैं। नैपालवासी तिब्बतियोंके समान भी नहीं हैं। वे विदेशियोंको अपने देशमें घुसनेका इतना प्रतिबन्ध नहीं करते। नैपालकी सभ्यता न्याय और सचाईपर ध्यान देती है। मैं नैपाल महाराजका असत्यसे क्यों अपमान करूं। यदि महाराज मुझपर विश्वास न

भी करेंगे तो भी मैं अपनी सचाईसे आप सन्तुष्ट रह सकूंगा। मैं पेकिंग जाकर तिब्बती मित्रोंके लिये जो बन पड़ेगा करूंगा।

मेरे इस प्रकारके तर्कसे बुद्धवज्र चुप हो गये पर ११ को मैं बुद्धवज्रके साथ राजप्रासादमें नियत समयपर पहुंचा, प्रतीक्षा-भवनमें कई पदाधिकारी बैठे थे। एक मन्त्रीने अंग्रेजी भाषामें मेरा अभिप्राय पूछा, एक अफसरने मुझसे पूछा, 'क्या आपने कोई तिब्बत और नेपालका नकशा तय्यार किया है? यदि बनाया हो तो मुझे भी दिखावेंगे?' मैंने इस प्रश्नका उत्तर निषेधमें दिया। उसका सन्देह ज्योंका त्यों बना रहा। मैंने कहा, तुम अपना सन्देह बनाये रखो। मुझे इसीमें सन्तोष है, गुप्तचर सबको चोर समझा करते हैं। उसने कहा यह सन्देह तुमपर प्रायः बहुतोंका है।

इसके बाद चार ज़ीने चढ़कर हम एक सुन्दर सजे कमरेमें पहुंचे। तख्तपर एक पुरुष था, मैंने पहले नीलगञ्जीमें राजसभाका एक सभासद् समझा था, दोनों महाराज पास २ बैठे थे। मुझे भी वास्तविक महाराजाके सामने बैठाया गया। मैं भी तिब्बती ढंगपर आड़े पैर रखकर बैठ गया। महाराजने पूछा—

"अब आप अपना भेद बतलानेको तय्यार हैं? कहिये, क्या कहना चाहते हैं?"

'श्रीमान् मेरे पास कोई भेद नहीं है। मेरे वही दो काम हैं जिनके विषयमें निवेदन कर चुका हूं।'

यह सुनकर महाराज हताश हो गये परन्तु अप्रसन्न नहीं

हुए। मैं जो पत्र भिजवाना चाहता था उसका उन्होंने सार पूछा। मैंने उत्तर दिया कि मैं सच्चा जापानी पुरोहित हूं। मेरे मित्र जिनपर विपद् पड़ी है मेरी जातीयताको नहीं जानते थे। वे नहीं जानते थे कि मैं कौन हूं। मैं अकेला ही उन सब कष्टोंका कारण हूं। उन्होंने कोई अपराध नहीं किया है। मैं तिब्बत इसीलिये जाना चाहता हूं कि उनका अपराध दलाई-लामासे क्षमा कराऊं। यदि उनको मेरा विश्वास न हो तो कुछ आदमी जापान भेजकर वे इस बातकी जांच करालें, उसका खर्च मैं देनेको तय्यार हूं।

मेरी बातें सुनकर महाराजको कुछ २ विश्वास हो आया और उन्होंने कहा, 'अच्छा तो मुझे इस पत्रकी दो कापियां करनी होंगी। एक तिब्बती भाषामें और दूसरी नेपाली भाषामें। तिब्बती भाषाकी प्रति दलाईलामाके पास भेजूंगा और दूसरी यहां रखूंगा।

मेरी आंखोंमें हर्षके आंसू आगये। मैंने महाराजको आशीर्वाद दिया।

महाराज यह जाननेके बड़े उत्सुक थे कि मैंने ये गत २० दिन किस प्रकार बिताये। उन्होंने इसका उत्तर मान भी लिया। मैंने संस्कृत पुस्तकोंकी एक सूची महाराजको दी। मेरे हाथसे लिस्ट ले ली और अपने मन्त्रियोंको सब कुछ समझा दिया कि १५ दिनमें जो भी संग्रह हो सके वह मुझे दे दिया जाय।

मैंने शंकरशिखरके फिर दर्शन किये और बुद्ध भगवानका स्मरण किया।

एक सौ दोवां परिच्छेद।



नैपाल और दयालु महाराजाओंसे विदाई।

मैंने उस पत्रको बुद्धवज्रसे नैपाली भाषामें करा लिया। उन्होंने दोनों कापियां महाराज चन्द्रशमशेरके हाथमें दे दीं और चला आया। आकर बुद्धंवज्रने मुझसे कहा कि, 'इतना हर्ष मुझे कभी नहीं हुआ था जैसा आज हुआ है।'

मैं—क्या हुआ ?

बुद्धवज्र—जब मैंने वह आपका लिखा हुआ तिब्बती भाषाका पत्र महाराजको दिया तो उन्होंने पूछा, यह किसने लिखा है। मैंने आपका नाम बतला दिया। मैंने महाराजसे यह भी कहा कि आप इस पुरुषकी विद्वत्ता मेरे इस नैपाली भाषान्तरसे जान सकते हैं यद्यपि मेरा किया हुआ भाषान्तर अच्छा नहीं हुआ है।

महाराजने भाषान्तर पढ़ा और बड़े विस्मित हुए जब उन्होंने पढ़ा कि "तिब्बतका दलाईलामा दयाका साक्षात् अवतार है। और सर्वज्ञ है। इकाई कावागुची आपके चरणोंमें आया, और आप सर्वज्ञ महाभागने उसको शिक्षा दीक्षा दी, यह सब श्रीमान् जानते हैं। यही बात इसका प्रमाण है, भगवान बुद्धकी भी इसी प्रकारकी इच्छा थी। यही इस बातका भी प्रमाण है कि श्रीमानोंके राजप्रसादके चतुर्दिगन्तोंके रक्षक देवता भी यही चाहते थे। आप-

की सरकारको विदेशीय प्रतिरोधकी नीति बरतते हुये २० वर्ष हो गये। इस बीच कोई भी विदेशी तिब्बतमें प्रवेश न पा सका. मैंनेही तिब्बतके दर्शन करनेका कष्ट उठाया यह भी इस बातका प्रमाण है कि आपके देशकी रक्षा करनेवाले देवताओंने मुझे जानेकी आज्ञा दे दी थी। इन सब घटनाओंके सङ्घटनमें मैं एक और बात विशेष रूपसे देखता हूं। आप सर्वज्ञ धर्मावतारने इकाई-के प्रवेशकी उपेक्षा करके अपने धर्मके परमतत्वोंकी शिक्षा दी। धर्मावतार आप और मैं भी जानता हूं कि संसारभरमें केवल तिब्बत और जापान दो ही देश हैं जो बौद्धधर्मकी महायान शाखाकी शिक्षा देते हैं। और भी देश महायानकी शिक्षा देते हैं पर अब उनका नाम लेना भी योग्य नहीं। वहां वह शाखा लुप्तप्राय हो चुकी है। अब वह अवसर आगया है जबकि महायान बौद्धधर्मके माननेवाले दोनों देशोंमें परस्पर परिचय हो जाय और आपसमें व्यवहार करें और संसारभरमें सच्चे बौद्धधर्मका प्रकाश फैलायें। मेरी सम्मतिमें यह नये युगके आगमनने ही मेरे लिये तिब्बतप्रवेशके निमित्त मार्ग खोल दिया था। मुझे ऐसा दुष्प्राप्य अवसर दिया कि मैं बौद्धधर्मके गहन तत्त्वोंको श्रीमानोंकी कृपासे सीख पाया।"

आपकी इस प्रकार तर्कशैली और रचनाको देखकर महा-राज बड़े विस्मित हुये।

मैंने बुद्ध भगवानकी कृतज्ञता प्रकाश की जिनकी कृपासे नेपाल आना सफल हो गया। मैं दस मार्च तक यहां ठहरा रहा

और इसी बीचमें नागरजोग गिरिशिखरके दर्शन भी कर आया। यह भी एक पवित्र बौद्धतीर्थ है।

१२ मार्चको मैं फिर महाराजके महलोंमें उपस्थित हुआ और एक लाल और एक श्वेत कपड़ा जो कि जापानसे मंगाया था महाराजको भेंट किया। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक उसको स्वीकार किया। जो पुस्तकें मैंने बतलाई थीं वह भी आगयी थीं। महाराजने मंगाकर मुझको दे दी।

उन्होंने कहा, 'कावागुची यह अप्राप्य पुस्तकें हैं। मुझे इनके ४१ ग्रन्थ ही मिले हैं। यह मैं आपको देता हूं। आप इनको अपने पास मेरी निशानीकी भांति रखियेगा।'

मैंने महाराजसे बहुत कुछ कृतज्ञता प्रकाश की और वहांसे बिदा हुआ। वह पुस्तकें दो आदमियोंपर रखवाकर बुद्धवज्रके घरपर भेज दी गईं।

१६ मार्चको काठमाण्डूसे बिदा होकर २२ को कलकत्ते पहुंच गया। मि० ओमिया मुझसे बहुत अप्रसन्न थे कि मैंने नाहक इतना रुपया व्यय किया। यहां कुछ दिनों रहकर बम्बई गया और वहांसे बोरेमारू जहाजपर सवार होकर अपनी मातृ-भूमिकी ओर चल दिया।

एक सौ तीनवां परिच्छेद

अन्त भला तो सब भला।

जापान गये हुए मुझको दो वर्ष होगये परन्तु अभी तक

मुझे अपने मित्रोंका कुछ हाल न मालूम पड़ा। इतने दिनोंके पीछे मुझको एक पत्र मिला। वह नीचे लिखे अनुसार है :—

मि० कावागुची याटुंगमें होकर लासासे दार्जिलिंगको जून १६०२ में आये। उन्होंने यहांके एक अधिकारी धुरकी सरदार-की रोगी स्त्रीको देखा था। वह जेलपद्वारसे सिकमकी तरफ निकल गया। वह कुछ काल (१२ मास) लासामें सेरा विहार-में रहकर एकदम कहीं लुप्त हो गया। इस कारण उनको विदेशी समझा गया। धुरकी सरदारको उनकी गिरफ्तारीकी आज्ञा दी गयी। इतनाही नहीं बल्कि, ऐसा कोई अफसर मुझे नहीं मिला जो सेरामें निवास करते समय कावागुचीको न जानता हो।

कृपा करके कावागुचीको यह सूचना दे दीजिये कि उसके गुरु और मित्र व्यापारी बन्धनसे मुक्त कर दिये गये हैं। और भी जो मेरे सामर्थ्यमें होगा मैं करूंगा और उसकी सूचना भी भिजवा दूंगा।

पत्रपर लिखा था :—

ग्रातोंग०, पो० आ० फ्रन्टियर कमिशन तूना।

१७ मार्च, १६०४,

मेरे यात्रावृत्तान्तका यह अनुवाद निकलनेको था कि यह पत्र मिला अतः उसको ही सहर्ष इस भ्रमणवृत्तान्तका अन्तिम परिच्छेद बनाकर भ्रमणवृत्तान्त समाप्त करता हूं।

॥ इति शुभम् ॥